अंजाम-ए-आथम

(अब्दुल्लाह आथम का अन्त)

ANJAM-E-ATHAM

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद, क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

अंजाम-ए-आथम

(अब्दुल्लाह आथम का अन्त)

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	:	अंजाम-ए-आथम (अब्दुल्लाह आथम का अन्त)
लेखक	:	हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
अनुवादक	:	डा० अन्सार अहमद, फ़रहत अहमद आचार्य, इब्नुल मेहदी लईक़ एम. ए.
संस्करण	:	प्रथम संस्करण (हिन्दी) जून 2024 ई०
संख्या	:	500
प्रकाशक	:	नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
मुद्रक	:	फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)

Name of book	:	Anjam-e-Aatham
Author	:	Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mou'ud W Mahdi Mahood Alaihissalam
Translator	:	Dr Ansar Ahmad, Farhat Ahmad Acharya, & Ibnul Mehdi Laeeq M.A
Edition	:	1st Edition (Hindi) June 2024
Quantity	:	500
Publisher	:	Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
Printed at	:	Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक "**अंजाम-ए-आथम**" का यह हिन्दी अनुवाद आदरणीय डॉ० अन्सार अहमद, आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य और आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक़ एम. ए. ने किया है।

तत्पश्चात आदरणीय शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), आदरणीय फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), आदरणीय अली हसन एम. ए., आदरणीय इब्नुल मेहदी लईक एम. ए. और आदरणीय सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद एम.ए. ने इसका रिव्यू किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़्दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

नोट

पुस्तक के अंत में पारिभाषिक शब्दावाली दी गई है पाठकगण उसकी सहायता से पुस्तक में प्रयोग किए गए इस्लामिक शब्दों को सरलतापूर्वक समझ सकते हैं।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम
(1835 ई० - 1908 ई०)
संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत

लेखक परिचय

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम का जन्म 1835 ई० में हिन्दुस्तान के एक कस्बे क़ादियान में हुआ। आप अपनी प्रारंभिक आयु से ही ख़ुदा की उपासना, दुआओं, पवित्र क़ुरआन और अन्य धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में व्यस्त रहते थे। इस्लाम जो कि उस समय चारों ओर से आक्रमणों का शिकार हो रहा था, उसकी दयनीय अवस्था को देख कर आप अलैहिस्सलाम को अत्यंत दुख होता था। इस्लाम की प्रतिरक्षा और फिर उसकी शिक्षाओं को अपने वास्तविक स्वरूप में संसार के सम्मुख प्रस्तुत करने के लिए आप ने 90 से अधिक पुस्तकें लिखीं और हज़ारों पत्र लिखे और बहुत से धार्मिक शास्त्रार्थ और मुनाज़रात किए। आप ने बताया कि इस्लाम ही वह ज़िन्दा धर्म है जो मानवजाति का संबंध अपने वास्तविक सृष्टिकर्ता से स्थापित कर सकता है और उसी के अनुसरण से मनुष्य व्यवहारिक तथा आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

छोटी आयु से ही आप सच्चे स्वप्न, कश्फ़ और इल्हाम से सुशोभित हुए। 1889 ई० में आप ने ख़ुदा तआला के आदेशानुसार बैअत* लेने का सिलसिला प्रारंभ किया और एक पवित्र जमाअत की नींव रखी। इल्हाम व कलाम का सिलसिला दिन प्रति दिन बढ़ता गया और आप ने ख़ुदा के आदेशानुसार यह घोषणा की कि आप अंतिम युग के वही सुधारक हैं जिस की भविष्यवाणियाँ संसार के समस्त धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से उपस्थित हैं।

आप ने यह भी दावा किया कि आप वही मसीह मौऊद व महदी माहूद हैं जिसके आने की भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

---

* **बैअत**- किसी नबी, रसूल, अवतार या पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना- अनुवादक

की थी। जमाअत अहमदिया अब तक संसार के 200 से अधिक देशों में स्थापित हो चुकी है।

1908 ई० में जब आप का स्वर्गवास हुआ तो उसके पश्चात पवित्र क़ुरआन तथा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार आपके आध्यात्मिक मिशन की पूर्णता हेतु खिलाफ़त का सिलसिला स्थापित हुआ। अत: इस समय हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद (अल्लाह उनकी सहायता करे) आप के पंचम ख़लीफ़ा और विश्वस्तरीय जमाअत अहमदिया के वर्तमान इमाम हैं।

पुस्तक परिचय

अंजाम-ए-आथम

(अब्दुल्लाह आथम का अन्त)

यह पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पादरी डिप्टी अब्दुल्लाह आथम की मृत्यु पर लिखी थी जो 27 जुलाई 1896 ई को फिरोज़पुर में हुई। इस पुस्तक में आप ने आथम से संबंधित भविष्यवाणी पर प्रकाश डाला है और ईसाइयों, मुसलमान उलमा, सूफिया और गद्दी नशीनों को मोबाहिला के लिए निमंत्रण दिया है और अरबी भाषा में एक पत्र ऐसे सदाचारी ज्ञानियों और गोशा नशीनों (सांसारिक मोहमाया से दूर ख़ुदा में लीन लोगों) के नाम लिखा है जिसमें आप ने ख़ुदा तआला की सहायता तथा उन निशानों का वर्णन किया है जो अल्लाह तआला ने आपको प्रदान किए।

इसी प्रकार परिशिष्ट अंजाम-ए-आथम में आप ने उर्दू भाषा में निशानों का वर्णन करते हुए अपने 313 सहाबियों (सहचरों) की सूची लिखी है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस की उस भविष्यवाणी को पूरा करने वाली है कि जिसमें लिखा है कि महदी के पास एक पुस्तक में बद्री सहाबियों की संख्या के अनुसार 313 सहाबियोँ के नाम लिखे हुए होंगे।

आथम से संबंधित भविष्यवाणी

रूहानी खज़ाइन जिल्द नंबर- 6 के प्राक्कथन में जंग-ए-मुक़द्दस के क्वाइफ का जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा पादरियों के बीच हुई, उस का वर्णन करके हमने लिखा था कि अल्लाह तआला ने आपकी दुआओं के परिणाम स्वरूप आपको जो निशान दिया उसका विवरण हम पुस्तक "अंजाम ए आथम" के प्रकाशन के समय लिखेंगे।

जंग-ए-मुक़द्दस (इस्लाम तथा ईसाई धर्म के बीच हुआ शास्त्रार्थ) के अंतिम

दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया-

"आज रात जो मुझ पर खुला वह यह है कि जब कि मैंने बहुत विनय और गिड़गिड़ा कर ख़ुदा के दरबार में दुआ की कि तू इस विषय में फैसला कर और हम असहाय बन्दे हैं तेरे फैसले के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकते। तो उसने मुझे यह निशान ख़ुशख़बरी के तौर पर दिया है कि इस बहस में दोनों सदस्यों में से जो सदस्य जानबूझ कर झूठ को ग्रहण कर रहा है तथा सच्चे ख़ुदा को छोड़ रहा है और असहाय मनुष्य को ख़ुदा बना रहा है वह इन्हीं दिनों शास्त्रार्थ की दृष्टि से अर्थात् प्रति दिन को एक महीना मान कर पन्द्रह माह तक नर्क में गिराया जाएगा और बहुत अपमानित होगा बशर्ते कि सच की ओर न लौटे और जो व्यक्ति सच पर है और सच्चे ख़ुदा को मानता है उसका इससे सम्मान प्रकट होगा"

(जंग-ए-मुक़द्दस, रूहानी खज़ाइन जिल्द 6, पृष्ठ- 291-292, हिन्दी अनुवाद का पृष्ठ- 237**)**

इस भविष्यवाणी के ऐलान पर यह 15 दिन की पवित्र जंग समाप्त हो गई और इस भविष्यवाणी के परिणाम की लोग प्रतीक्षा करने लगे। और अल्लाह तआला की चूंकि इच्छा यह थी कि इस निशान को एक महान रूप में प्रकट करे तो उसकी घटना यूं घटी कि जब भविष्यवाणी की निर्धारित अवधि 15 महीने (5 जून 1893 ईस्वी से 5 सितंबर 1894 ईसवी) समाप्त हो गई और अब्दुल्ला आथम जो इस जंग-ए-मुक़द्दस में शास्त्रार्थी था, भविष्यवाणी के अनुसार सत्य की ओर लौटने के कारण न मरा, तो ईसाइयों ने उसे ईसाइयत की इस्लाम पर विजय घोषित किया। और 6 सितंबर को उन्होंने अमृतसर में एक जुलूस भी निकाला और उनके इस उत्सव मनाने में कुछ अज्ञानी उलमा और उनके अनुयाई तथाकथित मुसलमान भी सम्मिलित हुए। और इधर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने निर्धारित अवधी गुज़रते ही 6 सितंबर 1894 ईस्वी को पुस्तक "अन्वारुल इस्लाम" प्रकाशित की जिसमें आप ने यह लिखा कि यह भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की इच्छा और आदेश के अनुसार अत्यंत स्पष्टता पूर्वक निर्धारित अवधि के अंदर पूरी हो गई है और अगर अब्दुल्लाह आथम का दिल जैसा कि पहले था वैसा ही इस्लाम के अपमान और तिरस्कार पर स्थित रहता और इस्लामी महानता को स्वीकार

करके किसी सीमा तक सत्य की ओर न लौटता तो इस अवधि के अंदर उसके जीवन का अन्त हो जाता। परंतु ख़ुदा तआला के इल्हाम ने मुझे बता दिया कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम इस्लाम की महानता और उसके रोब को स्वीकार करके सत्य की ओर लौटा और इस लौटने ने उसकी मौत के वादे और पूर्ण रूपेण नर्क में गिराए जाने में विलंब डाल दिया है। **नर्क में तो गिरा परंतु उस बड़े नर्क से थोड़े दिनों के लिए बच गया जिसका नाम मृत्यु है** और भविष्यवाणी "इस शर्त पर कि सच्चाई की और न लौटे" का वाक्य निरर्थक नहीं था। इसलिए जितना वह सत्य की ओर लौटा उसका उसे लाभ मिल गया। अत: विजय इस्लाम की हुई और ईसाइयों को अपमान और नर्क नसीब हुआ और अल्लाह तआला ने आथम के सत्य की ओर लौटने के बारे में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सूचना दी वह यह थी:

اطلع اللّٰہ علی همه و غمه۔ و لن تجد لسنة اللّٰہ تبديلا و لا تعجبوا و لا تحزنوا و انتم الاعلون ان كنتم مؤمنين و بعزتی و جلالی انك انت الاعلیٰ۔ و نمزق الاعداء كل ممزق و مكر اولئك هو يبور۔ انا نكشف السر عن ساقه يومئذ يفرح المؤمنون۔ (अन्वारुल इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 9 पृष्ठ 2)

अनुवाद - ख़ुदा तआला ने उसके दुख एवं सुख पर सूचना पाई और उसको छूट दी जब तक कि वह धृष्टता और गालियों और झुठलाने की ओर झुके और ख़ुदा तआला के उपकार को भुला दे... और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की यही सुन्नत है... और तू ख़ुदाई नियमों (सुन्नतों) में परिवर्तन नहीं पाएगा। इस वाक्य के बारे में यह समझा गया कि ख़ुदा तआला की आदत इसी प्रकार से जारी है... यदि दिल के किसी कोने में भी कुछ ख़ुदा का भय छुपा हुआ हो और कुछ धड़का आरंभ हो जाए तो अज़ाब नहीं उतरता।

फिर जमाअत को संबोधित करते हुए फ़रमाया- कुछ आश्चर्य मत करो और ग़मगीन मत हो तथा विजय तुम्हारी ही है यदि तुम ईमान पर स्थित रहो।... मुझे मेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि तू ही विजयी है... हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे अर्थात् वे अपमानित होंगे और उनका षड्यन्त्र तबाह हो जाएगा। ...और ख़ुदा तआला बस नहीं करेगा और न रुकेगा जब तक शत्रुओं के समस्त षड्यन्त्रों का छिद्रान्वेषण न करे और उनके षड्यन्त्र को तबाह न कर दे। ...फिर फ़रमाया- कि हम असल भेद को

उसकी पिण्डलियों से नंगा करके दिखा देंगे...उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे।

अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 2, 3 हिन्दी अनुवाद का पृष्ठ 3,4)

इसी प्रकार हुज़ूर ने फ़रमाया -

"यह तो मिस्टर अब्दुल्लाह आथम का हाल हुआ परन्तु उसके शेष साथी भी जो "बहस के सदस्य" के शब्द में सम्मिलित थे और जंगे मुक़द्दस के मुबाहसे से संबंध रखते थे चाहे वह संबंध सहायता का था या व्यवस्थापक होने का या बहस के प्रस्तावक या समर्थक होने या प्रमुख होने का उनमें से कोई भी नर्क के प्रभाव से न बचा।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ-8, हिन्दी अनुवाद का पृष्ठ-13)

1. अत: सर्वप्रथम ख़ुदा तआला ने पादरी रायट को लिया जो वास्तव में अपने पद और श्रेणी की दृष्टि से इस जमाअत का प्रमुख था और वह बिल्कुल जवानी में एक अकस्मात मृत्यु से इस संसार से गुज़र गया। और ख़ुदा तआला ने उस की असमय मृत्यु से डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और ऐसा ही उसके अन्य समस्त दोस्तों, प्रियजनों और अधीन कार्यकर्ताओं को कठोर आघात पहुंचाया और मातम के वस्त्र पहना दिए और उसकी असमय मौत ने उनको ऐसे दुख और दर्द में डाला जो नर्क से कम न था।

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ-8 हिन्दी अनुवाद का पृष्ठ 13-14)

पादरी रायट साहिब की मृत्यु पर जो अफ़सोस गिरजा में व्यक्त किया गया, उसमें ईसाइयों की व्याकुलों जैसी तथा भयभीत हालत का दृश्य निम्नलिखित शब्दों से हृदय रूपी दर्पण में अंकित हो सकता है जो उस समय प्रीचर के भय ग्रस्त और प्रकोपित हृदय से निकले और वे ये हैं -

"आज रात ख़ुदा के प्रकोप की लाठी असमय हम पर चली और उसकी गुप्त तलवार ने बेख़बरी में हम को क़त्ल किया।

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 9 पृष्ठ 8)

2 पादरी फोरमेन लाहौर में मरे। (पृष्ठ-8 हाशिया)

3. पादरी हावल और पादरी अब्दुल्ला भी सख्त बीमारी रूपी नर्क में गिराए गए। (पृष्ठ 8)

4. जंडियाला का डॉक्टर यूहन्ना जो ईसाइयों का एक विशेष सदस्य था जिसको बिल्कुल

शास्त्रार्थ के बीच में शास्त्रार्थ को प्रकाशित करने का काम सुपुर्द किया गया था, निर्धारित अवधि के अंदर मरा। (अन्वारुल इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 9 पृष्ठ 8)

5. फिर समस्त पादरियों और विशेषकर पादरी इमादुद्दीन को जो अपने आप को मौलवी की उपाधि से सुशोभित करते थे और पवित्र क़ुरआन की सरस्वता एवं सुबोधताओं पर आपत्ति व्यक्त करते थे, बहुत अपमानित हुए जब उन्हें पुस्तक 'नूरुल हक़' के मुक़ाबले में जो आप ने भविष्यवाणी की निर्धारित अवधि के अंदर लिखी थी, रु 5000 इनाम के वादे के साथ पुस्तक लिखने का निमंत्रण दिया गया और मुक़ाबले पर वैसी पुस्तक लिखने में असमर्थ रहने के कारण बहुत अपमानित हुए और रु 5000 लेने की बजाय एक हज़ार लानत उनके हिस्से में आई। (अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ-8,9 भावार्थ)

आथम के सत्य की ओर लौटने के संकेत (प्रमाण)

और आप ने फ़रमाया कि इस इल्हाम के अतिरिक्त कुछ ऐसे संकेत भी मौजूद हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि आथम ने सत्य को स्वीकार कर लिया था-

प्रथम संकेत- भविष्यवाणी सुनते ही आथम के मुख पर एक डरावना प्रभाव प्रकट हो गया था और उसके हावभाव की व्याकुलता उसी समय से दिखाई देने लगी थी फिर वह दिन प्रति दिन बढ़ती गई और आथम के दिल तथा दिमाग पर प्रभाव डालती गई और यहां तक कि जैसा कि अखबार नूर अफ्शां में आथम ने स्वयं प्रकाशित करवाया कि उसको डरावनी शक्लें दिखाई देनी आरंभ हो गई थीं।

और उस भविष्यवाणी को सुनाते समय न केवल आथम पर प्रभाव हुआ बल्कि समस्त ईसाइयों पर हुआ इसलिए उन्होंने अग्रिम योजना के तौर पर उसी क्षण कहना आरंभ कर दिया था कि आथम के मरने की तो एक डॉक्टर ने जानकारी भी दे रखी है कि 6 महीने तक मर जाएगा।

दूसरा संकेत आथम की सत्य की ओर वापसी का वह तीन आक्रमण हैं जो उसके कथन के अनुसार उसकी जान लेने के लिए किए गए। पहला आक्रमण उसने यह वर्णन किया कि उसे एक खूनी सांप दिखाई दिया जो उसके कथनानुसार सिधाया हुआ था जो हमारी जमाअत के कुछ लोगों ने उसे डसने के लिए छोड़ा था। उस सांप

के भयावह रूप से डर कर अत्यंत गर्मी के मौसम में अपनी पत्नी तथा बच्चों की जुदाई बर्दाश्त करके अमृतसर छोड़कर आथम साहब लुधियाना में अपने दामाद के पास शरण लेने के लिए पहुंचे तो वहां कुछ हथियारबंद लोग भालों के साथ उनको दिखाई दिए जो उनके घर की चारदीवारी के अंदर आकर बस निकट ही आ पहुंचे हैं और उसका वध करने के लिए तत्पर हैं।

उनका यह भय तथा व्याकुलता, दिल की पीड़ा तथा परेशानी बढ़ती चली गई और सत्य के रोब ने उन्हें दीवाना सा बना दिया। तब लुधियाना से भी वह भागे और फिरोज़पुर अपने दूसरे दामाद के यहां पहुंचे और भविष्यवाणी की महानता ने उनकी वह हालत बना रखी थी जो ऐसे व्यक्ति की होती है जो विश्वास या धारणा रखता हो कि संभवत: ख़ुदा का अज़ाब आ ही जाएगा। फिरोज़पुर में जैसा कि वह लिखते हैं उन्होंने देखा कि कुछ आदमी तलवारों और भालों के साथ आ पड़े और वह बहुत भयभीत हुए और इस बीच एक शब्द भी इस्लाम के विरुद्ध मुंह से न निकाला। और यह तीनों आक्रमण जैसा कि उन्होंने आरोप लगाया हमारी जमाअत की ओर से नहीं थे, न किसी अहमदी ने कोई सांप सिधा कर आथम साहब को डसने के लिए छोड़ा था और न भालों तथा तलवारों से हथियारबंद व्यक्ति उनके वध करने के लिए भेजे जिन्होंने पुलिस के पहरे की मौजूदगी में आक्रमण के लिए कोठी में प्रवेश किया और सिवाय आथम के और किसी को दिखाई न दिए और न उन्हें किसी ने पकड़ा। और फिर आथम साहब ने बावजूद रिटायर्ड एक्स्ट्रा असिस्टेंट होने के किसी पर मुक़द्दमा भी न किया। यह तीनों आक्रमण वास्तव में इस्लामी भविष्यवाणी के भय का परिणाम थे और यह आक्रमण उनके भयभीत तथा डरे हुए हृदय तथा दिमाग की कल्पनाएं थीं।

अत: इस्लामी भविष्यवाणी का भयावह प्रभाव उसके दिल पर हुआ और उसने अपने दिल की कल्पनाओं और अपने कर्मों और अत्यधिक भय और अपने निराश दिल से इस्लाम की महानता को स्वीकार कर लिया और बहुत डरा और भयभीत हुआ। इसलिए ख़ुदा तआला ने अपनी सुन्नत के अनुकूल उससे वह व्यवहार किया जो डरने वाले दिल से होना चाहिए। सत्य की ओर झुकाव और इस्लामी महानता को अपनी भयभीत अवस्था के साथ स्वीकार करना वास्तव में एक ही बात है। और

यह हालत एक सच्चाई की ओर झुकने की हालत है यद्यपि ऐसा झुकाव परलोक के दंड से नहीं बचा सकता तथापि सांसारिक अज़ाब में कुछ विलंब अवश्य कर देता है। आप अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन तथा बाइबल के उदाहरणों से सिद्ध किया कि इल्हामी भविष्यवाणियों से डरना सच्चाई की ओर झुकाव में सम्मिलित है और सच्चाई की ओर झुकना अज़ाब में विलंब डाल देता है।

तीसरा संकेत आथम का आपनी बात से लौटने का यह है कि इल्हाम ने प्रकट कर दिया है कि वह भविष्यवाणी की शर्त के अनुसार ऐसा सच्चाई की ओर झुका जिसके कारण वह पूर्ण नर्क अर्थात मृत्यु के अज़ाब से बच गया और ऐसा इसलिए भी होना चाहिए था कि आथम की मृत्यु के मामले को विरोधी पक्ष ने पहले संदिग्ध कर दिया था कि आथम के मरने की तो एक डॉक्टर ने सूचना भी दे रखी है कि 6 महीने तक मर जाएगा। कोई कहता भला मरना भी कोई नई बात है? कोई कहता कमज़ोर बुड्ढा है मौत का क्या आश्चर्य, कोई कहता जादू से मार देंगे इसलिए ख़ुदा तआला ने मौत के पहलू को टाल दिया और मिस्टर आथम के दिल पर इस्लाम की महानता का रोब डालकर भविष्यवाणी की शर्त वाले पहलू से उसको हिस्सा दे दिया और वह अल्लाह तआला के अनादि सुन्नत (आदर्श) के अनुसार मौत से बच गया।

चौथा संकेत आथम के सच्चाई की ओर झुकाव का, बावजूद 4000 रुपए इनाम दिए जाने के उसका क़सम खाने से इंकार करना है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आथम को एक रजिस्ट्री पत्र में अपने इल्हाम का वर्णन करके लिखा कि सिवाय ख़ुदा तआला और मेरे और आपके दिल के और किसी को सूचना नहीं। अत: यदि आप हमको सच्चा नहीं समझते तो 3 बार क़सम खाकर साफ कह दो कि यह इल्हाम झूठा है। यदि इल्हाम सच्चा है और मैंने ही झूठ बोला है तो हे सर्वशक्तिमान स्वाभिमानी ख़ुदा मुझको कठोर अज़ाब में ग्रस्त कर और उसी में मुझको मृत्यु दे दे। आप अलैहिस्सलाम ने ऐसी क़सम खाने पर उसके लिए 1000 रुपए इनाम निर्धारित किया। फिर दूसरे विज्ञापन में 2000 रुपए और तीसरे विज्ञापन में 3000 रुपए और चौथे विज्ञापन में 4000 रुपए देने का वादा किया। यदि वह यह क़सम खा जाए कि :

"इस भविष्यवाणी की अवधि में इस्लामी रोब एक पल के लिए भी मेरे

दिल पर नहीं आया और मैं इस्लाम तथा इस्लाम के नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को झूठा समझता रहा और समझता हूं और सच्चाई का विचार तक नहीं आया और हज़रत ईसा के ख़ुदा के बेटे होने और ख़ुदा होने पर विश्वास रखता रहा और रखता हूं और ऐसा ही विश्वास जो प्रोटेस्टेन्ट समुदाय के ईसाई रखते हैं और यदि मैंने वास्तविकता के विरुद्ध कहा है और सच को छुपाया है तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! मुझ पर एक वर्ष में मृत्यु का अज़ाब उतार।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ-6)

फ़िर फ़रमाया -

अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा ठोस एवं निश्चित है जिस के साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल तक़्दीर है और यदि क़सम न खाएं तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे अपराधी को दण्ड के बिना नहीं छोड़ेगा।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ-114)

इसी प्रकार आप ने फ़रमाया -

"यदि क़सम की तिथि से एक वर्ष तक जीवित बचा रहा तो वह रुपया उसका होगा और फिर उसके बाद ये समस्त क़ौमें मुझे जो दण्ड देना चाहें दें। यदि मुझ को तलवार से टुकड़े-टुकड़े करें तो मैं बहाना नहीं करूंगा और यदि संसार के दण्डों में से मुझे वह दण्ड दें जो कठोरतम दण्ड है तो मैं इन्कार नहीं करूंगा और स्वयं मेरे लिए इससे अधिक कोई बदनामी नहीं होगी कि मैं उनकी क़सम के बाद जिसका आधार मेरे ही इल्हाम पर है, झूठा निकलूँ।"

(ज़ियाउल हक़, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ 316-317)

परन्तु आप ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया-

"याद रखो कि वह इस विज्ञापन की ओर मुख नहीं करेगा क्योंकि झूठा है और अपने दिल में भली-भांति जानता है कि वह इस भय से मरने तक पहुंच चुका था... और उसका दिल गवाही देगा कि हमारा इल्हाम सच है यद्यपि वह इस बात को प्रकट न करे, परन्तु उसका दिल इस बयान का सत्यापन करने वाला होगा। लेकिन यदि दुनिया के दिखावे से इस मुक़ाबले के लिए आएगा तो फिर ख़ुदा का अज़ाब पूर्ण रूप से लौटेगा।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-10-11)

फ़िर एक जगह फ़रमाया -

"यदि ईसाई लोग आथम को टुकड़े टुकड़े भी कर दें और फ़िर ज़िबह भी कर डालें तब भी वह क़सम नहीं खाएंगे।"

(अंजाम-ए-आथम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-11 पृष्ठ-3)

और आप ने पूर्ण विश्वास से कहा कि यदि सत्य की ओर झुका है और फ़िर इन्कार किया है तो क़सम खाने के बाद "अवश्य अविलंब और बिना किसी अपवाद (बिना किसी शर्त) के उनको मौत आएगी।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-9 पृष्ठ-66 भावार्थ)

यदि आथम साहब ने झूठी क़सम खा ली तो अवश्य मर जाएंगे।

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द-9 ...)

और फ़रमाया-

"क़सम खाने के बाद ख़ुदा तआला का वादा है कि अटल निर्णय करे अत: क़सम के बाद ऐसे मक्कार का गुप्त रूप से सत्य को मान लेना कदापि स्वीकार नहीं होगा।" (अन्वारुल इस्लाम, पृष्ठ 81)

फिर आप ने पादरियों को क़सम देकर आथम को क़सम खाने के लिए तैयार करने हेतु अपील की और फ़रमाया कि जो अपने बाप की औलाद है और वास्तव में ईसाई धर्म को ही विजयी समझता है उसे चाहिए कि हम से 2000 रुपए ले और आथम साहब से हमारी इच्छा के अनुसार क़सम दिला दे। फिर जो चाहे हमें कहता रहे।

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9, पृष्ठ 86)

परंतु आथम साहब पर किसी की अपील का प्रभाव न हुआ और क़सम खाने के लिए तैयार न हुए।

आथम साहब की आपत्ति (उज़्र)

आथम साहब से जब क़सम की आग्रह पूर्वक मांग की गई तो उन्होंने कहा यदि मुझसे क़सम िखलानी है तो अदालत में मेरी पेशी कराइए अर्थात बिना अदालत

के दबाव के मैं क़सम नहीं खा सकता। मानो उनका ईमान अदालत के दबाव पर आधारित है परंतु जो सच्चाई के इज़हार के लिए क़सम नहीं खाते वे नष्ट किए जाएंगे। (यरमियाह अध्याय- 12 आयत- 16)

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9, पृष्ठ 99)

और उन्होंने कहा कि हमारे धर्म में क़सम खाना वर्जित है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसका विस्तृत उत्तर दिया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जानते थे कि क़सम खाना गवाही की आत्मा है, वह उसको वर्जित घोषित नहीं कर सकते थे। ख़ुदा के क़ानून-ए-कुदरत और इंसान की प्रकृति का नियम और इंसानी कांशंस साक्षी है कि झगड़ों का निपटारा करने के लिए अंतिम सीमा क़सम है। गवर्नमेंट के समस्त अधिकारीगण क़सम उठाते हैं, पितरस, पौलूस और स्वयं मसीह ने क़सम खाई, फरिश्ते भी क़सम खाते हैं, ख़ुदा भी क़सम खाता है, नबियों ने भी क़समें खाईं। आप अलैहिस्सलाम ने यह तमाम बातें बाइबल के प्रमाण सहित लिखीं।

कुछ आरोप लगाने वालों ने कहा कि - हो सकता है एक वर्ष में उन्होंने मर ही जाना हो। आप अलैहिस्सलाम ने इसके उत्तर में फ़रमाया :-

"जबकि यह दो ख़ुदाओं की लड़ाई है। एक सच्चा ख़ुदा जो हमारा ख़ुदा है और एक बनावटी ख़ुदा जो ईसाइयों ने बना लिया है... (यह सन्देह ठीक नहीं कि शायद एक वर्ष में मरना संभव है - लिपिक) परन्तु यदि इसी प्रकार की क़सम किसी सच्चाई की परीक्षा के लिए हम को दी जाए तो हम एक वर्ष क्या दस वर्ष तक जीवित रहने की क़सम खा सकते हैं। क्योंकि जानते हैं कि धार्मिक बहस के समय ख़ुदा तआला अवश्य हमारी सहायता करेगा।" (अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9, पृष्ठ 68-69)

और फ़रमाया -

"मैं जानता हूं कि ख़ुदा तआला मुक़ाबले के समय अवश्य मुझे जीवित रख लेगा (और उस क़सम वाले वर्ष में हम नहीं मरेंगे- लिपिक) क्योंकि हमारा ख़ुदा सर्वशक्तिमान और हय्यो-क़य्यूम (जीवित रहने वाला तथा जीवित रखने वाला) है **असहाय मरियम के बेटे** की तरह नहीं।"

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9, पृष्ठ 113)

फिर आप ने आथम के पत्र जो दिनांक 21 सितम्बर 1894 ई को "नूर अफ़्शां" में प्रकाशित हुआ, के उत्तर में फ़रमाया-

"मैंने ख़ुदा से सच्चा और पवित्र इल्हाम पाकर निश्चित एवं ठोस तौर पर जैसा कि सूर्य दिखाई देता है, मालूम कर लिया है कि आप ने भविष्यवाणी की समयसीमा के अन्दर इस्लामी श्रेष्ठता और सच्चाई का गहरा प्रभाव अपने हृदय पर डाला और इसी आधार पर भविष्यवाणी के घटित होने का रंज-व-ग़म आप के हृदय पर पूर्ण रूप से प्रभावी हुआ। मैं महा तेजस्वी ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि यह बिल्कुल सही है और ख़ुदा तआला के वार्तालाप से मुझे यह सूचना मिली है और पवित्र हस्ती ने यह सूचना दी है और वह इन्सान के हृदय की कल्पनाओं को जानता तथा उसके गुप्त विचारों को देखता है। यदि मैं इस वर्णन में सच्चा नहीं तो ख़ुदा मुझे आप से पहले मृत्यु दे। तो इसी कारण मैंने चाहा कि आप सार्वजनिक सभा में मौत के अज़ाब की ताकीद के साथ क़सम खाएं ऐसे तरीक़े से जो मैं वर्णन कर चुका हूं ताकि मेरा और आपका फ़ैसला हो जाए तथा संसार अंधकार में न रहे। यदि आप चाहेंगे तो मैं भी एक वर्ष या दो वर्ष या तीन वर्ष के लिए क़सम खा लूंगा क्योंकि मैं जानता हूं कि **सच्चा कदापि बरबाद नहीं हो सकता अपितु वही मरेगा जिसको झूठ ने पहले से मार दिया है।** यदि इल्हाम तथा इस्लाम की सच्चाई पर मुझे क़सम दी जाए तो मैं आप से एक पैसा नहीं लेता, परन्तु आप के क़सम खाने के समय **तीन हज़ार के थैले पहले प्रस्तुत किए जाएंगे।"**

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 92,93)

परंतु आथम साहब न क़सम खाने के लिए तैयार हुए और उन्होंने सत्य को प्रकट किया। सत्य को छुपाने की अवस्था में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार-बार उन्हें मौत से भी डराया था। अत: आप ने 'अन्वारुल इस्लाम' में लिखा -

1. "आवश्यक था कि वह पूर्ण अज़ाब (अर्थात मृत्यु) उस समय तक रुकी रहे जब तक वह (अर्थात आथम) बेबाकी और उद्दंडता के द्वारा स्वयं अपने हाथ से अपने लिए तबाही के सामान पैदा करे।"

2. "नर्क का वह बड़ा हिस्सा जो मौत से परिभाषित किया गया है उसमें किसी सीमा तक (आथम साहब को) ढील दी गई है।"

3. "याद रहे कि मिस्टर अब्दुल्ला आथम में पूर्ण अज़ाब (अर्थात मृत्यु - लिपिक) की बुनियादी ईंट रख दी गई है और वह शीघ्र कुछ तहरीकों से प्रकट हो जाएगी।" (अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9, पृष्ठ 10, 11 भावार्थ)

4. 4000 रुपए के इनामी विज्ञापन में लिखा:- "और अभी बस नहीं क्योंकि ख़ुदा तआला वादा करता है कि **मैं बस नहीं करूंगा जब तक अपने शक्तिशाली हाथ को न दिखाऊं और पराजित हुए गिरोह का अपमान सब पर प्रकट न करूं**। हां उसने अपनी उस आदत और सुन्नत के अनुसार जो उसकी पवित्र किताबों में दर्ज है आथम साहिब के बारे में विलम्ब कर दिया क्योंकि अपराधियों के लिए ख़ुदा की किताबों में यह अनादि वादा है जिसे भंग करना वैध नहीं कि भयानक होने की हालत में उनको कुछ छूट (मुहलत) दी जाती है और फिर आग्रह के पश्चात् पकड़े जाते हैं... अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा ठोस एवं निश्चित है जिस के साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल तक़्दीर है। और यदि क़सम न खाएं तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे अपराधी को दण्ड के बिना नहीं छोड़ेगा जिस ने सच को छुपा कर संसार को धोखा देना चाहा। " (अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 114)

5. पुस्तक "ज़ियाउल हक़" में जो मई 1895 ई में प्रकाशित हुई, आप ने फ़रमाया -

"परंतु फिर भी यह अलगाव व्यर्थ है क्योंकि ख़ुदा तआला मुजरिम को बिना दण्ड दिए नहीं छोड़ता। नादान पादरियों का समस्त बड़बोलापन आथम की गर्दन पर है... **आथम इस जुर्म से बरी नहीं है कि उसने सच्चाई को ऐलानिया तौर पर अपनी जीभ से प्रकट नहीं किया।"**

(ज़ियाउल हक़, रूहानी खज़ाइन जिल्द-9 पृष्ठ 269)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय में सात विज्ञापन प्रकाशित किए। अंतिम सातवां विज्ञापन जो आथम साहब से क़सम खाने की मांग के बारे में दिया गया उसकी तिथि 30 दिसंबर 1895 है। इसके बाद आथम साहब का इन्कार अपने चरम को पहुंच गया और उसके बाद हमने प्रचार-प्रसार को छोड़ दिया और ख़ुदा तआला के वादे की प्रतीक्षा करने लगे तो आथम साहब ने इस सातवें विज्ञापन के प्रकाशन के बाद 7 महीने पूरे न किए थे कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार मौत का दंड

देकर उसे नर्क में गिरा दिया जैसे उसने संसार से सच्चाई को छुपाया था ख़ुदा तआला ने उसे दुनिया की नज़रों से धरती के नीचे छुपा दिया। उसकी मौत से विरोधी पक्ष में मातम छा गया बल्कि सुना गया है कि एक ईसाई भोले खान को उसकी मौत की ख़बर से इतना कष्ट हुआ कि उसने कहा निसंदेह अब मेरा जीना कठिन है। अत: दिल पर गंभीर सदमा पहुंचने के कारण वह मर ही गया। इस भविष्यवाणी के पूरा होने से एक तो आंहज़रत सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी पूरी हुई कि महदी के समय ईसाइयों से कुछ शास्त्रार्थ होगा जो बाद में एक बड़े फ़ितने की तरह हो जाएगा। उस समय आसमान से यह आवाज़ आएगी कि सच्चाई महदी के मानने वालों के साथ है और शैतान की ओर से यह आवाज़ सुनाई देगी कि सच्चाई ईसा को मानने वालों के साथ है अर्थात ईसाई सच्चे हैं परंतु आसमानी आवाज़ सही होगी कि सच्चाई महदी के साथ है अर्थात विजय इस्लाम की होगी न कि ईसाइयों की।

इसी प्रकार इस भविष्यवाणी से लगभग 16 साल पूर्व वह इल्हाम जो बराहीन-ए-अहमदिया में प्रकाशित थे पूरे हुए जिनमें ईसाइयों के एक षड्यंत्र का, फिर मुसलमानों तथा ईसाइयों दोनों के मिलकर एक उपद्रव पैदा करने का वर्णन है। (देखिए रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 293)

आथम के मर जाने के बाद भी जब ईसाई तथा उनके समर्थक मौलवी यह कहने से न रुके कि आथम की भविष्यवाणी ग़लत निकली और पूरी नहीं हुई और ईसाइयों की विजय हुई तो आप ने अंजाम आथम में लिखा-

"यदि आथम के बारे में किसी पादरी साहिब या किसी ईसाई को संदेह है और वह समझता है कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तो अनिवार्य है कि वह मुझसे मुबाहला करे।" (अंजाम-ए-आथम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 11 पृष्ठ 32)

और मुसलमान मौलवियों को संबोधित करते हुए "परिशिष्ट अंजाम-ए-आथम" के पृष्ठ 25 में आप ने लिखा -

"मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि यदि कोई मेरे सामने ख़ुदा तआला की क़सम खाकर इस भविष्यवाणी की सच्चाई से इन्कार करे तो ख़ुदा तआला उसको बिना दण्ड दिए नहीं छोड़ेगा। पहले चाहिए कि वह उन समस्त घटनाओं पर सूचना पाए ताकि उसकी

बेख़बरी उसकी सिफारिशी न हो। तत्पश्चात् क़सम खाए कि यह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और झूठी है। फिर यदि वह एक वर्ष तक इस क़सम के वबाल से तबाह न हो जाए और उस पर कोई विलक्षण संकट न आ पड़े तो देखो मैं सबको गवाह बनाकर कहता हूँ कि इस स्थिति में मैं इक़रार करूंगा कि हां मैं झूठा हूँ। यदि अब्दुल हक़ इस बात पर हठ करता है तो वही क़सम खाए और यदि मुहम्मद हुसैन बटालवी इस विचार पर ज़ोर दे रहा है तो वही मैदान में आए। और यदि मौलवी अहमदुल्लाह अमृतसरी या सनाउल्लाह अमृतसरी ऐसा ही समझ रहे हैं तो उन्हीं पर अनिवार्य है कि क़सम खाकर अपना संयम दिखाएं और नि:स्सन्देह स्मरण रखो कि यदि इनमें से किसी ने क़सम खाई कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और ईसाइयों की विजय हुई तो ख़ुदा उसे अपमानित करेगा, मुंह काला करेगा और लानत की मौत से उसे मारेगा, क्योंकि उसने सच्चाई को छुपाना चाहा जो इस्लाम धर्म के लिए ख़ुदा के आदेश और इरादे से पृथ्वी पर प्रकट हुई। परन्तु क्या ये लोग क़सम खा लेंगे? कदापि नहीं, क्योंकि ये झूठे हैं।" (यही पुस्तक पृष्ठ: 285-286 हाशिया)

(अंजाम-ए-आथम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 11 पृष्ठ 308-309 हाशिया)

परंतु न ईसाइयों में से किसी को साहस हुआ कि वह मुबाहिला करे और न मौलवियों में से किसी को क़सम खाने की हिम्मत हुई। इस प्रकार आथम से संबंधित भविष्यवाणी अपनी पूरी शान और शौकत के साथ पूरी हुई। इस पर अल्लाह तआला की भूरि-भूरि प्रशंसा।

और अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आथम के सत्य की ओर झुकने और ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार पूर्ण दंड के विलंबित होने के बारे में जो वह्यी के द्वारा सूचना दी थी उसकी सच्चाई प्रकाशमान दिन के समान प्रकट हो गई। और इस वह्यी का यह भाग :

“وَبِعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعْلٰی وَ نُمَزِّقُ الْاَعْدَآءَ کُلَّ مُمَزَّقٍ وَ مَکْرُ
اُوْلٰٓئِکَ ھُوَ یَبُوْرُ۔ اِنَّا نَکْشِفُ السِّرَّ عَنْ سَاقِہٖ یَوْمَئِذٍ یَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ۔”

(अन्वारुल इस्लाम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 2)

अर्थात- और मुझे मेरे सम्मान और तेज की क़सम है कि तू ही विजई है और हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे अर्थात वे अपमानित होंगे और उनका षड्यंत्र नष्ट हो जाएगा और ख़ुदा तआला रुकेगा नहीं और मानेगा नहीं जब तक शत्रुओं के समस्त षड्यंत्रों की कलई न खोल दे और उनके षड्यंत्र नष्ट न कर दे और हम सच्चाई को नंगा करके रख देंगे। उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा के प्रिय नबी थे

परिशिष्ट अंजाम-ए-आथम में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इंजील के बयानों के आधार पर इलज़ामी रंग में ईसा मसीह के कुछ हालात का वर्णन किया है, जिसका आपके विरोधियों ने विरोध किया है मानो आप ने ख़ुदा के एक प्रिय नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अपमान किया, उदाहरण के लिए, मौलवी मुर्तज़ा हसन साहिब दरभंगी ने अपनी पुस्तक "अशद्दुल अज़ाब" में और मौलवी अहमद अली साहिब ने अपनी पुस्तिका "मुसलमान मिर्ज़ाइयों से क्यों घृणा करते हैं" इसी तरह मौलवी अहमद रज़ा खान साहिब बरेलवी और मौलवी मुहम्मद अली साहिब कानपुरी ने भी यही आपत्ति जताई है। अत: इस आपत्ति का संक्षिप्त उत्तर इसी स्थान पर देना उचित प्रतीत होता है। यह ध्यान देने योग्य है कि अंजाम-ए-आथम की जिन पंक्तियों को उपरोक्त विद्वानों द्वारा आपत्तिजनक माना गया है, उसी के अन्त में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह स्पष्ट किया है:

अन्तत: हम लिखते हैं कि हमें पादरियों के यसू तथा उसके चाल-चलन से कुछ मतलब न था। उन्होंने अकारण हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देकर हमें उकसाया कि उनके यसू का कुछ थोड़ा-सा हाल उन पर प्रकट करें। ... और मुसलमानों को स्पष्ट रहे कि ख़ुदा तआला ने यसू की पवित्र क़ुर्आन में कुछ ख़बर नहीं दी कि वह कौन था। और पादरी इस बात के क़ाइल हैं कि यसू वह व्यक्ति था जिसने ख़ुदाई का दावा किया।

(अंजाम-ए-आथम, रूहानी खज़ाइन जिल्द-11, पृष्ठ 292-293 हाशिया) (हिन्दी अनुवाद, पृष्ठ: 265-266 हाशिया)

और आप ने फ़रमाया:

"अगर पादरी अब अपनी नीति बदलते हैं और वादा करते हैं कि वे भविष्य में हमारे पैगंबर का अपमान नहीं करेंगे, तो हम भी यह वादा करेंगे कि हम भविष्य में उनसे नरम शब्दों में बात करेंगे।" नहीं तो वे जो कुछ कहेंगे उसका जवाब सुनेंगे।" (अंजाम-ए-आथम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 11 पृष्ठ 292 हाशिये का हाशिया)

और फरमाते हैं: "इसलिए हमने अपनी पुस्तकों में हर स्थान पर ईसाइयों का काल्पनिक यसु अभिप्राय लिया है। और ख़ुदा तआला का एक विनम्र बंदा ईसा मसीह जो नबी था जिसका वर्णन पवित्र क़ुरआन में है वह हमारे कठोर संबोधन में कदापि अभिप्राय नहीं। और यह तरीका हमने बराबर 40 वर्ष तक पादरी साहिबों की गालियां सुनकर अपनाया है।

(विज्ञापन 20 दिसंबर 1895 ई, मजमूआ इश्तिहारात जिल्द-1 पृष्ठ 530)

फिर ऐसे आरोप लगाने वाले मौलवियों का वर्णन करके जो ईसाइयों को निर्दोष समझते हैं और कहते हैं कि वे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कोई अपमान नहीं करते, आप फरमाते हैं हमारे पास ऐसे पादरियों की ढेरों किताबें हैं जिन्होंने अपने लेखों को सैकड़ों गालियों से भर दिया है। जिस मौलवी की इच्छा हो वह आकर देख ले। (विज्ञापन 20 दिसंबर 1895 ई, मजमूआ इश्तिहारात जिल्द-1 पृष्ठ 530 विज्ञापन न. 143)

"इसी प्रकार एक विज्ञापन "पाठकों के ध्यान देने योग्य" में आप लिखते हैं इस बात को पाठकगण याद रखें कि ईसाई धर्म के वर्णन के समय हमें इसी शैली से बात करना आवश्यक था जैसे कि वह हमारे मुक़ाबले पर प्रयोग करते हैं। ईसाई लोग वास्तव में हमारे उस ईसा अलैहिस्सलाम को नहीं मानते जो स्वयं को केवल एक बंदा और नबी कहते थे और पहले नबियों को सच्चा समझते थे और आने वाले नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सच्चे दिल से ईमान रखते थे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में भविष्यवाणी की थी बल्कि एक व्यक्ति यशु नामी को मानते हैं जिसका क़ुरआन में वर्णन नहीं। और कहते हैं कि उस व्यक्ति ने ख़ुदाई का दावा किया है और पहले नबियों को बटमार इत्यादि नामों से पुकारता था। यह भी कहते हैं कि यह व्यक्ति हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम का घोर विरोधी था और उसने यह भी भविष्यवाणी की थी कि मेरे बाद सब झूठे ही आएंगे। अत: आप लोग खूब जानते हैं कि पवित्र क़ुरआन ने ऐसे व्यक्ति पर ईमान लाने के लिए हमें शिक्षा नहीं दी बल्कि ऐसे लोगों के बारे में स्पष्ट बता दिया है कि अगर कोई मनुष्य होकर ख़ुदा होने का दावा करे तो हम उसको नर्क में डालेंगे। इसी कारण हमने ईसाइयों के यशु के वर्णन करने के समय इस सम्मान का ध्यान नहीं रखा जो सच्चे आदमी के बारे में रखनी चाहिए..... पाठकों को चाहिए कि हमारे कुछ कठोर शब्दों का पात्र हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को न समझ लें बल्कि वे शब्द उस यशु के बारे में लिखे गए हैं जिसका क़ुरआन और हदीस में नाम और निशान नहीं।" (मजमूआ इश्तिहारात जिल्द-1 पृष्ठ 511)

और पादरी फतेह मसीह को, जिसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अत्यंत अपवित्र आरोप लगाए थे, संबोधित करके फरमाते हैं:

"हम किसी अदालत की ओर मुख नहीं करते और न करेंगे परंतु भविष्य के लिए समझाते हैं कि ऐसी अपवित्र बातों से रुक जाओ और ख़ुदा से डरो जिसकी ओर लौटना है और हज़रत मसीह को भी गालियां मत दो निस्संदेह जो कुछ तुम जनाब पवित्र नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में बुरा कहोगे वही तुम्हारे काल्पनिक मसीह को कहा जाएगा। परंतु हम उस सच्चे मसीह को पवित्र और प्रिय और पाक जानते और मानते हैं जिस ने ना ख़ुदाई का दावा किया न बेटा होने का, और जनाब मुहम्मद मुस्तफा अहमद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आने की सूचना दी और उन पर ईमान लाया।"

(नूरुल क़ुरआन पृष्ठ भाग-2 रूहानी खज़ाइन जिल्द 9 पृष्ठ 395)

और फरमाते हैं:- "हम लोग जिस अवस्था में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला का सच्चा नबी समझते हैं और नेक और ईमानदार मानते हैं तो फिर कैसे हमारी लेखनी से उनकी शान में कठोर शब्द निकल सकते हैं?"

(किताबुल बरिय्या, रूहानी खज़ाइन जिल्द 13 पृष्ठ 119)

6. और फरमाते हैं:- "हम इस बात के लिए भी ख़ुदा तआला की ओर से आदेशित हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला का सच्चा और पवित्र और ईमानदार नबी मानें और उनकी नबूवत पर ईमान लाएं। अत: हमारी किसी पुस्तक

में कोई ऐसा शब्द भी नहीं है जो उनकी पवित्र शान के विपरीत हो और यदि कोई ऐसा समझे तो वह धोखा खाने वाला और झूठा है।"

(अय्यामुस्सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 14 पृष्ठ 228)

और फ़रमाते हैं:

"हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के लिए कोई अनादर का वाक्य मेरे मुंह से नहीं निकला। यह सब विरोधियों का गढ़ा हुआ झूठ है। हां चूंकि वास्तव में कोई ऐसा यसू मसीह नहीं गुज़रा जिसने ख़ुदाई का दावा किया हो और आने वाले नबी ख़ातमुल अंबिया को झूठा ठहराया हो और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को डाकू कहा हो। इसलिए मैंने कष्ट कल्पना के तौर पर उसके बारे में अवश्य वर्णन किया है कि ऐसा मसीह जिसके ये वाक्य हों, सच्चा नहीं हो सकता। परन्तु हमारा मसीह इब्ने मरयम जो स्वयं को बन्दा और रसूल कहलाता है और ख़ातुमल अंबिया का सत्यापनकर्ता है उस पर हम ईमान लाते हैं।" (तिरयाक़ुल क़ुलूब, रूहानी खज़ाइन जिल्द 15 पृष्ठ 305 हाशिया)

क्या कोई न्यायप्रिय उपरोक्त स्पष्टीकरण के बावजूद कह सकता है कि आप ने नाऊज़ु बिल्लाह (हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को गालियां दी हैं और उनका अपमान किया है? और कहने वालों का हमेशा से यह स्वभाव चला आया है कि वे विरोधी पक्ष की स्वीकृत बातों के आधार पर इल्ज़ामी जवाब के तौर पर बात करते हैं हालांकि उनकी अपनी वह आस्था नहीं होती। उदाहरण स्वरूप मैं 'अहले सुन्नत वल जमाअत' के उन दो आलिमों के कथन प्रस्तुत करता हूं जो शास्त्रार्थ की कला में अत्यंत निपुण थे बल्कि अहले सुन्नत के उलेमा के अगुआ माने जाते हैं। उनमें से एक मौलवी आले हसन साहब हैं वह अपनी पुस्तक "इस्तिफसार" में जो कि मौलवी रहमतुल्लाह साहिब क्रानवी मुहाजिर मक्की द्वारा लिखित "इज़ालतुल औहाम" के हाशिया पर छपी है, उसमें लिखते हैं-

1- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का बिना बाप के पैदा होना तो बौद्धिक रूप से संदिग्ध है इसलिए कि हज़रत मरियम युसूफ के विवाह में थीं ज़माने के समकालीन अर्थात यहूदी जो कहते हैं वह तो स्पष्ट है। (पृष्ठ 22)

2- और तनिक अपने गिरेबान में झांक कर देखो कि (अल्लाह की शरण)

हज़रत ईसा की मात्रिक वंशावली में दो स्थान पर तुम स्वयं की व्यभिचार सिद्ध करते हो अर्थात तामार और ओरियाह। (पृष्ठ 73)

3- और इन्हीं से यह बात है कि अधिकतर भविष्यवाणियां बनी इस्राईल के नबियों और हवारियों की ऐसी हैं जैसे स्वप्न या पागलों के बड़बड़ाहट।.. अत: यदि इन्हीं बातों का नाम भविष्यवाणी है तो हर एक आदमी के सपने और हर पागल की बात को हम भविष्यवाणी ठहरा सकते हैं। (पृष्ठ 133)

4- ईसा बिन मरियम की अन्तत: लाचार और दुखी होकर उन्होंने इस संसार से मृत्यु पाई। (पृष्ठ 232)

5- और समस्त बुद्धिमान जानते हैं कि मोजिज़ों में से, विशेषकर मूसा और ईसा के, बहुत से जादू के समान हैं। (पृष्ठ 336)

6- अशइयाह और आर्मियाह और ईसा के द्वारा परोक्ष की बातें बताना नुजूम और रमल से भली भांति निकल सकती हैं बल्कि इससे उत्तम। (पृष्ठ 336)

7- हज़रत ईसा द्वारा मुर्दे जीवित करने के चमत्कार कुछ मदारी लोग भी करते फिरते हैं कि एक आदमी का सर काट डाला उसके बाद सबके सामने धड़ से जोड़ कर कहा: उठ खड़ा हो और वह उठ खड़ा हुआ। और सांप को नेवले से टुकड़े-टुकड़े करवा दिया उसके बाद सब टुकड़े उसके बराबर रखकर बांसुरी बजाई और वह रेंगने लगा और अच्छा भला हो गया और मंत्र से झाड़-फूंक पर भूत को भगा दिया और कुछ बीमारियों से अच्छा करना यह तो सैंकड़ों से होता देखा है। (पृष्ठ- 336)

8- यसू ने कहा...... मेरे लिए कहीं सर रखने की जगह नहीं देखो यह शाइराना अतिशयोक्ति है और केवल दुनिया की तंगी से शिकायत करना अत्यंत घृणित बातें हैं। (पृष्ठ- 349)

9- इन (पादरी साहिबों) का असल धर्म और ईमान यहाँ आकर ठहरा है कि ख़ुदा मरियम के गर्भ में भ्रूण बन कर कई महीनों तक महामारी का खून पीता रहा फिर अलका से मुज़गा (अर्थात जमे हुए खून से मांस का लोथड़ा) बना और मुज़गा से मांस (लोथड़ा से मांस) और उसमें हड्डियाँ बनीं तत्पश्चात योनि द्वार से निकला और हगता-मूतता रहा यहां तक कि जवान होकर अपने बंदे यहया का मुरीद बना

और अन्तत: लानती होकर तीन दिन नर्क में रहा। (पृष्ठ 350-351)

10. अत: मालूम हुआ कि हज़रत ईसा का समस्त बयान (माज़ल्लाह अर्थात हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) झूठ है और करामतें अगर कल्पना के तौर पर हुई भी हों तो वैसी ही होंगी जैसी मसीह दज्जाल की होने वाली। (पृष्ठ-369)

11. यहूदी लोग कहते हैं कि हम में से जो लोग तौरात के विद्वान थे उन्होंने तो हज़रत ईसा से कोई चमत्कार देखा नहीं और कुछ मछुआरों तथा मल्लाहों मूर्खों का क्या भरोसा। जनसामान्य तो तनिक से धोखे में आ जाते हैं (पृष्ठ 371)

12. तीसरी इंजील के आठवें अध्याय के दूसरे तथा तीसरे अध्याय से प्रकट है कि बहुत सी रंडियां अपने माल से हज़रत ईसा की सेवा करती थीं और साथ-साथ घूमा करती थीं। अत: यदि कोई यहूदी दुष्टता पूर्वक और कुधारणा करते हुए यह कहे कि हज़रत ईसा सुंदर नौजवान थे रंडियां उनके साथ केवल दुराचार के लिए रहती थीं इसीलिए हज़रत ईसा ने विवाह न किया और दिखाते यह थे कि मुझे स्त्रियों का शौक नहीं, तो इसका क्या उत्तर होगा? और पहली इंजील के अध्याय 11 के आयत 19 में हज़रत ईसा ने विरोधियों का विचार अपने बारे में स्वीकार करके कहा कि मैं तो बड़ा खाऊं और शराबी हूं। तो इन दोनों बातों के मिलाने से और शराब की मस्तियों के दृष्टिकोण से यदि कोई कुछ कुधारणा न करे तो कम है और शत्रु की दृष्टि में इन बातों से हज़रत ईसा की कैसी शारीरिक विश्राम तथा परिश्रम से बचने की आदत समझी जाती है। (पृष्ठ 390-391)

हज़रत ईसा ने यहूदियों को जो हद से बढ़ कर गालियां दीं तो अत्याचार किया। (पृष्ठ-419)

हमने यह उदाहरणस्वरूप उनकी पुस्तक से कुछ नमूने प्रस्तुत किए हैं और वह अन्त में लिखते हैं :-

ख़ुदावन्द तआला मुझे नबियों के अपमान तथा झुठलाने से सुरक्षित रखे। परन्तु केवल पादरी साहिबों के आरोप के लिए नक़ल करता हूँ। (इस्तिफसार पृष्ठ 419-420)

अब कुछ उद्धरण स्वर्गीय मौलवी रहमतुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की की पुस्तक "इज़ालतुल औहाम" से प्रस्तुत किए जाते हैं। फ़रमाते हैं:-

۱۔ ”معجزات موسویہ مثل عصا وغیرہ ...... معجزہ ندانند زیرا کہ مثل آنہا ساحراں ہم کردہ بودند۔ اکثر معجزات عیسویہ را معجزات ندا نند زیرا کہ مثل آنہا ساحراں ہم میسازند۔ ویہود آنجناب را چون نبی نے دا نند و ہمچو معجزات ساحر میگویند۔“ (صفحہ ۱۲۹)

अनुवाद : 1- वे लोग मुसा के चमत्कारों जैसे लाठी आदि को नहीं जानते, क्योंकि ऐसे ही चमत्कार जादूगरों ने भी दिखाए थे। ईसा मसीह के अधिकांश चमत्कारों को चमत्कार नहीं कहा जाता क्योंकि ऐसे चमत्कार जादूगर भी दिखाते हैं और यहूदी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबी की तरह नहीं जानते थे और जादूगरों के चमत्कारों जैसा (उनके चमत्कारों को) कहते हैं। (पृष्ठ-129) (अनुवादक)

۲۔ ”جناب مسیح اقرار میفرمایند کہ یحییٰ نہ نان میخورانیدند نہ شراب می آشامیدند وآنجناب شراب ہم مے نوشیدند و یحییٰ در بیابان مے ماندند و ہمراہ جناب مسیح بسیار زنان ہمراہ مے گشتند و مال خود را مے خورا نیدند۔ و زنانِ فاحشہ پائہا آنجناب را بوسیدند و آنجناب مرتا مریم را دوست میداشتند و خود شراب برائے نوشیدند و دیگر کساں عطا مے فرمودند“ (صفحہ ۳۷۰)

2. हज़रत मसीह कबूल करते हैं कि याह्या को न तो रोटी दी गई और न ही शराब दी गई, बल्कि वह शराब पीते थे और याह्या जंगल में रहते थे और प्रभु यीशु के साथ कई महिलाओं के साथ घूमते थे और उन्होंने आपको अपना माल खिलाया और वेश्याओं ने उनके पैर चूमे। और वे मार्ता मरियम से प्रेम रखते थे, और उन्होंने खुद उसके लिए शराब पी और दूसरों को भी पिलाई। (पृ.-370) (अनुवादक)

۳۔ ”و نیز وقتیکہ یہودا فرزند سعادتمند شاں از زوجۂ پسر خود زنا کرد و حاملہ گشت وفارص را کہ از آباء و اجداد و سلیمان و عیسیٰ علیہما السلام بود زائید ہیچ کس را از ینہا سزائے ندادند“ (یعنی یعقوب) (صفحہ ۴۰۵)

3. "इसके अलावा, जब उसके धन्य पुत्र यहूदा ने अपने बेटे की पत्नी के साथ व्यभिचार किया और वह गर्भवती हो गई और फारस को जन्म दिया जो यीशु और सुलैमान के पूर्वज थे, तो उन्होंने उनमें से किसी को भी दंडित नहीं किया। (पृष्ठ 405) (अनुवादक)

इस पुस्तक में ऐसी बातें अधिकता से पाई जाती हैं। और उन्होंने इल्ज़ामी जवाब (ऐतराज़ करने वाले के ऐतराज़ को दूर करने के बजाय उस पर वैसा ही ऐतराज़ कर

देना जैसा उसने किया है।) देने का उद्देश्य यह लिखा है:-

”و ادب تقاضا نمیکرد کہ بر پیشینگوئی جناب مسیح حرفے بر زبان قلم آید مگر چونکہ علمائے مسیحیہ پیشینگوئیہا جناب سید الانس و الجانّ چشم انصاف بستہ باعتراض پیش مے آئند ازیں جہت بطور الزامے و محض برائے آگاہی ایں فرقہ بر پیشینگوئیہا مندرجہ عہد جدید چیزے آشنائے زبان قلم مے گردد تا ایں فرقہ را اطلاع شود کہ مخالف را بحسب رائے خود اگر از انصاف چشم بندد راہیست وسیع۔“ (صفحہ ۳۴۸)

अनुवाद- और अदब का तक़ाज़ा ये नहीं था कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम की पेशगोइयों के बारे में एक लफ़्ज़ भी लिखा जाये, मगर सिर्फ इसलिए कि ईसाई उलमा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के बारे में इन्साफ़ की आँख बंद कर ली है और ऐतराज़ों को सामने लाते हैं, इस नुक़्ता-ए-नज़र से ये इल्ज़ामी जवाब और विशेष रूप से इस फ़िर्क़ा को इन पेशगोइयों के बारे में आगाही के लिए जो अह्दनामा जदीद में दर्ज हैं, ताकि इस फ़िर्क़ा को इत्तिला दी जा सके कि मुख़ालिफ़ को अपनी राय के मुताबिक़, अगर वो इन्साफ़ को छोड़ दे तो उस के लिए जवाब का एक व्यापक रास्ता खुल जाये। (पृष्ठ- 348) (अनुवादक)

अब इंसाफ करना चाहिए कि यदि उपरोक्त प्रसिद्ध उलमा पर इन कथनों के बावजूद जो उन्होंने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में लिखे हैं, मसीह अलैहिस्सलाम के अपमान और तिरस्कार का आरोप नहीं लगाया जाता और उनकी आपत्ति कि यह उत्तर इलज़ामी तौर पर दिए गए हैं स्वीकार है, तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए यही कथन मसीह के तिरस्कार का कारण क्यों क़रार दिए जाते हैं? हालांकि आप ने तो इतनी सावधानी बरती है कि जिसके बाद कोई बुद्धिमान व्यक्ति जो पक्षपात से खाली हो भ्रम भी नहीं कर सकता कि आप ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का अपमान किया है।

अत: आप अलैहिस्सलाम ने अपनी बहुत सी पुस्तकों में यह लिखा है कि आप हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के समरूप हैं और एक दूसरे से ऐसे समान और एकरूप हैं मानो एक ही जोहर के दो अंग हैं, तो फिर आप अलैहिस्सलाम अपने समरूप और हमनाम का कैसे अपमान कर सकते थे? अत: आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:-

"मूसा के धर्म में इब्ने मरियम मसीह मौऊद था और मोहम्मदी धर्म में मैं मसीह मौऊद हूं। अत: मैं उसका सम्मान करता हूं जिसका हमनाम हूँ और उपद्रवी तथा झूठ कहने वाला है वह व्यक्ति जो मुझे कहता है कि मैं मसीह का सम्मान नहीं करता।" (कश्ती नूह, रूहानी खज़ाइन जिल्द 19 पृष्ठ 17-18)

और फ़रमाते हैं :-

"और याद रहे कि हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की इज़्ज़त करते हैं और उनको ख़ुदा तआला का नबी समझते हैं और हम इन यहूदियों के उन आरोपों के विरोधी हैं जो आजकल प्रकाशित हुए हैं मगर हमें ये दिखलाना मंजूर है कि जिस तरह यहूदी केवल पक्षपात से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम और उन की इंजील पर हमले करते हैं ऐसे ही हमले ईसाई क़ुरआन शरीफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर करते हैं। ईसाइयों के लिए यह उचित न था कि वे इस बुराई में यहूदियों का अनुसरण करते।"

(चश्म-ए-मसीही, रूहानी खज़ाइन जिल्द 20 पृष्ठ 336-337)

फिर आप ने दो मसीहों का वर्णन बार-बार किया है एक के लिए "हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम" "सच्चा मसीह" और "ईसा अलैहिस्सलाम" और "ईसा इब्ने मरियम जिनका वर्णन पवित्र क़ुरआन में है" के शब्द लिखे हैं और दूसरे मसीह के लिए "काल्पनिक मसीह" "तुम्हारे काल्पनिक मसीह" "काल्पनिक ख़ुदा" और "एक व्यक्ति यशु नामक" वह यसू जिसका वर्णन पवित्र क़ुरआन में नहीं" "ईसाइयों का काल्पनिक यशू" और "पादरियों के यसू" के शब्द लिखे हैं और समस्त बड़े-बड़े उलमा इसी शैली में बात करते चले आए हैं कि विपक्षी की झूठी आस्था के अनुसार उसके बुज़ुर्ग को अनुमान करके कभी-कभी बात की जाती है। अत: सब जानते हैं कि हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हु सुन्नियों तथा शीओं के एक ही हैं परंतु मौलाना जामी एक हिकायत (दिलचस्प वृत्तान्त) लिखते हैं कि एक शीया ने एक सुन्नी विद्वान से पूछा कि अली के बारे में बताओ तो उसने पूछा कौन सा अली? वह अली जिस पर तू आस्था रखता है या वह अली जिस पर मैं आस्था रखता हूं? तो उसके इस उत्तर पर कि मैं तो केवल एक ही अली को जानता हूं उस विद्वान ने दोनों के अली

की विभिन्न विशेषताएं वर्णन कीं।

(देखो सिलसिलतुज़्ज़हब बर हाशिया नफ़हातुल इन्स, प्रकाशित नवलकिशोर, कानपुर, पृष्ठ 102-104)

इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अंजाम-ए-आथम में लिखा है :-

"स्मरण रहे कि यह हमारी राय उस यसू के बारे में है **जिसने ख़ुदाई का दावा** किया और नबियों को चोर और बटमार कहा और ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा कि मेरे बाद झूठे नबी आएंगे। ऐसे **यसू का क़ुर्आन में कहीं वर्णन नहीं।**"

(अंजाम-ए-आथम, रूहानी खज़ाइन जिल्द 11, पृष्ठ 13)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट जैसा कि ऊपर उद्धरण वर्णन किए जा चुके हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला के सच्चे और प्रिय नबी और रसूल थे और आप अलैहिस्सलाम उनके नबी और रसूल होने पर वैसे ही ईमान रखते थे जैसा कि अन्य दूसरे रसूलों पर और आप ने उनके बारे में कोई अपमान तथा तिरस्कार का शब्द नहीं लिखा और न ऐसा कर सकते थे क्योंकि आप उनके हमनाम और समरूप होने के दावेदार थे।

विनीत

जलालुद्दीन शम्स

रमज़ानुल मुबारक 1382 हिजरी, अनुसार फरवरी 1963 ई

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू-व-नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ख़ुदा का मारा कभी नहीं बचता
ख़ुदा की क़सम से इन्कार करने वाला मिटा दिया जाएगा

(यरमियाह अध्याय- 12, आयत- 17 का भावार्थ)

चूँकि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहब का 27 जुलाई सन् 1896 ई. को फिरोज़पुर में देहान्त हो गया है। इसलिए हम हितकारी समझते हैं कि लोगों को वे भविष्यवाणियाँ पुन: याद करा दें जिनमें लिखा था कि आथम साहब यदि क़सम नहीं खाएँगे तो इस इन्कार से जो उनका मूल उद्देश्य है अर्थात् 'शेष बची आयु से एक पर्याप्त भाग पाना' यह उनको कदापि प्राप्त नहीं होगा। बल्कि इन्कार के बाद जो उनकी धृष्टता का लक्षण है इस संसार से शीघ्र ही उठाए जाएँगे। अत: ऐसा ही हुआ। अभी हमारे इश्तिहार 30 दिसम्बर 1895 ई. को सात महीने नहीं गुज़रे थे कि वह इस संसार से गुज़र गए और वे भविष्यवाणियाँ जो कि उनकी इस मृत्यु को सिद्ध करती हैं और पहले इश्तिहारों में लिखी हैं ये हैं:-

प्रथम- अवश्य था कि वह पूर्ण अज़ाब (अर्थात् मृत्यु) उस समय तक थमा रहे जब तक कि वह (अर्थात् आथम) धृष्टता और गुस्ताख़ी से अपने हाथ से अपने लिए मौत के सामान पैदा करे।

(देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-4)

द्वितीय- वह बड़ा हाविय: जो मौत से अभिप्राय लिया गया है उसमें (आथम साहिब को) कुछ ढील दी गई है (अर्थात् थोड़ी सी मोहलत के बाद फिर मौत आएगी)।

(देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-6)

तृतीय- और स्मरण रहे कि मिस्टर अब्दुल्लाह आथम में पूर्ण अज़ाब (अर्थात् मौत) की बुनियादी ईंट रख दी गई है और वह शीघ्र ही कुछ तहरीकों

(अभियानों) से प्रकट हो जाएगी। ख़ुदा तआला के समस्त कार्य संतुलन और दया से हैं और वैर रखने वाले इन्सान की तरह अकारण जल्दबाज़ नहीं।

(देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ- 10)

चतुर्थ- हमारे इस लेख से कोई यह न सोचे कि जो होना था वह सब हो चुका और आगे कुछ नहीं। क्योंकि भविष्य के लिए इल्हाम में ये ख़ुशख़बरियाँ हैं कि نُمَزِّقُ الْاَعْدَاء كُلّ ممزّقٍ हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अर्थात् अपनी हुज्जत उन पर पूर्णरूप से पूरी कर देंगे।

(देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ- 15)

पंचम- अब यदि आथम साहिब क़सम खा लें तो एक वर्ष का वादा अटल और निश्चित है जिसके साथ कोई भी शर्त नहीं और अटल तक़दीर है और यदि क़सम न खाएँ तो फिर भी ख़ुदा तआला ऐसे अपराधी को दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ेगा जिसने सच को छुपाकर संसार को धोखा देना चाहा। और वे दिन निकट हैं दूर नहीं अर्थात् उसकी मौत के दिन।

(देखो इश्तिहार इनामी चार हज़ार रुपया पृष्ठ- 61)

षष्ठम- परन्तु फिर भी आथम का अलग होना (अर्थात् क़सम से इन्कार करना) बेफ़ायदा है क्योंकि ख़ुदा तआला अपराधी को दण्ड दिए बिना नहीं छोड़ता। नासमझ पादरियों की समस्त बकवास आथम की गर्दन पर है। यद्यपि आथम ने नालिश और क़सम खाने से पहलू बचाते हुए अपने इस आचरण से स्पष्ट बता दिया कि उसने सच की ओर अवश्य रुजू किया है और तीन आक्रमणों के घटित होने के ढंग से भी जिन का वह दावेदार था खुले तौर पर बता दिया कि वे आक्रमण मनुष्य के आक्रमण नहीं थे। परन्तु फिर भी आथम उस अपराध से बरी नहीं है कि उसने सच को घोषणा के तौर पर ज़ुबान से व्यक्त नहीं किया।

(देखो पुस्तक ज़ियाउल हक़ मई 1895 ई. में प्रकाशित पृष्ठ- 16)

इसी प्रकार उन पुस्तकों तथा विज्ञापनों के अन्य स्थानों में बार-बार लिखा गया है कि मृत्यु में केवल छूट (मोहलत) दी गई है और वह बहरहाल इन्कार पर जमे रहने की हालत में आथम साहिब को पकड़ लेगी। अत: हमारा अन्तिम

विज्ञापन जो आथम साहिब के क़सम खाने के लिए दिया गया उसकी तारीख़ 30 दिसम्बर 1895 ई. है। तत्पश्चात् आथम साहिब का इन्कार चरमसीमा को पहुँच गया। क्योंकि उन्होंने हमारे इतने विज्ञापनों के बावजूद कि एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा निकला यहाँ तक कि सात विज्ञापन दिए गए, परन्तु फिर भी उन्होंने वह गवाही जो उन पर अनिवार्य थी अदा नहीं की। इसलिए उनको ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी के प्रभाव से ख़ाली न छोड़ा। अतएव सात विज्ञापनों पर सात बार इन्कार करने अन्ततः सातवें विज्ञापन से सात महीने के बाद★ उन पर मौत आ गई और वह नर्क के अज़ाब से पहले भी मुक्तिप्राप्त न थे। उस समय से कि जब उनको भविष्यवाणी सुनाई गयी इस समय तक कि उनके प्राण निकल गये ख़ुदा के प्रकोप की अग्नि उनको हर समय जला रही थी। तथा एक भय और कष्ट तथा बेचैनी उनके साथ संलग्न हो गयी थी। तो निःसन्देह कि वह भविष्यवाणी के समय से ख़ुदा के अज़ाब में पकड़े गये जैसे कोई विकट रोग में पकड़ा जाता है और उनका आराम तथा ख़ुशी सब जाती रही। अतः अल्हम्दुलिल्लाह कि जब आथम साहिब ने अपने सच की ओर लौटने से सात बार इन्कार किया तो ख़ुदा ने उस झूठ बोलने के दण्ड में उनको शीघ्र पकड़ लिया।

दर्शकगण स्मरण रखें कि अन्तिम सन्देश आथम साहिब को क़सम खाने के लिए पहुँचाया गया वह 30 दिसम्बर 1895 ई. का विज्ञापन था। उसमें यह स्वाभिमान को जगाने वाले शब्द भी थे कि यदि आथम को ईसाई लोग टुकड़े-टुकड़े भी कर

★हाशिया :- निःसन्देह आथम के मित्रों को उसकी मृत्यु का बहुत ही शोक हुआ होगा, अपितु हमने सुना है कि एक ईसाई भोलेखान नामक उसकी मृत्यु के शोक से मर ही गया तथा उसको आथम की अकस्मात् मृत्यु ने ऐसे दर्द से पकड़ा कि उसने स्वयं कह दिया कि निःसन्देह अब मेरा जीवित रहना कठिन है। अतः बड़ा आघात पहुँचने के कारण वह मर ही गया और फिर यहूदियों ने अपने झूठ की पुरानी आदत के कारण उसकी मृत्यु को उसका चमत्कार बना लिया। अच्छा हो कि इस प्रकार का चमत्कार दूसरे दुष्ट पादरियों से भी प्रकट हो ताकि "खस कम जहाँ पाक" अर्थात् कूड़ा कम होगा तो संसार पवित्र हो जाएगा की कहावत चरितार्थ हो। इसी से

दें और ज़िबह भी कर डालें तब भी वह क़सम नहीं खाएँगे। तो चूँकि आथम ने सच्ची क़सम से मुँह फेरा और न चाहा कि सच प्रकट हो। अत: जैसा कि उसने सच को छुपाया ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार उसके अस्तित्व को उसके सहपंथी लोगों की नज़र से छुपा लिया और जैसा कि उसने वादा किया था वैसा ही प्रकटन में आया। 30 दिसम्बर 1895 ई. तक हमारी ओर से उसको तब्लीग़ होती रही कि शायद वह ख़ुदा तआला से भयभीत होकर सच्ची गवाही दे। फिर हमने तब्लीग़ को छोड़ दिया और ख़ुदा तआला के वादे की प्रतीक्षा में लगे। तो आथम साहिब ने 30 दिसम्बर 1895 ई. में से अभी सात महीने पूरे न किए थे कि क़ब्र में जा पड़े।

ये ख़ुदा तआला के काम हैं जिसे लोग इबरत (सीख) की दृष्टि से नहीं देखते, बल्कि जिनके दिल कठोर और आँखें अन्धी हैं वे चाहते हैं कि किसी प्रकार ख़ुदा तआला के निशानों को छुपा दें। अत: पत्रिका कश्फुल हक़ाइक़ बम्बई 1 अगस्त 1896 ई. जो हुसामुद्दीन ईसाई की ओर से निकलता है उसमें उसी पुरानी आदत झूठ की गन्दगी खाने के कारण कुछ पंक्तियाँ पृष्ठ- 108 कथित पत्रिका में लिखी हैं जो उचित समझकर नीचे उनका उत्तर दिया जाता है।

उसका कथन- हमने सुना है कि जंगे मुक़द्दस बहुत पवित्र और उत्तम पुस्तक है उसमें क़ादियानी साहिब के अवैध विचारों का छिद्रान्वेषण आथम साहिब ने बड़ी सभ्यतापूर्वक किया है।

मेरा कथन- नि:सन्देह इतना तो मैं भी मानता हूँ कि जंगे मुक़द्दस का वास्तविक नक़्शा उन लोगों के लिए नि:सन्देह लाभप्रद है जो अपने अन्दर विचार और इन्साफ़ का तत्व रखते हैं। परन्तु जो मुर्दों के पुजारी हैं और मुर्दे की उपासना की आदत उनके स्वभाव का अंग हो गई है उनको लाभप्रद नहीं, क्योंकि वे आँखें रखते हुए नहीं देखते और कान रखते हुए नहीं सुनते और दिल रखते हुए नहीं समझते।

स्पष्ट है कि जंगे मुक़द्दस के मुबाहसे (शास्त्रार्थ) में ईसाइयों से बड़ी भारी माँग यह थी कि वे इब्नि मरयम की ख़ुदाई तर्कसंगत तथा पुस्तकीय प्रमाणों से

सिद्ध करें। तो बुद्धि तो दूर से ऐसी आस्था का इन्कार करती थी इसलिए उन्होंने बुद्धि का नाम ही नहीं लिया। क्योंकि बुद्धि इस्लामी एकेश्वरवाद तक ही गवाही देती है। इसीलिए समस्त ईसाई इस बात को मानते हैं कि यदि एक समूह ऐसे किसी द्वीप का रहने वाला हो जिसके पास न क़ुर्आन पहुँचा हो और न इंजील और न इस्लामी एकेश्वरवाद पहुँचा हो और न ईसाइयों की तस्लीस तो उनसे केवल इस्लामी एकेश्वरवाद की पकड़ होगी, जैसा कि पादरी फण्डल ने मीज़ानुल हक़ में यह स्पष्ट इक़रार किया है। तो लानत है ऐसे धर्म पर जिसके मुख्य सिद्धान्त की सच्चाई पर बुद्धि गवाही नहीं देती। यदि मनुष्य की अन्तरात्मा और ख़ुदा की दी हुई बुद्धि में तस्लीस की आवश्यकता स्वाभाविक तौर पर केन्द्रित होती तो ऐसे लोगों से भी तस्लीस की अवश्य पकड़ होती, जिन तक तस्लीस (तीन ख़ुदाओं की आस्था) का मामला नहीं पहुँचा। हालाँकि ईसाई आस्था में सबकी सहमति से यह बात सम्मिलित है कि जिन लोगों तक तस्लीस की शिक्षा नहीं पहुँची उनसे केवल ऐकेश्वरवाद की पकड़ होगी। इससे स्पष्ट है कि ऐकेश्वरवाद ही वह चीज़ है जिसके चिन्ह मनुष्य की प्रकृति में केन्द्रित हैं।

शेष रही यसू की ख़ुदाई को पुस्तकीय प्रमाणों से सिद्ध करना तो जंगे मुक़द्दस में मक़्तूल आथम हरगिज़ सिद्ध न कर सका कि यही शिक्षा जो इन्जील के सन्दर्भ (हवाले) से अब प्रकट की जाती है मूसा की तौरात में मौजूद है। स्पष्ट है कि यदि बाप, बेटे और रूहुलक़ुदुस की शिक्षा जो दूसरे शब्दों में तस्लीस कहलाती है बनी इस्राईल को दी जाती तो कोई कारण न था कि वे सब के सब उसको भूल जाते। जिस शिक्षा को मूसा ने छ:सात लाख यहूदियों के सामने वर्णन किया था और उसे कंठस्थ रखने के लिए बार-बार बल दिया था और फिर ईसाइयों के विचारानुसार ख़ुदा के समस्त नबी निरन्तर यसू के युग तक उस शिक्षा को जीवित करते आए, ऐसी शिक्षा यहूदियों को कैसे भूल सकती थी?

क्या यह बात एक अन्वेषक को आश्चर्य में नहीं डालती कि वह शिक्षा जो लाखों यहूदियों को दी गयी थी और ख़ुदा के नबियों के माध्यम से प्रत्येक शताब्दी में ताज़ा की गयी थी उसे यहूदियों के समस्त फ़िर्क़ों ने भुला दिया हो।

हालाँकि यहूदी अपनी पुस्तकों में स्पष्ट गवाही देते हैं कि ऐसी शिक्षा हमें कभी नहीं मिली और हमें मानना पड़ता है कि यहूदी इस बात में अवश्य सच्चे हैं। क्योंकि यदि कमी करते हुए यह भी मान लें कि केवल यसू के युग तक यहूदियों में तस्लीस की शिक्षा पर अमल था तब भी यह मानना स्पष्ट तौर पर मिथ्या ठहरता है। क्योंकि यदि ऐसा अमल होता तो अवश्य उसके लक्षण यहूदियों की पुस्तकों में शेष रह जाते तथा असम्भव था कि यहूदी सहसा उस शिक्षा से मुख फेर लेते तो व्यावहारिक तौर उनमें बराबर चली आयी थी और यदि किसी भविष्यवाणी में यहूदियों को सूचना दी जाती कि एक ख़ुदा भी स्त्री के पेट से पैदा होने वाला है तो भविष्यवाणी के ऐसे अर्थ से जो नबियों के द्वारा सबक़ (पाठ) के तौर पर उनको मिला था हरगिज़ इन्कार न करते। हाँ यह सम्भव था यह बहाना प्रस्तुत करते कि एक ख़ुदा एक स्त्री के पेट में से निकलने वाला तो अवश्य है परन्तु वह ख़ुदा इब्नि मरयम नहीं बल्कि वह किसी दूसरे समय में आएगा। हालाँकि ऐसी आस्था पर यहूदी हज़ार लानत भेजते हैं।

तो मैं पूछता हूँ कि जंगे मुक़द्दस में आथम ने इन बातों का क्या उत्तर दिया है। क्या यहूदियों की गवाही से सिद्ध किया कि नबियों से यही शिक्षा उनको मिली थी या नबियों के माध्यम से भविष्यवाणियों के जो अर्थ समझाये गए थे वे अर्थ यही हैं। सच है कि आथम और उसके सहपंथियों ने बाइबल में से कुछ भविष्यवाणियाँ प्रस्तुत की थीं परन्तु वे हरगिज़ सिद्ध न कर सके कि यहूदी जो तौरात के वारिस हैं वे यही अर्थ करते हैं, केवल तुच्छ तावीलें प्रस्तुत कीं, परन्तु स्पष्ट है कि स्वयं निर्मित तावीलों से ऐसा बड़ा दावा जो अक़्ल और नक़्ल के विरुद्ध है सिद्ध नहीं हो सकता।

उदाहरणत: यह लिखना कि "अम्मानवायल नाम रखना" यह यसू के पक्ष में भविष्यवाणी है। हालाँकि यहूदियों ने बड़ी सफ़ाई से सिद्ध कर दिया है कि यसू के जन्म से बहुत पहले यह भविष्यवाणी एक और लड़के के पक्ष में पूरी हो चुकी है।

फिर उदाहरणतया यह कहना उलूहीम का शब्द जो बहुवचन है तस्लीस

को बताता है। हालाँकि यहूदियों ने बहुत खुले तौर पर सिद्ध कर दिया है कि उलूहीम का शब्द तौरात में फ़रिश्ते पर भी बोला गया है और उनके नबी पर भी तथा बादशाह पर भी। और उलूहीम शब्द से केवल तीन व्यक्ति ही अभिप्राय लिए जाते हैं क्योंकि बहुवचन का शब्द तीन से अधिक सैकड़ों हज़ारों पर भी दलालत करता है। तो इन निरर्थक तावीलों से अपने दोष प्रकट कराने के अतिरिक्त आथम के लिए और क्या परिणाम निकला था। परन्तु ईसाई भी विचित्र क़ौम है कि इतने अपमान सहन करके फिर भी शर्मिन्दा नहीं होती।

उसका कथन- क़ादियानी साहिब नियमानुसार मुबाहसे में सफल नहीं हुए तो उन्होंने आथम साहिब के मरने की भविष्यवाणी की, परन्तु वह भी निर्धारित समय पर पूरी नहीं हुई।

मेरा कथन- मुबाहसे का नमूना तो मैंने कुछ भी बता दिया और फिर भी इन्कार करते रहना उन लोगों का काम है जो झूठ से प्रेम रखते हैं। रहा यह कि आथम निर्धारित तिथि पर नहीं मरा बल्कि उसके बाद मरा। यह ईसाइयों की मूर्खता है जो ऐसा समझते हैं। क्या भविष्यवाणी में यह शर्त न थी कि आथम इस हालत में हाविय: में गिरेगा कि जब सच की ओर न लौटे।★ अब थोड़ा दिल को थाम कर और आंखों को खोलकर सोचो और विचार करो कि आथम

★**हाशिया :-** इस बात के लिए हमारे हाथ में बड़े ज़बरदस्त तर्क हैं कि आथम की यह मृत्यु कोई साधारण बात नहीं। आथम की आयु लगभग मेरे बराबर थी और मैं तो अधिकतर रोगों के लगे रहने से बीमार रहता हूँ तथा सर दर्द का रोग मुझे तीस वर्ष से है। परन्तु आथम एक पले हुए बैल की तरह मोटा था और दिन रात शराब पीने तथा उत्तम भोजन खाने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं था। तो उसकी मौत वास्तव में उन्हीं भविष्यवाणियों का प्रकटन है जो निश्चित तौर पर उसके लिए की गईं थीं।

और भविष्यवाणियों के अतिरिक्त जिनका अपने समय पर पूरा होना आवश्यक था यह भी अन्वारुल इस्लाम तथा अन्य विज्ञापनों में बार-बार लिख चुके हैं कि यह सदैव से ख़ुदा की सुन्नत (नियम) है कि जो व्यक्ति भय की हालत में लौट कर और फिर अमन पा कर उद्दण्ड हो जाए तो ख़ुदा उसको थोड़ी मुहलत देकर फिर पकड़ लेता है। जैसा कि वह स्वयं फ़रमाता है-

ने अपने कथनों से, अपने कार्यों से, अपनी विनम्रता से, अपने झूठे दावों से इस बात को कैसे सिद्ध कर दिया कि वास्तव में भविष्यवाणी की श्रेष्ठता ने उसके दिल पर प्रभाव किया तथा वास्तव में वह भविष्यवाणी के दौर में असाधारण तौर पर बहुत ही डरा और भय के साक्षात रूप उसकी आंखों के सामने बार-बार आए जो प्रकृति के नियम के अनुसार उन लोगों को दिखाई दिया करते हैं जो **अत्यधिक डरते हैं।**

उदाहरणतया उसने अमृतसर के स्थान में सांप देखा कि जैसा वह हमारे इशारे से उस पर आक्रमण करता है। और लुधियाना के स्थान पर भालों वाले

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآىِٕدُوْنَ ﴿۱۶﴾ (अद्दुख़ान-16)

अर्थात् हम -- के बाद कुछ थोड़ी अवधि तक अज़ाब को रोके रखेंगे और फिर पकड़ लेंगे और थोड़ी अवधि इसलिए कि फिर तुम इन्कार की ओर रुजू करोगे (अर्थात् लौटोगे) तो ऐसा ही हुआ।

यह बात मुसलमानों को भी याद रखने योग्य है कि यद्यपि एक व्यक्ति का अंजाम ख़ुदा तआला के ज्ञान में कुफ्र हो परन्तु सदैव से ख़ुदा का नियम यही है कि उसके विनय और भय के समय अज़ाब को दूसरे समय पर डाल कर दिया जाता है। इसी कारण से अहले सुन्नत की आस्था है कि अज़ाब के वादे में ख़ुदा के अज़ाब के इरादे में विलम्ब वैध है परन्तु ख़ुशख़बरी में वैध नहीं। जैसा कि यूनुस की क़ौम के अज़ाब के वादे में अज़ाब के आने की अटल तिथि बिना किसी शर्त के बता कर फिर उस क़ौम के विनय पर वह अज़ाब स्थगित रखा गया, और पवित्र क़ुर्आन तथा तौरात की सहमति से यह भी सिद्ध है कि फिरऔन के ईमान के वादे पर ख़ुदा तआला अज़ाब को बार-बार उससे टालता रहा। हालांकि जानता था कि फ़िरऔन का अन्त कुफ्र पर है। परन्तु इस बात का रहस्य क्या है कि अज़ाब के वादे में अज़ाब के इरादे में कभी विलम्ब क्यों तथा किस कारण से हो जाता है। हालांकि प्रत्यक्ष रूप से अज़ाब के वादे में भी विलम्ब झूठ की गंध है।

इसका उत्तर यह है कि किसी को दण्ड देना वास्तव में ख़ुदा तआला के व्यक्तिगत इरादे में सम्मिलित नहीं है। उसके गुणवाचक नाम जो समस्त गुणवाचक नामों के सबसे मुख्य सिद्धान्त हैं **चार** हैं और चारों दानशीलता तथा कृपा पर आधारित हैं। अर्थात् वही नाम जो सूरह फ़ातिहा की पहली तीन आयतों में वर्णित हैं। अर्थात् रब्बुल आलमीन, रहमान और

देखे जो उसको मारना चाहते हैं।

और फ़िरोज़पुर में बन्दूकों वालों को देखा कि मानो वे उसका काम तमाम करना चाहते हैं। यदि ये आक्रमण किसी मनुष्य की ओर से होते तो आथम साहिब अवश्य उस सांप को मार सकते और यदि सांप हाथ से निकल गया था तो उन लोगों में से किसी को पकड़ सकते जिन्होंने लुधियाना में उन पर आक्रमण किया था। और यदि उनको न पकड़ सकते तो उन लोगों में से तो अवश्य किसी को पकड़ते जिन्होंने फ़िरोज़पुर के स्थान में उन के दामाद की कोठी पर पहरेदारों के होते हुए उन पर आक्रमण किया था। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि

रहीम (समस्त लोकों का प्रतिपालक, कृपालु और दयालु) तथा मालिके यौमिद्दीन अर्थात् प्रतिफल एवं दण्ड के दिन का मालिक।

इन चारों विशेषताओं में ख़ुदा तआला की ओर से मनुष्यों के लिए सर्वथा नेकी का इरादा किया गया है। अर्थात् पैदा करना, पोषण करना जिसका नाम रबूवियत है और पात्रता के बिना आराम के सामान उपलब्ध कराना जिसका नाम **रहमानियत** है और तक़्वा (संयम) और ख़ुदा का डर तथा ईमान के बदले मनुष्य के लिए वे सामान उपलब्ध कराना जो भविष्य में दु:ख और संकट से सुरक्षित रखें जिसका नाम **रहीमियत** है। और शुभ कर्मों के करने पर जो इबादत, रोज़ा, नमाज़ तथा मानवजाति की हमदर्दी तथा सदक: (दान दक्षिणा) और स्वार्थ-त्याग इत्यादि है, वह शुभ स्थान प्रदान करना जो अनश्वर आनंद तथा समृद्धि का स्थान है जिसका नाम प्रतिफ़ल दिवस के मालिक की ओर से उत्तम प्रतिफ़ल तो ख़ुदा ने इन हर चार विशेषताओं में से किसी विशेषता में भी मनुष्य के लिए बुराई का इरादा नहीं किया, सर्वथा अच्छाई और भलाई का इरादा किया है। परन्तु जो व्यक्ति अपनी बुराइयों तथा असंतुलनों से उन विशेषताओं के प्रतिबिम्ब के नीचे से स्वयं को बाहर करे और स्वभाव को बदल डाले उसके पक्ष में उसी के कर्मों के दण्ड स्वरूप वे विशेषताएं भलाई की बजाए बुराई का रूप धारण कर लेती हैं। अत: रबूबियत (प्रतिपालन) का इरादा फ़ना (मौत) और विनाश के इरादे के साथ बदल जाता है और रहमानियत (कृपालुता) का इरादा प्रकोप और क्रोध के रूप में प्रकट हो जाता है। और रहीमियत (दयालुता) का इरादा प्रतिरोध और कठोरता के रंग में जोश मारता है और अच्छे प्रतिफल का इरादा दण्ड और अज़ाब देने के रूप में अपना भयावह चेहरा दिखाता है।

आथम जैसे प्रसिद्ध **पीर अनुभवी** पर इस स्तर की धार्मिक शत्रुता के कारण तीन आक्रमण हों तो वह न किसी क़त्ल के इरादे से आने वाले को पकड़ सके और न इस अवधि में किसी ईसाई को इस घटना की सूचना दे सके और न थाने में रिपोर्ट लिखवा सके और न अदालत में नालिश (मुक़द्दमा) कर सके और हमारा मुचलका अदालत द्वारा ले सके तथा मुंह पर मुहर लग जाए। क्या तुम इन्सान हो या जानवर हो कि इतनी मोटी बात को समझ नहीं सकते कि जिस आथम पर जो एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट भी रह चुका था ऐसे-ऐसे बड़े आक्रमण हुए और न केवल इतना ही बल्कि तुम्हारे कथनानुसार उसको ज़हर देने का भी इरादा किया गया, परन्तु उसने अदालत के द्वारा उस **ख़ूंखार** शत्रु का कुछ भी निवारण नहीं करवाया। ऐसे अकुलीन और अपवित्र स्वभाव लोग जिन्होंने ज़हर देने की योजना बनाई और डाकुओं की तरह तीन बार उस पर विकट आक्रमण किए गए ऐसे पापियों का छोड़ना अनुचित था। ख़ुदा की लानत उस व्यक्ति पर जिसने सांप छोड़ा और ज़हर देने की योजना बनाई तथा सवार और पैदल बन्दूकों, तलवारों और भालों के साथ लुधियाना तथा फ़िरोज़पुर में आथम की कोठी पर भेजे ताकि उसको क़त्ल करें। और यदि यह बात सही नहीं तो फिर उस व्यक्ति पर हज़ार

अत: यह परिवर्तन ख़ुदा की विशेषताओं में मनुष्य की अपनी हालत के परिवर्तन के कारण पैदा होता है। तो चूंकि दण्ड देना या दण्ड का वादा करना ख़ुदा तआला की उन विशेषताओं में सम्मिलित नहीं जो विशेषताओं की मूल हैं। क्योंकि वास्तव में उसने मनुष्य के लिए नेकी का इरादा किया है। इसलिए ख़ुदा का अज़ाब का वादा भी जब तक मनुष्य जीवित है और अपना परिवर्तन करने पर समर्थ है अटल फैसला नहीं है इसलिए उसके विपरीत करना झूठ या वादा भंग करने में दाख़िल नहीं, यद्यपि देखने में कोई अज़ाब का वादा शर्तों से ख़ाली हो परन्तु इसके साथ गुप्त तौर पर ख़ुदा के इरादे में शर्तें होती हैं, ऐसे इल्हाम के अतिरिक्त जिसमें प्रकट किया जाए कि उसमें शर्तें नहीं हैं तो ऐसी स्थिति में वह अटल फ़ैसला हो जाता है और अटल प्रारब्ध ठहर जाता है। यह रहस्य ख़ुदा के मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानों) में से बहुत ही महत्वपूर्ण और महान रहस्य है जो सूरह फ़ातिहा में गुप्त रखा गया है। अत: विचार कर। इसी से।

लानत जिस ने ऐसा निराधार झूठ बांधा तथा सच को गुप्त रखने के लिए और अपने भय को छुपाने के लिए यह योजना बनाई।

इसी प्रकार के झूठ गढ़ने से जिन को हमने अपनी आंखों से देख लिया है। हम विश्वास रखते हैं कि इस ईसाई क़ौम में बड़े अकुलीन और दुष्ट पैदा होते हैं और स्वयं को भेड़ों के लिबास में प्रकट करते हैं और वास्तव में दुष्ट भेड़िये होते हैं और ऐसी नीचता से भरे हुए झूठ बोलते हैं तथा झूठ गढ़ते हैं जिनकी कुछ भी वास्तविकता नहीं होती।

ईसाई इस बात को मानें या न मानें परन्तु न्यायवान लोग समझ सकते हैं कि आथम को इन व्यर्थ झूठ गढ़ने की आवश्यकता क्यों पड़ी तथा क्यों और किस कारण से ये बातें उसने निर्धारित समय सीमा गुज़रने के बाद प्रस्तुत कीं और समय सीमा के अन्दर मुर्दे की तरह क्यों ख़ामोश रहा। हालांकि अपराधी की अपराधपूर्ण हरकत को उसी समय प्रकाशित करना चाहिए था जबकि शत्रु की ओर से अपराध किया गया था।

इस झूठ गढ़ने का यही कारण था कि आथम ने अपनी पूर्ण व्याकुलता से भविष्यवाणी की समय सीमा में संसार पर प्रकट कर दिया था कि वह भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा से बहुत भयभीत हुआ और उसके दिल का आराम जाता रहा। अधिकतर वह रोता था और उसके डरने वाले दिल का नक़्शा उसके चेहरे से दिखता था और मुर्दा-परस्ती का ईमान उसे शक्ति और दृढ़ता प्रदान नहीं कर सकता था बल्कि उस समय सच्चाई के भय ने उसके ऐसे अपवित्र विचारों को अपने पैरों के नीचे कुचल दिया था। तो जिस भय का उसने अपनी विकट व्याकुलता से सबूत दे दिया था, समय सीमा गुज़रने पर अवश्य था कि वह अपनी क़ौम के आगे उसका कुछ अर्थ करता और उसका कोई कारण बताता, ताकि किसी का मस्तिष्क इस ओर न जाए कि वह सम्पूर्ण भय भविष्यवाणी के कारण था तो उसने तीन आक्रमणों और ज़हर देने की योजना का बहाना बनाया ताकि सब लोग कह उठें कि जब आथम बेचारे पर इतने कठोर आक्रमण हुए तो वह बेचारा व्याकुल और बेचैन क्यों न रहता।

यदि यह बहाना नहीं था और निश्चित तौर पर हमनें कोई शिक्षित सांप छोड़ा था या हमने सवार या पैदल उसके क़त्ल करने के लिए उसकी कोठी पर भेजे थे या उसको ज़हर देने के लिए हमारी ओर से कोई क़दम उठाया गया था तो उसे ख़ुदा ने पर्याप्त अवसर दिया था कि हमारी भविष्यवाणी की क़लई खोल देता और आक्रमणकारियों को पकड़ता तथा उन आक्रमणों के घटित होने का सबूत देता या कम से कम भविष्यवाणी के दौरान में किसी थाने में रिपोर्ट लिखवाता या किसी अधिकारी से वर्णन करता या अख़बारों में छपवा देता। जिस व्यक्ति ने सर्वप्रथम झूठी भविष्यवाणी करके उसके दिल को इतना कष्ट दिया तथा इस स्तर का आघात पहुंचाया, फिर ज़हर देने की चिन्ता में रहा और फिर तीन आक्रमण किए ताकि उसको मिटा दे और उसकी मौत को उसके धर्म के झूठे होने पर प्रमाण लाए। क्या ज़रूरी न था कि ऐसे अत्याचारी के अत्याचार पर कदापि सब्र न किया जाता यदि अपने लिए नहीं तो अपने धर्म की सहायता के लिए ऐसे उपद्रवी का आवश्यक निवारण करना चाहिए था। अतः अख़बार वालों ने भी हर ओर से बल दिया कि आथम साहिब लोगों पर उपकार करेंगे यदि ऐसे उपद्रवी को अदालत द्वारा दण्ड दिलवाएंगे। परन्तु आथम साहब मौत से पहले ही मर गए और हमारी सच्चाई के गुप्त हाथ ने उन्हें ऐसा दबाया कि मानो वह जीवित ही कब्र में दाख़िल हो गए। समस्त संसार अंधा नहीं। प्रत्येक न्यायवान सोच सकता है कि जो झूठे आरोपों के बाण उन्होंने मेरी ओर फेंके थे वही बाण सबूत के अभाव के कारण उनको घायल कर गए और उन झूठ गढ़ने से बुद्धिमानों ने समझ लिया कि अवश्य दाल में काला है।

अतः जब वह इस सबूत के भार से मुक्त न हो सके जिससे उन्हें भारमुक्त होना चाहिए था, बल्कि क़सम खाने से भी केवल सच को छुपाने की नियत से इन्कार कर गए तो क्या अब भी यह सिद्ध न हुआ कि उन्होंने अवश्य (ही) भविष्यवाणी की महानता का भय दिल में डालकर उस शर्त से लाभ उठाया था जो इल्हाम की इबारत में दर्ज थी।

उसका कथन- क़ादियानी साहिब के अनुयायी भविष्यवाणी के कारण उन

से फिर गए।

मेरा कथन- मियां हुसामुद्दीन का यह झूठ वास्तव में अफ़सोस का कारण नहीं। क्योंकि जब उनके बुज़ुर्ग ईसाई एक मुर्दे को ख़ुदा बनाने के लिए कई झूठी इंजीलें बना कर छोड़ गए तो झूठ बोलना उनकी विरासत है।

यह भी याद रहे कि विमुख होने से उनका अभिप्राय किसी एक-आध अनाड़ी की विमुखता है। तो आप के यसू साहिब पर सर्वप्रथम यह आरोप है क्योंकि यहूदा इसक्रियूती यसू साहिब से बड़े ज़ोर-शोर के साथ विमुख हुआ था और न केवल विमुख हुआ बल्कि अत्यन्त बदगुमान होकर यह चाहा कि ऐसा व्यक्ति मर ही जाए तो अच्छा है। तीस रुपए लेने पर इसी कारण राज़ी हुआ कि यह थोड़ी रक़म भी इसके अस्तित्व से बहुत ही उत्तम हैं।

बात यह है कि यसू साहिब ने यह भविष्यवाणी की थी कि मैं दाऊद के तख़्त को स्थापित करने आया हूँ और इस प्रकार से यहूदियों को अपनी ओर आकर्षित करना चाहाता था कि देखो मैं तुम्हारी बादशाही पुनः संसार में स्थापित करने आया हूँ और रूम की सरकार से अब तुम शीघ्र आज़ाद होने वाले हो, परन्तु वह बात न हुई बल्कि हज़रत यसू साहिब ने बहुत बड़ा अपमान देखा, मुंह पर थूका गया और आप के शरीर के उस भाग पर कोड़े लगाए गए जहां अपराधियों को लगाए जाते हैं और हवालात में बन्द किया गया। तो यहूदा तथा ऐसा ही अन्य बहुत से लोगों ने भली-भांति समझ लिया कि इस व्यक्ति की भविष्यवाणी साफ़ झूठी निकली, और यह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं है।

इसलिए उन्होंने उसके साथ रहना पसन्द न किया और उनके दिल पहले ही टूट चुके थे। क्योंकि पहले नबियों की भविष्यवाणियों के अनुसार यसू में मसीह होने के लक्षण नहीं पाए गए, और विशेष तौर पर यह कि उन से पहले एलिया आसमान से न उतरा जिसका उतरना आवश्यक था।

फिर इस बात से तो तबियतें बहुत अप्रसन्न हो गईं कि दाऊद के तख़्त को बहाल (यथावत्) करने की भविष्यवाणी जो मसीह मौऊद का लक्षण था उन पर चरितार्थ नहीं हुई। उन्होंने दावा भी कर दिया कि मैं पहले नबियों की भविष्यवाणी

के अनुसार दाऊद के तख़्त को फिर से बहाल करने आया हूँ बल्कि रुचि व्यक्त की कि लोग मुझे शहज़ादा कहें। परन्तु उनके दुर्भाग्य से दाऊद का तख़्त बहाल न हुआ और वह दावा झूठा निकला। और वास्तव में यसू साहिब की यह एक व्यर्थ बात थी और या एक प्रकार की चालाकी और जालसाज़ी कि उन्होंने यहूदियों को दाऊद के तख़्त की आशा दिलाई ताकि लोग यदि और तरह नहीं तो इसी तरह उनके कब्ज़े में आ जाएं। परन्तु चाहिए था कि वे ऐसी व्यर्थ की बातों से अपनी ज़ुबान को बचाते और उसी पहली बात पर क़ायम रहते कि मेरी बादशाहत दुनिया की बादशाहत नहीं परन्तु तामसिक इच्छाओं के कारण सब्र न कर सके और अपने पहले पहलू में असफलता देख कर एक और चाल चली। फर जब बाग़ी होने के सन्देह में पकड़े गए तो फिर स्वयं को बग़ावत (विद्रोह) के आरोप से बचाने के लिए वही पहला पहलू ग्रहण कर लिया। **दावा ख़ुदाई का और फिर ये चालबाज़ियां ! आश्चर्य है।**

स्मरण रहे कि यह हमारी राय यसू के बारे में है **जिसने ख़ुदाई का दावा** किया और पहले नबियों को चोर और बटमार कहा और ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कहा कि मेरे बाद झूठे नबी आएंगे। ऐसे **यसू का क़ुर्आन में कहीं वर्णन नहीं।**

उसका कथन- प्रत्येक सभ्य मुसलमान को इस बात के सुनने से बहुत दु:ख होगा कि मुसलमान विरोधियों ने उनके अर्थात् आथम साहिब के मारने के लिए दरिन्दों जैसी हरकतें कीं, उनके घर में जीवित सांप छोड़े गए, उनको ज़हर देने की योजना बनाई गई।

मेरा कथन- मैं पूछता हूँ कि अब आथम साहिब जो मर गए, किस ज़हर से मारे गए या किस सांप ने उनको डसा या किसने उन पर बन्दूक से फ़ायर किया या तलवार चलाई। यदि कहो कि अब भविष्यवाणी की निर्धारित समय सीमा के बाद मरे हैं, तो यह स्पष्ट मूर्खता है। क्योंकि भविष्यवाणी ने यह निश्चित फ़ैसला नहीं दिया था कि अवश्य उसकी निर्धारित समय सीमा के अन्दर ही मृत्यु पाएंगे। बल्कि भविष्यवाणी में यह स्पष्ट शर्त मौजूद थी कि यदि वह ईसाइयत पर स्थापित

रहेंगे और उस को छोड़ने के लक्षण नहीं पाए जाएंगे तथा उनके कर्मों और कथनों से सच की ओर लौटना सिद्ध नहीं होगा तो केवल इस हालत में भविष्यवाणी के अन्दर मृत्यु पाएंगे अन्यथा उनकी मृत्यु में विलम्ब डाल दिया जाएगा। हाँ किसी सीमा तक हाविय: नर्क का स्वाद चख लेंगे। तो नि:सन्देह भविष्यवाणी ने निर्धारित समय सीमा के अन्दर उस हाविय: का स्वाद उन को चखा दिया, जिस की पूर्ति धीरे-धीरे 27 जुलाई 1896 ई. को हो गई और आवश्यक था कि वह भविष्यवाणी की समय सीमा में हाविय: के पूर्ण प्रभाव से बचे रहते। क्योंकि उन्होंने इस्लामी भविष्यवाणी का डर अपने ऊपर ऐसा हावी कर लिया कि एक प्रकार की मृत्यु उन पर आ गई। वह मुर्दों की तरह चुप हो गए और ईसाइयत की अपवित्र आस्थाओं के समर्थन में जो पहले पुस्तकें लिखते रहते थे उनसे पूरी तरह अलग हो गए और भय के आघातों ने उनको व्याकुल कर दिया। तो क्या अवश्यक न था कि ख़ुदा तआला अपने इल्हाम की शर्त के अनुसार मृत्यु को दूसरे समय पर टाल देता। और क्या उनकी मृत्यु से पहले यह भविष्यवाणी प्रकाशित नहीं की गई कि **क़सम खाने से इन्कार के हठ पर यह भविष्यवाणी पूर्ण रूप से पूरी हो जाएगी।** तो अब नि:सन्देह आथम साहिब भविष्यवाणी के अनुसार मरे तथा अन्तिम इन्कार के बाद केवल सात माह जीवित रहे।

अत: यह हमारा अधिकार है कि हम कहें कि प्रत्येक सभ्य ईसाई को इस बात के सुनने से बहुत अफ़सोस होगा कि दुष्ट आथम ने भविष्यवाणी की सच्चाई को छुपाने के लिए क्या क्या घृणित और अशिष्ट झूठों से काम लिया और किस प्रकार निडर होकर निराधार झूठ को प्रस्तुत किया। अयोग्य आथम ने सर्वथा अकारण मुझ पर ज़हर देने का झूठा आरोप लगाया। मुझ पर यह झूठ बांधा कि मानो मैंने उसे क़त्ल करने के लिए उसकी कोठी में सांप छोड़े थे और मानो में पुराना क़ातिल था कि मैंने तीन बार विभिन्न शहरों में उसके मारने के लिए अपनी जमाअत के जवानों से आक्रमण कराए तथा कई सवार और पैदल आदमी बन्दूकों, तलवारों और भालों सहित उसकी लुधियाना तथा फ़िरोज़पुर की कोठी में मेरे आदेश से घुस गए। **ख़ुदा की लानत का मारा बहुत सा**

झूठ बोलकर भी अन्ततः मृत्यु से बच न सका। शर्त वाली भविष्यवाणी से तो उसकी जान शर्त पूरी करने के कारण बच गई परन्तु अटल भविष्यवाणी ने अन्ततः उसको खा लिया।

मैं अपनी पुस्तक अन्वारुल इस्लाम और ज़ियाउलहक़ इत्यादि में अकाट्य तर्कों द्वारा सिद्ध कर चुका हूँ कि आथम का यह अत्यन्त गन्दा झूठ है कि उसने उन आक्रमणों का मुझ पर आरोप लगाया और एक ईमानदार इन्सान की तरह कभी यह इरादा न किया कि उस आरोप को सिद्ध करे, न नालिश से, न पुलिस द्वारा सबूत देने से और न क़सम खाने से तथा न किसी घरेलू तौर पर। और मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि किसी न्यायवान की अन्तर आत्मा हरगिज़ यह गवाही नहीं देती कि वास्तव में सचमुच ये आक्रमण हुए थे। मैं शत्रुओं से इस समय आशा नहीं रखता कि वे अपनी अन्तर आत्मा से मुझे सूचना दें परन्तु एक **सत्य प्रिय के लिए** यह सबूत सन्तोषजनक है कि आथम ने उन चार आरोपों में से किसी आरोप को सिद्ध नहीं किया बल्कि क़सम खाने से भी मुंह फेर लिया जिस से बड़ी सरलतापूर्वक निर्णय हो सकता था।

और इस प्रश्न का उत्तर प्रत्येक न्यायवान की अन्तर्आत्मा दे सकती है कि इन झूठे आरोपों के लिए उसको क्या आवश्यकता पड़ गई थी क्या इसके अतिरिक्त कोई और भी आवश्यकता समझ में आ सकती है कि उसने झूठे आरोपों के साथ अपने उस भय पर पर्दा डालना चाहा जो उसकी व्याकुलता के कारण प्रत्येक व्यक्ति पर प्रकट हो चुका था। क्या बुद्धि स्वीकार कर सकती है कि जिसकी जान लेने के लिए हमने सौ कोस तक पीछा किया और बार-बार आक्रमण किए उसके मुंह पर अन्तिम समय तक मुहर लगी रही और न केवल उसके मुंह पर **बल्कि उन सबके मुंह पर जिन्होंने ऐसे आक्रमण करने वालों को देखा था।** न नालिश करना, न क़सम खाना, न घरेलू तौर पर कोई गवाह प्रस्तुत करना। क्या यह वे स्पष्ट लक्षण नहीं हैं जिन से असल सच्चाई खुलती है और सिद्ध होता है कि केवल भविष्यवाणी की शर्त से लोगों का ध्यान हटाने के लिए यह ज़िब्ह होने की हरकत थी।

परन्तु फिर यदि अब तक किसी ईसाई को आथम के इस झूठ पर सन्देह हो तो आसमानी गवाही से सन्देह को दूर करा ले। आथम तो भविष्यवाणी के अनुसार मृत्यु पा चुका अब वह स्वयं उसका स्थानापन्न (कार्यवाहक) बन कर आथम के मुक़द्दमे में क़सम खा ले। इस विषय पर कि आथम भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा से भयभीत नहीं हुआ बल्कि उस पर ये चार आक्रमण हुए थे, यदि यह क़सम खाने वाला भी **एक वर्ष तक बच गया तो देखो मैं इस समय इक़रार करता हूँ** कि मैं अपने हाथ से प्रकाशित कर दूंगा कि मेरी भविष्यवाणी ग़लत निकली। इस क़सम के साथ कोई शर्त न होगी। यह बहुत ही साफ़ निर्णय हो जाएगा और जो व्यक्ति ख़ुदा के निकट ग़लत है उसका झूठा होना स्पष्ट हो जाएगा।

यदि ईसाई लोग सच्चे दिल से विश्वास रखते हैं कि भविष्यवाणी झूठी निकली तो परीक्षा की इस पद्धति से उन को कौन सी चीज़ रोकती है।

आथम का मुक़द्दमा इतना साफ़ है कि यदि इस रूप रंग में चीफ़ कोर्ट के जजों के सामने भी प्रस्तुत हो तो उन से कुछ नहीं बन सकेगा सिवाए इसके कि हमारे पक्ष में डिग्री दें। क्या आथम इन झूठे आरोपों में से किसी एक झूठे आरोप को भी सिद्ध कर सकता है जो उसने भविष्यवाणी की समय सीमा के बाद मुझ पर लगाए? क्या यह सफेद झूठ नहीं कि उसके कहने के अनुसार मैंने ज़हर खिलाने का क़दम उठाया, जैसा कि मियां हुसामुद्दीन ईसाई अगस्त 1896 के अख़बार "कश्फ़ुल हकाइक़" में मुझ पर आरोप लगाते हैं कि मानो मैंने ज़हर खिलाने की योजना बनाई और सांप छोड़े। शायद इस से उन का अभिप्राय यह है कि आथम को एक चमत्कारी ईसाई बना दें। क्योंकि इंजीलों में लिखा है कि सच्चे मसीही का यह लक्षण है कि सांप उस को डस न सके और ज़हर उसमें असर न कर सके। तो मानो ये दोनों चमत्कार आथम से प्रकटन में आ गए। अब उसके वली होने में क्या कमी रह गई। परन्तु बुद्धिमान भली-भांति समझते हैं कि सारी बातें उस भय को छुपाने के लिए हैं जिसने भविष्यवाणी सुनने के बाद आथम के होश-व-हवास उड़ा दिए थे।

यदि यह बात सही नहीं है तो कोई सबूत प्रस्तुत करना चाहिए था कि आथम साहिब का यह भय जिसका उनको इक़रार है भविष्यवाणी के कारण नहीं था जिस से स्वाभाविक तौर पर प्रभावित होना संभव भी था, जिसका दूसरे पक्ष को शर्त की मौजूदगी के कारण इन्तज़ार भी था अर्थात् इल्हामी भविष्यवाणी, बल्कि यह भय इस कारण हुआ कि दूसरा पक्ष वास्तव में क़त्ल करने का इरादा रखता था। क्या आथम साहिब ने कोई एक प्रमाणित प्रसंग प्रस्तुत किए जिनसे सन्देह भी हो सकता हो कि क़त्ल करने की नीयत की गई थी। फिर यदि डरने का यह पहलू अप्रमाणित और अनुचित था और चार आक्रमण जो वर्णन किए गए उनमें सबूत के न होने के अतिरिक्त बनावट की दुर्गन्ध भी स्पष्ट थी तो एक न्याय करने वाले जज को मानना पड़ता है कि डरने का कोई अन्य कारण होगा। तो वह अन्य कारण इसके अतिरिक्त और क्या था कि आथम साहिब तीस वर्ष की अवधि से मेरे हाल तथा मेरे चाल-चलन से भली-भांति परिचित थे और हमारे इस ज़िले में वह लम्बे समय तक इसी क्षेत्र की तहसील में कर्मचारी भी रह चुके थे उनको ख़ूब मालूम था कि यह व्यक्ति झूठा नहीं और सच्चाई की व्यक्तिगत विशेषता ने उनको उसी समय हताश एवं भयभीत कर दिया था। अतएव वह इसीलिए भयभीत हुए और उनके भयभीत होने ने उनको उस समय तक मरने से सुरक्षित रखा जब तक उन से घृष्टतापूर्वक हठधर्मी प्रकट हुई। तो निर्धारित समय सीमा गुज़रने के बाद शैतान ने उनके दिल में सन्देह डाले कि भविष्यवाणी कुछ चीज़ नहीं। बाहरहाल बचना ही था। तो ये सन्देह बढ़ते गए और मज़बूत हो गए, यहां तक कि वह हमारे 30 दिसम्बर 1895 ई. के विज्ञापन के प्रकाशित होने तक पूर्णरूप से इन्कारी और बेबाक हो चुके थे। तो ख़ुदा ने उनको जैसा कि भविष्यवाणी में वादा था और पहले प्रकाशित हो चुका था बेबाक के पश्चात् अन्तिम विज्ञापन से सात महीने तक उठा लिया और अभी ये हमारे अन्तिम विज्ञापन प्रकाशित हो रहे थे कि उनकी मृत्यु की सूचना पहुंच गई।

अफ़सोस कि ईसाइयों की सारी ईमानदारी को परखने के लिए यह पहला अवसर था परन्तु उन में से किसी ने भी सच की परवाह न की यहां तक कि

एडीटर सिविल मिलिट्री ने जिस को आज़ादी और सच बोलने का दावा था इस स्थान में गन्दा झूठ बोला। हुसामुद्दीन पर तो कोई अफ़सोस नहीं क्योंकि ये लोग जो पादरियों जैसी आस्था रखते हैं अधिकतर वे झूठ के पुतले और गन्दगी खाने वाले कीड़े हैं। उनको न स्वभाविक शर्म है और न ख़ुदा तआला का डर।

यह कहना ग़लत है कि ये लोग अनभिज्ञ होने के कारण असमर्थ हैं क्योंकि मैंने इस मुक़द्दमे में पांच हज़ार के लगभग विज्ञापन जारी किया है और खुले-खुले तर्कों के साथ दिखा दिया है कि आथम ख़ुदा और लोगों के नज़दीक दोषी है।★

★**हाशिया :-** यह किसको ख़बर नहीं कि आथम साहिब ने नूर अफ़्शां अख़बार में स्पष्ट इक़रार छपवाया है कि मैं भविष्यवाणी के दिनों में ख़ूनी फ़रिश्तों से अवश्य डरता था। यह किसको मालूम नहीं कि उनसे डरने के इतने लक्षण प्रकट हुए कि जिन को छुपाना संभव नहीं। कोन ईसाई इस से इन्कार करेगा कि आथम साहिब भविष्यवाणी के दिनों में रोते रहे? किस के कानों तक यह ख़बर नहीं पहुंची कि उस समय भी आथम साहिब के आंसू नहीं रुके थे जबकि वह न चाहते हुए ज़बरदस्ती भविष्यवाणी के दिनों में ईसाइयों के जल्से में बुलाए गए। फिर जब थोड़े दिनों के बाद आथम साहिब के होश-व-हवास क़ायम हुए और क़ौम के शैतानों का असर उन पर पड़ा और दिल कठोर हो गया तब उन को समझ आया कि यह मैंने अच्छा नहीं कि इस्लामी भविष्यवाणी के विचार से इतनी बेचैनी व्यक्त की। तब ज़हर खिलाने के इरादे की योजना और तीन आक्रमणों का बहाना बनाया गया क्योंकि जितना भय उनकी व्याकुलता तथा बेचैनी से प्रकट हो चुका था वह चाहता था कि यदि उसका कारण इल्हामी भविष्यवाणी नहीं तो ऐसा कारण अवश्य होना चाहिए जो अत्यन्त सुदृढ़ और महान प्रतिष्ठा रखता हो जिससे दिल में निश्चित तौर पर मौत का डर जम सके। तो झूठ के प्रतिबंधों से काम लेकर ये डर के सामान बनाए गए परन्तु इन झूठे आरोपों ने जो बहुत घृणित तौर पर ग़लत स्थान पर इस्तेमाल किए गए। आथम साहिब की आन्तरिक हालत बल्कि ईसाइयत के निचोड़ को और भी पब्लिक के सामने रख दिया और इस उदाहरण ने सिद्ध कर दिया कि उनके स्वभाव में कितनी लज्जाजनक बुराई भरी हुई है। जो ऐसे ज़ुल्म, झूठ, बनावट और सर्वथा निराधार आरोप लगाने का प्रेरक हुआ।

परन्तु ये चारों झूठे आरोप आथम साहिब को दोषी करते थे। अफ़सोस कि आथम साहिब के इन झूठे आरोपों से बुद्धिमानों के नज़दीक यदि कुछ नतीजा पैदा हुआ तो केवल यही कि ये ईसाई लोग झूठ बोलने में बहुत बेबाक और बेशर्म हैं। कौन नहीं समझ कि इन

और भविष्यवाणी अपने दो पहलुओं में से एक पहलू पर पूरी हो चुकी है। फिर ये लोग कैसे अनभिज्ञ हैं। देखो अन्वारुल इस्लाम और हज़ार रुपए का, दो हज़ार का, तीन हज़ार रुपए का, चार हज़ार रुपए का विज्ञापन, पुस्तक ज़ियाउलहक़ तथा 30 दिसम्बर 1895 ई. का अन्तिम विज्ञापन, जिस के सात माह के बाद आथम अपनी घृष्टता के अंजाम को पहुंच गया।

मेरा यह विचार भी है कि आथम ज़हर खिलाने के दावे में बिल्कुल झूठा है परन्तु शेष तीन आक्रमणों के दावे में शायद एक वास्तविकता भी हो और वह यह है कि शायद यूनुस की क़ौम की तरह ऐसे रंग में उसे फ़रिश्ते दिखाई दिए हों जिन का वह स्वयं **ख़ूनी फ़रिश्ते** नाम रखता है और फिर उसने जान बूझ कर या कुछ भूल की मिलावट से उन आक्रमणों को मानवीय आक्रमण समझ लिया हो और असल घटना को गड़बड़ कर दिया हो। यह इस हालत में है कि उसे कुछ भला इन्सान मान लिया जाए। परन्तु ईसाई लोग नि:सन्देह इस तावील पर राज़ी नहीं होंगे। तो दूसरी संभावना केवल यह है कि उसने जान-बूझ कर एक गन्दे और अपवित्र झूठ और छल से काम लिया ताकि उस डर को छुपा दे जो उसके व्याकुलतापूर्ण कार्यों से प्रकट हो चुका था।

शेष हाशिया- झूठे और अप्रमाणित झूठे आरोपों से उनका मुंह काला हो गया था। इस कलंक को दूर करने के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय न था कि या तो फौजदारी अदालत में नालिश करके उन झूठे आरोपों का सिद्ध कराते और या कुछ गवाहों को प्रस्तुत करके उनका सबूत देते और या सार्वजनिक जल्से में क़सम खा लेते। परन्तु आथम साहिब ने इन तरीक़ों में से किसी तरीक़े को ग्रहण नहीं किया फिर आथम साहिब के झूठा होने की एक यह भी निशानी है कि इन आरोपों को उन्होंने न भविष्यवाणी के दिनों में वर्णन किया और न उन दिनों के गुज़रने के बाद उन चारों आक्रमणों को एक साथ ही वर्णन कर दिया बल्कि जैसा कि झूठ धीरे-धीरे विचार और सोच के साथ बनाया जाता है ऐसा ही किया। अब हे प्रियजनों! आप ही सोचो कि क्या वह उस डर का इक़रार करके जो इल्हामी शर्त का समर्थक था उस डर के अन्य कोई कारण सिद्ध कर सका? और क्या वह इस बात का कुछ सबूत दे सका कि वास्तव में उस पर चार आक्रमण हुए और उन्हीं आक्रमणों के कारण उसका यह सारा भय था। (इसी से)

अत: यदि उसके बयान पर विश्वास किया जाए तो इन आक्रमणों को फ़रिश्तों का साक्षात् रूप में प्रकट होना मान लेना चाहिए, अन्यथा इसमें कुछ सन्देह नहीं कि बहुत नीच और घृणित झूठ को उसने सच को छुपाने के लिए इस्तेमाल किया है।

यद्यपि वर्तमान दार्शनिकों की नज़र में यह पहली संभावना अधिक क़द्र करने के योग्य है। अर्थात् यह कि आथम को फ़रिश्ते दिखाई दिए हों, परन्तु चूंकि स्वयं उसके मुंह से ये शब्द निकले थे कि "मैं ख़ूनी फ़रिश्तों से डरता रहा। "इसलिए हमारे लिए उचित है कि उन शब्दों को भी उस सच्चाई पर अनुमान करें कि जो कभी-कभी दोषी की जीभ पर जारी हो जाती है।

एक अन्वेषक की दृष्टि में यह बहुत कठिन है कि यदि ये समस्त आक्रमण मनुष्य के ही आक्रमण थे तो उन विभिन्न आक्रमणों में कोई दूसरा व्यक्ति किसी अवसर पर भी आथम के देखने का भागीदार नहीं हो सका और आथम की जीभ पर भी मुहर लगी रही तथा उसने इस निर्धारित समय सीमा में कोई कार्रवाई ऐसी न दिखाई जैसा कि एक व्यक्ति ख़ून करने वालों के आक्रमण से डरने वाला **स्वभाविक** जोश से दिखाता है बल्कि उसने तो अपना दामन क़सम खाने से भी न बचाया जिसके खाने में न केवल आसानी बल्कि नक़द चार हज़ार रुपया मिलता था।

तो इन घटनाओं से यह परिणाम निकालना बिल्कुल इन्साफ़ है कि कोई डराने वाली बात उसको इस साहस से रोकती थी कि वह नालिश करता या क़सम खाता या घरेलू छान-बीन कराता। यदि एक पवित्र दृष्टि लेकर इस मुक़द्दमे पर विचार करो तो तुम्हें अति शीघ्र ही समझ आ जाएगा कि प्रारंभ से अन्त तक सम्पूर्ण सिलसिला इस परिणाम को चाहता है कि आथम वह डर जिसका उसको इक़रार है, केवल भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा के कारण था न कि किसी अन्य कारण से।

आथम के झूठा होने पर वह मतभेद तथा विरोधाभास भी साक्षी है जो उसके ईसाइयत के दावे और इतनी कायरता से प्रकट हो रहा है, क्योंकि उसने ईसाइयत का इक़रार करके इस्लाम के मुक़ाबले पर वह डर दिखाया कि जब तक मनुष्य

कम से कम **असमंजस** की हालत में न हो हरगिज़ नहीं दिखा सकता। इसके अतिरिक्त उसके कलाम में यह विरोधाभास भी है कि कभी वह आक्रमण करने वालों का नाम फ़रिश्ते रखता है जो पाप से पवित्र हैं और कभी उनको अपवित्र प्रकृति वाला मनुष्य ठहराता है जिन का कार्य अकारण ख़ून करना है और फिर अद्भुत बात यह है कि उन में वह किसी का नाम नहीं बता सका और यह भी नहीं कहा कि मैं उनको पहचान सकता हूँ। और वह भली भांति जानता था कि ऐसे बेहूदा निराधार आरोपों से इस विनीत के विरुद्ध कोई जांच नहीं निकल सकती इसलिए उसने झूठे आरोपों को सार्वजनिक तौर पर प्रकाशित भी नहीं किया। केवल नूरअफ़्शां में एक छलपूर्ण भाषण में छपवा दिया।

इस से यह बात ध्यान देने योग्य है कि यह छपवाना केवल ईसाइयों को ढारस बँधाने के लिए था जिसको उसने बार-बार वर्णन करना भी नहीं चाहा।

फितरत के अनुसार यह बात आदतों में सम्मिलित है कि मनुष्य शत्रु को झूठा दिखाने के लिए वास्तविक घटनाओं को छुपाता है। यह एक साधारण बात है और यद्यपि इस पर बहुत कुछ निर्भर नहीं, परन्तु सबूत के बिना प्रस्तुत होने वाले बहानों के बाद इस स्वभाविक बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है। आथम की समस्त परिस्थितियों में इस विचार के पैदा करने के लिए कुछ नहीं है कि वह इक्दामे क़त्ल के आक्रमण के अतिरिक्त केवल भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डर नहीं सकता था, क्योंकि ऐसा विचार उन आक्रमणों के सही होने और आथम की दृढ़ता की पद्धति के सबूत पर निर्भर था जिसका सबूत न आथम प्रस्तुत कर सका और न उसका कोई सहायक। और स्पष्ट है कि इस बयान में कोई भी सच्चाई होती तो आथम को स्वभाविक तरीक़ा तुरन्त सिखाता कि भावी आक्रमणों को रोकने के लिए जिनमें अभी एक वर्ष शेष था कोई क़ानूनी कार्यवाही करे।★ क्या यह बहाना सन्तोषजनक या

★**हाशिया :-** मूर्ख बत्तालवी मुहम्मद हुसैन अपने पर्चे इशाअतुस्सुन्नः में हम पर यह ऐतराज़ करता है कि जिस हालत में आथम ने तुम पर आरोप लगाया था कि मेरे क़त्ल करने के लिए मुझ पर कई आक्रमण किए गए तो चाहिए था कि तुम उस पर फौजदारी का दावा

अदालत को सन्तुष्ट करने वाला है कि प्रत्येक आक्रमण के समय उसकी दयापूर्ण आदत अपराधियों का आवश्यक निवारण कराने से रोकती रही अपितु जिस हालत में पहले आक्रमण के कारण भावी जीवन का अमन समाप्त हो गया था, बुद्धि स्वीकार कर सकती है कि फिर भी आथम साहिब ने क्षमा और माफ़ी को हाथ से न जाने दिया तथा किसी ने उसको यह मशवरा न दिया कि अब दुश्मन का निवारण बहुत

करते और यदि आरोप वास्तव में झूठा था तो उसे दण्ड दिलाते।

परन्तु अफ़सोस कि बत्तालवी ने इस आरोप में भी लानती शैतान की तरह जानबूझ कर लोगों को धोखा देना चाहा। आरोप के समय उसे भली-भांति मालूम था कि भविष्यवाणी के शब्दों में बार-बार यह ज़िक्र है कि आथम इन्कार की हालत में दण्ड के बिना नहीं छोड़ा जाएगा और ख़ुदा उसको इन्कार पर हठ के बाद शीघ्र पकड़ेगा और मारेगा। अत: जिस हालत में आकाशीय अदालत से हमें विश्वास दिलाया गया था कि आथम शीघ्र ही आकाशीय वारंट से गिरफ़्तार किया जाएगा और अपनी घृष्टता तथा इन्कार के अपराध पर गिरफ़्तार हो कर शीघ्र मृत्यु-दण्ड पाएगा। तो फिर हमें क्या आवश्यकता पड़ी थी कि अंग्रेज़ों की अदालतों के चक्कर कराते। हम तो उस समय से ही आथम को मरा हुआ देखते थे जबकि मूर्ख ईसाई तथा मूर्ख बत्तालवी और उस के समान विचार वाले उपरोक्त आथम को जीवित समझते थे। परन्तु यह कर्तव्य आथम का था कि जिन प्रमाण रहित आरोपों से निश्चित तौर पर यह परिणाम निकलता था कि वह अवश्य इस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से डरता रहा, जो अत्यन्त भयानक शब्दों में वर्णन की गई थी और अवश्य उसने पीछे से अपने डर की असल सच्चाई छुपाने के लिए इक़्दामे क़त्ल का प्रमाण विहीन झूठ बना लिया, अदालत में नालिश करके उन आक्रमणों का सबूत दे और अपराधियों को निश्चित तौर पर दण्ड दिलाता क्योंकि उस के प्रमाण विहीन दावों के सबूत का भार तो उसी का दायित्व था। परन्तु वह अन्यायी झूठा तो क़सम भी न खा सका कहां यह कि नालिश करता। क्या आवश्यक था कि वह किसी प्रकार नालिश से या क़सम से या घरेलू तौर पर सबूत देकर अपनी सफाई व्यक्त कर देता? क्या वे चार आक्रमण अर्थात् विष खिलाने का इरादा और सांप छोड़ना तथा लुधियाना और फ़िरोज़पुर में जो आथम के कथनानुसार आक्रमण हुए उन समस्त आक्रमणों का सबूत मेरे ज़िम्मे था या आथम की गर्दन पर था?

हे नीच मौलवियों के फ़िर्क़ो! तुम कब तक सच को छुपाओगे, कब वह समय आएगा कि तुम यहूदियों वाली आदत को छोड़ोगे। हे ज़ालिम मौलवियो! तुम पर

आवश्यक है। और इसमें दो फ़ायदे हैं एक यह कि अपने प्राणों की सुरक्षा और दूसरे दुश्मन के धर्म का अपमान जो ईसाइयों का मूल उद्देश्य है।

यह भी स्मरण रखने योग्य है कि आथम का बयान केवल इस विश्वास तक सीमित था कि जो एक प्रतिवादी के ऐसे बयान पर कर करते हैं जिस का

अफ़सोस कि तुम ने जिस बेईमानी का पियाला पिया वही पशु समान जनसाधारण को भी पिलाया।

देखो आज जैसा कि ख़ुदा ने समय से पूर्व इल्हाम किया था जो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-2 में दर्ज किया है किस सफाई से पूरा हुआ। और वह यह है-

اِطَّلَعَ اللّٰہُ عَلٰی ھَمِّہٖ وَغَمِّہٖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰہِ تَبْدِیْلًا وَلَا تَعْجَبُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا۔ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ کُنْتُمْ مُؤْمِنِیْنَ وَبِعِزَّتِیْ وَجَلَالِیْ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعْلٰی وَنُمَزِّقُ الْاَعْدَاءَ کُلَّ مُمَزَّقٍ۔ وَمَکْرُ اُولٰٓئِکَ ھُوَ یَبُوْرُ اِنَّا نَکْشِفُ السِّرَّ عَنْ سَاقِہٖ۔ یَوْمَئِذٍ یَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ، ثُلَّۃٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ وَثُلَّۃٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ۔ وَھٰذِہٖ تَذْکِرَۃٌ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰی رَبِّہٖ سَبِیْلًا۔

(अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-2)

और फिर इसी अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-2 में इस इल्हाम का अनुवाद यह लिखा है कि ख़ुदा तआला के उसके (अर्थात् आथम के) चिन्ता और ग़म से अवगत हुआ और उसे छूट दी जब तक वह घृष्टता, बुरा-भला कहने और झुठलाने की ओर झुके और ख़ुदा तआला के उपकार को भुला दे। कथित वाक्य के यह अर्थ ख़ुदा तआला के समझाने से हैं। फिर फ़रमाया कि ख़ुदा की यही सुन्नत है और तू रब्ब की सुन्नतों में परिवर्तन नहीं पाएगा। इस वाक्य के बारे में यह समझाया गया कि ख़ुदा की आदत इसी प्रकार से जारी है कि वह किसी पर अज़ाब नहीं उतारता जब तक ऐसे पूर्ण सामान पैदा न हो जाएं जो ख़ुदा के प्रकोप को भड़का दें और यदि दिल के किसी कोने में कुछ ख़ुदा का भय छुपा हुआ हो और कुछ धड़का आरंभ हो जाए तो अज़ाब नहीं उतरता तथा दूसरे समय पर जा पड़ता है। और फिर फ़रमाया कि कुछ आश्चर्य मत करो और शोक मत करो और विजय तुम्हारी ही है यदि तुम ईमान पर क़ायम रहो। यह इस ख़ाकसार की जमाअत को सम्बोधन है। फिर फ़रमाया कि मुझे अपने सम्मान और प्रताप की क़सम है कि तू ही विजयी है। यह इस ख़ाकसार को सम्बोधन है और फिर फ़रमाया कि हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े करेंगे। अर्थात् वे अपमानित

उसके पास कोई भी सबूत न हो। यदि उसने उन आक्रमणों का वास्तविक तौर पर निरीक्षण किया था तो वह बड़ा ही दुर्भाग्यशाली था कि बावजूद इसके कि उसकी कोठी बहुत से आदमियों से भरी हुई थी तब भी वह अपने किसी आदमी को कोई सवार या पैदल या घोड़ा या हथियार दिखा न सका और न वर्णन कर

होंगे और उनका छल नष्ट हो जाएगा। इसमें यह बोध हुआ कि तुम ही विजयी हो न कि शत्रु। और ख़ुदा तआला बस नहीं करेगा और न रुकेगा जब तक शत्रुओं के समस्त छलों को उजागर न करे और उनके छल को तबाह न कर दे। अर्थात् जो छल बनाया गया और साक्षात् किया गया उसे तोड़ डालेगा और उसे मुर्दा करके फेंक देगा और उस का शव लोगों को दिखा देगा। फिर फ़रमाया कि हम असल भेद उसकी पिण्डलियों से नंगा करके दिखा देंगे अर्थात् वास्तविकता को खोल देंगे और विजय के स्पष्ट तर्क प्रकट कर देंगे और उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे पहले मोमिन भी, पिछले मोमिन भी।

(देखो अन्वारुल इस्लाम पृष्ठ-2)

अब देखो आज इस इल्हाम के अनुसार कैसे सफाई से इस भविष्यवाणी की वास्तविकता स्पष्ट हो गई। क्या आज वे सब मर गए या नहीं जिन्होंने अमृतसर में आथम को गाड़ी में बिठाकर बाज़ारों में फिराया था, क्या आज सिद्ध हो गया या नहीं? कि **उनकी वे समस्त खुशियां झूठी थीं।** इस भविष्यवाणी में दयालु ख़ुदा ने स्पष्ट वादा किया था कि यद्यपि आथम ने इल्हामी भविष्यवाणी के कारण अपने हृदय में बहुत सी चिन्ता और ग़म डालकर ख़ुदा की अनादि सुन्नत से लाभ उठाया और उसकी मौत में विलम्ब हो गया। परन्तु धृष्टता के समय ख़ुदा फिर उसे पकड़ेगा और मृत्यु देगा।

इसलिए अब यह भविष्यवाणी दोहरे तौर पर दोनों पहलुओं से पूरी हो गई। **प्रथम-** आथम की चिन्ता और ग़म के कारण से इस प्रकार पूरी हुई कि इल्हामी शर्त के अनुसार उसकी मौत में विलम्ब डाल दिया गया। फिर आथम की धृष्टता और सख़्त विरोध की हालत में इस प्रकार से पूरी हुई कि ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार उस को मौत दे दी। अतः इस मुबारक भविष्यवाणी में ख़ुदा तआला ने अपनी जमाली और जलाली (प्रतापी) दोनों विशेषताएं दिखा दीं और नासमझ ईसाइयों तथा मूर्ख मौलवियों को अपमान पर अपमान प्राप्त हुआ। इस्लाम का बोलबाला हुआ और मुर्दा परस्त पादरी और कपटी यहूदी चरित्र मौलवी नितान्त अपमानित हो गए। परन्तु क्या वे अब भी सच्चाई की ओर वापस आएंगे। कदापि नहीं।

(इसी से) قلوبٌ ملعونةٌ فمن يردّ من لعنة الله فتوبّر ان كنت من الصالحين

सका यहां तक कि भविष्यवाणी की मीआद गुज़र गई। मानो जिस प्रकार फ्रीमेसन के लोग अपना राज़ प्रकट करना उचित नहीं समझते उसी प्रकार आथम को भी इस राज़ को प्रकट करने में अपने प्राणों का भय था। क्या कोई सच्चा इस से सहमत हो सकता है कि उसके ऐसे दावे जो उसकी सच्चाई का आधार हैं अंधकार में छोड़े जाएं और उनमें सच्चाई की कोई भी चमक दिखाई न दे।

सच्चा मुद्दई अपने किसी पहलू को आपत्तिजनक छोड़ना नहीं चाहता और पूरी सफ़ाई के लिए तैयार होता है परन्तु हुसामुद्दीन साहिब मुझे बता दें कि आथम ने किस बात में पूरी सफ़ाई दिखाई, क्या उसने आक्रमणों के समय किसी थाने या अदालत में रिपोर्ट की? और यदि यह नहीं तो क्या मौखिक ही किसी हाकिम से यह चर्चा की या किसी मित्र को इस राज़ की सूचना दी? क्या उस ने दण्ड दिलाने के लिए किसी नालिश या मुचलका के लिए कोई कोशिश की? या घरेलू तौर पर कोई सबूत दिया या उसने क़सम खाकर इस आरोप को स्वयं के ऊपर से टालना चाहा परन्तु हमने क़सम को स्वीकार न किया? क्या यह उचित है कि बिना प्रमाण किसी को ऐसे जघन्य अपराध का दोषी ठहराया जाए और उसके आचरण तथा चाल-चलन पर अकारण धब्बा लगाया जाए। ख़ुदा के लिए तनिक सोचो कि किसी भले मानस पर बिना सबूत झूठे इल्ज़ाम लगाकर फिर किसी प्रकार से उन झूठे इल्ज़ामों का सबूत न देना, क्या यह नेक लोगों का कार्य है या बदमाशों का!!!

ईसाइयों ने आथम के इन इल्ज़ामों का बार-बार ज़िक्र तो किया परन्तु यह नहीं दिखाया कि उनके नज़दीक इस का सबूत क्या है? क्या वे लोग जो इन घटनाओं से व्यक्तिगत जानकारी का इक़रार रखते हैं, किसी गुफ़ा में जीवित मौजूद हैं या वे भी आथम के साथ ही मर गए?

क्या ईसाई ईमानदारी यही थी जो अब प्रकट हो गई? यदि पूर्ण सबूत मौजूद नहीं तो संक्षिप्त और अपर्याप्त सबूत ही प्रस्तुत करें ताकि इफ़्तिरा और झूठे इल्ज़ाम का कलंक कुछ तो हल्का हो जाए। और यदि कुछ भी सबूत नहीं तो क्या यह उचित अनुमान नहीं कि यह सब कुछ केवल एक ही बात के लिए

बनाया गया ताकि उस भय की धार को, जो इस्लामी भविष्यवाणी की श्रेष्ठता से ज़ोर से बह रही थी अकारण दूसरी ओर फेर दिया जाए।

अब कौन है जो इस प्रमाणित बात को स्वीकार न करे कि आथम ने इस सीमा तक सच की ओर रुजू किया जो एक भयभीत, डरे हुए और हताश व्यक्ति के बारे में सोच सकते हैं। मैं इस घटना को स्वीकार करता हूँ कि जैसा कि वह भविष्यवाणी से पहले ईसाई था ऐसा ही भविष्यवाणी की मीआद गुज़रने के बाद उसने अपनी ईसाइयत को प्रकट किया। परन्तु क्या कोई इस बात का सबूत दे सकता है कि उस ने भविष्यवाणी के दिनों में कभी लिखित या मौखिक तौर पर ईसाइयत के सिद्धान्त का समर्थन करके अपना तन्मय ईसाई होना व्यक्त किया जैसा कि पहले उसका ढ़ंग था? अपितु सच बात तो यह है कि वह इन समस्त दिनों में ईसाइयत का चोला उतार कर वास्तविक ख़ुदा के आगे गिड़गिड़ाने में लगा रहा जैसा कि विभिन्न साक्ष्य इसके सबूत में अब तक सामने आ रहे हैं। फिर फ़िरऔन की तरह ख़तरनाक दिन गुज़रने के बाद दिन-प्रतिदिन कठोर हृदय होता गया, यहां तक कि हमारे 30 दिसम्बर 1895 ई. के विज्ञापन के समय में वह पूर्ण रूप से कुफ्र के गढ़े में गिर गया और बलअम की तरह दुनिया से प्रेम करके 27 जुलाई 1896 ई. को उन रूहों में जा मिला जो नर्क की भयंकर अग्नि में जल रही हैं।

सुनो हे प्यारो!! आथम के बयान से कैसे ईमानदारी की आशा हो सकती है जो मात्र बिना सबूत और जिसमें बनावट और भावनाओं की दूर से गंध आ रही है और जो न सरसरी दृष्टि से और न गहरी दृष्टि से सही ठहर सकता है। और न केवल तर्कहीन अपितु स्वभाविक तौर पर सच को छुपाने के लिए यही सामान्य तरीक़ा चालबाज़ों का है। जो बात ज्ञानगम्य नहीं क्या वह ऐसी बात के मुक़ाबले पर कुछ वज़न रखती है जो प्रत्येक सच्चाई से भरी अन्तर्रात्मा आसानी से इसे स्वीकार कर सकती है। ज़हर खिलाने के लिए कोशिश करना और तीन आक्रमणों की योजना एक ऐसी अप्रिय बनावट है कि मैं सोच नहीं सकता कि किसी सभ्य ईसाई के दिल ने भी उसको स्वीकार किया हो या एक

पल के लिए भी इस की ओर विचार आ सकता हो।

परन्तु प्रत्येक अन्वेषक और पवित्र हृदय को इस बात में सन्देह करने के लिए कोई कारण दिखाई नहीं देगा कि वह भय जिसका आथम को इक़रार है भविष्यवाणी की श्रेष्ठता के अतिरिक्त उसका अन्य कोई सही चरितार्थ मौजूद नहीं। यदि आथम ने इन झूठे आरोपों का वर्णन न किया होता और यह बहाना बनाना कि वह इस बात से डरा कि कोई स्वार्थी उसको क्षति न पहुंचाए तो शायद कोई सरल स्वभाव व्यक्ति उसे स्वीकार कर लेता और कम से कम यह समझ लेता कि आथम का यह फै़सला एक ऐसा फ़ैसला है जिसने लोगों पर सच को संदिग्ध कर दिया। परन्तु ऐसे सरल प्रकार से वर्णन करना ऐसे झूठे के लिए कब संभव था कि जो वास्तव में भविष्यवाणी से डर कर अपनी मुजरिमाना हालत की प्रेरणा से अवैध बहानों के सोच में पड़ा और उसने सच्चाई से आगे क़दम रख कर झूठ और आरोप से काम लेना चाहा, जिस से वह पूछताछ और जवाबदेही के योग्य ठहरा।

यह कहना अनुचित है कि भविष्यवाणी से डरने का सबूत देना आथम पर नहीं था। क्योंकि जब उसने डरने का इक़रार करके अपितु भय को अपनी गतिविधियों से प्रकट करके फिर भय के ऐसे निरर्थक और बनावटी बयान दिए जो सर्वथा इल्ज़ाम और तर्कहीन थे। तो निस्सन्देह यह भार उसी की गर्दन पर था कि वह उसको सिद्ध करता और उसको चाहिए था कि उस झूठे आरोप से बरी होने के लिए इन्साफ़ की दृष्टि से जो साफ़ सीधा तरीक़ा बनता था अपनी सफाई के गवाह प्रस्तुत करता। नालिश और क़सम से उसका विमुख होना स्पष्ट सच्चाई को छुपाने के लिए था। जब कि उसको और उसके रिश्तेदारों तथा दोस्तों को हमारी ओर से इतना दु:ख और अघात पहुंच चुका था जिससे अधिक दुनिया में पहुंचना असंभव है। तो ऐसा पीड़ित किस प्रकार ख़ामोश रह सकता था। हमने अपने लिए यह दण्ड स्वयं प्रस्तावित कर लिया था कि वह क़सम खा कर हम से चार हज़ार रुपया नक़द ले ले। तो उसने न चाहा कि क़सम खाने की ओर ध्यान दे। अब न्यायवान के सोचने की यह बड़ा भारी

अवसर है★ कि उसने क्यों ऐसे पहलू से पृथकता की जिस से उसके दावे के समस्त दोष और ख़राबी पब्लिक की दृष्टि में समाप्त हो सकते थे और पूर्ण रूप से उसकी सफ़ाई हो सकती थी। उसका कर्तव्य था कि वह जिस प्रकार हो सकता उन आरोपों से स्वयं को बरी करके दिखाता कि जो उस पर लग चुके

★हाशिया :- अख़बार शहन: हिन्द मेरठ 1 सितम्बर 1896 ई. के पहले पृष्ठ में ही एक संवाददाता ने इस ख़ाकसार की भविष्यवाणी आथम इत्यादि के बारे में कुछ नुक़्त: चीनी करके अन्त में अपना ना न्यायप्रिय लिखा है। यह तो ख़ुशी की बात है कि कोई व्यक्ति इन्साफ़ तलब या इन्साफ़ का इच्छुक हो। परन्तु अफ़सोस तो यह है कि अधिकतर लोग सत्यप्रिय और इन्साफ़ के इच्छुक कहला कर फिर शीघ्र ही इन्साफ़ का ख़ून कर देते हैं। और इससे पूर्व कि जो किसी बात की तह तक पहुंचें और किसी वास्तविक सच्चाई को मालूम करें राय व्यक्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं। फिर ऐसी राय जो केवल सरसरी और सतही विचार से पैदा हुई है ग़लती से क्योंकर सुरक्षित रह सकती है। विवश होकर वे अपनी जल्दबाज़ियों के कारण लज्जाजनक ग़लतियों में पड़ते हैं और फिर अपनी ग़लती की हिमायत में ऐसा पक्षपात पैदा हो जाता है कि क्या संभव है कि इस से रुजू कर सकें यद्यपि कि सच्चाई प्रकाशमान दिन के समान खुल जाए। बाहरहाल इन्साफ़ के इच्छुक की सेवा में उनके कुछ बातों का उत्तर दिया जाता है और वह यह है:-

उसका कथन- "मिर्ज़ा साहिब के समर्थकों और विरोधियों ने परले दर्जे की न्यूनाधिकार की है। जो व्यक्ति यह कहता हो कि मैं पवित्र क़ुर्आन को मानता हूँ, नमाज़ पढ़ता हूँ, रोज़े रखता हूँ और लोगों को इस्लाम सिखाता हूँ उसको काफ़िर कहना शोभनीय नहीं लेकिन एक विद्वान के स्तर से बढ़ा कर नबी के स्तर तक भी नहीं पहुँचाना है।"

मेरा कथन- इन्साफ़ के इच्छुक व्यक्ति के बयान में अर्थात् उनके पहले ही कथन में विरोधाभास पाया जाता है। क्योंकि एक ओर तो वे बुहत ही सत्यप्रिय बनकर अत्यन्त मेहरबानी से कहते हैं कि मुसलमान को काफ़िर कहना शोभनीय नहीं, और फिर दूसरी ओर उसी मुंह से मेरे बारे में यह राय व्यक्त करते हैं कि मानो मेरी जमाअत वास्तव में मुझे ख़ुदा का रसूल जानती है और जैसे मैंने वास्तव में नुबुव्वत का दावा किया है। यदि लेखक साहिब की पहली राय सही है कि मैं मुसलमान हूँ और पवित्र क़ुर्आन पर ईमान रखता हूँ तो फिर यह दूसरी राय ग़लत है जिसमें प्रकट किया गया है कि मैं स्वयं नुबुव्वत का दावेदार हूँ। और यदि दूसरी राय सही है तो फिर वह पहली राय ग़लत है जिस में प्रकट किया गया कि

थे। नालिश से या घरेलू छान-बीन प्रस्तुत करने से या क़सम से या किसी अन्य तरीक़े से। परन्तु वह स्वयं को उस आरोप से बरी न कर सका, यहां तक कि क़ब्र में दाख़िल हो गया। अत: उस के झूठ पर एक तो यही सबूत था कि उसने अपनी बरीयत प्रकट करने से बहुत बड़ा अवसर मिलने के बावजूद जान बूझकर

मैं मुसलमान हूँ और पवित्र क़ुर्आन को मानता हूँ। क्या ऐसा दुर्भाग्यशाली मुफ़्तरी जो स्वयं रिसालत और नुबुव्वत का दावा करता है पवित्र क़ुर्आन पर ईमान रखता सकता है? और क्या ऐसा व्यक्ति जो पवित्र क़ुर्आन पर ईमान रखता है आयत-

وَلٰكِنۡ رَّسُوۡلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (सूरह अहज़ाब-41)

को ख़ुदा का कलाम विश्वास रखता है वह कह सकता है कि मैं भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद रसूल और नबी हूँ। इन्साफ़ चाहने वाले को स्मरण रखना चाहिए कि इस ख़ाकसार ने कभी और किसी समय वास्तविक तौर पर नुबुव्वत या रिसालत का दावा नहीं किया और अवास्तविक तौर पर किसी शब्द को इस्तेमाल करना और शब्दकोश के सामान्य अर्थों की दृष्टि से उसको बोल-चाल में लाना कुफ्र को अनिवार्य नहीं करता। परन्तु मैं इसको भी पसन्द नहीं करता क्योंकि इसमें सामान्य मुसलमानों को धोखा लग जाने की संभावना है। परन्तु वह वार्तालाप एवं सम्बोधन जो अल्लाह तआला की ओर से मुझ को मिले हैं जिनमें यह नुबुव्वत और रिसालत का शब्द बड़ी प्रचुरता से वर्णन हुआ है, उनको मैं मामूर होने के कारण गुप्त नहीं रख सकता। परन्तु बार-बार कहता हूँ कि इन इल्हामों में जो शब्द मुर्सल या रसूल या नबी का मेरे बारे में आते हैं* वह अपने वास्तविक अर्थों में प्रयोग नहीं हुए हैं और असल सच्चाई, जिसकी मैं खुलेआम गवाही देता हूँ, यही है कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुल अंबिया हैं। और आप के बाद कोई नबी नहीं आएगा, न कोई पुराना न कोई नया।

ومَنۡ قَالَ بَعۡدَ رَسُوۡلنا وَسَيِّدِنَا اِنِّیۡ نَبِیٌّ اَوۡ رَسُوۡلٌ عَلٰی وَجۡهِ الۡحَقِيۡقة وَالۡاِفۡتِرَاء وَتَرَكَ الۡقُرۡاٰنَ وَاَحۡكَامَ الشَّرِيۡعَة الۡغَرَّاءِ فَهُوَ كَافِرٌ كَذَّابٌ

अत: हमारा मत यही है कि जो व्यक्ति वास्तविक तौर पर नुबुव्वत का दावा करे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फैज़ों के दामन से स्वयं को अलग करके और उस पवित्र उद्गम से पृथक होकर स्वयं ही सीधे तौर पर अल्लाह का नबी बनना चाहता है तो वह नास्तिक और अधर्मी है। और संभवत: ऐसा व्यक्ति अपना कोई नया कलिमा बनाएगा और उपासना (इबादत) में कोई नई पद्धति पैदा करेगा और आदेशों में कुछ परिवर्तन

पहलू बचाया। परन्तु इसके अतिरिक्त उसके झूठ पर सबूत का एक भाग यह पैदा हुआ कि वह उस दूसरी भविष्यवाणी के प्रभाव से जिस की हम बड़े विज्ञापन में चर्चा कर चुके हैं अपने जीवन को बचा न सका। और यही घृष्टता और क़सम खाने से इन्कार जिस के दुष्परिणाम के बारे में बार-बार भविष्यवाणी की गई थी

कर देगा। तो निःसन्देह वह मुसैलिमा कज़्ज़ाब का भाई है और उसके काफ़िर होने में कुछ सन्देह नहीं। ऐसे दुष्ट के बारे में क्योंकर कह सकते हैं कि वह पवित्र क़ुर्आन को मानता है।

परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि जैसा कि अभी हमने वर्णन किया है कभी कभी ख़ुदा तआला के इल्हामों में ऐसे शब्द रूपक और मजाज़ के तौर पर उसके कुछ वलियों के बारे में इस्तेमाल हो जाते हैं और वे वास्तविकता पर चरितार्थ नहीं होते। समस्त झगड़ा यह है जिसको मूर्ख पक्षपाती दूसरी ओर खींच कर ले गए हैं। आने वाले मसीह मौऊद का नाम जो सही मुस्लिम इत्यादि में हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की पवित्र जीभ से नबियुल्लाह निकला है वह उन्हीं मजाज़ी (लाक्षणिक) अर्थों के अनुसार है जो सूफ़िया किराम की पुस्तकों में मान्य और ख़ुदा के वार्तालाप का एक सामान्य मुहावरा है, अन्यथा ख़ातमुल अंबिया के बाद नबी कैसा।

उसका कथन- हज़रत अक़दस मिर्ज़ा साहिब ने अपने सच्चा या झूठा होने का मापदण्ड अपनी अमूल्य और अद्वितीय पुस्तक 'शहादतुल क़ुर्आन' में दर्ज किया है (अर्थात् आथम और अहमद बेग होशियारपुरी के दामाद की मौत की भविष्यवाणी और लेखराम पेशावरी के बारे में भविष्यवाणी) अब दर्शक स्वयं समझ लेंगे कि वह सच्चा दावा है या बेफ़ायदा झूठ।

मेरा कथन- मैं कहता हूँ कि लेखराम की भविष्यवाणी की मीआद तो अभी बहुत शेष है तो उसकी चर्चा समय से पूर्व है। हाँ आथम, अहमद बेग़ और अहमद बेग़ के दामाद के बारे में जो भविष्यवाणी थी उसकी मीआद गुज़र चुकी है। वास्तव में यह दो भविष्यवाणियां थीं। एक आथम की मौत के बारे में, दूसरी अहमद बेग़ और उसके दामाद की मौत के बारे में। तो आथम 27 जुलाई 1896 ई. को दिन सोमवार मर गया। और एक आंखें रखने वाला समझ सकता है कि भविष्यवाणी के अनुसार उसकी मृत्यु हुई। और इस भविष्यवाणी में दो पहलू थे तो अपने दोनों पहलुओं की दृष्टि से यह भविष्यवाणी पूरी हो गई। हम किसी पक्षपाती निर्लज्ज का मुंह तो बन्द नहीं कर सकते और न हमसे पूर्व कोई नबी या रसूल बन्द कर सका। परन्तु एक संयमी के लिए इस भविष्यवाणी की सच्चाई समझने में कुछ भी कठिनाइयां

और वर्णन किया गया था कि उसके आग्रह के समय के पश्चात् उस पर मौत का अज़ाब आएगा, उसके शीघ्र मरने का कारण हो गया, और जैसा कि हम कई बार लिख चुके हैं कि हमारे विज्ञापन 30, दिसम्बर 1895 ई. के बाद जो

नहीं। अत: हम इसी पुस्तक और पहली पुस्तकों में भी बहुत कुछ वर्णन कर चुके हैं।

शेष रही अहमद बेग़ की मृत्यु और उसके दामाद की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी। अत: अहमद बेग़ तो भविष्यवाणी की मीआद के अन्दर मर गया जिस से हमारे किसी विरोधी को इन्कार नहीं मानो भविष्यवाणी की दो टांगों में से एक टांग टूट गई। रहा उसका दामाद तो वह अपने साथी ससुर की मौत की घटना से भय से इतना भर गया था कि मानो मौत से पहले मर गया। और इस बात को कौन नहीं समझ सकता कि जब एक ही भविष्यवाणी दो लोगों की मृत्यु की ख़बर दे और एक उनमें से मर जाए तो दूसरे पर उस मृत्यु का स्वभाविक तौर पर प्रभाव पड़ जाता है। तो यहां ऐसा ही हुआ। इसलिए ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार जिसका ज़िक्र हम बार-बार कर चुके हैं इस अज़ाब के वादे की मीआद में विलम्ब हो गया।

हम अपने पहले विज्ञापनों में उन कुछ पत्रों की चर्चा कर चुके हैं जो उन लोगों की ओर से हमें पहुंचे जिनमें तौब:, भय और रुजू का इक़रार था। फिर यदि यह बात क़ुर्आन और तौरात की दृष्टि से सही नहीं है कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी की मीआद का विलम्ब वैध है तो प्रत्येक ऐतराज़कर्ता का ऐतराज़ उचित और सही है, परन्तु यदि क़ुर्आन और तौरात की दृष्टि से यही बात निरन्तरता से सिद्ध होती है कि अज़ाब के वादे की मीआद तौब: और भय से टल सकती है तो बड़ी बेईमानी होगी कि कोई व्यक्ति मुसलमान कहलाकर या ईसाई कहला कर फिर ऐसी बात पर ऐतराज़ करे जो पवित्र क़ुर्आन और पहली आकाशीय किताबों से सिद्ध है। इस स्थिति में ऐसा व्यक्ति हम पर ऐतराज़ नहीं करता अपितु ऐसे अयोग्य का ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों पर ऐतराज़ है। हमारे चौथे विज्ञापन को पढ़ो जिसके साथ चार हज़ार रुपये का ईनाम है ताकि मालूम हो कि अल्लाह तआला ने यूनुस नबी को अटल तौर पर चालीस दिन तक अज़ाब उतरने का वादा दिया था और वह अटल वादा था जिस के साथ कोई भी शर्त नहीं थी जैसा कि तफ़्सीर कबीर पृष्ठ 164 और इमाम सुयूती की तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर में सही हदीसों की दृष्टि से उसकी पुष्टि मौजूद है। देखो विज्ञापन ईनामी चार हज़ार रुपया पृष्ठ-12 और यूना अर्थात् यूनुस नबी की किताब में जो बाइबिल में मौजूद है। अध्याय-3 आयत 4 में लिखा है: "और यूना शहर में अर्थात् नेनवा में दाख़िल होने लगा और एक दिन मार्ग का तय करके मुनादी की और कहा चालीस और दिन होंगे तब नेनवा

हमारा अन्तिम विज्ञापन हुज्जत पूर्ण करने के तौर पर था, पूरे सात माह भी जीवित न रह सका। तो क्या यह ख़ुदा का कार्य नहीं है कि उसने आथम के इन्कार के हठ पर मौत के दण्ड से उसका समस्त झूठ और इफ़्तिरा तुरन्त प्रकट कर दिया।

बरबाद किया जाएगा। तब नेनवा निवासियों ने ख़ुदा पर विश्वास किया और रोज़े की मुनादी की और छोटे-बड़े तक सब ने टाट पहना और ख़ुदा ने उनके कार्यों को देखा कि वे अपने बुरे बात से रुक गए। तब ख़ुदा उस बदी से जो उसने कही थी पछता के रुक गया और उसने उन से वह बदी न की। अध्याय-4 परन्तु यूना इस से अप्रसन्न हुआ निपट ग़मगीन (दुखित) हो गया। 2.और उसने ख़ुदाबन्द के आगे दुआ मांगी। 3. अब हे ख़ुदा बन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरे प्राण को मुझ से ले ले। क्योंकि मेरा मरना मेरे जीने से उत्तम है।" और दुर्रे मन्सूर में इब्ने अब्बास से यह रिवायत है:-

اوحی اللہ الیٰ یونس انی مرسل علیھم العذاب فی یوم کذا و کذا۔ فعجّوا الی اللہ و انابوا فاقالھم اللہ واَخَّر عنھم العَذَاب۔ فقال یونس لا ارجع الیھم کذّابًا و مضیٰ علیٰ وجھہٖ۔

अर्थात् ख़ुदा ने यूनुस पर यह वह्यी उतारी कि अमुक दिन अज़ाब उतारूंगा तो उन लोगों ने ख़ुदा की ओर गिड़गिड़ाए और रुजू किया। तो ख़ुदा ने उनको माफ़ कर दिया और किसी दूसरे समय पर अज़ाब टाल दिया। तब यूनुस कहने लगा कि अब मैं कज़्ज़ाब कहला कर अपनी क़ौम की ओर वापस नहीं जाऊंगा और दूसरा मार्ग लिया। देखो तफ़्सीर दुर्रे मन्सूर, तफ़्सीर आयत مُغَاضِبًا के अन्तर्गत और देखो विज्ञापन चतुर्थ का पृष्ठ 14 इनामी विज्ञापन चार हज़ार रुपया।

हम इस स्थान पर हज़रत अहमद हुसैन साहिब को ही जज ठहराते हैं कि क्या आप कह सकते हैं कि ख़ुदा का यह इल्हाम झूठा निकला और नऊज़ुबिल्लाह यूनुस कज़्ज़ाब था? असल बात यह है कि पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान अधिकतर लोगों से दूर हो गया है और कहने को अहले हदीस भी कहलाते हैं, परन्तु हदीसों के सार से अपरिचित हैं। हम बार-बार लिख चुके हैं कि इन्हीं क़िस्मों की दृष्टि से अहले सुन्नत की यह सामान्य आस्था है कि अज़ाब के वादे की मीआद (निर्धारित अवधि) में विलम्ब हो जाना तौबा या भय के कारण वैध है। कितने अफ़सोस की बात है कि मुसलमान कहलाकर और इन हदीसों को पढ़कर फिर उस भविष्यवाणी को झुठलाया जाए जो यूनुस की भविष्यवाणी के समरूप है और ऐसी बातों में इस ख़ाकसार को झूठा ठहराया जाए जिनमें दूसरे अंबिया भी सम्मिलित हैं।

अब बताओ कि हमारे इस वर्णन में कौन सा दोष है और आथम को दोषी ठहराने के लिए किस सबूत की कमी रह गई है। नि:सन्देह उसी की व्यावहारिक हालत ने उस पर फ़र्द क़rarदाद जुर्म (दण्ड की धारा) लगा दी जिस पर वह एक भी सफ़ाई का गवाह प्रस्तुत न कर सका। अब ईसाइयों को उस की अकारण सहायता से कुछ प्राप्त नहीं होगा। हम ने बहुत सफाई से बार-बार इस बात पर बल दिया कि आथम इस बयान में बिल्कुल झूठा है कि उस के क़त्ल के लिए हमारी ओर से अवैध आक्रमण हुए। हम ने उसको अपने पहले विज्ञापनों में बहुत स्वाभिमान दिलाया और स्वाभिमान दिलाने वाले

मैं बार-बार कहता हूँ कि मूल भविष्यवाणी अहमद बेग़ के दामाद की अटल तक़्दीर है उसकी प्रतीक्षा करो। और यदि मैं झूठा हूँ तो यह भविष्यवाणी पूरी नहीं होगी और मेरी मौत आ जाएगी और यदि मैं सच्चा हूँ तो ख़ुदा तआला इसे अवश्य ऐसा ही पूरी कर देगा जैसा कि अहमद बेग़ और आथम की भविष्यवाणी पूरी हो गई। असल उद्देश्य तो उसका भावार्थ है और समयों में तो कभी रूपकों का भी हस्तक्षेप हो जाता है। यहां तक कि बाइबिल की कुछ भविष्यवाणियों में दिनों के साल बनाए गए हैं। जो बात ख़ुदा की ओर से ठहर चुकी है कोई उसे टोक नहीं सकता। थोड़ी शर्म करना चाहिए कि जिस हालत में स्वयं अहमद बेग़ उस भविष्यवाणी के अनुसार मीआद के अन्दर मर गया और वह भविष्यवाणी में प्रथम नम्बर पर था। तो फिर यदि ख़ुदा का भय हो तो इस भविष्यवाणी के असल अर्थ में सन्देह न किया जाए क्योंकि एक घटित हो चुके मामले का यह दूसरा भाग है। जिस हालत में ख़ुदा और रसूल[स.] तथा पहली किताबों की गवाहियों के उदाहरण मौजूद हैं कि अज़ाब की भविष्यवाणी में यद्यपि प्रत्यक्ष में कोई भी शर्त हो तब भी भय के कारण विलम्ब डाल दिया जाता है। तो फिर सामूहिक आस्था से **मात्र मेरी शत्रुता के लिए** मुंह फेरना यदि नीचता और बेईमानी नहीं तो और क्या है। फ़ैसला तो आसान है। अहमद बेग़ के दामाद सुल्तान मुहम्मद को कहो कि झुठलाने का विज्ञापन दे। तत्पश्चात् जो मीआद ख़ुदा तआला निर्धारित करे यदि उस से उस की मौत बाहर निकल जाए तो मैं झूठा हूँ। अन्यथा हे मूर्खों सच्चों को झूठा मत ठहराओ कि अपमानित होकर मरोगे। मेरी शत्रुता से इस्लाम से बाहर मत जाओ। क्या तुम नहीं समझते कि इस संबंध में पवित्र क़ुर्आन और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा दूसरी

शब्द प्रयोग किए परन्तु कुछ ऐसा डर उसके दिल में बैठ गया था कि वह सर न उठा सका। फिर हमने अत्यन्त दर्द से और विनयपूर्वक यसू के सम्मान और पद को स्मरण करा कर क़सम दी और जहां तक हमें शब्द मिल सके हमने इस बात पर बल दिया कि वह उस आरोप को जो हम पर लगाता है सिद्ध करे या क़सम खाए। परन्तु वह उन दुर्भाग्यशाली झूठों की तरह चुप रहा जिन की अन्तर्आत्मा हर समय उनको धिक्कारती है कि तुम ख़ुदा की लानत के नीचे कार्यवाही कर रहे हो। नि:सन्देह उसको यह भय खा गया कि जांच-पड़ताल कराने के समय उसके षययन्त्रों की पोल खुल जाएगी और क़सम खाने की हालत में उस पर ख़ुदा का प्रकोप उतरेगा। तो उसने न नालिश की और न

इल्हामीं किताबों का झुठलाना अनिवार्य आता है। नि:सन्देह समझो कि किसी की शत्रुता से अल्लाह और रसूल तथा दूसरे नबियों की किताबों से विमुख हो जाना लानतियों का काम है न कि नेक दिल मुसलमानों का। साफ़ प्रकट है कि आथम की भविष्यवाणी और उस भविष्यवाणी में तीन लोगों की मौत की ख़बर दी गई थी। अत: उन में से दो तो मृत्यु पा चुके केवल एक शेष है। तो उस एक की प्रतीक्षा करो। आवश्यक है कि यह अज़ाब के वादे की मौत उस से थमी रहे जब तक वह घड़ी आ जाए जो उसे बेबाक कर दे। अत: यदि जल्दी करना है तो उठो और उसे बेबाक और झुठलाने वाला बनाओ और उस से विज्ञापन दिलाओ। फिर ख़ुदा की क़ुदरत का तमाशा देखो। इस भविष्यवाणी में अरबी इल्हाम के शब्द ये हैं-

كَذَّبُوابآ يا تنا و كانو ابها يستهزؤن۔ فسيكفيكم اللّٰہ و يردها اليك۔ لا تبديل لكلمات اللّٰہ انّ ربّك فعّال لما يريد۔

यदि कोई इसी बात में प्रसन्न है कि मुझ से ठट्ठा करे तो मैं इसमें भी अप्रसन्न नहीं क्योंकि सच्चों और ईमानदारों के साथ मुझसे पूर्व भी ठट्ठा किया गया है। फिर बहुत शीघ्र ठट्ठा करने वाले मिट गए। और कोई न बता सका कि कहां गए

وانّی باعین اللّٰہ هو يرانی ومن يكذبنی واعلم منه انّه لا يضيعنی ولا يخزينی فويل للذين كفّرونی ولعنونی سبّونی وشتمونی وكذبوا كلماتی ولم يحيطوا بها علما فالموت كان خيرًا لهم من هذا لو كانوا يعلمون۔

इसी से।

क़सम खाई अपितु उसने घटनाओं की ओर देखकर यह बात साफ़ देखी कि इन दोनों कार्यवाहियों में कोई कार्यवाही भी उसके लिए मुबारक नहीं होगी और बुरा अंजाम होगा। यही कारण है कि उसका स्वयं को ईसाई कहलाना उसकी व्यवहारिक हालत से अन्तिम सांस तक विपरीत रहा। उसके साथी पादरी और डॉक्टर क्लार्क सर पीट-पीट कर थक गए परन्तु उसने न चाहा कि उन दावों को अदालत के द्वारा सिद्ध कराए, क्योंकि वह जानता था कि ऐसे बड़े आरोप इस से पूर्व कि वे सही समझे जाएं स्वभाविक तौर पर पुख्ता सबूत चाहते हैं और सबूत के अभाव की अवस्था में अदालतें दूसरे सदस्य को बदला लेने हेतु नालिश करने की अनुमति देती हैं।

अत: सोचना चाहिए कि वह अपने इस आरोप और झूठ से कितना हताश और भयभीत था बावजूद इसके कि उसके दामाद हुकूमत के बड़े-बड़े पदों पर प्रतिष्ठित थे और उसके ईसाई दोस्त सरकार में प्रथम श्रेणी की पहुंच रखते थे फिर भी उस का दिल इस बात पर सन्तुष्ट न हो सका कि ऐसी नालिश के बाद फिर बचकर अपने घर में आ जाएगा। यदि चश्मदीद गवाहियों से आथम यह सिद्ध कर सकता कि वास्तव में ये अवैध आक्रमण हुए तो कम से कम वह अख़बारों के माध्यम से इस सबूत को जनता पर प्रकट करता क्योंकि इस सफलता के अन्दर ईसाइयों का बड़ा उद्देश्य भरा हुआ था। कारण यह है कि उसका सामान्य परिणाम यह था कि हमारा झूठा और मुफ़्तरी होना प्रत्येक पर खुल जाता और कम से कम यह कि हमारे चाल-चलन के बारे में प्रत्येक को सुदृढ़ सन्देह पैदा हो जाता और इतिहास के पृष्ठों में हमेशा यह घटना उल्लेखनीय समझी जाती। इस बात से किस की सन्तुष्टि हो सकती है कि आथम ने इन आरोपों को प्रस्तुत करके और फिर सबूत देने से विमुख होकर बेईमानी और झूठ के मार्ग को ग्रहण नहीं किया।

यदि अब भी ईसाई न रुकें तो उत्तम है कि हम और उन के कुछ सरदार मुबाहले के तौर पर मैदान में आकर ख़ुदा के इन्साफ़ से फ़त्वा ले लें। झूठे पर किसी सदस्य के निर्धारण के बिना लानत करना किसी धर्म में अवैध नहीं। न हम

में, न ईसाइयों में न यहूदियों में। यही कारण है कि पादरी वाइट बरेख़्त शिमला जाने से कुछ समय पूर्व अपने कुछ ईसाइयों के साथ मेरे पास क़ादियान आए और मुझे कहा कि आथम नहीं मरा। मैंने कहा कि उसने इस्लामी भविष्यवाणी से डर कर भविष्यवाणी की शर्त से लाभ उठाया और स्वयं इक़रार किया कि मैं डरता रहा और उन आक्रमणों का सबूत न दे सका जो डरने का कारण ठहराए। वायट ने कहा कि झूठों पर ख़ुदा की लानत हो। मैंने कहा कि नि:सन्देह झूठों पर लानत पड़ेगी। यदि आथम झूठा है या मैं तो ख़ुदा इसका फ़ैसला कर देगा। अत: थोड़े समय के बाद इस लानत का प्रभाव आथम पर पड़ गया और चार दिन तक चन्द्रा का कठोर अज़ाब सहन करके स्थायी अज़ाब की क़ैद में जा पड़ा। पादरी वायट ब्रेख़्त को यदि ख़ुदा का भय है तो अब समझ सकता है कि हम दोनों अर्थात् आथम और इस लेखक में से कौन लानती था।

अब इस क़िस्से के लिखने का कारण यह है कि पादरी वायट ब्रेख़्त ने भी चाहा था कि झूठे पर लानत हो। तो चूंकि आथम झूठा था इसलिए उस पर लानत पड़ गई। अत: इसीलिए मैं कहता हूँ कि आथम के मामले में किसी पादरी साहिब या किसी अन्य ईसाई को सन्देह है और विचार करना हो कि भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई तो अनिवार्य है कि **मुझ से मुबाहला करे।**

और लानत का अर्थ अपने विरोधियों के लिए स्वयं यसू ने भी प्रयोग किया है क्योंकि यहूदियों पर विलाप यसू के कलाम में आया है और विलाप और लानत एक ही चीज़ है और यसू ने विरोधियों के अज़ाब की भविष्यवाणी भी की है। इस स्थिति में वह तरीक़ा जो ईसाइयों के पथ-प्रदर्शक और गुरु ने इस्तेमाल किया है उस पर ऐतराज़ करना बड़ा दुर्भाग्य है। इसके अतिरिक्त यदि इस लानत के शब्द को इस्तेमाल करना नहीं चाहते तो दण्ड के शब्द को इस्तेमाल करें और यदि एक वर्ष तक ऐसा आदमी जो मुबाहले के मैदान में आए आकाशीय अज़ाब से दण्ड पाने वाला न हो जाए तो मैं लिख दूंगा कि नि:सन्देह मेरी भविष्यवाणी ग़लत निकली। और यदि कोई मुक़ाबले पर न आया तो समस्त पाठक समझ लें कि ईसाई असत्य पर होने के कारण भाग गए।

यह भी उचित समझता हूँ कि चूंकि ईसाइयों की धार्मिक शत्रुता बहुत बढ़ गई है इसलिए अत्यावश्यक है कि प्रतिदिन का झगड़ा तय करने के लिए साथ ही इस्लाम और ईसाइयत का मुबाहला भी मेरे साथ कर लें। यदि ईसाई लानत के शब्द से नफ़रत करने वाले हैं तो इस शब्द को जाने दें अपितु दोनों सदस्य यह दुआ करें कि हे समस्त लोकों के माबूद (उपास्य)। इस्लाम तो यह शिक्षा देता है कि तस्लीस (तीन ख़ुदा) की शिक्षा सर्वथा झूठी और शैतानी तरीक़ा है और मरयम का बेटा ख़ुदा कदापि नहीं था अपितु एक इन्सान था और नबी था तथा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदा के सच्चे पैग़म्बर और रसूल और ख़ातमुल अंबिया थे। और क़ुर्आन ख़ुदा का पवित्र कलाम है जो प्रत्येक ग़लती और दोष से पवित्र है। और ईसाई इस शिक्षा को प्रस्तुत करते हैं कि मरयम का बेटा यसू वास्तव में ख़ुदा था। वही था जिसने पृथ्वी और आकाश पैदा किया, उसी के ख़ून से दुनिया को मुक्ति मिल गई। और ख़ुदा तीन उक़्नूम हैं- बाप, बेटा, रूहुल क़ुदूस। और यसू तीनों का पूर्ण संग्रह ख़ुदा है। अब हे शक्तिमान इन दोनों गिरोह में इस प्रकार फ़ैसला कर कि जो हम दोनों पक्षों में जो इस समय मुबाहले के मैदान में उपस्थित हैं जो सदस्य झूठी आस्था का पाबन्द है उसको एक वर्ष के अन्दर बड़े अज़ाब से मार दे, क्योंकि समस्त संसार की मुक्ति के लिए कुछ आदमियों का मरना उत्तम है।

इसलिए हम में से और ईसाइयों में से प्रत्येक पक्ष दुआ करे इस प्रकार से कि प्रथम एक पक्ष यह दुआ करे और दूसरा पक्ष आमीन कहे। और फिर दूसरा पक्ष दुआ करे और पहला पक्ष आमीन कहे। तथा फिर एक वर्ष तक ख़ुदा के आदेश के प्रतीक्षक रहें। और मैं इस समय सच्चा शरई इक़रार करता हूँ कि इन दोनों मुबाहलों में दो हज़ार रुपया उन ईसाइयों के लिए जमा करा दूंगा जो मेरे मुक़ाबले पर मुबाहले के मैदान में आएंगे। यह काम अत्यावश्यक है जैसा कि हम कहते हैं कि ज़िन्दा और शक्तिमान ख़ुदा हमारे साथ है। ईसाई भी कहते हैं कि वह हमारे साथ है।

अब इस मुबाहले से यह बड़ा लाभ होगा कि लोगों को मालूम हो जाएगा

कि ख़ुदा किस क़ौम के साथ है और यदि ईसाई स्वीकार न करें तो लानत ढेर उनके लिए आकाश पर जमा होगा और लोग समझ जाएंगे कि वे झूठे हैं। हमारे सम्बोधित डॉक्टर क्लार्क, पादरी इमादुद्दीन, हुसामुद्दीन एडीटर 'कश्फ़ल हक़ाइक़', मुन्शी सफ्दर अली भण्डारा, पादरी फ़तह मसीह और प्रत्येक ऐसा व्यक्ति जो पादरी और इस्लाम का शत्रु हो निवेदन करे। फ़ैसले का यह तरीक़ा उत्तम है ताकि दुनिया रोज़-रोज़ के झगड़ों से मुक्ति पाए।

تاسیہ روئے شود ہر کہ دروغش باشد

अनुवाद :- ताकि जिसका झूठ प्रकट हो जाए उसका मूँह काला हो।

सलामती हो उस पर जो सन्मार्ग का अनुसरण करे।

विज्ञापन दाता

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

यह वह पुस्तक है जिसका नाम "ख़ुदा का फैसला" है

पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त पादरी साहिबों के लिए फैसले का एक उत्तम उपाय

ईसाई लोगों का यह विश्वास है कि जो लोग तस्लीस (ट्रिनिटी) की आस्था और यसू का कफ़्फ़ारा नहीं मानते, वे शाश्वत नर्क में डाले जाएंगे और वह विश्वास जो ख़ुदा तआला ने अपने पवित्र कलाम (वाणी) पवित्र क़ुर्आन के द्वारा मुसलमानों को सिखाया है वह यह है कि एकेश्वरवाद के बिना मुक्ति नहीं। यही एकेश्वरवाद (तौहीद) है जिसके अनुसार समस्त संसार की पकड़ होगी चाहे क़ुर्आन उन तक न पहुंचा हो। क्योंकि यह इन्सान के दिल में स्वभाविक तौर पर अंकित है कि उसका सृष्टा और मालिक अकेला ख़ुदा है जिसके साथ कोई भागीदार नहीं। इस एकेश्वरवाद में कोई भी ऐसी बात नहीं जो ज़बरदस्ती मनवानी पड़े क्योंकि इन्सानी दिल की बनावट के साथ ही इसके नक़्श मनुष्य के दिल में अंकित किये जाते हैं।

परन्तु जैसी कि ईसाइयों की आस्था है असीमित ख़ुदा को तीन उक़्नूम में या चार उक़्नूम में सीमित करना और फिर प्रत्येक उक़्नूम को पूर्ण भी समझना और तरकीब का मुहताज भी और फिर ख़ुदा के बारे में यह वैध रखना कि वह प्रारंभ में कलिमा था फिर वही कलिमा जो ख़ुदा था मरयम के पेट में पड़ा और उसके ख़ून से साक्षात् हुआ और स्वाभाविक मार्ग से पैदा हुआ और समस्त दुःख, ख़सरा, चेचक, दांतों का कष्ट जो मनुष्य को होते हैं, वे सब उठाए। अन्त में जवान होकर पकड़ा गया और सलीब पर चढ़ाया गया। यह अत्यन्त गन्दा शिर्क है जिसमें मनुष्य को ख़ुदा ठहराया गया है। ख़ुदा इस से पवित्र है कि वह किसी के पेट में पड़े और शरीर ग्रहण करे और शत्रुओं के

हाथों गिरफ़्तार हो। मानवीय प्रकृति इस को स्वीकार नहीं कर सकती कि ख़ुदा पर ऐसे दु:ख की मार और ये संकट पड़ें और वह जो समस्त श्रेष्ठताओं का मालिक और समस्त सम्मानों का उद्गम है अपने लिए ये समस्त अपमान रखे। ईसाई इस बात को मानते हैं कि ख़ुदा की बदनामी का यह पहला ही अवसर है और इस से पूर्व ख़ुदा ने इस प्रकार के अपमान कभी नहीं उठाए। कभी यह बात घटित नहीं हुई कि ख़ुदा भी मनुष्य की तरह किसी स्त्री के गर्भाशय में वीर्य में मिश्रित होकर ठहर गया हो, जब से कि लोगों ने ख़ुदा का नाम सुना कभी ऐसा नहीं हुआ कि वह भी मनुष्य की भांति किसी स्त्री के पेट से पैदा हुआ हो। ये समस्त वे बातें हैं जिन का ईसाइयों को स्वयं इक़रार है, और इस बात का भी इक़रार है कि यद्यपि पहले ये तीन उक़्नूम तीन शरीर पृथक-पृथक नहीं रखते थे, परन्तु इस विशेष युग से जिसको अब 1896 वर्ष हो रहे हैं तीनों उक़्नूम के लिए तीन पृथक-पृथक शरीर निर्धारित हो गए। बाप का वह रूप है जो आदम का है क्योंकि उसने आदम को अपने रूप पर बनाया। देखो तौरात पैदायश अध्याय-1 आयत-27 और बेटा यसू के रूप पर साक्षात् हुआ। देखो यूहन्ना, अध्याय-1, आयत-1 और रूहुल क़ुदूस कबूतर के रूप में साक्षात् हुआ। देखो मती अध्याय-3, आयत-16 अब जिस ने ईसाइयों के इन तीन साक्षात् ख़ुदाओं का दर्शन करना हो और उनकी शारीरिक तस्लीस का नक़्शा देखना चाहता हो तो कुछ ज़रूरी नहीं कि उनकी ओर याचना ले जाए अपितु जैसा कि हम ने पुस्तक 'सतबचन' में सिक्ख सज्जनों के गुप्त चोले की गुरु के समस्त चेलों का दर्शन करा दिया है इसी प्रकार हम यसू के शागिर्दों को भी उन के तीन साक्षात् ख़ुदाओं के दर्शन करा देते हैं और उनके त्रिकोणीय तस्लीसी ख़ुदा को दिखा देते हैं। चाहिए कि उसके आगे झुकें और नतमस्तक हों और वह यह है जिसको हम ने ईसाइयों की प्रकाशित तस्वीरों से लिया है।

ईसाइयों का त्रिकोणीय ख़ुदा और उसकी कमेटी के तीन सदस्य जो उक़्नूम कहलाते हैं

ये तीनों साक्षात् ख़ुदा ईसाइयों के विचार में हमेशा के लिए साक्षात् और हमेशा के लिए पृथक-पृथक अस्तित्व रखते हैं और फिर भी तीनों मिलकर एक ख़ुदा है। परन्तु यदि कोई बता सकता है तो हमें बता दे कि बावजूद इस शाश्वत मजस्सिम और परिवर्तन के ये तीनों एक क्योंकर हैं। भला हमें कोई

डॉक्टर मार्टिन क्लार्क और पादरी इमादुद्दीन और पादरी ठाकुरदास को उनके पृथक-पृथक शरीर के बावजूद एक करके तो दिखा दे। हम दावे से कहते हैं कि यदि तीनों को कूट कर भी कुछ का मांस कुछ के साथ मिला दिया जाए तो फिर भी जिन को ख़ुदा ने तीन बनाया था कदापि एक नहीं हो सकेंगे। फिर जबकि इस फ़ानी (नश्वर) शरीर के प्राणी बावजूद पृथक-पृथक तथा परिवर्तनशील शरीर होने की संभावना के बावजूद एक नहीं हो सकते, फिर ऐसे तीन मुजस्सम जिनमें ईसाइयों की आस्था के अनुसार अवयवों का पृथक-पृथक होना वैध नहीं एक क्योंकर हो सकते हैं।

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ईसाइयों के ये तीन ख़ुदा कमेटी के तीन सदस्यों के तौर पर हैं और उनके विचार में तीनों की राय की सहमति से प्रत्येक आदेश लागू होता है या राय के बहुमत से फैसला होता है मानो ख़ुदा का कारख़ाना भी प्रजा तांत्रिक शासन है और मानो उनके गाड साहिब को भी **व्यक्तिगत शासन की योग्यता नहीं।** समस्त आधार कोंसिल पर है।

अत: ईसाइयों का यह मिश्रित ख़ुदा है जिसने देखना हो देख ले। पादरी सज्जन ऐसे ख़ुदा वाले धर्म पर तो गर्व करते हैं परन्तु इस्लाम जैसे धर्म का जो ऐसी बुद्धि के विपरीत बातों से पवित्र है अपमान और तिरस्कार कर रहे हैं और दिन-रात यही कार्य है कि अपने दज्जाली धोखों से ख़ुदा के पवित्र और सच्चे नबी को झूठा ठहराएं और बुरी-बुरी तस्वीरों में उस नूरानी रूप को दिखाएं। कुछ अपवित्र प्रकृति के पादरियों ने अपनी पुस्तकों में हमारे सय्यिद-व-मौला ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तस्वीर इस प्रकार खींच कर दिखाई है कि मानो वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसका ख़ूनी रूप है और क्रोध से भरा हुआ खड़ा है तथा एक तलवार हाथ में है और कुछ ग़रीब ईसाइयों इत्यादि को टुकड़े-टुकड़े करना चाहता है। परन्तु यदि इन लोगों को कुछ इन्साफ़ और ईमान में से हिस्सा मिला होता तो इस तस्वीर से पहले मूसा की तस्वीर खींच कर दिखाते और इस प्रकार खींचते कि जैसा एक अत्यन्त निर्दयी और बेरहम इन्सान हाथ में तलवार लेकर दूध पीते बच्चों को उनकी माताओं के सामने टुकड़े-टुकड़े

कर रहा है और ऐसा ही यशू बिन नून की तस्वीर प्रस्तुत करते और उस तस्वीर में यह दिखाते कि मानो उसने लाखों निर्दोष बच्चों को उनकी माताओं सहित टुकड़े-टुकड़े करके मैदान में फेंक दिया है। और चूंकि इनकी आस्थानुसार यशू ख़ुदा है और ये समस्त निर्दयता की कार्यवाहियां उस के आदेश से हुई हैं और वह साकार ख़ुदा है जैसा कि वर्णन हो चुका। तो इस स्थिति में अत्यावश्यक था कि सर्वप्रथम उसकी तस्वीर खींचकर उसके हाथ में कम से कम तीन तलवारें दीं जातीं। पहली वह तलवार जो उसने मूसा को दी और निर्दोष दूध पीते बच्चों को क़त्ल करवाया। दूसरी वह तलवार जो यशू बिन नून को दी। तीसरी वह तलवार जो दाऊद को दी। अफ़सोस कि इस सच को छुपाने वाली क़ौम ने बड़े-बड़े अत्याचारों पर कमर बांध रखी है।

यदि तलवार द्वारा ख़ुदा का अज़ाब उतरना (तो) ख़ुदा की विशेषताओं के विरुद्ध है तो क्यों न यह आरोप सर्वप्रथम मूसा से ही आरंभ किया जाए जिसने क़ौमों को क़त्ल करके ख़ून की नहरें बहा दीं और किसी की तौब: को भी स्वीकार न किया। क़ुर्आनी युद्धों ने तो तौब: का दरवाज़ा खुला रखा जो बिल्कुल प्रकृति के नियम और ख़ुदा की दया के अनुकूल है। क्योंकि अब भी जब ख़ुदा तआला ताऊन और हैज़ा इत्यादि से दुनिया पर अपना अज़ाब उतारता है तो साथ ही तबीबों (वैद्यों) को ऐसी-ऐसी बूटियों और उपायों का भी ज्ञान दे देता है जिस से उस संक्रामक रोग की अग्नि का निवारण हो सके। अत: यह मूसा के युद्ध की पद्धति पर आरोप है कि उसमें प्रकृति के नियम के अनुसार बचाव का कोई तरीक़ा स्थापित नहीं किया गया। हाँ कुछ-कुछ स्थानों पर स्थापित भी किया गया है परन्तु पूर्ण रूप से नहीं। अतएव जब कि यह सुन्नतुल्लाह अर्थात् तलवार से अत्याचारी विरोधियों को मारना सदैव से चला आता है तो पवित्र क़ुर्आन पर क्यों विशेष तौर पर ऐतराज़ किया जाता है। क्या मूसा के युग में ख़ुदा कोई और था और इस्लाम में कोई और हो गया? या ख़ुदा को उस समय लड़ाइयां प्रिय लगती थीं और अब बुरी दिखाई देती हैं?

यह अन्तर भी स्मरण रहे कि इस्लाम ने केवल उन लोगों के मुक़ाबले पर

तलवार उठाने का आदेश दिया है कि पहले स्वयं तलवार उठाएं और उन्हीं के क़त्ल करने का आदेश दिया है जो पहले आप क़त्ल करें। यह आदेश कदापि नहीं दिया कि तुम एक काफ़िर बादशाह के अधीन होकर और उसके न्याय और इन्साफ़ के लाभ उठाकर फिर उसी पर विद्रोह पूर्ण आक्रमण करो। क़ुर्आन की दृष्टि से यह बदमाशों का तरीक़ा है न कि नेक लोगों का। परन्तु तौरात ने यह तरीक़ा कहीं खोलकर वर्णन नहीं किया। इस से स्पष्ट है कि पवित्र क़ुर्आन अपने जलाली (प्रतापी) और जमाली (सौम्य) आदेशों में न्याय और इन्साफ़ तथा दया एवं उपकार के उस बीच के मार्ग पर चलता है जिस का उदाहरण दुनिया में किसी पुस्तक में मौजूद नहीं। परन्तु अंधे दुश्मन फिर भी ऐतराज़ करते हैं। क्योंकि उनकी प्रकृति प्रकाश से बैर और अंधकार से प्रेम रखती है।

अब इस विज्ञापन के लिखने का उद्देश्य यह है कि हमने बड़े लम्बे अनुभव से परख लिया है कि ये लोग बार-बार दोषी और निरुत्तर होकर फिर भी डंक मारने से नहीं रुकते और उस व्यक्ति को समस्त दोषों से पवित्र समझते हैं जिसने स्वयं इक़रार किया कि **"मैं नेक नहीं"** और जिसने मदिरापान और जुआ तथा खुले तौर पर दूसरों की स्त्रियों को देखना वैध रख कर अपितु स्वयं एक व्याभिचारिणी वैश्या से अपने सर पर हराम की कमाई का तेल डलवाकर और उसको यह अवसर देकर कि वह उसके शरीर से शरीर लगाए, अपनी समस्त उम्मत को अनुमति दे दी कि इन बातों में कोई बात भी अवैध नहीं। तो ऐसे व्यक्ति को तो उन्होंने ख़ुदा बना लिया परन्तु ख़ुदा के मुक़द्दस नबियों को जिन का जीवन केवल ख़ुदा के लिए था और जो संयम के बारीक मार्गों को सिखा गए, बुरा कहना और गालियां देना आरंभ कर दिया। अत: अब तक ये लोग रुके नहीं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निन्दा में अत्यन्त अपवित्र और कष्टदायक थिएटर निकालते हैं और नितान्त बुरी तस्वीरों में उस पवित्र अस्तित्व को दिखाते हैं।

अब ऐसे झूठों से मौखिक मुबाहसों से क्योंकर फैसला हो। हम झूठे को मुंहतोड़ उत्तर से दोषी तो ठहरा सकते हैं परन्तु उस का मुंह क्योंकर बन्द

करें। उसकी गन्दी जीभ पर कौन सी थैली चढ़ा दें? उसके गालियां देने वाले मुंह पर कौन सा ताला लगा दें? क्या करें? क्या कोई इस से अनभिज्ञ है कि नालायक इमादुद्दीन ने उस पवित्र अस्तित्व नबी के बारे में क्या-क्या गन्दे शब्द प्रयोग किए, जिस से समस्त मुसलमानों के कलेजे टुकड़े-टुकड़े हो गए। 'नूर अफ़्शां' पर्चा लुधियाना में कैसे-कैसे साप्ताहिक केवल इफ़्तिरा की बुनियाद पर इस्लाम के अपमान के वाक्य लिखे जा रहे हैं। रेवाड़ी वाले पादरी ने मुसलमानों का कितना दिल जलाया और हमारे सय्यिद-व-मौला को डाकू तथा बाटमार ठहराया। तो कहां तक लिखें। अत्याचारी पादरियों ने हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाखों गालियां देकर हमारे दिलों को ज़ख़्मी कर दिया।

परन्तु हम अन्याय करने वाले होंगे यदि साथ ही यह भी गवाही न दें कि इन कार्यवाहियों में सरकार पर कोई आरोप नहीं। नि:सन्देह सरकार प्रत्येक क़ौम को एक ही आंख से देखती है। धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी जैसी कि पादरियों को प्राप्त है वैसी ही हमें भी है यदि हम सरकार के न्याय पर विश्वास न रखते तो संभव न था कि इन अपनी शिकायतों को अभिव्यक्त भी कर सकते। परन्तु हम सरकार को यह कष्ट देना ही नहीं चाहते कि वह धार्मिक मुबाहसों की आज़ादी को बिलकुल बन्द कर दें। हाँ हमारा उद्देश्य यह है कि उन शर्तों की पाबन्दी से इस आज़ादी को कुछ सीमित कर दिया जाए जिसके बारे में हम एक पृथक विज्ञापन प्रकाशित कर चुके हैं। परन्तु सरकार अपने राजकीय कार्यों में व्यस्त है। उसको इस फ़ैसले के लिए तो फ़ुर्सत नहीं कि एकेश्वरवाद और तीन साकार ख़ुदाओं की आस्था के बारे में कुछ अपनी राय लिखे और वह कार्यवाही करे। जैसा कि तीसरी सदी के बाद कान्सटनटायन फर्स्ट कुस्तुनतुनिया के बादशाह ने अढ़ाई सौ बिशप को जमा करके अपनी सभा में एकेश्वरवादी ईसाइयों और तीन उक़्नूम के समर्थक ईसाइयों का परस्पर मुबाहसा कराया था और अन्त में एकेश्वरवादी फ़िर्क़े को डिग्री दी थी और स्वयं भी उनका धर्म स्वीकार कर लिया

था ऐसी ही यह उच्च सरकार भी करे।★ परन्तु यह सरकार ऐसे झगड़ों में पड़ना नहीं चाहती। अत: ये प्रतिदिन के बढ़े हुए झगड़े क्योंकर निर्णय पाएं। मुबाहसों के नेक परिणामों से तो निराशा हो चुकी अपितु जैसे-जैसे मुबाहसे बढ़ते जाते हैं वैसे ही वैर भी साथ साथ उन्नति करते जाते हैं। तो इस निराशा के समय में मेरे नज़दीक एक अत्यन्त सरल और आसान फ़ैसले का तरीक़ा है यदि पादरी लोग स्वीकार कर लें और वह यह है कि इस बहस का जो सीमा से अधिक बढ़ गई है ख़ुदा तआला से फ़ैसला कराया जाए।

सर्वप्रथम मुझे यह वर्णन करना आवश्यक है कि ऐसा ख़ुदाई फ़ैसला कराने के लिए सब से अधिक मुझमें जोश है और मेरी हार्दिक मनोकामना है कि इस तरीक़े से यह प्रतिदिन का झगड़ा तय हो जाए। यदि मेरे समर्थन में ख़ुदा का फ़ैसला न हो तो मैं अपनी कुल चल-अचल सम्पत्ति जो दस हज़ार रुपये के

★**हाशिया :-** ईसाइयों में तस्लीस की समस्या तीसरी सदी के बाद अविष्कृत हुई है जैसा कि डिरेपर भी अपनी पुस्तक में बड़े-बड़े उलेमा के हवाले से लिखता है कि इस समस्या का अविष्कारक बिशप अथानासियत एस अलैक्ज़न्ड्रायन था जो तीसरी शताब्दी के बाद हुआ है। जब उसने यह समस्या प्रकाशित करना चाही तो उसी समय बिशप ऐरी एस. उसका इन्कारी खड़ा हो गया और इस मुबाहसे में जन सामान्य और विशेष लोगों का यहां तक जमावड़ा हुआ कि रूम के बादशाह तक ख़बर पहुंच गई। संयोग से उसको मुबाहसों से दिलचस्पी थी। उसने चाहा कि इस मतभेद को अपने सामने ही दोनों पक्षों के उलेमा से दूर कराए अत: उसकी सभा में बड़ी तल्लीनता से ये मुबाहसे हुए और अत्यन्त आनन्द पूर्वक कोन्सिल की कुर्सियां बिछीं और मुनाज़रा करने वाले दो सौ पचास प्रसिद्ध पादरी थे। अन्त में एकेश्वरवादियों का फ़िर्क़ा जो यसू को केवल इन्सान और रसूल जानता था विजयी हुआ। उसी दिन बादशाह ने यूनिटेरियन का धर्म ग्रहण कर लिया और उसके बाद छ: बादशाह एकेश्वरवादी रहे। अत: जिस क़ैसर को हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पत्र लिखा था। जिस की चर्चा सही बुख़ारी में प्रथम पृष्ठ में ही मौजूद है। वह भी एकेश्वरवादी ही था। उसने क़ुर्आन के इस विषय पर सूचना पाकर कि मसीह केवल इन्सान है पुष्टि की। जैसी कि नज्जाशी ने भी जो ईसाई बादशाह था क़सम खाकर कहा कि यसू का पद इस से तनिक भी अधिक नहीं जो क़ुर्आन ने उसके बारे में लिखा है। परन्तु नज्जाशी इसके बाद खुला-खुला मुसलमान हो गया। इसी से।

मूल्य से कम न होगी, ईसाइयों को दे दूंगा और अग्रिम राशि के तौर पर तीन हज़ार रुपये तक उनके पास जमा भी करा सकता हूँ। इतने माल का मेरे हाथ से निकल जाना मेरे लिए पर्याप्त दण्ड होगा। इसके अतिरिक्त यह भी इक़रार करता हूँ कि मैं अपने हस्ताक्षर द्वारा प्रकाशित करूंगा कि ईसाई विजयी हुए और मैं हार गया और साथ ही यह भी इक़रार करता हूँ कि इस विज्ञापन में कोई भी शर्त न होगी न शब्दों की दृष्टि से न अर्थों की दृष्टि से।

और ख़ुदाई फ़ैसले के लिए यह तरीक़ा होगा कि मेरे मुक़ाबले पर एक प्रतिष्ठित पादरी साहिब जो निम्नलिखित पादरियों में से चुने जाएं।★ मुक़ाबले के मैदान के लिए जो दोनों पक्षों की सहमति से निर्धारित किया जाए, तैयार हूँ। तत्पश्चात् हम दोनों अपनी-अपनी जमाअतों के साथ निर्धारित मैदान में उपस्थित हो जाएं। और ख़ुदा तआला से दुआ के साथ यह फ़ैसला चाहें कि हम दोनों में से जो व्यक्ति ख़ुदा की नज़र में वास्तव में झूठा और प्रकोप का पात्र है। ख़ुदा तआला एक वर्ष में उस झूठे पर वह प्रकोप उतारे जो अपने स्वाभिमान की दृष्टि से हमेशा झूठी और झुठलाने वाली क़ौमों पर किया करता है। जैसा कि उसने फ़िरऔन पर किया, नमरूद पर किया और नूह की क़ौम पर किया और यहूदियों पर किया। पादरी साहिबान यह बात स्मरण रखें कि इस परस्पर दुआ में किसी विशेष सदस्य पर लानत है न बद्दुआ है। अपितु उस झूठे को दण्ड दिलाने के उद्देश्य से है जो अपने झूठ को छोड़ना नहीं चाहता। एक संसार के जीवित होने के लिए एक का मरना उत्तम है। पादरी साहिबान ख़ूब जानते हैं कि झूठों पर यसू ने भी बद्-दुआएं की हैं। अत: यसू मती अध्याय-23 में यहूदियों के उलेमा को सम्बोधित करके कहता है- "हे सांपों और सांप के बच्चो तुम नर्क के अज़ाब से क्योंकर भागोगे।" 36 -"मैं तुम से सच कहता हूँ कि यह सब कुछ इस युग के लोगों पर आएगा अर्थात् अज़ाब" और अध्याय-

★**नोट** - इन सज्जनों में से कोई चुना जाना चाहिए-प्रथम-डॉक्टर मार्टिन क्लार्क, द्वतीय-पादरी इमादुद्दीन, फिर पादरी ठाकुर दास, या हुसामुद्दीन बम्बई, या सफ़दर अली भिण्डारा या तामस हावल, या फ़तह मसीह दूसरों की अनुमति की शर्त के साथ।

23, आयत 13 में यसू बार-बार झूठों, मक्कारों का विनाश चाहता है और "बैल" का शब्द प्रयोग करता है जो हमेशा बद्दुआ के लिए आता है। अत: ऐसा झूठा जो किसी प्रकार छोड़ना न चाहे उसका अस्तित्व समस्त फ़ित्नों से अधिक फ़ित्न: है और फ़ित्ने को हर प्रकार से दूर करना ईमानदारों का कर्तव्य है। तो जिस हालत में ईसाई अत्यन्त अतिश्योक्ति से कहते हैं कि इस्लाम धर्म इन्सान का इफ़्तिरा है और अहले इस्लाम हार्दिक विश्वास रखते हैं कि ईसाई वास्तव में इन्सान के पुजारी हैं। तो क्या अनिवार्य नहीं है कि जैसे भी हो सके यह बात फ़ैसला पाए।

हम ने बार-बार समझाया कि ईसा परस्ती मूर्ति-पूजा और राम-पूजा से कम नहीं और मरयम का बेटा कौशल्या के बेटे से कुछ अधिकता नहीं रखता। परन्तु क्या कभी आप लोगों ने ध्यान दिया। यों तो आप समस्त संसार के धर्मों पर आक्रमण कर रहे हैं परन्तु कभी अपने उस त्रिकोणीय ख़ुदा के बारे में भी विचार किया? कभी यह ख़याल आया कि वह जो समस्त श्रेष्ठताओं का मालिक है उस पर इन्सान की तरह दु:ख की मार क्योंकर पड़ गई? कभी यह भी सोचा कि सृष्टा ने अपनी ही सृष्टि से क्योंकर मार खा ली? क्या यह समझ में आ सकता है कि तुच्छ बन्दे अपने ख़ुदा को कोड़े मारें, उसके मुंह पर थूकें उसको पकड़ें, उसे सूली दें और वह मुक़ाबले से असमर्थ रह जाए? अपितु ख़ुदा कहला कर फिर उस पर मौत भी आ जाए? क्या यह समझ में आ सकता है कि तीन मुजस्सम ख़ुदा हों-एक वह मुजस्सम जिसके रूह पर आदम हुआ दूसरा यसू, तीसरा कबूतर।★ और तीनों में से एक बच्चे वाला और दो बिना सन्तान। क्या यह समझ में आ सकता है कि ख़ुदा शैतान के पीछे-पीछे चले और शैतान उस से सजदा करवाना चाहे और उसे दुनिया का लालच दे? क्या यह समझ में आ सकता है कि वह व्यक्ति जिस की हड्डियों में ख़ुदा घुसा हुआ था पूरी रात रो-रो कर दुआ करता रहा और फिर भी दुआ

★**नोट** - ईसाई लोग कबूतरों को शौक़ से खाते हैं। हालांकि कबूतर उनका देवता है। उन से तो हिन्दू अच्छे रहे कि अपने देवता बैल को नहीं खाते।

की स्वीकारिता से वंचित और बेनसीब ही रहा। क्या यह बात आश्चर्य में नहीं डालती कि ख़ुदाई के सबूत के लिए यहूदियों की किताबों का हवाला दिया जाता है। हालांकि यहूदी इस आस्था पर हज़ार लानत भेजते हैं। और कट्टर इन्कारी हैं तथा उनमें कोई ऐसा फ़िर्क़ा नहीं जो तस्लीस का क़ाइल हो। यदि यहूदियों को मूसा से अन्तिम नबियों तक यही शिक्षा दी जाती तो क्योंकर संभव था कि वे लाखों आदमी जो बहुत से फ़िर्क़ों में विभाजित थे इस शिक्षा को सब के सब भूल जाते। क्या यह बात विचारणीय नहीं कि ईसाइयों में सदैव एक फ़िर्क़ा एकेश्वरवादी भी है जो पवित्र क़ुर्आन के समय में भी मौजूद था। और वह फ़िर्क़ा बड़े ज़ोर से इस बात का सबूत देता है कि तस्लीस की गन्दी समस्या केवल तीसरी शाताब्दी के बाद निकली है, और अब भी उस फ़िर्क़े के लाखों लोग यूरोप और अमरीका में मौजूद हैं और उनकी हज़ारों पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। तो जब इतने दोषी होकर फिर भी पादरी साहिबान अपनी गाली-गलौज से नहीं रुकते तो क्या इस समय ख़ुदा के फ़ैसले की आवश्यकता नहीं? आवश्यकता आवश्यक है ताकि जो झूठा है तबाह हो जाए। जो गिरोह झूठा होगा अब नि:न्देह भाग जाएगा और झूठे बहानों से काम लेगा।

अत: हे पादरी साहिबान देखो कि मैं इस काम के लिए खड़ा हूँ। यदि चाहते हो कि ख़ुदा के आदेश से तथा ख़ुदा के फ़ैसले से सच्चे और झूठे में अन्तर प्रकट हो जाए तो आओ ताकि हम एक मैदान में दुआओं के साथ युद्ध करें ताकि झूठे का छिद्रान्वेषण हो। नि:सन्देह समझो कि ख़ुदा है और नि:सन्देह वह सामर्थ्यवान (ख़ुदा) मौजूद है और हमेशा सच्चों की सहायता करता है। तो हम दोनों में से जो सच्चा होगा ख़ुदा अवश्य उसकी सहायता करेगा। यह बात स्मरण रखो कि जो व्यक्ति ख़ुदा की दृष्टि में नीच है वह इस युद्ध के बाद अपमान देखेगा और जो उसकी दृष्टि में प्रिय है वह सम्मान पाएगा।

आथम के मुक़द्दमे में देख चुके हो कि उसकी बहुत सी योजनाओं के बावजूद फिर अन्त में सत्य प्रकट हो गया। क्या तुम्हारे दिल स्वीकार नहीं कर गए कि आथम का क़सम से इन्कार करना और नालिश से इन्कार करना तथा

आक्रमणों का सबूत देने से इन्कार करना, केवल इसी कारण था कि उसने अवश्य इल्हामी शर्त के अनुसार सच की ओर रुजू कर लिया था। तुम्हें मालूम है कि इसके बावजूद कि निन्दापूर्ण विज्ञापनों की उस पर बहुत ही मार पड़ी परन्तु वह उस आरोप से स्वयं को बरी न कर सका जो उसके भय के इक़रार और आक्रमणों के सबूतहीन बहानों से जो उस पर लग चुका था, यहां तक कि उस मृत्यु ने उसको आ पकड़ा जिससे वह भयभीत रहा। और अवश्य था कि वह इन्कार के बाद शीघ्र मरता। क्योंकि ख़ुदा तआला की पवित्र भविष्यवाणियों की दृष्टि से भी उसके लिए दण्ड निर्धारित हो चुका था। अत: ख़ुदा से डरो जिसने आथम को बड़ी परेशानियों के भंवर में डालकर अन्तत: अपनी वईद (अज़ाब का वादा) के अनुसार मार दिया। ख़ुदा की खुली-खुली भविष्यवाणियों से मुंह फेरना बुरी प्रकृति वालों का काम है न कि नेक लोगों का। और झूठ के मुर्दार को किसी प्रकार न छोड़ना यह कुत्तों का तरीक़ा है न कि इन्सानों का। मिंया हुसामुद्दीन ईसाई लिखते हैं कि आथम चार दिन तक बेहोश रहा परन्तु वह इस का भेद वर्णन नहीं कर सके कि चार दिन तक क्यों बेहोश रहा। अत: जानना चहिए कि यह चार दिन की कठोर चन्द्रा उन चार बनाए हुए झूठों का उसे इसी दुनिया में दण्ड दिया गया जो उस ने ज़हर खिलाने का झूठ गढ़ा, सांप छोड़ने का झूठ गढ़ा, लिधियाना और फ़िरोज़पुर के आक्रमण का झूठ गढ़ा तथा ईसाइयों को प्रसन्न करने के लिए भय के वास्तविक कारण को छुपाया। अत: ईसाइयों के लिए इस से अधिक अन्य कोई शर्म का स्थान नहीं कि आथम उन के धर्म के झूठा होने पर गवाही दे गया। अब यदि आथम की गवाही पर विश्वास नहीं तो इस नए तरीक़े से दोबारा ख़ुदा की हुज्जत को पूरा करा लेना चाहिए। और इस नए तरीक़े में कोई शर्त भी नहीं। सीधी बात है कि परस्पर दुआ करने के बाद जिसके साथ दोनों पक्षों की ओर से आमीन भी होगी। मेरे मुक़ाबले पर आने वाला व्यक्ति एक वर्ष तक ख़ुदा तआला के विलक्षण अज़ाब से बच गया तो जैसा कि मैं लिख चुका हूँ उपरोक्त कथित जुर्माना अदा करूंगा।

मैं पादरी साहिबान को पुनः स्मरण कराता हूँ कि इस प्रकार का दुआ का तरीक़ा उन के धर्म और आस्था से बिल्कुल भी उलट नहीं, और हज़रत यसू साहिब ने मती अध्याय-23 आयत-13 में स्वयं इस तरीक़े को इस्तेमाल किया है और 'वैल' के शब्द में फ़कीहों तथा फ़रीसियों पर बद्-दुआ की है। अब यदि ईसाई लोग कोई अन्य शब्द इस्तेमाल करने से संकोच करें तो "वैल" के शब्द को ही इस्तेमाल करना तो स्वयं उन पर अनिवार्य है। क्योंकि उनके पेशवा और पथ-प्रदर्शक ने भी यही शब्द इस्तेमाल किया है। "वैल" के मायने कठोरता, लानत और मारने के हैं। तो हम दोनों इस प्रकार से दुआ करेंगे कि हे सामर्थ्यवान ख़ुदा इस समय हम दो पक्ष आमने-सामने खड़े हैं। एक पक्ष यसू बिन मरयम को ख़ुदा कहता और इस्लाम के नबी को सच्चा नबी नहीं जानता और दूसरा पक्ष ईसा बिन मरयम को रसूल मानता और उसे केवल इन्सान मानता है और इस्लाम के पैग़म्बर को वास्तव में सच्चा और यहूदियों तथा ईसाइयों में फ़ैसला करने वाला जानता है। तो इन दोनों पक्षों में से जो पक्ष तेरी दृष्टि में झूठा है उसे एक वर्ष के अन्दर मार दे और अपना "वैल" उस पर उतार। और चाहिए कि एक पक्ष जब दुआ करे तो दूसरा आमीन कहे और जब वह पक्ष दुआ करे तो यह पक्ष आमीन कहे।

मेरी हार्दिक मनोकामना है कि इस मुक़ाबले के लिए डॉक्टर मार्टिन क्लार्क को चुना जाए। क्योंकि वह मोटा और जवान आयु तथा प्रथम श्रेणी के स्वस्थ और फिर डॉक्टर है। अपनी लम्बी आयु का समस्त बन्दोबस्त कर लेगा निःसन्देह डॉक्टर मार्टिन क्लार्क साहिब हमारे इस निवेदन को अवश्य स्वीकार कर लेंगे। क्योंकि उन्हें यसू बिन मरयम को ख़ुदा बनाने का बहुत शौक़ है और बड़ी नामर्दी होगी कि अब वह इस समय भाग जाएं। और यदि वह भाग जाएं तो पादरी इमादुद्दीन साहिब इस मुक़ाबले के योग्य हैं जिन्होंने इब्ने मरयम को ख़ुदा बनाने के लिए प्रत्येक मानवीय चालाकी को इस्तेमाल किया और सूर्य पर थूका है। और यदि वह भी इस डर से भाग गए कि ख़ुदा का "वैल" अवश्य उन्हें खा जाएगा तो हुसामुद्दीन या सफ़दर अली या ठाकुर दास या तामस हावल और अन्त में फ़तह मसीह इस मैदान में आए। या कोई

और पादरी साहिब निकलें और यदि इस पुस्तक के प्रकाशित होने के पश्चात् दो माह तक कोई भी न निकला और केवल शैतानी बहाने से काम लिया तो पंजाब और हिन्दुस्तान के समस्त पादरियों को झूठे होने पर मुहर लग जाएगी और फिर ख़ुदा अपने ढ़ंग से झूठ का उन्मूलन करेगा और याद रखो कि अवश्य करेगा क्योंकि समय आ गया।

सलामती हो उस पर जो सन्मार्ग का अनुसरण करे।

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

क़ादियानी

14 सितम्बर 1896 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

(पुस्तक : दावत-ए-क़ौम)

मुबाहले का विज्ञापन

उन मुसलमान मौलवियों को निमंत्रण देने के उद्देश्य से जो इस विनीत को मुफ़्तरी, दज्जाल और नारकी ठहराते हैं।

رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ

(हे हमारे ख़ुदा हम में और हमारी क़ौम में सच्चा फ़ैसला कर दे और तू समस्त फ़ैसला करने वालों से श्रेष्ठ है)

चूंकि पंजाब और हिन्दुस्तान के उलेमा की ओर से काफ़िर ठहराने और झुठलाने का फ़ित्नः सीमा से अधिक गुज़र गया है और न केवल उलेमा अपितु फ़ुक़रा और गद्दीनशीन भी इस ख़ाकसार के काफ़िर और झूठा ठहराने में मौलवियों की हाँ में हाँ मिला रहे हैं तथा ऐसी ही इस मौलवियों के बहकावे से हज़ारों ऐसे लोग पाए जाते हैं कि वे हमें ईसाइयों, यहूदियों और हिन्दुओं से भी अधिक काफ़िर समझते हैं। यद्यपि इस सम्पूर्ण काफ़िर ठहराने के फ़ित्ने का बोझ नज़ीर हुसैन देहलवी की गर्दन पर है। परन्तु फिर भी दूसरे मौलवियों का यह गुनाह है कि उन्होंने इस काफ़िर ठहराने के संवेदनशील मामले में मुसलमानों में अपनी बुद्धि और अपनी जांच-पड़ताल से काम नहीं लिया, अपितु नज़ीर हुसैन के दज्जालों वाले फ़ित्ने को देखकर जो मुहम्मद हुसैन बटालवी ने तैयार किया था बिना छान-बीन और बिना प्रतिप्रश्न के उस पर ईमान ले आए। हम कई बार लिख चुके हैं कि इस नालायक़ नज़ीर हुसैन और उसके अभागे शागिर्द मुहम्मद हुसैन का यह सरासर इफ़्तिरा है कि हमारी ओर यह बात सम्बद्ध करते हैं कि मानो हमें नबियों के चमत्कारों से इन्कार है या हम नुबुव्वत का दावा करते हैं या नऊज़ुबिल्लाह हज़रत सय्यिदुल मुर्सलीन मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया नहीं समझते या फ़रिश्तों से इन्कारी या हश्र-व-नश्र (प्रतिफ़ल दिवस) इत्यादि इस्लाम के सिद्धान्तों से इन्कारी हैं या रोज़ा-नमाज़ इत्यादि इस्लाम के आदेशों को हीन दृष्टि से देखते या अनावश्यक समझते हैं। नहीं! अपितु ख़ुदा तआला गवाह है कि हम इन सब बातों को मानते हैं और इन आस्थाओं और इन कार्यों के इन्कार करने वाले को लानती और लोक-परलोक में घाटा पाने वाला समझते हैं।

यदि हमें हमारे दावे के अनुसार स्वीकार करने के लिए यही परस्पर झगड़ा है तो हम बुलन्द आवाज़ से बार-बार सुनाते हैं कि हमारी यही आस्थाएं हैं जो हम वर्णन कर चुके हैं। हाँ एक बात ज़रूर है जिसके लिए यह मुबाहले का विज्ञापन लिखा गया है और वह यह है कि ख़ुदा तआला ने इस विनीत को वार्तालाप और संवाद से सम्मानित करके इस चौदहवीं सदी का मुजद्दिद ठहराया है और प्रत्येक मुजद्दिद का वर्तमान युग की हालत की दृष्टि से एक विशेष कार्य होता है जिसके लिए वह मामूर किया जाता है। तो ख़ुदा की इस सुन्नत के अनुसार यह ख़ाकसार सलीबी शान-शौक़त को तोड़ने के लिए मामूर है। अर्थात् ख़ुदा तआला की ओर से इस सेवा पर नियुक्त किया गया है कि जो कुछ ईसाई पादरियों ने कफ़्फ़ार: और तस्लीस के मिथ्या मामलों को दुनिया में फैलाया है और भागीदार रहित एक मात्र ख़ुदा की मान हानि की है यह समस्त उपद्रव सच्चे तर्कों, रोशन सबूतों और पवित्र निशानों के द्वारा दूर किया जाए। इस बात की किस को ख़बर नहीं कि दुनिया में इस युग में एक ही उपद्रव है जो चरम सीमा को पहुँच गया है और ख़ुदाई शिक्षा का कट्टर विरोधी है अर्थात् कफ़्फ़ार: और तस्लीस (अर्थात् ईसाई धर्म) की शिक्षा जिसको सलीबी फ़ित्ने के नाम से नामित करना चाहिए। क्योंकि कफ़्फ़ार: और तस्लीस के समस्त उद्देश्य सलीब के साथ सम्बद्ध हैं। तो ख़ुदा तआला ने आकाश पर से देखा कि यह उपद्रव बहुत बढ़ गया है और यह युग इस उपद्रव के ठाठें मारते हुए समुद्र की मौजों और तूफान का युग है। इसलिए ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार चाहा कि इस सलीबी फ़ित्ने को टुकड़े-टुकड़े करें। और उसने प्रारंभ से अपने नबी मक़्बूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

द्वारा ख़बर दी थी कि जिस व्यक्ति के साहस और दुआ तथा वर्णन-शक्ति और कलाम का प्रभाव और काफिर को मिटाने वाली सांसों से यह उपद्रव दूर होगा। इसी का नाम इस समय ईसा और मसीह मौऊद होगा।

यद्यपि वे भविष्यवाणियां बहुत से गंभीर और सूक्ष्म रूपकों से भरी पड़ी हैं परन्तु उन में जो अत्यन्त स्पष्ट और खुला-खुला और मोटा निशान मसीह मौऊद के बारे में लिखा गया है वह **सलीब का तोड़ना** है। यह शब्द हर बुद्धिमान के लिए बड़े ध्यान योग्य है और यह स्पष्ट बता रहा है कि वह मसीह मौऊद ईसाइयत के उपद्रव के चरम के युग में प्रकट होगा न किसी और युग में क्योंकि सलीब पर मुक्ति का समस्त आधार रखना किसी और दज्जाल का काम नहीं है। यही गिरोह है जो सलीबी कफ़्फ़ारे पर ज़ोर दे रहा है और उसे उन्नत करने के लिए प्रत्येक छल को काम में ला रहा है।

दज्जाल बहुत गुज़रे हैं और शायद आगे भी हों। परन्तु वह सबसे बड़ा दज्जाल जिनका दजल ख़ुदा के नज़दीक ऐसा घृणित है कि क़रीब है कि उस से आकाश टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। यही गिरोह मुट्ठी भर ख़ाक को ख़ुदा बनाने वाला है। ख़ुदा ने यहूदियों, मुश्रिकों और दूसरी क़ौमों के भिन्न-भिन्न प्रकार के दजल पवित्र-क़ुर्आन में वर्णन किए परन्तु यह बड़ाई किसी के दजल को नहीं दी कि उस दजल से आकाश टुकड़े-टुकड़े हो सकते हैं। अत: जिस गिरोह को ख़ुदा ने अपने पवित्र कलाम में सबसे बड़ा दज्जाल ठहराया है हमें नहीं चाहिए कि उसके अतिरिक्त किसी अन्य का नाम दज्जाल-ए-अकबर रखें। बहुत ही अन्याय होगा कि उसको छोड़ कर कोई और बहुत बड़ा दज्जाल तलाश किया जाए।

यह बात किसी पहलू से सही नहीं ठहर सकती कि वर्तमान पादरियों के अतिरिक्त कोई और भी दज्जाल है जो उन से बड़ा है। क्योंकि जब ख़ुदा ने अपने पवित्र कलाम में सबसे बड़ा यही दज्जाल वर्णन किया है तो अत्यन्त बेईमानी होगी कि ख़ुदा के कलाम का विरोध करके किसी और को भारी दज्जाल ठहराया जाए। यदि किसी ऐसे दज्जाल का किसी समय अस्तित्व हो सकता तो ख़ुदा तआला जिसका ज्ञान भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल पर छाया हुआ है उसी

का नाम दज्जाल-ए-अक़बर रखता न कि उसका नाम। फिर अक़बर (सबसे बड़े) दज्जाल का यह निशान जो बुख़ारी हदीस के उस स्पष्ट संकेत से निकलता है कि يكسر الصّليب साफ बता रहा है कि उस दज्जाल अक़बर की शान में से यह होगा कि वह मसीह को ख़ुदा ठहराएगा। और मुक्ति का आधार सलीब पर रखेगा।

यह बात अध्यात्मज्ञानियों के लिए अत्यन्त प्रसन्नता का कारण है कि इस स्थान पर क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से स्पष्ट हो गया है जिससे इस विवादित विषय की सम्पूर्ण वास्तविकता खुल गई। क्योंकि क़ुर्आन ने तो अपने स्पष्ट शब्दों में दज्जाल-ए-अकबर पादरियों को ठहराया है और उनके दजल को इतना बड़ा दजल ठहराया है कि क़रीब है कि उस से पृथ्वी और आकाश टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। और हदीस ने मसीह मौऊद की वास्तविक निशानी यह बताई कि उसके हाथ से सलीबी विचारधार टुकड़े-टुकड़े होगी और वह दज्जाल-ए-अक़बर को क़त्ल करेगा। हमारे मूर्ख मौलवी नहीं सोचते कि जबकि मसीह मौऊद का विशेष कार्य सलीबी विचारधारा को तोड़ना और सबसे बड़े दज्जाल को क़त्ल करना है तथा क़ुर्आन ने ख़बर दी है कि बड़ा दजल और बड़ा फ़ित्न: जिस से क़रीब है कि इस संसार की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाए। और इस दुनिया का अन्त हो जाए वह पादरियों का फ़ित्न: है। तो इस से स्पष्ट तौर पर खुल गया कि पादरियों के अतिरिक्त और कोई बड़ा दज्जाल नहीं है। और जो व्यक्ति अब इस फ़ित्ने के प्रकटन के बाद दूसरे की प्रतीक्षा करे वह क़ुर्आन का झुठलाने वाला है।

दूसरे यह कि जब शब्दकोष की दृष्टि से भी दज्जाल एक गिरोह का नाम है जो अपने दजल (छल) से पृथ्वी को गन्दा करता है। और हदीस की दृष्टि से बहुत बड़े दज्जाल का निशान ईसाइयों का समर्थन ठहरा। तो इस खुली-खुली छान-बीन के बावजूद वही व्यक्ति सबसे बड़ा मूर्ख है जो अब भी वर्तमान पादरियों को सबसे बड़ा दज्जाल नहीं समझता।

एक और बात है जिस से हमारे मूर्ख मौलवी इस वास्तविकता को समझ सकते हैं कि वे इस बात के स्वयं क़ाइल हैं कि तात्कालिक दज्जाल का मक्का-

मदीना के अतिरिक्त सम्पूर्ण पृथ्वी पर अधिकार हो जाएगा। तो यदि दज्जाल से अभिप्राय कोई और माना जाए तो यह हदीस क़ुर्आन की स्पष्ट भविष्यवाणी से विरुद्ध हो जाएगी। क्योंकि पवित्र क़ुर्आन ने यह फ़ैसला कर दिया है कि पृथ्वी पर क़यामत तक विजय और कब्ज़ा दो क़ौमों में से एक क़ौम का होता रहेगा। या अहले इस्लाम का या ईसाइयों का। अत: क़ुर्आन की दृष्टि से ऐसे दज्जाल को जो अपनी ख़ुदाई का दावा लेकर आएगा पृथ्वी पर क़दम रखने का स्थान नहीं और क़ुर्आन उसके अस्तित्व को रोकता है। हाँ रूपक के तौर पर ईसाइयों का ख़ुदाई का दावा सिद्ध है क्योंकि चाहते हैं कि मशीनों के ज़ोर से समस्त पृथ्वी एवं आकाश को अपने कब्ज़े में कर लें। यहां तक कि मेंह बरसाने की क़ुदरत भी प्राप्त हो जाए। तो इस प्रकार से वे ख़ुदाई का दावा करते हैं।

अत: ये वे मामले हैं जिन को वर्तमान के मौलवी नहीं समझते और उन्होंने मुसलमानों में बड़ा भारी फ़ित्न: और फूट डाल रखी है और अत्यन्त व्यर्थ और अधम तावीलों से क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों से मुंह फेर रहे हैं। दावा करते थे कि हम अहले हदीस हैं परन्तु अब तो उन्होंने क़ुर्आन को भी छोड़ा और हदीस को भी। अत: जब मैंने देखा कि पवित्र क़ुर्आन और हदीस-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उनके दिलों में प्रतिष्ठता नहीं और बड़े-बड़े इमामों की गवाही भी जैसा कि इमाम बुख़ारी और इब्ने हज़्म तथा इमाम मालिक की गवाही जो हज़रत ईसा की मृत्यु हो जाने के बारे में बार-बार लिखी गई है उन के नज़दीक कुछ चीज़ नहीं। तो मुझ को इस दृष्टि से पूर्णतया निराशा हुई कि वे मनक़ूली बहस-मुबाहसे (अर्थात् उदाहृत प्रमाणों) के द्वारा हिदायत पा सकें।★ तो ख़ुदा तआला ने मेरे दिल में डाला कि मैं दूसरा ढंग अपनाऊँ जो मेरे दावे की

★हाशिया :- मन्क़ूली बहस-मुबाहसे की पुस्तकें जो मेरी ओर से छपी हैं जिन में सिद्ध किया गया है कि वास्तव में ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और उनका दोबारा आगमन बतौर बुरूज़ अभिप्राय है न कि बतौर वास्तविक। वह ये हैं- फ़त्ह इस्लाम, तौजीह मराम, इज़ाला औहाम, इत्मामुल हुज्जत, तोहफ़ा बग़दाद, हमामतुल बुश्रा, नूरुलहक़ भाग-2, करामातुस्सादिक़ीन, सिर्रुल ख़िलाफ़त, आईना कमालाते इस्लाम

असल बुनियाद है। अर्थात् अपने सच्चे मुल्हम होने का सबूत, क्योंकि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यदि वे लोग मुझे ख़ुदा तआला की ओर से सच्चा मुल्हम समझते और मेरे इल्हामों को मेरा ही मनगढ़त या शैतानी भ्रम न समझते तो इतनी गाली-गलौज, हंसी-ठट्ठा, काफ़िर ठहराना और अभद्रतापूर्ण दुर्व्यवहार न करते अपितु अपने बहुत से दूषित भ्रमों का अपनी सुधारणा के जोश से स्वयं फ़ैसला कर लेते क्योंकि किसी की सच्चाई और ख़ुदा की ओर से होने के विश्वास के बाद वे कठिनाइयां कदापि सामने न आतीं जो कि इस हालत में सामने आती हैं कि इन्सान के दिल पर उसके झूठा होने का विचार छाया होता है। यह सच है कि ख़ुदा तआला ने मेरी सच्चाई के समझने के लिए बहुत से उदाहरण उन को प्रदान किए थे। (1) मेरा दावा सदी के आरंभ पर था। (2) मेरे दावे के समय में रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य-ग्रहण हुआ था। (3) मेरे इल्हाम के दावे पर पूरे बीस वर्ष गुज़र गए और मुफ़्तरी को इतनी मुहलत (छूट) नहीं दी जाती। (4) मेरी भविष्यवाणी के अनुसार ख़ुदा ने आथम को कुछ मुहलत भी दी और फिर मार भी दिया। (5) मुझ को ख़ुदा ने बहुत से अध्यात्म ज्ञान और वास्तविकताएं प्रदान कीं। और मेरे कलाम को मारिफ़त के पवित्र रहस्यों से इतना भर दिया कि जब कि जब तक इन्सान ख़ुदा तआला की ओर से पूर्ण समर्थन प्राप्त न हो उसको यह नेमत नहीं दी जाती। परन्तु विरोधी मौलवियों ने इन बातों में से किसी बात पर ध्यान नहीं दिया।

तो अब चूँकि उनका काफ़िर ठहराना और झुठलाना चरम सीमा तक पहुंच गया, इसलिए समय आ गया कि शक्तिमान, सर्वज्ञ और बहुत ख़बर रखने वाले ख़ुदा के हाथ से झूठे और सच्चे में अन्तर किया जाए। हमारे विरोधी मौलवी इस बात को जानते हैं कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में ऐसे व्यक्ति से कितना विमुखता व्यक्त की है जो ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा बांधे। यहां तक कि अपने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फ़रमाया है कि यदि वह कुछ कथन मुझ पर इफ़्तिरा करता तो मैं तुरन्त पकड़ लेता और उसे नष्ट कर देता। अतः ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा करना और यह कहना कि मुझे अमुक-अमुक इल्हाम ख़ुदा

तआला की ओर से हुआ है हालांकि कुछ भी नहीं हुआ। एक ऐसा बड़ा गुनाह है कि उसके दण्ड में केवल नर्क की ही चेतावनी नहीं अपितु पवित्र-क़ुर्आन के ठोस आदेशों से सिद्ध होता है कि ऐसा मुफ़्तरी इसी दुनिया में हाथों-हाथ दण्ड पा लेता है और शक्तिमान एवं स्वाभिमानी ख़ुदा उसको कभी अमन में नहीं छोड़ता और उस का स्वाभिमान उसे कुचल डालता है और शीघ्र मार डालता है। यदि इन मौलवियों का दिल संयम के रंग से कुछ भी रंगीन होता और ख़ुदा तआला की आदतों तथा सुन्नतों से एक कण भर भी परिचित होते तो उनको मालूम होता कि एक मुफ़्तरी का इतने लम्बे समय तक इफ़्तिरा में व्यस्त रहना अपितु दिन-प्रतिदिन उसमें उन्नति करना और ख़ुदा तआल का उसके इफ़्तिरा पर उसे न पकड़ना अपितु लोगों में उसको सम्मान देना, दिलों में उसकी मान्यता डालना और उसकी ज़बान को वास्तविकताओं और अध्यात्म ज्ञानों का झरना बनाना एक ऐसा बात है कि जब से ख़ुदा तआला ने दुनिया की बुनियाद डाली है उसका उदाहरण कदापि नहीं पाया जाता। अफ़सोस कि क्यों ये कपटाचारी मौलवी ख़ुदा तआला के आदेशों और वादों को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखते। क्या उनके पास हदीस या पवित्र क़ुर्आन से कोई उदाहरण मौजूद है कि ऐसे पापी प्रकृति के मुफ़्तरी को ख़ुदा तआला न पकड़े जो उस पर इफ़्तिरा पर इफ़्तिरा बांधे और झूठे इल्हाम बनाकर स्वयं को ख़ुदा तआला का बहुत ही प्रिय व्यक्त करे और केवल अपने दिल शैतानी बातें बना कर उसको जान-बूझकर ख़ुदा की वह्यी ठहराए और कहे कि ख़ुदा का आदेश है कि लोग मेरा अनुकरण करें और कहे कि ख़ुदा मुझे अपने इल्हाम में फ़रमाता है कि तू इस युग में समस्त मुसलमानों का सरदार है, हालांकि उसे कभी इल्हाम न हुआ हो और न कभी ख़ुदा ने उसको मोमिनों का सरदार ठहराया हो। और कहे कि मुझे ख़ुदा तआला सम्बोधित करके फ़रमाता है कि तू ही मसीह मौऊद है जिसे मैं सलीब तोड़ने के लिए भेजता हूँ। हालांकि ख़ुदा ने उसे ऐसा कोई आदेश नहीं दिया और न उसका नाम ईसा रखा। और कहे कि ख़ुदा तआला मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया है कि मुझ से तू ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद (एकेश्वरवाद)। तेरा सानिध्य का पद मुझसे वह है जिससे लोग

अनभिज्ञ हैं। हालांकि ख़ुदा उसे मुफ़्तरी जानता है, उस पर लानत भेजती है और उसका हिस्सा धिक्कृतों और बदनामों के साथ ठहराता है। फिर क्या यही ख़ुदा तआला की आदत है कि ऐसा महा झूठे और धृष्ट मुफ़्तरी को शीघ्र न पकड़े। यहां तक कि उस इफ़्तिरा पर बीस वर्ष से अधिक समय गुज़र जाए।

इसे कौन स्वीकार कर सकता है कि वह पवित्र अस्तित्व जिस के क्रोध की अग्नि वह भस्म कर देने वाली बिजली है जो हमेशा झूठे मुल्हमों को बहुत शीघ्र खाती रही है। इसलिए उस झूठे को लम्बे समय तक छोड़ दे जिस का उदाहरण दुनिया में मिल ही नहीं सकता। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلَی اللّٰہِ کَذِبًا ۔

(सूरः अनाम - 22)

अर्थात् उससे अधिक ज़ालिम और कौन है जो ख़ुदा ताआला पर झूठ बांधे। निःसन्देह मुफ़्तरी ख़ुदा तआला की लानत के नीचे होता है और ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा करने वाला शीघ्र मारा जाता है।

इसलिए एक संयमी व्यक्ति के लिए यह पर्याप्त था कि ख़ुदा ने मुझे मुफ़्तरियों की तरह मारा नहीं अपितु मेरे बाह्य तथा आन्तरिक तथा मेरे शरीर एवं मेरी रूह पर वे उपकार किए जिन की मैं गणना नहीं कर सकता। **मैं जवान था जब ख़ुदा की वह्यी और इल्हाम का दावा किया और अब मैं बूढ़ा हो गया** और मेरे दावे से अब तक बीस वर्ष से भी अधिक समय गुज़र गया। मेरे बहुत से दोस्त और प्रिय जो मुझसे छोटे थे मृत्यु पा गए और मुझे उसने लम्बी आयु प्रदान की तथा प्रत्येक कठिनाई में मेरा अभिभावक और प्रतिपालक रहा। तो क्या उन लोगों के यही निशान हुआ करते हैं कि जो ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा बांधते हैं। अब भी यदि मौलवी लोग मुझे मुफ़्तरी समझते हैं तो इस से बढ़कर एक और फ़ैसला है और वह यह है कि मैं उन इल्हामों को हाथ में लेकर जिन को मैं प्रकाशित कर चुका हूँ मौलवी लोगों से मुबाहला करूं।

इस प्रकार से कि मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर वर्णन करूं कि मैं वास्तव में उसके वार्तालाप और सम्बोधनों के सम्मान से सम्मानित हूँ और

वास्तव में उसने मुझे चौदहवीं सदी के सर पर (आरंभ में) भेजा है ताकि मैं उस फ़ित्ने को दूर करूं कि जो इस्लाम के विरुद्ध सब से बड़ा फ़ित्न: है और उसी ने मेरा नाम ईसा रखा है और सलीब तोड़ने के लिए मुझे मामूर किया है परन्तु न किसी भौतिक शस्त्र से अपितु आकाशीय शस्त्र (अर्थात् दुआ) से। और यह सब उसका कलाम है और वे उसके विशेष इल्हाम जो इस समय मैं विरोधी मौलवियों को सुनाऊंगा। उनमें से बतौर नमूना कुछ इल्हाम यहां लिखता हूँ। उनमें से कुछ इल्हाम बीस वर्ष के समय से हैं जो विभिन्न क्रमों और न्यूनाधिकारिता के साथ बार-बार इल्क़ा हुए हैं और वे ये हैं:-❶

हे वह ईसा जिसका समय नष्ट नहीं किया जाएगा। तू दरबार में वह पद रखता है जिसकी लोगों को जानकारी नहीं। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद (एकेश्वरवाद) और एकत्व। अतः समय आ गया कि तू लोगों में पहचाना जाए और मदद दिया जाए। वह ख़ुदा जिसने अपने रसूलों को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि इस धर्म को सब धर्मों पर विजयी करे। ख़ुदा की भविष्यवाणियों को कोई परिवर्तित नहीं कर सकता। कह मैं मामूर हूँ और सब से पहला ईमान लाने वाला हूँ। वह रहमान (कृपालु) है जिसने क़ुर्आन सिखाया ताकि तू उन लोगों को डराए जिन के बाप-दादे नहीं डराए गए ताकि अपराधियों का रास्ता खुल जाए। हम तुझसे हंसी-ठट्ठा करने वालों के लिए पर्याप्त हैं। तू कह मेरे पास ख़ुदा की गवाही है तो क्या तुम ईमान लाते हो? कह मेरे पास ख़ुदा की गवाही है, तो क्या तुम स्वीकार करते हो। मेरे साथ मेरा ख़ुदा है वह शीघ्र ही मुझे सफलता का मार्ग दिखाएगा। उनको कह कि यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरे पीछे चलो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे क्या मैं तुम्हें बताऊं कि किन पर शैतान उतरा करते हैं? वे प्रत्येक झूठे मुफ़्तरी पर उतरते हैं। वे इरादा करते हैं कि ख़ुदा के प्रकाश को अपने मुंह की फूंकों से बुझा दें और ख़ुदा अपने प्रकाश को पूर्ण करेगा यद्यपि काफ़िर नापसन्द ही करें। शीघ्र ही हम उनके दिलों पर रोब डाल देंगे। जब ख़ुदा की सहायता और विजय आएगी और युग का ध्यान हमारी ओर

❶ यह इल्हामात अरबी भाषा में हैं यहाँ केवल उनका अनुवाद दिया जा रहा है। प्रकाशक

लौटेगा कहा जाएगा कि क्या यह सच न था। मैं तेरे साथ हूँ। मेरे साथ हो, जहां तू हो। ख़ुदा के साथ हो, जहां तू हो। तुम उत्तम उम्मत हो जो लोगों के लाभ के लिए निकाले गए। तू हमारी आंखों के सामने है ख़ुदा तेरी चर्चा को बुलन्द करेगा और दुनिया तथा आख़िरत में अपनी नेमत तुझ पर पूरी करेगा। हे अहमद तेरा नाम प्रसिद्ध (फैलेगा) हो जाएगा इससे पूर्व कि मेरा नाम प्रसिद्ध हो। मैं तुझे अपनी ओर उठाने वाला हूँ। मैंने अपने प्रेम का तुझ पर डाल दिया। तेरी शान अद्‌भुत है, तेरा प्रतिफल करीब है, पृथ्वी और आकाश तेरे साथ है जैसा कि वह मेरे साथ है।★ तू मेरे दरबार में प्रतिष्ठावान् है। मैंने तुझे अपने लिए चुन लिया तू दुनिया में मेरे दरबार में प्रतिष्ठावान् है। पवित्र है वह ख़ुदा जो बहुत बरकतों वाला और बहुत बुलन्द है तेरी महानता को उसने अधिक किया। अब से तेरे बाप-दादे की चर्चा समाप्त हो जाएगी और ख़ुदा तुझ से आरंभ करेगा। तू रोब के साथ मदद दिया गया और सच्चाई के साथ जीवित किया गया। हे सिद्दीक़ तू मदद दिया गया। और विरोधी कहेंगे अब भागने का स्थान नहीं। ख़ुदा ने तुझे हम पर आधिपत्य दे दिया यद्यपि हम पसन्द नहीं करते थे। हे हमारे ख़ुदा हमें क्षमा कर कि हम ग़लती पर थे। हे रुजू करने वालों आज तुम पर कोई गिरफ्त नहीं ख़ुदा तुम्हें क्षमा कर देगा वह दयालुओं में सर्वाधिक दयालु है और ख़ुदा ऐसा नहीं कि तुझे यों ही छोड़ दे, जब तक पवित्र और अपवित्र में अन्तर करके न दिखलाए। और ख़ुदा अपनी बात पर विजयी है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। जब ख़ुदा की सहायता और विजय आई और उसका वादा पूरा हुआ कहा जाएगा यह वही है जिसमें तुम जल्दी करते थे। मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा बनाऊं तो मैंने आदम को पैदा किया। मैंनें उसको उत्कर्ष तक पहुँचाया और अपनी रूह उसमें फूँकी। शरीअत को स्थापित करेगा और धर्म को जीवित करेगा और यदि ईमान सुरैया पर चला गया होता तब भी उसे पा लेता। पवित्र है वह जिसने अपने बन्दे को रात में सैर कराया आदम को पैदा किया और उसे सम्मान दिया। ख़ुदा का भेजा हुआ नबियों के रूप में। वे

★**हाशिया :-** هُوَ (हुवा अर्थात वह) का सर्वनाम एक वचन واحد فى الذهن की दृष्टि से अर्थात् मख़लूक़ है और ऐसे मुहावरे पवित्र क़ुर्आन में बहुत हैं। इसी से।

लोग जो काफ़िर हो गए और ख़ुदा के मार्ग से रोकने लगे एक फ़ारसी नस्ल के आदमी ने उनके विचारों का खण्डन किया। ख़ुदा उसके प्रयास का कृतज्ञ है। उस वली की किताब ऐसी है जैसी अली की ज़ुलफ़िक़ार। उस का तेल यों ही चमकने को है यद्यपि अग्नि छू भी न जाए। हे फ़ारस के बेटो! तौहीद को पकड़ो और तौहीद (एकेश्वरवाद) को ग्रहण करो। हमने उसे क़ादियान के क़रीब उतारा है और सच्चाई के साथ उतारा है और वास्तविक आवश्यकता के साथ उतारा है और जो ख़ुदा ने ठहरा रखा था वह होना ही था। क्या ये कहते हैं कि हम एक प्रतिशोध लेने वाली जमाअत हैं। सब भाग जाएंगे और पीठ दिखाएंगे हे मेरे बन्दे भय न कर। मैं देखता हूँ और सुनता हूँ। क्या तूने नहीं देखा कि हम पृथ्वी को उसके किनारों से कम करते चले जाते हैं। क्या तूने नहीं देखा कि ख़ुदा हर चीज़ पर समर्थ है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर और उसकी उम्मत पर दुरूद भेज। वह बनी आदम का सरदार और ख़ातमुल अंबिया है। तू सीधे मार्ग पर है तो जो कुछ आदेश होता है खोल कर वर्णन कर और मूर्खों से अलग रह। और कहते हैं कि दो शहरों में से एक बड़े आदमी को ख़ुदा ने क्यों मामूर न किया और कहते हैं कि तुझे कहां यह पद। यह तो छल है जो मिलजुल कर बनाया गया है। और कई लोगों ने इस छल में उस व्यक्ति की सहायता की है। तुझे देखते हैं और तू उन्हें दिखाई नहीं देता। हे लोगो जान लो कि पृथ्वी मर गई थी और ख़ुदा फिर उसे नए सिरे से जीवित कर रहा है। और जो ख़ुदा का हो ख़ुदा उस का हो जाता है। ख़ुदा उन के साथ है जो संयम धारण करते हैं। और उनके साथ है जो सदाचारी है। कहते हैं कि यह सब इफ़्तिरा है। कह यदि मैने इफ़्तिरा किया है तो यह बड़ा पाप मेरी गर्दन पर है। आज तू हमारे नज़दीक पदवाला और मुबारक है और तुझ पर धर्म एवं संसार में मेरी दया है और तू सहायता दिया गया है। ख़ुदा अर्श पर तेरी प्रशंसा करता है ख़ुदा तेरी प्रशंसा करता है और तेरी ओर चला आता है। सावधान खुदा की सहायता क़रीब है। तेरे जैसा मोती नष्ट नहीं किया जाता। तुझे ख़ुशख़बरी हो हे मेरे अहमद! तू मेरी मनोकामना है और मेरे साथ है मैं तेरी सहायता करने वाला हूँ। मैं तेरा रक्षक हूँ

मैं तुझे लोगों का इमाम बनाऊंगा। क्या लोगों को आश्चर्य हुआ। कह वह ख़ुदा अद्‌भुत है जिसको चाहता है अपने बन्दों में से चुन लेता है। वह अपने कार्यों में पूछा नहीं जाता और दूसरे पूछे जाते हैं। और ये दिन हम लोगों में फेरते रहते हैं और कहते हैं यह तो आवश्यक इफ़्तिरा है। ख़ुदा जब मोमिन को सहायता देता है तो पृथ्वी पर उसके कई ईर्ष्यालु बना देता है कह ख़ुदा है जिसने यह इल्हाम किया फिर उन को छोड़ दे ताकि षड्‌यन्त्रों में पड़े रहें। वलियों के रहस्यों कोई को परिधि में नहीं ले सकता लोगों के साथ नम्रतापूर्वक व्यवहार कर और उन पर दया कर तू उन में मूसा के स्थान पर है और उनकी बातों पर सब्र कर और समृद्ध झुठलाने वालों का दण्ड मुझ पर छोड़ दे। तू हमारे पानी में से है और वे लोग फ़शल (बुज़दिली) से।★ और जब उनको कहा जाए कि ईमान लाओ जैसा कि भले लोग ईमान लाए हैं तो उत्तर में कहते हैं कि क्या इस प्रकार ईमान

★हाशिया :- यह जो फरमाया कि तू हमारे पानी में से है और वे लोग फशल से। इस स्थान पर पानी से अभिप्राय ईमान का पानी, क़ायम रहने का पानी, वफ़ा का पानी, सच्चाई का पानी, अल्लाह के प्रेम का पानी है जो ख़ुदा से मिलता है। और फ़शल कायरता को कहते हैं जो शैतान से आती है और प्रत्येक बेईमानी और व्यभिचार की जड़ कायरता और नपुंसकता है जब बात पर क़ायम रहने की शक्ति शेष नहीं रहती तो इन्सान गुनाह की ओर झुक जाता है। अत: फ़शल शैतान की ओर से है और नेक आस्थाएं तथा पवित्र कर्मों का पानी ख़ुदा तआला की ओर से। जब बच्चा पेट में पड़ता है तो उस समय यदि बच्चा भाग्यशाली है और नेक होने वाला है तो उस वीर्य पर रूहुल क़ुदूस की छाया होती है और यदि बच्चा दुर्भाग्यशाली है और बुरा होने वाला है तो उस वीर्य पर शैतान की छाया होती है और शैतान उसमें भागीदारी रखता है और रूपक के तौर पर वह शैतान की सन्तान कहलाती है और जो ख़ुदा के हैं वे ख़ुदा के कहलाते हैं जिन को पहली किताबों में बतौर रूपक ख़ुदा के बेटे (अब्नाउल्लाह) कहा गया है। अत: यह शब्द आदम और याक़ूब इत्यादि बहुत से नबियों पर इस्तेमाल हुआ है और इंजील में मसीह इब्ने मरयम पर भी इस्तेमाल हुआ है और इसमें किसी की कुछ विशेषता नहीं केवल उपरोक्त कथन के अनुसार इस्तेमाल होता रहा है। अत: मसीह इब्ने मरयम के बारे में हदीसों से जो मालूम होता है कि शैतान के स्पर्श से वह तथा उसकी मां पवित्र हैं तो यह शब्द उसी अभिव्यक्ति के उद्‌देश्य से है कि ईसा इब्ने मरयम

लाएं जैसा कि मूर्ख ईमान लाए। भली-भांति स्मरण रखो कि वास्तव में मूर्ख यही लोग हैं परन्तु उन्हें मालूम नहीं कि हम किसी ग़लती पर है। उनको कह दें कि यदि तुम ख़ुदा से प्रेम करते हो तो आओ मेरा अनुकरण करो ताकि ख़ुदा भी तुझ से प्रेम करे कहा गया कि तुम रुजू करो तो तुम ने रुजू न किया और कहा गया कि तुम अपने भ्रमों पर विजयी हो जाओ तो तुम विजयी न हुए। सब प्रशंसा ख़ुदा की है जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया। इस जगह फ़ित्न: है अत: दृढ़ प्रतिज्ञ लोगों के समान सब्र कर अबू लहब के दोनों हाथ तबाह हो गए और वह स्वयं भी तबाह हो गया। उसे नहीं चाहिए था कि वह इस फ़ित्न: में हस्तक्षेप करता अर्थात् उसका व्यवस्थापक होता परन्तु डरते-डरते। और तुझे कोई कष्ट नहीं पहुंचेगा परन्तु उतना ही जो ख़ुदा ने निर्धारित किया। यह फ़ित्न: ख़ुदा की ओर से होता। वह तुझ से बहुत ही प्रेम करे यह ख़ुदा का प्यार करना है जो विजयी और महान है और यह प्यार वह दान है जो कभी समाप्त नहीं होगा। आज़माइश का समय है और अज़ाब का समय अपराधियों के सर पर से कभी नहीं टल सकता और हे इस मामूर की जमाअत सुस्त मत हो जाना और ग़म में न पड़ जाना और

शेष हाशिया- की पैदायश अवैध नहीं जैसा कि यहूदियों का विचार है ताकि वीर्य पर शैतान की छाया मानी जाए। अपितु नि:सन्देह यहूदियों का विचार है ताकि वीर्य पर शैतान की छाया मानी जाए। अपितु नि:सन्देह यहूदियों के विचार के विरुद्ध वह कुलीन था और मरयम व्याभिचारिणी स्त्री नहीं थी। इस मामले में सिद्धान्त यह है कि शैतान की छाया जिसको स्पर्श और भागीदारी भी कहते हैं जिसके अनुसार कहा जाता है कि वह व्यक्ति शैतान की सन्तान है या बाइबिल के मुहावरे की दृष्टि से नहहास का बच्चा है अर्थात् सांप का जो शैतान है। केवल इस स्थिति में किसी वीर्य पर पड़ता है जबकि वीर्य डालने वाला या वह जिसके गर्भाशय में वीर्य ठहरा नितान्त बुरी हालत में हो और गुनाह तथा निर्दयता का अंधकार उन पर ऐसा छाया हुआ हो कि कोई कोना खाली न हो और स्वभाविक प्रकाश बिल्कुल छुपा हुआ हो ऐसी स्थिति में बच्चे अत्यन्त अपवित्र पैदा होते हैं क्योंकि शैतान की छाया के नीचे उनका ढांचा बनता है और यही कारण है कि प्राय: चोरों और डाकुओं के बच्चे चोर-डाकू निकलते हैं और ईमानदारों के ईमानदार। (इसी से)

अन्त में विजय तुम्हीं को है यदि तुम ईमान पर क़ायम रहोगे यह संभव है कि एक वस्तु को तुम चाहो और वह वास्तव में तुम्हारे लिए अच्छी न हो और एक वस्तु को नफ़रत करो और वह वास्तव में तुम्हारे लिए अच्छी है।

और ख़ुदा जानता है और तुम नहीं जानते। मैं एक गुप्त ख़ज़ाना था। तो मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं पृथ्वी और आकाश बंधे हुए थे फिर हमने दोनों को खोल दिया और तुझे उन्होंने एक हंसी का स्थान बना रखा है क्या यही है जो ख़ुदा की ओर से भेजा गया। कह मैं एक मनुष्य हूँ तुम जैसा मुझे ख़ुदा से इल्हाम होता है कि तुम्हारा ख़ुदा एक ख़ुदा है और सम्पूर्ण भलाई क़ुर्आन में है और मैं इससे पहले एक लम्बे समय से तुम में ही रहता था। क्या तुम्हें मेरी परिस्थितियों का ज्ञान नहीं। और उन्होंने कहा कि ये बातें इफ़्तिरा हैं। कह वास्तविक हिदायत जिसमें ग़लती न हो ख़ुदा की हिदायत है और ख़बरदार हो कि ख़ुदा का गिरोह ही अन्त में विजयी होता है।हमने तुझे खुली-खुली विजय दी है ताकि तेरे अगले और पिछले गुनाह क्षमा किए जाएं क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। अत: ख़ुदा ने उसे उनके आरोपों से बरी किया और वह ख़ुदा के नज़दीक प्रतिष्ठित है और ख़ुदा क़ाफ़िरों के छल को सुस्त कर देगा और हम उसको लोगों के लिए निशान बनाएंगे और दया का नमूना होगा और यही निश्चित था। यह वह सच्चा कथन है जिसमें लोग सन्देह करते हैं। हे अहमद! रहमत तेरे होंठों पर जारी हो रही है। हम ने तुझे बहुत सी वास्तविकताएं अध्यात्म ज्ञान और बरकतें प्रदान की हैं और नेक सन्तान प्रदान की है। इसलिए ख़ुदा के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर तेरा बुरा करने वाला बे बरकत है अर्थात् ख़ुदा उसे बेनिशान कर देगा।★ और वह असफल मरेगा। नबियों का

★**हाशिया :-** यह इल्हाम कि اِنّ شانئك هو الابتر इस ख़ाकसार पर उस समय ख़ुदा तआला की ओर से इल्क़ा हुआ कि जब एक व्यक्ति सादुल्लाह नामक नव मुस्लिम ने एक नज़्म गालियों से भरी हुई इस ख़ाकसार की ओर भेजी थी और उसमें इस ख़ाकसार के बारे में उस हिन्दू पुत्र ने वे शब्द प्रयोग किए थे कि जब तक एक व्यक्ति वास्तव में दुर्भाग्यशाली अपवित्र स्वभाव ख़राब हृदय न हो ऐसे शब्द प्रयोग नहीं कर सकता, यद्यपि ऐसे शब्दों और ऐसी गालियों में जो

चाँद आएगा और तेरा काम तुझे प्राप्त हो जाएगा। उस दिन सच आएगा और हक़ खोला जाएगा और जो घाटे में है उनका घाटा प्रकट हो जाएगा मेरी याद में नमाज़ को क़ायम कर। तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूँ। तेरा भेद मेरा भेद है। हम ने वह तेरा बोझ उतार दिया जिसने तेरी कमर तोड़ दी और तेरे ज़िक्र को हमने बुलन्द किया। तुझे ख़ुदा के अतिरिक्त औरों से डराते हैं ये कुफ़्र के पेशवा हैं। मत डर, विजय तुझ ही को है। मैंने अपनी दया और क़ुदरत के पेड़ तेरे लिए अपने हाथ से लगाए ख़ुदा ऐसी कदापि नहीं करेगा कि काफ़िरों को मोमिनों पर कुछ आरोप हो। ख़ुदा कई मैदानों में तुझे विजय देगा। ख़ुदा का यह हमेशा से विधान है कि मैं और मेरे रसूल विजयी रहेंगे। उसके आदेशों को कोई बदल नहीं सकता। वह ख़ुदा जिसने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया। कह यह ख़ुदा की यह कृपा है और मैं तो किसी उपाधि को नहीं चाहता। हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा और तेरे अनुयायियों को तेरे विरोधियों पर क़यामत तक विजयी रखूंगा। ख़ुदा ने तुझ पर सुगंधयुक्त दृष्टि डाली तथा लोगों ने दिल में कहा कि हे ख़ुदा क्या तू ऐसे उपद्रवी को अपना ख़लीफ़ा बनाएगा, ख़ुदा ने कहा कि जो कुछ मैं जानता हूँ तुम्हें मालूम नहीं। और लोगों ने कहा कि यह किताब कुफ़्र और झूठ से भरी हुई है उन को कह दे कि आओ हम और तुम अपने बेटों, औरतों और परिजनों सहित एक स्थान पर एकत्र हों फिर मुबाहलः करें और झूठों पर लानत भेजें इब्राहीम अर्थात् इस

दज्जाल, शैतान, कज़्ज़ाब, काफ़िर, अक्फ़र, मक्कार के नाम से हैं और दूसरे मौलवी भी उसके साथ शामिल हैं अपितु झूठ का पुजारी बतालवी जो मुहम्मद हुसैन कहलाता है जो बहुत बड़ा हिस्सेदार और सबसे बड़ा शत्रु है। परन्तु इस हिन्दू पुत्र की दुष्टप्रकृति सबसे बढ़कर इसलिए है कि निपट मूर्ख होने के बावजूद यह शेर भी उर्दू में कहता है और शेरों में गालियां निकालता है और अत्यन्त बुरा-भला कहकर इफ़्तिरा भी करता है और आरोप के तौर पर ऐसी बुराई करता है जिस प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अरब के बेईमान शाइर गालियां दिया करते थे। तो यह इल्हाम उसके विज्ञापन और पुस्तक के पढ़ने के समय हुआ कि اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ अत: यदि इस दुष्प्रकृति हिन्दू के पुत्र के बारे में ऐसा घटित न हुआ और वह असफल, अपमानित और बदनाम न मरा तो समझो कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं। (इसी से)

ख़ाकसार पर सलाम। हमने उस से घनिष्ठ मित्रता की और ग़म से मुक्ति दी। यह हमारा ही काम था जो हम ने किया। हे दाऊद! लोगों से नर्मी और उपकार के साथ मामला कर। तू इस हालत में मरेगा कि मैं तुझ से प्रसन्न हूंगा। और ख़ुदा तुझे लोगों के षडयन्त्र से बचाएगा। उन्होंने मेरे निशानों को झुठलाया और ठट्ठा किया★अत: ख़ुदा उनके लिए तुझे पर्याप्त होगा और उस औरत को तेरी ओर वापस लाएगा। यह बात हमारी ओर से है और हम ही करने वाले हैं। वापसी के बाद हमने निकाह कर दिया। तेरे रब्ब की ओर से सच है। इसलिए तू सन्देह करने वालों में से मत हो। ख़ुदा के आदेश बदला नहीं करते। तेरा रब्ब जिस बात को चाहता है वह उसे अवश्य कर देता है कोई नहीं जो उसे रोक सके। हम उसे वापस लाने वाले हैं उस दिन ज़मीन दूसरी ज़मीन से परिवर्तित की जाएगी। जब बिगुल में फूंका गया तो उनमें कोई रिश्ता शेष नहीं रहेगा ख़ुदा उनको एक निर्धारित समय तक अवकाश दे रहा है जो समय नज़दीक है। नबियों का चाँद आएगा और तेरा काम प्राप्त हो जाएगा। यह कठोर दिन है। आज मैंने निर्णय करने के लिए ध्यान दिया। हम उसे तेरी ओर वापस लाएंगे यदि तेरी ओर शरण ढूंढें तो शरण दे दे और भय न कर हम उसकी पहली आदत फिर उसमें डाल देंगे हम ने तुझे खुली-खुली विजय दी। हे नूह तू अपने

★**हाशिया :-** शेख़ मुहम्मद हुसैन बतालवी का यह ऐतराज़ है कि इल्हाम का यह वाक्य कि يَرُدُّهَا اِلَيْكَ मुहावरे के विरुद्ध है क्योंकि 'रद्द' का शब्द इस स्थिति में आता है कि एक चीज़ अपने पास हो फिर चली जाए और फिर वापस आए। परन्तु अफ़सोस कि उसको भाषा के ज्ञान की जानकारी की कमी के कारण मालूम नहीं कि यह शब्द बहुत छोटे सम्बन्ध के साथ भी प्रयोग हो जाता है। अरब के साहित्य में इसके हज़ारों उदाहरण हैं जिनके लिखने का यह अवसर नहीं चूंकि इस जगह करीबी रिश्तेदारी थी और निकटता के रिश्ते के कारण इसको एक साथ बयान किया हुआ था इसलिए ख़ुदा तआला ने ऐसा शब्द इस्तेमाल किया जो उन चीज़ों के लिए इस्तेमाल होता है जो अपने पास से चली जाएं और फिर वापस आएं। हाँ इस स्थान पर यह अत्यन्त सूक्ष्म संकेत था कि ख़ुदा ने یردّھا का शब्द इस्तेमाल किया ताकि मालूम हो कि प्रथम उसका अपने पास से दूर के लोगों में चले जाना आवश्यक है फिर वापस आना मुक़द्दर में है। (इसी से)

स्वप्न को गुप्त रख और लोगों ने कहा कि यह वादा कब होगा। कह ख़ुदा का वादा सच्चा है। तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ हूँ और इस वास्तविकता को कोई नहीं जानता परन्तु वही जो हिदायत रखते हैं। ख़ुदा की कृपा से निराश न हो। यूसुफ़ को देख और उसकी प्रतिष्ठा को। ख़ुदा उस अर्थात् आथम के ग़म से अवगत हुआ इसलिए उसने अज़ाब में विलम्ब किया यह ख़ुदा की सुन्नत है और तू ख़ुदा की सुन्नत (नियम) में परिवर्तन नहीं पाएगा। और आश्चर्य मत करो दु:खी मत हो और तुम ही विजयी हो। यदि तुम ईमान पर सुदृढ़ रहे। और मुझे मेरे सम्मान और प्रताप की क़सम है कि विजय तुझे ही है और हम शत्रुओं को टुकड़े-टुकड़े कर देंगे और उनका मक्र तबाह हो जाएगा और हम सच्चाई को उसकी पिंडली से खोल देंगे (अर्थात् सच्चाई को स्पष्ट कर देंगे) उस दिन मोमिन प्रसन्न होंगे। और गिरोह पहले में से और एक पिछले में से और यह तज़्क़िर: है अत: जो चाहे ख़ुदा के मार्ग को अपनाए। ईसाइयों ने वास्तविकता को परिवर्तित कर दिया है। तो हम अपमान और पराजय को ईसाइयों पर वापस फेंक देंगे और आथम मिटा देने वाली अग्नि में डाल दिया जाएगा। हम तुझे एक सहनशील लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जो सच्चाई और बुलन्दी का द्योतक होगा मानो ख़ुदा आकाश से उतरा। नाम उसका अम्मानवाइल है (जिसका अनुवाद यह है कि ख़ुदा हमारे साथ है) तुझे लड़का दिया जाएगा और ख़ुदा की कृपा तेरे निकट होगी। मेरा प्रकाश क़रीब है कह मैं बुरी मख़लूक़ से ख़ुदा की शरण मांगता हूँ। यह निर्जीव बछड़ा है और बकवासी अर्थात् लेखराम पेशावरी। इसलिए उसे दु:ख की मार और अज़ाब होगा अर्थात् इसी संसार में।

(फ़ारसी व उर्दू इल्हाम)

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں برمنار بلندتر محکم افتاد

ख़ुदा तेरे सब काम दुरुस्त कर देगा और तेरी सारी मुरादें (मनोकामनाएं) तुझे देगा। मैं अपनी चमकार दिखाऊंगा। अपनी क़ुदरत नुमाई (शक्ति प्रदर्शन) से तुझ को उठाऊंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे। दुनिया में

एक नज़ीर (सतर्क करने वाला) आया, पर दुनिया ने उस को क़बूल न किया, परन्तु ख़ुदा उसे क़बूल करेगा और बड़े ज़ोर आवर हमलों (शक्तिशाली आक्रमणों) से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

आमीन

यह कुछ नमूना उन इल्हामों का है जो यदा-कदा मुझे ख़ुदा तआला की ओर से हुए हैं और इनके अतिरिक्त और भी बहुत से इल्हाम हैं परन्तु मैं सोचता हूँ कि जितना मैंने लिखा है वह पर्याप्त है।

अब स्पष्ट है कि इन इल्हामों में मेरे बारे में बार-बार वर्णन किया गया है कि यह ख़ुदा का भेजा हुआ, ख़ुदा का मामूर, ख़ुदा का अमीन और ख़ुदा की ओर से आया है जो कुछ कहता है उस पर ईमान लाओ। और उसका शत्रु नारकी है तथा इन समस्त इल्हामों में इस ख़ाकसार की इतनी प्रशंसा और ख़ूबी है कि यदि ये प्रशंसाएं वास्तव में ख़ुदा तआला की ओर से हैं तो प्रत्येक मुसलमान को चाहिए कि समस्त घमण्ड और अहंकार तथा शेखी से प्रथक होकर ऐसे व्यक्ति की फर्माबरदारी का जुआ अपनी गर्दन पर ले ले जिसकी शत्रुता में ख़ुदा की लानत और मुहब्बत में ख़ुदा की मुहब्बत है। परन्तु यदि ये प्रशंसाएं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हैं और ये समस्त वाक्य जो इल्हाम के दावे पर प्रस्तुत किये गए हैं शक्तिमान और पवित्र ख़ुदा का इल्हाम नहीं हैं अपितु एक दज्जाल, कज़्ज़ाब ने चालाकी के मार्ग से उनको स्वयं बना लिया है और ख़ुदा के बन्दों को यह धोखा देना चाहा है कि ये ख़ुदा के इल्हाम हैं तो वास्तव में जो अत्यन्त धृष्टता से ख़ुदा तआला पर झूठ बांधता है ख़ुदा तआला की गरजने वाली विद्युत के नीचे खड़ा है और उसके भड़कते हुए प्रकोप का निशाना है और उसको कोई उस स्वाभिमानी और प्रकोपी ख़ुदा के हाथ से छुड़ा नहीं सकता।

क्या यह बात आश्चर्य में नहीं डालती कि ऐसा कज़्ज़ाब, दज्जाल और मुफ़्तरी निरन्तर बीस वर्ष की अवधि से ख़ुदा तआला पर झूठ बांध रहा है अब तक किसी अपमान की मार से नहीं मरा और क्या यह बात समझ नहीं आ सकती कि जिस सिलसिले का समस्त आधार एक झूठे के झूठ पर था और वह इतने समय तक

किसी प्रकार चल नहीं सकता था।★ तौरात और पवित्र क़ुर्आन दोनों गवाही दे रहे हैं कि ख़ुदा पर इफ़्तिरा करने वाला शीघ्र तबाह हो जाता है। उसका नाम लेने वाला कोई शेष नहीं रहता और इंजील में भी लिखा है कि यदि यह इन्सान का कारोबार है तो शीघ्र नष्ट हो जाएगा परन्तु यदि ख़ुदा का है तो ऐसा न हो कि तुम मुक़ाबला करके अपराधी ठहरो। अल्लाह तआला पवित्र-क़ुर्आन में फ़रमाता है-

اِنۡ یَّکُ کَاذِبًا فَعَلَیۡہِ کَذِبُہٗ ۚ وَاِنۡ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبۡکُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ یَعِدُکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یَہۡدِیۡ مَنۡ ہُوَ مُسۡرِفٌ کَذَّابٌ ﴿۲۹﴾ (अलमोमिन-29)

अर्थात् यदि यह झूठा है तो उसका झूठ उस पर पड़ेगा और यदि यह सच्चा

★**नोटः-** यदि किसी के दिल में यह प्रश्न पैदा हो कि दुनिया में सैकड़ों झूठे धर्म हैं जो हज़ारों वर्षों से चले आते हैं, हालांकि उनका प्रारम्भ किसी के इफ़्तिरा से ही होगा। तो इसका उत्तर यह है कि हमारे कलाम में इफ़्तिरा से अभिप्राय वह इफ़्तिरा है कि कोई व्यक्ति जान-बूझ कर अपनी ओर से कुछ वाक्य बना कर या एक पुस्तक बनाकर फिर यह दावा करे कि यह बातें ख़ुदा तआला की ओर से हैं और उसने मुझे इल्हाम किया है तथा उन बातों के बारे में मुझ पर उसकी वह्यी उतरी है। हालांकि कोई वह्यी नहीं उतरी। तो हम अत्यन्त पूर्ण जांच-पड़ताल से कहते हैं कि ऐसा झूठ कभी किसी युग में चल नहीं सका और ख़ुदा की पवित्र किताब साफ़ गवाही देती है कि ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा करने वाले शीघ्र मार दिए गए हैं। और हम लिख चुके हैं कि तौरात भी यही गवाही देती है तथा इंजील भी और पवित्र क़ुर्आन भी। हाँ दुनिया में जितने झूठे धर्म दिखाई देते हैं जैसे हिन्दुओं और पारसियों का धर्म। इनके बारे में यह विचार नहीं करना चाहिए कि वह किसी झूठे पैग़म्बर का सिलसिला चला आता है। अपितु उनमें असल वास्तविकता यह है कि स्वयं लोग ग़लतियों में पड़ते-पड़ते ऐसी आस्थाओं के पाबन्द हो गए हैं। दुनिया में तुम ऐसी कोई किताब नहीं दिखा सकते जिनमें साफ़ और विरोधाभास शब्दों में खुला-खुला यह दावा हो कि यह ख़ुदा की किताब है, हालांकि असल में वह ख़ुदा की किताब न हो अपितु किसी मुफ़्तरी का इफ़्तिरा हो और एक क़ौम उसको सम्मानपूर्वक मानती चली आई हो। हां संभव है कि ख़ुदा की किताब के उल्टे अर्थ किए गए हों। जिस हालत में मानवीय सरकार ऐसे व्यक्ति अत्यन्त स्वाभिमान के साथ कपड़ती है कि झूठे तौर पर सरकारी कर्मचारी होने का दावा करे तो ख़ुदा जो अपने प्रताप और हुकूमत के लिए स्वाभिमान रखता है झूठे दावेदार को क्यों न पकड़े। इसी से

है तो तुम उसकी कुछ उन भविष्यवाणियों से बच नहीं सकते जो तुम्हारे बारे में वादा करे। ख़ुदा ऐसे व्यक्ति को विजय और सफलता का मार्ग नहीं दिखाता जो बकवास करने वाला और झूठा हो।

अब हे विरोधी मौलवियो और सज्जाद: नशीनो ! यह विवाद हमारे और तुम्हारे बीच सीमा से अधिक बढ़ गया है और यद्यपि यह जमाअत तुम्हारी जमाअतों की अपेक्षा थोड़ी सी है और छोटा समूह है और शायद इस समय तक चार-पांच हज़ार से अधिक न होगी, तथापि नि:सन्देह समझो कि यह ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा है। ख़ुदा इसे कदापि नष्ट नहीं करेगा। वह राज़ी नहीं होगा जब तक कि इसको पूर्णता तक न पहुँचाए और वह इसका पोषण करेगा और इसके चारों ओर घेरा बनाएगा और आश्चर्यजनक उन्नतियाँ देगा। क्या तुम ने कुछ कम ज़ोर लगाया अत: यदि यह इन्सान का काम होता तो यह वृक्ष कब का काटा गया होता और इसका नामोनिशान शेष न रहता।

उसी ने मुझे आदेश दिया है ताकि मैं आप लोगों के सामने मुबाहले का निवेदन प्रस्तुत करूं ताकि जो सच का शत्रु है वह तबाह हो जाए और जो अंधकार पसन्द करता है वह अज़ाब के अंधकार में पड़े। पहले मैंने कभी ऐसे मुबाहले की नीयत नहीं की और न चाहा कि किसी पर बद्-दुआ करूं। अब्दुल हक़ ग़ज़नवी सुम्मा अमृतसरी ने मुझ से मुबाहला करना चाहा परन्तु मैं लम्बे समय तक मुंह फेरता रहा। अन्त में उसके अत्यन्त आग्रह पर मुबाहला हुआ। परन्तु मैंने उस के पक्ष में कोई बद्-दुआ नहीं की। परन्तु अब मैं बहुत सताया गया और दु:ख दिया गया हूँ मुझे काफ़िर ठहराया गया, मुझे दज्जाल कहा गया, मेरा नाम शैतान रखा गया, मुझे महा झूठा और मुफ़्तरी समझा गया, मैं उनके विज्ञापनों में लानत के साथ याद किया गया, मैं उनकी सभाओं में नफ़रत के साथ पुकारा गया, मुझे काफ़िर कहने पर आप लोग ऐसे कटिबद्ध हुए कि मानो आप को मेरे कुफ्र में कुछ भी सन्देह नहीं। प्रत्येक ने मुझे गाली देना महान प्रतिफल का कारण समझा और मुझ पर लानत भेजना इस्लाम का तरीक़ा ठहराया। परन्तु इन समस्त कड़वाहटों और दु:खों के समय ख़ुदा मेरे साथ था। हाँ वही था जो

प्रत्येक समय मुझे तसल्ली और इत्मीनान देता रहा। क्या एक कीड़ा एक संसार के मुक़ाबले पर खड़ा हो सकता है? क्या एक कण समस्त संसार का मुक़ाबला करेगा? क्या एक झूठ बोलने वाले की अपवित्र रूह यह दृढ़ता रखती है? क्या एक तुच्छ मुफ़्तरी को ये शक्तियाँ प्राप्त हो सकती हैं।

तो नि:सन्देह समझो कि तुम मुझ से नहीं अपितु ख़ुदा से लड़ रहे हो। क्या तुम सुगंध और दुर्गंध में अन्तर नहीं कर सकते। क्या तुम सच्चाई की प्रतिष्ठा को नहीं देखते। उत्तम था कि तुम ख़ुदा तआला के सामने रोते और एक भयभीत एवं हताश हृदय के साथ उस से मेरे बारे में हिदायत मांगते और फिर विश्वास का अनुकरण करते न कि सन्देह और भ्रम का।

अत: अब उठो और मुबाहले के लिए तैयार हो जाओ। तुम सुन चुके हो कि मेरा दावा दो बातों पर आधारित था प्रथम क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों पर। द्वितीय-ख़ुदा तआला के इल्हामों पर। तो तुम ने क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों को स्वीकार न किया और ख़ुदा के कलाम को यों टाल दिया जैसे कि कोई तिनका तोड़ कर फेंक दे। अब मेरे दावे के आधार की दूसरी शाखा शेष रही। तो मैं उस शक्तिमान, स्वाभिमानी अस्तित्व की आप को क़सम देती हूँ जिसकी क़सम को कोई ईमानदार रद्द नहीं कर सकता कि अब इस दूसरी बुनियाद के फ़ैसले के लिए मुझ से मुबाहल: कर लो।

और यों होगा कि तिथि और मुबाहले का स्थान निर्धारित होने के पश्चात् मैं उन समस्त इल्हामों के पर्चे को लिख चुका हूँ अपने हाथ में लेके मुबहले के मैदान में उपस्थित हूंगा और दुआ करूंगा कि हे मेरे माबूद यदि ये इल्हाम जो मेरे हाथ में है मेरा ही इफ़्तिरा है और तू जानता है कि मैंने उनको अपनी ओर से बना लिया है या ये यदि शैतानी भ्रम है और तेरे इल्हाम नहीं तो आज की तिथि से एक वर्ष गुज़रने से पहले मुझे मृत्यु दे या किसी ऐसे अज़ाब में ग्रस्त कर जो मृत्यु से अधिक निकृष्ट हो और उससे छुटकारा प्रदान न कर जब तक कि मृत्यु आ जाए। ताकि मेरा अपमान प्रकट हो तथा लोग मेरे फ़ित्ने से बच जाएं क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे कारण से तेरे बन्दे फ़ित्ने और गुमराही में पड़ें और ऐसे

मुफ़्तरी का मरना ही उत्तम है। परन्तु हे सर्वज्ञ एवं बहुत ख़बर रखने वाले ख़ुदा यदि तू जानता है कि ये समस्त इल्हाम जो मेरे हाथ में हैं तेरे ही इल्हाम हैं और तेरे मुंह की बातें हैं तो इन विरोधियों को जो इस समय उपस्थित हैं एक वर्ष की अवधि तक अत्यन्त दु:ख की मार में ग्रस्त कर। किसी को अंधा कर दे, किसी को कोढ़ी, किसी को लक़्वा ग्रस्त, किसी को पागल, किसी को मिर्गी ग्रस्त, किसी को पागल कुत्ते का शिकार बना, किसी के माल पर आपदा उतार, किसी की जान पर और किसी के सम्मान पर। और जब मैं यह दुआ कर चुकूं तो दोनों पक्ष कहें कि आमीन। ऐसा ही दूसरे पक्ष की जमाअत में से प्रत्येक व्यक्ति जो मुबाहले के लिए उपस्थित हो ख़ुदा की जनाब में यह दुआ करे कि हे सर्वज्ञ एवं बहुत खबर रखने वाले ख़ुदा हम इस व्यक्ति को जिस का नाम ग़ुलाम अहमद है वास्तव में महा झूठा, मुफ़्तरी और काफ़िर जानते हैं। अत: यदि यह व्यक्ति वास्तव में यह झूठा, मुफ़्तरी, काफ़िर तथा अधर्मी है और इसके ये इल्हाम तेरी ओर से नहीं अपितु अपना ही इफ़्तिरा है तो इस दयनीय उम्मत पर यह उपकार कर कि इस मुफ़्तरी को एक वर्ष के अन्दर मार दे ताकि लोग इसके फित्ने से अमन में आ जाएं और यदि यह मुफ़्तरी नहीं तथा तेरी ओर से है और ये समस्त इल्हाम तेरे ही मुंह की पवित्र बातें हैं तो हम पर जो उसके काफ़िर और कज़्ज़ाब समझते हैं दु:ख और अपमान से भरा हुआ अज़ाब एक वर्ष के अन्दर उतार और किसी को अंधा कर दे, किसी को कोढ़ी, किसी को लक़्वा ग्रस्त, किसी को पागल, किसी को मिर्गी ग्रस्त, किसी को सांप या पागल कुत्ते का शिकार बना, किसी के माल पर आपदा उतार और किसी की जान पर तथा किसी के सम्मान पर और जब द्वितीय पक्ष यह दुआ कर चुके तो दोनों पक्ष कहें कि आमीन। और स्मरण रहे कि यदि कोई व्यक्ति मुझे कज़्ज़ाब तथा मुफ़्तरी तो है परन्तु काफ़िर कहने से बचता है तो उसको अधिकार होगा अपनी मुबाहले की दुआ में केवल कज़्ज़ाब और मुफ़्तरी का शब्द प्रयोग करे जिस पर उसको हार्दिक विश्वास है।

इस मुबाहले के पश्चात् यदि मैं एक वर्ष के अन्दर मर गया या किसी ऐसे अज़ाब में ग्रस्त हो गया जिसमें बचने के लक्षण न पाए जाएं तो लोग मेरे फ़ित्ने

से बच जाएंगे और मैं हमेशा की लानत के साथ याद किया जाऊंगा और मैं अभी लिख देता हूँ कि इस स्थिति में मुझे काज़िब तथा ख़ुदा की लानत का पात्र मानना चाहिए। तत्पश्चात् मैं दज्जाल या मलऊन अथवा शैतान कहने से नाराज़ नहीं तथा इस योग्य हूंगा कि हमेशा के लिए लानत के साथ याद किया जाऊं और अपने मौला के फ़ैसले को अन्तिम फ़ैसला समझूंगा और मेरा अनुकरण करने वाला या मुझे अच्छा और सच्चा समझने वाला ख़ुदा के कोप के नीचे होगा। तो इस स्थिति में मेरा अंजाम बहुत ही बुरा होगा। जैसा कि नीच झूठों का अंजाम होता है।

परन्तु यदि ख़ुदा ने मुझे एक वर्ष तक मृत्यु तथा शारीरिक आपदाओं से बचा लिया और मेरे विरोधियों पर ख़ुदा के प्रकोप और क्रोध के लक्षण प्रकट हो गए और उनमें से प्रत्येक किसी न किसी विपत्ति में ग्रस्त हो गया और मेरी बद्-दुआ नितान्त चमक के साथ प्रकट हो गई तो दुनिया पर सच प्रकट हो जाएगा और यह प्रतिदिन का झगड़ा मध्य से समाप्त हो जाएगा। मैं पुन: करता हूँ कि मैंने इस से पूर्व कभी कलिमा कहने वाले के पक्ष में बद्-दुआ नहीं की और सब्र करता रहा परन्तु इस दिन ख़ुदा से फ़ैसला चाहूँगा और उसकी अस्मत एवं सम्मान का दामन पकड़ूंगा ताकि हम में से ज़ालिम और झूठ बोलने वाले सदस्य को तबाह करके इस सुदृढ़ धर्म को दुष्टों के फ़ित्ने से बचाए।

मैं यह भी शर्त करता हूँ कि मेरी दुआ का प्रभाव केवल इस रूप में समझा जाए कि जब सब वे लोग जो मुबाहले के मैदान में आमने सामने आएं एक वर्ष तक उन बलाओं में से किसी बला में गिरफ़्तार हो जाएं। **यदि एक भी शेष रहा** तो मैं स्वयं को झूठा समझूंगा यद्यपि वे हज़ार हों या दो हज़ार और फिर उनके हाथ पर तौब: करूंगा और यदि मैं मर गया तो एक पापी के मरने से दुनिया में ठण्ड और आराम हो जाएगा।

मेरे मुबाहले में यह शर्त है कि निम्नलिखित लोगों में से कम से कम दस आदमी उपस्थित हों इस से कम न हों तथा जितने अधिक हों मेरी प्रसन्नता और मनोकामना है। क्योंकि बहुतों पर ख़ुदा के अज़ाब का छा जाना एक ऐसा खुला-खुला निशान है जो किसी पर संदिग्ध नहीं रह सकता।

साक्षी रह हे पृथ्वी और हे आकाश कि ख़ुदा की लानत उस व्यक्ति पर जो इस पुस्तक के पहुंचने के बाद न मुबाहले में उपस्थित हो और न काफ़िर कहने तथा अपमान को छोड़े और न ठट्ठा करने वालों की सभाओं से पृथक हो और हे मोमिनो! ख़ुदा के लिए तुम सब कहो कि आमीन। मुझे अफ़सोस से यह भी लिखना पड़ा कि आज तक इन ज़ालिम मौलवियों ने इस साफ़ और सीधे फ़ैसले की ओर ध्यान ही न दिया ताकि यदि मैं इन के विचार में झूठा था तो अह्कमुल हाकिमीन के आदेश से अपने दण्ड को पहुँच जाता। हाँ उन के कुछ अपनी कमीनगी के कारण मेरे बारे में अंग्रेज़ी सरकार झूठी शिकायतें लिखते रहे और अपनी आन्तरिक शत्रुता की आदत को छुपा कर जासूसों के लिबास में डंक मारते रहे और मार रहे हैं जैसा कि शेख़ बतालवी (उस पर वह हो जिस का वह पात्र है) यदि ऐसे लोग ख़ुदा के पास से रद्द किए हुए न होते तो मुझे दु:ख देने के लिए मख़्लूक़ (सृष्टि) की ओर याचना न ले जाते ये मूर्ख नहीं जानते कि कोई बात पृथ्वी पर नहीं हो सकती जब तक कि आकाश पर न हो जाए और अंग्रेज़ी सरकार में यह कोशिश करना कि मानो मैं गुप्त तौर पर सरकार का अशुभ चिन्तक हूँ। यह अत्यन्त नीचता की शत्रुता है। यह सरकार ख़ुदा की गुनाहगार होगी यदि मेरे जैसे शुभ चिन्तक और सच्चे वफ़ादार को अशुभचिन्तक और बाग़ी समझे। मैंने अपनी क़लम से सरकार की शुभचिन्ता में प्रारंभ से आज तक वह कार्य किया है जिस का उदाहरण सरकार के हाथ में एक भी नहीं होगा और मैंने हज़ारों रुपये के व्यय से पुस्तकें लिख कर उनमें हर स्थान पर इस बात पर बल दिया है कि मुसलमानों को इस सरकार की सच्ची शुभ चिन्ता करनी चाहिए। और प्रजा होकर बग़ावत (विद्रोह) का विचार भी दिल में लाना अत्यन्त स्तर की नीचता है। और मैंने ऐसी पुस्तकों को न केवल ब्रिटिश इण्डिया में फैलाया है अपितु अरब, शाम, मिस्र, रोम, अफ़ग़ानिस्तान तथा अन्य इस्लामी देशों में केवल ख़ुदा के लिए प्रकाशित किया है न कि इस विचार से कि यह सरकार मेरा सम्मान करे या मुझे ईनाम दे। क्योंकि यह मेरा मत और मेरी आस्था है जिस का प्रकाशित करना मेरा अनिवार्य कर्तव्य था।

आश्चर्य है कि यह सरकार मेरी पुस्तकों को क्यों नहीं देखती और क्यों ऐसे अन्यायपूर्ण लेखों से ऐसे उपद्रवियों का मना नहीं करती। इन ज़ालिम मौलवियों का मैं किस से उदाहरण दूं ये उन यहूदियों के समान है जिन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अकारण दु:ख देना आरंभ किया और जब कुछ बस न चला तो रोम की सरकार में मुख़बिरी की कि यह व्यक्ति बाग़ी है। तो मैं बार-बार इस न्यायवान सरकार को स्मरण कराता हूँ कि मेरा उदाहरण मसीह का उदाहरण है। मैं इस दुनिया की हुकूमत और रियासत को नहीं चाहता और बग़ावत को बड़ी नीचता समझता हूँ मैं किसी **ख़ूनी मसीह** के आने का क़ाइल नहीं और न **ख़ूनी महदी** का प्रतीक्षक। सुलह के साथ सच को फैलाना मेरा उद्देश्य है और मैं उन समस्त बातों से विमुख हूँ जो फ़ित्ने की बातें हों या जोश दिलाने वाली योजनाएं हों। सरकार को चाहिए कि ध्यान से मेरी हालत परखे और रोम की सरकार की जल्दबाज़ी से इबरत पकड़े और स्वार्थी मौलवियों या अन्य लोगों की बातों को प्रमाण समझ ले कि मेरे अन्दर खोट नहीं, और मेरे होंठों पर कपट नहीं।

अब मैं फिर अपने कलाम को मूल उद्देश्य की ओर लौटकर उन मौलवी साहिबों का नाम नीचे दर्ज करता हूँ जिन को मैंने मुबाहले के लिए बुलाया है और मैं पुन: उन सब को अल्लाह तआला की क़सम देता हूँ कि मुबाहले के लिए तिथि और स्थान निर्धारित करके शीघ्र मुबाहले के मैदान में आएं। और यदि न आए तथा न तक्फ़ीर और तक्ज़ीब से रुके तो ख़ुदा की लानत के नीचे मरेंगे।

अब हम उन मौलवी साहिबों के नाम नीचे लिखते हैं जिनमें से कुछ तो इस ख़ाकसार को काफ़िर भी कहते हैं और मुफ़्तरी भी तथा कुछ काफ़िर कहने से तो ख़ामोशी ग्रहण करते हैं परन्तु मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब तथा दज्जाल नाम रखते हैं। बहरहाल ये समस्त काफ़िर कहने वाले और झुठलाने वाले मुबाहले के लिए बुलाए गए हैं और उनके साथ वे सज्जाद:नशींन भी हैं जो काफ़िर कहने वाले या झुठलाने वाले हैं और वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा वाला तथा सूफ़ी कहलाता है और इस ख़ाकसार की ओर रुजू करने से घृणा रखता है वह झुठलाने वालों में सम्मिलित है। क्योंकि यदि झुठलाने वाला न होता तो ऐसे व्यक्ति के

प्रकटन के समय जिसके बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताक़ीद की थी कि उसकी सहायता करो और उसको मेरा सलाम पहुंचाओ और उसके निष्कपट लोगों में दाख़िल हो जाओ तो अवश्य उसकी जमाअत में दाख़िल हो जाता। और अन्तः पवित्र फ़क़ीरों के लिए यह अवसर है कि ख़ुदा तआला से डर कर और प्रत्येक गन्दगी से पृथक होकर तथा पूर्ण विनय एवं गिड़गिड़ाकर उस पवित्र दरबार में ध्यान करके इस गुप्त रहस्य का उसी के कश्फ़ और इल्हाम से प्रकटन चाहें और जब ख़ुदा की कृपा से उन्हें मालूम कराया जाए तो फिर जैसा कि उनके संयम की शान के योग्य है प्रेम, निष्कपटता और पूर्ण रुजू से आख़िरत का पुण्य प्राप्त करें और सच्चाई की गवाही के लिए खड़े हो जाएं। ख़ुश्फ मौलवी बहुत से पर्दों में हैं, क्योंकि उनके अन्दर कोई आकाशीय प्रकाश नहीं, किन्तु जो लोग हज़रत अहदियत (ख़ुदा तआला) से कुछ लगाव रखते हैं और आत्मशुद्धि से घमंड के अंधकारों से अलग हो गए हैं वे ख़दा की कृपा से क़रीब हैं यद्यपि बहुत थोड़े हैं जो ऐसे हैं परन्तु यह दयनीय उम्मत इन से रिक्त नहीं।

वे लोग जो मुबाहले के लिए सम्बोधित किए गए हैं, निम्नलिखित हैं :-

मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी
शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी एडीटर इशा अतुस्सुन्नः
मौलवी अब्दुल हमीद देहलवी प्रबन्ध अन्सारी प्रेस
मौलवी रशीद अहमद गंगोही
मौलवी अब्दुल हक़ देहलवी लेखक तफ़्सीर हक़्क़ानी
मौलवी अब्दुल अज़ीज़ लुधियानवी
मौलवी मुहम्मद लुधियानवी
मौलवी मुहम्मद हसन रईस लुधियाना
सादुल्लाह नव मुस्लिम टीचर लुधियाना
मौलवी अहमदुल्लाह अमृतसरी
मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी
मौलवी ग़ुलाम रसूल उर्फ़ रुसुल बाबा अमृतसरी
मौलवी अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी
मौलवी अब्दुल वाहिद ग़ज़नवी
मौलवी अब्दुल हक़ ग़ज़नवी
मुहम्मद अली बोपड़ी वाइज़
मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूर ज़िला-लाहौर
मौलवी अब्दुल्लाह टोंकी
मौलवी असग़र अली लाहौर
हाफ़िज़ अब्दुल मन्नान वज़ीराबाद
मौलवी मुहम्मद बशीर भोपाली

शेख़ हुसैन अरब यमानी
मौलवी मुहम्मद इब्राहीम आरा
मौलवी मुहम्मद हसन लेखक तफ़्सीर अमरोहा
मौलवी इहतिशामुद्दीन मुरादाबाद
मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ अजरावरी
मौलवी ऐनुलक़ुज़ात साहिब लखनऊ फिरंगी महल
मौलवी मुहम्मद फ़ारूक़ कानपुर
मौलवी अब्दुल वह्हाब कानपुर
मौलवी सईदुद्दीन कानपुर रामपुरी
मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद रमज़ान पिशौरी
मौलवी दिलदार अली अलवर मस्जिद दायरा
मौलवी मुहम्मद रहीमुल्लाह टीचर मदरसा अक़बराबाद
मौलवी अबुल अन्वार नवाब मुहम्मद रुस्तम अली खां चिश्ती
मौलवी अबुल मोअय्यद अमरोही मालिक रिसाला मज़्हरुल इस्लाम अजमेर
मौलवी मुहम्मद हुसैन कोयले वाला देहली
मौलवी अहमद हसन साहिब शौक़त मालिक अख़बार शहन: हिन्द मेरठ
मौलवी नज़ीर हुसैन पुत्र अमीर अली अम्बेठा, ज़िला सहारनपुर
क़ाज़ी अब्दुल अहद ख़ानपुर ज़िला-रावल पिण्डी
मौलवी अहमद रामपुर ज़िला सहारनपुर मुहल्ला महल
मौलवी अहमद अली साहिब सहारनपुर
मौलवी अब्दुल अज़ीज़ दीनानगर, ज़िला-गुरदासपुर
मौलवी मुहम्मद शफ़ी रामपुर ज़िला-सहारनपुर
मौलवी फ़कीरुल्लाह टीचर मदरसा नुसरतुल इस्लाम लाल मस्जिद बंगलौर
मौलवी मुहम्मद अमीन साहिब बंगलौर
मौलवी क़ाज़ी हाजी शाह अब्दुल क़ुद्दूस साहिब पेश इमाम जामिआ मस्जिद बंगलौर

मौलवी अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहिब सुपुत्र क़ाज़ी शाह अब्दुल क़ुद्दूस साहिब बंगलौर
मौलवी मुहम्मद इब्राहीम साहिब वेलवरी हाल मुक़ीम बंगलौर
मौलवी अबुल क़ादिर साहिब प्यारम पेटी निवास प्यारमपेट-बंगलौर
मौलवी मुहम्मद अब्बास साहिब निवासी दानमबारी-बंगलौर
मौलवी गुलहसन शाह साहिब मेरठ
मौलवी अमीर अली शाह साहिब अजमेर
मौलवी अहमद हसन साहिब कुंजपुरी हाल देहली ख़ास जामिआ मस्जिद
मौलवी मुहम्मद उमर साहिब देहली फ़राश ख़ाना
मौलवी मुस्तआन शाह साहिब सांभर-जयपुर
मौलवी हफ़ीज़ुद्दीन साहिब दुजाना ज़िला-रोहतक
मौलवी फ़ज़ल करीम साहिब नियाज़ी ग़ाज़ीपुर ज़मीना
मौलवी हाजी आबिद हुसैन साहिब देवबन्द

सज्जादा नशीनों के नाम ये हैं

ग़ुलाम निज़ामुद्दीन साहिब सज्जादानशीन नियाज़ अहमद साहिब बरेली
मियां अल्लाह बख़्श साहिब सज्जादानशीन सुलेमान साहिब तौंसवी संगहड़ी
सज्जादानशीन साहिब शेख नूर अहमद साहिब मुहारांवाला
मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब चिश्ती चांचड़ा इलाक़ा बहावल पुर
इल्तिफ़ात अहमद शाह साहिब सज्जादानशीन रदूले
मस्तान शाह साहिब क़ाबुली
मुहम्मद क़ासिम साहिब सज्जादानशीन शाह मुईनुद्दीन शाह ख़ामोश हैदराबाद-दक्कन
मुहम्मद हुसैन साहिब गद्दीनशीन शेख़ अब्दुल क़ुद्दूस साहिब गंगोही
गद्दीनशीन ऊचा शाह जलालुद्दीन साहिब बुख़ारी
ज़हूरुल हुसैन साहिब गद्दीनशीन बटाला-ज़िला-गुरदासपुर
सादिक़ अली शाह साहिब गद्दीनशीन रत्तर छत्तड़, ज़िला-गुरदासपुर
सय्यिद सूफ़ी जान साहिब मुरादाबादी साबिरी चिश्ती
मेहर शाह साहिब सज्जादानशीन गोलड़ा, ज़िला, रावलपिण्डी
मौलवी क़ाज़ी सुल्तान महमूद साहिब आई आवान वाला पंजाब
हैदर शाह साहिब जलालपुर कनकियां वाला
तवक्कुल शाह साहिब अम्बाला
मौलवी अब्दुल्लाह साहिब तलवंडी वाला
मुहम्मद अमीन साहिब चकोतरी गुजरात-पंजाब
मौलवी अब्दुल ग़नी साहिब जानशीन क़ाज़ी इस्माईल साहिब स्वर्गीय बंगलौर
मौलवी वली उन्नबी शाह साहिब नक़्शबन्द, रामपुर दारुर्रियासत
हाजी वारिस अली शाह साहिब स्थान-देवा ज़िला-लखनऊ

मीर इम्दाद अली शाह साहिब सज्जादानशीन शाह अबुल अला नक़्शबंद
सय्यिद हुसैन शाह साहिब मौदूदी देहली
अब्दुल लतीफ़ शाह साहिब पुत्र हाजी नज्मुद्दीन शाह साहिब चिश्ती जोधपुर
कुतुब अली शाह साहिब देवगढ़ इलाक़ा उदयपुर मेवाड़
मिर्ज़ा बादल शाह साहिब बदायूनी
मौलवी अब्दुल वह्हाब साहिब जानशीन अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहिब लखनऊ फिरंगी महल
अली हुसैन साहिब कछोछा, जिला-फक़ीराबाद
शेख़ ग़ुलाम मुहियुद्दीन सूफ़ी वकील अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर
हाफ़िज़ साबिर अली साहिब, रामपुर, ज़िला-सहारनपुर
अमीर हसन साहिब पुत्र पीर अब्दुल्लाह साहिब देहली
मुनव्वर शाह साहिब फ़ाज़िलपुर, ज़िला-गुड़गांव निकट देहली
मुहम्मद मासूम शाह साहिब नबीरा शाह अबू सईद साहिब रामपुर रियासत
बदरुद्दीन शाह साहिब सज्जादानशीन, फुलवारी ज़िला-पटना
शाह अशरफ़ साहिब सज्जादानशीन, फुलवारी,, ज़िला-पटना
मज़हर अली शाह साहिब सज्जादानशीन लवादा ज़िला-पटना
लफ़ाफ़त हुसैन शाह साहिब सज्जादानशीन लवादा
निसार अली शाह साहिब अलवर दारुर्रियासत
वज़ीरुद्दीन शाह साहिब सज्जादा नशीन मख़्दूम साहिब अलवर
मौलवी सलामुद्दीन शाह साहिब महम ज़िला-रोहतक
ग़ुलाम हुसैन खां शाह साहिब ठानवी ज़िला-हिसार
सय्यिद असग़र अली शाह साहिब नियाज़ी अक़बराबाद
वाजिद अली शाह साहिब फिरोज़ाबाद ज़िला- अक़बराबाद
सय्यिद अहमद शाह साहिब हरदोई ज़िला-लखनऊ
मक़्सूद अली शाह साहिब शाहजहांपुर
मौलवी निज़ामुद्दीन चिश्ती साबिरी झज्जर

मौलवी मुहम्मद कामिल शाह आज़मगढ़ ज़िला ख़ास
महमूद शाह साहिब सज्जादानशीन-बिहार ज़िला-ख़ास

इस समस्त सज्जनों की सेवा में यह पुस्तक पैकिट करके भेजी जाती है परन्तु यदि संयोग से किसी साहिब को न पहुंची हो तो वह सूचना दे ताकि दोबारा रजिस्ट्री द्वारा भेजी जाए।

लेखक- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद
क़ादियान

हिंदुस्तान के उलमा और इस राज्य (पंजाब) तथा अन्य इस्लामी देशों के मशाइख़ के नाम पत्र*

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसाएं ख़ुदा के लिए हैं जिसने रसूल तथा (धार्मिक) पुस्तकों को भेज कर हम पर उपकार किया है और उसने नबियों को एकेश्वरवाद के तंबुओं की रस्सी के समान बनाया। और उनके अनुसरण में एक के बाद एक औलिया भेजे ताकि वे इन रस्सियों के लिए कीलों का काम दें। नबियों में सर्वश्रेष्ठ नबी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबीयीन और कमज़ोरों की शफ़ाअत करने वाले और अगलों और पिछलों के गौरव पर और आप की पवित्र क़ौम पर तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा पर जो कि दुनिया वालों के लिए सच्चाई का निशान और ख़ुदा की हुज्जत हैं और इसी प्रकार ख़ुदा के नेक बन्दों में से प्रत्येक बन्दे पर दरूद और सलामती हो।

इसके बाद! यह पत्र मैंने उन लोगों की ओर लिखा है जिन्हें अल्लाह तआला ने भिन्न-भिन्न प्रकार के चमत्कारों से विशिष्ट किया है और सर्वोत्कृष्ट ज्ञान और पूर्ण अध्यात्मज्ञान के द्वारा उनको प्रशिक्षित किया है और जिन पर अल्लाह तआला ने अपने सानिध्य एवं प्रतिष्ठा के मार्ग खोले हैं जो कि प्रकांड विद्वान हैं और पूर्ण व्यवहारिक ज्ञान रखते हैं। और जो दुनिया से वैरागी, पतस्वी और सूफ़िया (अर्थात अल्लाह तआला की ओर पूर्ण रूप से ध्यान कर चुके लोग) हैं तथा अल्लाह तआला ने इन्हें अपनी बादशाहत की ओर खींचा है और इनको अपनी लाहूती (ख़ुदाई) वैभव का स्वाद चखाया है तथा अपनी महानता का डर प्रदान किया है और अपने प्रेम का जाम पिलाया है। इसलिए गुमराही

---

* पुस्तक का यह भाग अर्थात यह पत्र मूल रूप से अरबी भाषा में है यहाँ केवल इसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रकाशक

का अपमान और पाप का दंड उन्हें नहीं पहुँचता और वे लोग बचाए जाते हैं। और हम उन्हें केवल उनकी महान शान और ख़ुदा के प्रेम में आत्मविस्मृत की पवित्रता और उदार प्रकृति और (ईमान के) मीठे फल (प्राप्त करने) के कारण संबोधित कर रहे हैं ताकि उन्हें ख़ुदा का समर्थन प्राप्त हो जाए तथा इल्हाम पाएं। शायद इस प्रकार वे (उन वास्तविकताओं) को समझ जाएं जिन्हे दूसरे नहीं समझ सके। और ताकि वे उन मामलों को जान लें जिन्हें महजूब (सच्चाई से वंचित) न जान सके और ताकि वे अपने ईमान की अन्त:दृष्टि के द्वारा सोच-विचार करें। और आध्यात्मिक सयंम से सोचें और ख़ुदा के लिए गवाही देते हुए वे उठ खड़े हों और ताकि वे अत्याचारियों और सीमा से गुज़रने वालों के लिए ख़ुदा की हुज्जत बनें। और ताकि बहाना करने वाले समस्त झूठों के बहाने समाप्त हो जाएं और मेरी मृत्यु के बाद कही जाने वाली प्रत्येक बात निष्फल हो जाए और अपराधियों का मार्ग स्पष्ट हो जाए। और हम अल्लाह से यह दुआ करते हैं कि स्वयं ही उनकी सहायता करे तथा उन्हें इल्हाम करे और स्वयं ही उनकी सुरक्षा करे और उन्हे बचाए तथा उन्हें सदात्माओं के समान भाग्य प्रदान करे। और जब कि अभीष्ट यह है कि प्रत्येक संयमी तथा सदाचारी पर प्रकट हो जाए चाहे वह आदमी निकट का रहने वाला हो या दूर का। मेरे हृदय में डाला गया कि मैं यह पत्र (पुस्तक) अरबी भाषा में लिखूं और इसका अनुवाद फ़ारसी भाषा में करुं। और पाठकों को वास्तविक हरे-भरे रमणीय स्थलों की सैर कराऊँ और इस्लामी भाषाओं के द्वारा मैं तब्लीग़ (प्रचार) को सार्वजनिक करूं ताकि सत्याभिलाषियों के लिए यह तब्लीग़ चरम सीमा पर पहुँचें। हे सदाचारियों के गिरोह और प्रतिभाशाली तथा बुद्धिमान लोगों की जमाअत! जान लो कि अल्लाह तआला ने मुझे इस सदी के सिर पर मुजद्दिद (सुधारक) बना कर अवतरित किया है और मुझे ही लोगों के सुधार के लिए विशिष्ट किया है और मुझे वे ज्ञान और मुआरिफ (आध्यात्म ज्ञान) प्रदान किए जो इस उम्मत के सुधार के लिए अनिवार्य थे। और मुझे अपनी ओर से ताज़ा ज्ञान प्रदान किया ताकि काफ़िरों और पापियों पर हुज्जत पूरी हो। और मुझे क़ौम के भूखे लोगों को भोजन देने के लिए ताज़ा फल प्रदान किया

है और हिदायत और आध्यात्म ज्ञान के अभिलाषियों के लिए मुझे भरपूर जाम प्रदान किए हैं। और मुझे हर उस व्यक्ति के लिए इमाम बनाया है जो अपने सुधार तथा अपने रब्ब की प्रसन्नता का अभिलाषी है और मुझे अपने इल्हामों और वार्तालापों से सम्मानित किए जाने वालों में से बनाया है और मुझ पर अपने वरदानों की पूर्ती की तथा अपनी अनुकम्पाएं पूर्ण की हैं और मुझे अपनी कृपा से मसीह इब्ने मरयम का नाम दिया तथा मेरे और मसीह इब्ने मरयम के अस्तित्व में ऐसी स्वभाविक समानता रखी जैसा कि दो जौहर एक ही तत्व में पाएं जाते हैं। और मुझे पवित्र और पाक ज्ञान, तथा स्पष्ट और प्रकाशमान आध्यात्म ज्ञान प्रदान किए। और मुझे वे ज्ञान सिखाए जो मेरे अतिरिक्त समकालीनों में से कोई नहीं जानता और अल्लाह तआला ने मेरे हृदय में ऐसे आध्यात्म ज्ञान डाल दिए जिन को कोई दूसरा प्राप्त नहीं कर सकता। और अल्लाह तआला की ओर से मुझे वह प्रकाश प्रदान किया गया जिसे उनमें से किसी ने भी नहीं छुआ। और उसने मुझे पुरुस्कृत लोगों में सम्मिलित किया तथा उसकी महान नेमतों में से एक यह है कि उसने मुझे वह रहस्य दिया है जो केवल वलियों पर प्रकट होते हैं और वह रूह फूंकी है जो चुने हुए लोगों में ही फूंकी जाती है। और मुझे वे समस्त चीज़ें प्रदान की जो केवल मित्रों और प्रियों को प्रदान किया जाता है। और उसने मुझसे शुद्ध प्रेम किया तथा मेरे निकट आया, मेरा सीना खोला और मेरे नूर को पूरा किया और अपनी अधिकतर रहस्मयी बातों का ज्ञान मुझे दिया और अपने प्रेम के रंग में मुझे रंग लिया और मुझे अपने इस्लाम और सलामती के मार्गों पर चलाया तथा मुझे गुमराहों से पृथक कर दिया। और उसके इनामों मे से एक यह है कि मुझे नेक कामों के लिए उसने सामर्थ्य प्रदान की और नेक और शुभ कर्मों की ओर मेरा मार्ग-दर्शन किया और मेरे दिल की शुभ इच्छाओं को उत्तम ढंग से जारी किया और इन शुभ इच्छाओं के झरने और उसके पानी को पवित्र कर दिया तथा उनके प्रकाश और पवित्रता को पूर्ण किया और उनके आंगन और मार्ग को पवित्र किया तथा मेरी ज़मीन को एक और ज़मीन से परिवर्तित कर दिया और मुझे पवित्र लोगों में सम्मिलित किया।

और उसके समस्त इनामों में से एक यह है कि उसने मुझे अपने अस्तित्व का अधिकाधिक प्रेम प्रदान किया और सर्वांगपूर्ण सच्चाई प्रदान की है और मैंने उससे ऐसे प्रेम की याचना की कि जिस में मेरे बाद कोई भी उससे अधिक बढ़ न सके और मुझे उसकी ओर से यह बात पता चली है कि उसने मेरी यह दुआ स्वीकार की और मुझे मेरी मनोकामना प्रदान की और मुझे अपनी कृपा एवं दया में लपेट लिया। अत: समस्त प्रशंसाएँ उस अल्लाह के लिए हैं जो समस्त उपकारियों से उत्तम उपकारी है। समस्त प्रशंसाएं उस अल्लाह के लिए हैं जिसने मुझ से दु:ख को दूर किया और मुझे वे समस्त चीज़ें प्रदान की जो समस्त लोकों में किसी को नही दीं। और यह बात मैंने अपनी ओर से नहीं कही अपितु यह वह बात है जो मेरे रब ने आकाशों पर कही तथा मेरे लिए यह उचित नहीं कि मैं अहंकार करूं और स्वयं को उच्च समझूं निस्संदेह ख़ुदा अहंकारी को पसन्द नहीं करता। अपितु यह इल्हाम ख़ुदा तआला की ओर से है और शब्द "आलमीन" से अल्लाह का भाव वे सृष्टि है जो इस समय हमारे युग में पृथ्वी पर उपस्थित है।

और उस (अल्लाह) के वरदानों में से एक यह है कि उसने मुझे क़ुर्आन की शिक्षा दी और अपनी ओर से उसने अपने ऐसे-ऐसे अध्यात्म ज्ञान मुझे दिए जो गणना से बाहर हैं। ताकि मैं लापरवाह और तुच्छ दुनिया की चिन्ता में डूबे लोगों को नसीहत करूं और ताकि मैं ऐसे लोगों को डराऊं जिनके बाप-दादों को गुज़रे हुए युग में डराया नहीं गया। और ताकि मैं अपराधियों के विरुद्ध तर्क स्थापित करूं।

और उसके समस्त इनामों में से एक यह भी है कि उसने मुझे सम्बोधित किया और कहा कि : मेरे निकट तेरा वह स्थान है जिसे दुनिया नहीं जानती। और अल्लाह ने कहा : तू मुझ से ऐसा है कि जैसे मेरा एकेश्वरवाद और एकत्व। और कहा: हे मेरे अहमद! तू मेरी मनोकामना है और मेरे साथ है, ख़ुदा आकाश से तेरी प्रशंसा कर रहा है। और फ़रमाया : कि तू ईसा है जिसका समय व्यर्थ नहीं किया जाता। तेरे जैसा मोती व्यर्थ नहीं किया जाता। ख़ुदा का पहलवान

नबियों के भेस में। और फ़रमाया : कह कि मुझे भेजा गया है और मैं सर्वप्रथम ईमान लाता हूं। और फ़रमाया : कि हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी के द्वारा कश्ती बना। वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे (तेरी नहीं अपितु) ख़ुदा की बैअत करते हैं। ख़ुदा का हाथ उनके हाथों पर होता है। और फ़रमाया: मैंने तुझे केवल इसी उद्देश्य से भेजा कि ताकि समस्त लोगों के लिए रहमत का निशान प्रस्तुत करूं। और उसके समस्त इनामों में से एक यह है कि जब उसने पादरियों को अपने उपद्रव में अतिश्योक्ति करते हुए देखा कि वे लोग दुनिया में छा गए हैं तो मुझे उनके उपद्रवों के तूफ़ान और घोर अंधकारों के समय भेजा। और कहा: तू हमारे निकट उच्च श्रेणी वाला है और वफ़ादार है। तो मैं उपद्रव और बुराइयों के फैलने और लड़ाइयों और दुष्टता के प्रकटन और मोमिन मुसलमानों की कमज़ोरी के समय में ख़ुदा की ओर से आया हूँ। और यह रहमान ख़ुदा की आदत तथा उसकी सुन्नत इस पद्धति पर जारी है कि वह हर सदी के सिर पर एक मुजद्दिद (सुधारक) अवतरित करता है तो यह किस प्रकार संभव है कि इस सदी में जबकी घोर अंधकार छाया हुआ है और गुमराही का तूफ़ान चढ़ आया है तो वह किसी को अवतरित न करे, क्या अल्लाह सर्वाधिक दयावान नहीं है? और तुम देखते हो कि लोग ईसाइयों के बनाए हुए गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं। और वे मुसलमान किस प्रकार मदहोशों के समान ईसाइयों पर झुके हुए हैं। और ख़ुदा के सुदृढ़ धर्म से बाहर निकल चुके हैं। क्या तुमने मेरे अतिरिक्त भी किसी के बारे में सुना है कि वह इन आपदाओं के सुधार के लिए आया है या तुम यह सोचते हो कि वह इस उम्मत को आघातों के समय भूल गया है। तुम्हे क्या हो गया है कि तुम विचार नहीं करते और तुम देखते हुए भी नहीं देखते या तुम पर दूसरे दु:ख ऐसे विजयी हुए हैं कि तुम ध्यान नहीं देते? कदापि नहीं। निस्संदेह अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध नहीं करता और अपने बन्दे को अपमानित नहीं करता, इसलिए यदि तुम चिन्ता करने वाले हो तो सोचो।

हे प्रतिष्टित लोगो! निस्संदेह उपद्रव तीव्रता में बढ़ चुके हैं और पृथ्वी बिगड़ चुकी है तथा बुराइयों की अधिकता हो गई है और पृथ्वी पर ईसाई विजयी हो गए।

और उसको बार-बार कहा गया कि मुर्दे को क्षमा करने वाला उपासक न बनाओ। और ख़ुदा से डरो जोकि हिसाब-किताब करने वाला और महाकोपी है परन्तु वे अल्लाह से नहीं डरे और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। तो ख़ुदा के एकेश्वरवाद और उसके स्वाभिमान ने चाहा कि उनकी सलीब को तोड़ डाले और उनके झूठे दावों का खण्डन करे और भ्रष्ट लोगों के छल को कमज़ोर कर दे।

अतः उसने मुझ से वार्तालाप किया और संबोधित करते हुए कहा : मैं तुझे लोगों के लिए पथप्रदर्शक बनाऊंगा। और मैं तुझे सम्मानित करते हुए लोगों का ख़लीफ़ा बनाता हूं जिस प्रकार कि पहले लोगों में मेरी सुन्नत रही है।" और उसने मुझे सम्बोधित कर के फ़रमाया कि: "तू ही मेरी ओर से मसीह इब्ने मरयम है। और इसलिए भेजा गया है ताकि वह वादा पूरा हो जो तेरे प्रतिष्ठित रब ने पहले युग में किया हुआ था। उसका वादा अवश्य पूरा होता है और वह सबसे बड़ा सत्यानिष्ठ है।" और उसने मुझे ख़बर दी कि अल्लाह का नबी ईसा मृत्यु पा चुका है और इस दुनिया से उठाया जा चुका है और उन लोगों से जा मिला है जो मृत्यु प्राप्त हैं और वह दोबारा (दुनिया में) वापिस आने वाला नहीं, अपितु ख़ुदा ने उस पर मृत्यु का आदेश जारी कर दिया है और (उसे दुनिया की ओर वापिस लौटने से) रोक लिया है। और उसकी अजल (मौत का निर्धारित समय) ने उसे आ लिया है बहरहाल अब वह पिछलों के समान केवल बरूज़ी (प्रतिरूप) तौर पर दुनिया में आ सकता है। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तू ही बरूज़ी (प्रतिरूप) तौर पर तू ही इसके पद पर स्थापित है। और यह वही सच्चा वादा है जो एक ऐसे रहस्य के समान था जिसकी ओर संकेत किया जाता था। इसलिए जिस बात का आदेश तुझे दिया जाता है उसे भलि प्रकार से स्पष्टता से वर्णन कर और असभ्य लोगों की गाली-गलौज से न डर क्योंकि ख़ुदा की सुन्नत पहले लोगों में इसी पद्धति पर जारी रही है। फिर जब मैंने अपनी क़ौम को इस बात से अवगत किया तो इनके उलेमा मेरी भर्त्सना करने के लिए खड़े हो गए और इससे पूर्व कि मेरी बात को समझने और मेरी शाक्ति का अनुमान लगाने से पहले ही मुझे काफ़िर ठहराने लगे और उन लोगों ने कहा कि यह दज्जाल है

और मुर्तदों में से है। और उन्होंने मेरे विरुद्ध ऐसे आदमी को खड़ा कर दिया जो निर्लज्जता और अत्याचार में सर्वाधिक बढ़ा हुआ है और मुझ पर दरिन्दों तथा अजगरों के समान दाँत पीसे और नुक़सान पहुँचाने पर तत्पर हो गए। और उनकी शरारतों ने मुझे इतना दबाया कि मैं चिंतित हो गया और वे भड़कते रहे जबकि मैंने धैर्य रखा। उन्होंने हमारे सम्मान और खून को वैध समझा और इस कार्य में बहुत बढ़ गए। और इनके सबसे बड़े ने जिसने फ़त्वा दिया था और लोगों को धोखा दिया था कि ये लोग काफ़िर और फ़ाजिर (पापी) हैं इसलिए इन को कोई सलाम न करे और न इनके जनाज़े के साथ जाए और न इन्हे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया जाए। फिर जब मैंने उनको देखा कि ये लोग अंधे और सत्य से दूर हो गए हैं और मैनें देखा कि ये सीमा से गुज़र चुके हैं तथा सच्चों को कष्ट देते हैं तो मैंने इन लोगों का मूंह बंद करने वाली किताबें और सत्याभिलाषियों के लिए कुछ पुस्तकें लिखीं परन्तु उनको इन से (पुस्तकों से) लाभान्वित होना नसीब न हुआ और वे सोच-विचार करने वाले नहीं थे और वे उत्तर देने के लिए तत्पर हुए परन्तु उन्हें उत्तर देने का सामर्थ्य न हुआ। और फिर इस उद्देश्य से आक्रमण करने लगे ताकि हमारे सम्मान को बर्बाद कर दें। परन्तु ख़ुदा ने उनके आक्रमणों को उन्ही पर लौटा दिया, इस पर शर्मिन्दा होकर बैठ गए। और हर प्रकार की शत्रुता और उपद्रव करने लगे। और उन्होंने सोचा कि हम ही सुधारक हैं और उनकी बग़ावत अभी तक उसी प्रकार है जैसा कि पहले थी। उनके लिए मेरे पास नर्मी, सच्चाई से अवगत करवाना, सब्र और दुआ है और हम उस समय तक सब्र करते चले जाएँगे यहाँ तक कि ख़ुदा हमारे और उनके मध्य फैसला कर दे तथा वह सबसे उत्तम फैसला करने वाला है। और उनके पास कोई ऐसा बहाना नहीं जिसे मैंने तोड़ न दिया हो और न कोई सन्देह जिस का मैंने उन्मूलन न कर दिया हो। और मेरी तबलीग़ की बुनियाद तो केवल क़ुर्आन और हदीस और निशानों पर आधारित है और उलेमा तथा संयमी सब एक जैसे नहीं हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो ख़ुदा से डरते हैं और जिस चीज़ का उनके पास निश्चित ज्ञान नहीं होता उस पर हठ नहीं करते और क़यामत के

दिन से डरते हैं। और मामला ख़ुदा के सुपुर्द करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए यह उचित नहीं कि हम इस मामले में बात करें और हमें इन चीज़ों के परिणाम का ज्ञान नहीं दिया गया है। हम डरते हैं कि कहीं हम अत्याचारी न बन जाएं। यही वे लोग हैं जो अपने ख़ुदा से डरते हैं अत: ख़ुदा इनको हिदायत देगा क्योंकि वह विनय करने वालों को नष्ट नहीं करता। जबकि वे लोग जो ख़ुदा से नहीं डरते और लालच को नहीं छोड़ते तथा सांसारिक अपवित्रताओं पर गिरते हैं। और पवित्र तथा अनश्वर संसार के लिए उनके दिलों में कोई परवाह नहीं होती और जो कुछ अंहकार के वाक्य उनके मुख से निकलते हैं उनकी ओर ध्यान नहीं देते और संयमियों के समान जीवन व्यतीत नहीं करते हैं। और दुनिया को ही अपनी तमाम चिन्ताओं का आधार ठहराते हैं और कृपणता को अपना सबसे बड़ा उद्देश्य बना लेते हैं। और पृथ्वी पर अंहकार और अत्याचार करने लगते हैं। तो यही वे लोग हैं जो ख़ुदा के दिनों तथा उसके वादों को भूल चुके हैं और सच्चों के दिन से निराश हो चुकें हैं और उपद्रवियों का मार्ग अपनाए हुए हैं। वे दुनिया में संयम धारण नहीं करते और नश्वर चीज़ों के लिए मरे जाते हैं। और पवित्रता एवं संयम, अच्छे आचारण और बुद्धिमता के द्वारा स्वयं को सुसज्जित नहीं करते और मामलों में भयभीत हृदय के साथ हाथ नहीं डालते तथा ख़ुदा के दण्ड विधान और हराम की हुई चीज़ों पर दुस्साहस दिखाते हैं।

फिर जबकि ये टेढ़े हो गए तो ख़ुदा ने इनके दिलों को टेढ़ा कर दिया है तथा इनके कानों पर मुहर लगा दी है इसलिए ये वंचित लोगों में से हो गए। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उस पर ईमान लाओ जो अल्लाह के वादे के अनुसार प्रकट हुआ है तो वे कहते हैं कि ख़ुदा का वादा कहां प्रकट हुआ है? और अब तक इब्ने मरयम उतरा नहीं और न ही हमने किसी को उतरते हुए देखा है अपितु हम तो प्रतीक्षा कर रहे हैं। और ये लोग ख़ुदा की किताब पढ़ते हैं और फिर भी पढ़े हुए को भूल जाते हैं। और ख़ुदा की वाणी पर विचार नहीं करते अपितु उसे पीठ पीछे फेंक देते हैं। और वे कदापि विचार करने वाले नहीं। और सबसे अद्‌भुत बात यह है कि ये लोग कहते हैं कि हम अल्लाह की आयतों पर

ईमान लाए फिर भी वे ईमान नहीं लाते और कहते हैं कि हम ख़ुदा की किताब का अनुकरण करते हैं जबकि अनुकरण नहीं करते। क्या ये लोग महान किताब अर्थात पवित्र क़ुर्आन में नहीं पढ़ते कि अल्लाह तआला ने ईसा के बारे में क्या फ़रमाया है कि "**या ईसा इन्नी मुतवफ़्फ़ीका**" अर्थात हे ईसा! मैं तुझे मृत्यु देने वाला हूं "**फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी**" अर्थात जब तूने मुझे मृत्यु दे दी और उसने यह नहीं फ़रमाया कि "**इन्नी मुहयीका**" हे ईसा! मैं तुझे ज़िन्दा करूंगा। फिर ईसा की स्पष्ट मृत्यु के बाद मसीह के जीवित रहने का ज्ञान कहां से हो गया? वे यह ईमान रखते हैं कि वह (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) मृत्यु प्राप्त लोगों से जा मिले हैं और फिर यह कहते हैं कि उनकी मृत्यु नहीं हुई। ये बातें एक दूसरे के उलट और विपरीत हैं। ऐसी बाते वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी सुध-बुध बिगड़ गई हो और उसकी समझ और विवेक ठीक न हो और उसने हिदायत प्राप्त लोगों के तरीके को त्याग दिया हो। इन पर अफ़सोस है कि ये समस्त लोग गुमराही पर सहमत हो चुके हैं। और पवित्र कलाम को गड्ड-मड्ड कर दिया। फिर हम ऐसी बातों को कैसे मान लें जो क़ुर्आन के विपरीत है। और इस विचार को हम क्योंकर स्वीकार करें कि जिस पर हृदय सन्तुष्ट न हो। क्या हम उन व्यर्थ बातों को स्वीकार कर लें इसके बावजूद कि उन के पास कोई अकाट्य तर्क नहीं है। और न ही ऐसा प्रमाण जो स्पष्ट हो। क्या ऐसी बातें उस व्यक्ति के मूंह से निकल सकती हैं जो ख़ुदा तआला से डरता हो और गुमराही एवं घाटे से स्वयं को सुरक्षित रखता हो। क्या इस दुनिया से गुज़र जाने के बाद
प्रतिफ़ल का दिन नहीं आएगा? हे सम्मानितों के गिरोह! क्या तुम यह राय रखते हो कि हम उन की इच्छाओं को स्वीकार कर लेंगे और इन्साफ के स्थान से हट जाएंगे या हम इनके अंहकार, मूर्खता और धोखे का अनुकरण करेंगे इसके बाद कि ख़ुदा ने हमें (सीधा मार्ग) दिखाया है और जबकि हमें सद्मार्ग प्रदान किया गया है तथा अध्यात्म ज्ञानियों के तरीके पर शिक्षा दी गई है। और बहुत सी वास्तविकताएं ऐसी हैं जो समान्य लोगों से छिपी हुईं हैं और इन लोगों पर उनके भेद और उनकी बारीकियां छिपी हुई हैं। फिर उन बारीकियों को दूसरे लोगों पर

खोला गया और अल्लाह तआला ने उन्हें इन मामलों की सीमाएं और सिद्धांत समझाए। क्योंकि ख़ुदा जिसे चाहता है अपनी परोक्ष की बातों से सूचित करता है और जिसे चाहता है देखने वाली आँख प्रदान करता है और जिसे चाहता है लापरवाह बना देता है।

क्या ख़ुदा इस बात पर सामर्थ्यवान नहीं कि मुझ जैसे को अपनी कृपा के साथ चुन ले और अपने ज्ञान प्रदान करे और अल्लाह की भविष्यवाणियों में रहस्य तथा उसके फैसलों में युक्तियाँ (निहित) होती हैं। और उसकी वाणी में ऐसे आध्यात्मिक रहस्य होते हैं जहाँ पर दार्शनिकों की समझ मार्ग से हट जाती हैं। और अपने परोक्ष पर उसी को अवगत करता है जिसे स्वयं उसने अपने हाथ से पवित्र किया हो। क्या तुम उसके रहस्यों को समझ सकते हो या ऐतराज़ करते हुए उस से युद्ध कर सकते हो? बहुत से सदाचारी लोग थे जो उसे देखने की इच्छा रखते थे जिसे तुम देख रहे हो और वह प्राप्त करने की उन्हें इच्छा थी जो तुमने प्राप्त कर लिया परन्तु वे प्राप्त नहीं कर सके। यहां तक कि वे दुनिया से गुज़र गए और खेद की अवस्था में मर गए। फिर ख़ुदा तुम्हें ले आया और उन के स्थान पर तुम्हें बैठाया, सारांश यह है कि तुमने वह समय प्राप्त कर लिया जिसे वे प्राप्त नहीं कर सके और उस बन्दे को देख लिया जिसे वे न देख सके। इसलिए तुम अत्यंत कृपालु ख़ुदा की कृतज्ञता करो कि जिसने तुम पर उपकार किया और अपना उपकार तुम्हारे ऊपर पूरा कर दिया। और ख़ुदा के वरदानों को पकड़ लो और उनको स्वीकार करने से मुख न फेरो और ख़ुदा के वरदानों को स्वीकार करने के बाद अस्वीकार न करो और सर्वप्रथम मुख फेरने वाले न बनो। हे सम्मानितों के गिरोह! अत्यंत प्रतिष्ठित ख़ुदा के प्रकोप से बचो और समान्य जन के समान ज़िद्दी, झूठे आरोप लगाना और धृष्टता न करो तथा ख़ुदा के लिए गवाह बनकर खड़े हो जाओ अल्लाह तुम्हारी सहायता करे। सूक्ष्म दृष्टि के साथ ईमान की दूरदर्शिता और आध्यात्मिक ज्ञान से अच्छी तरह विचार करो। निस्सन्देह ख़ुदा के वली हर प्रकार की गुमराही और अवहेलना से बचाए जाते हैं और उनके शुद्ध और स्वच्छ पानी में सैलाब का कूड़ा-करकट तनिक भी नहीं

होता। और ख़ुदा इनको गुमराह लोगों के मार्ग से सुरक्षित रखता है। हे सदाचारियों के गिरोह! क्या तुम विरोधियों के हाथ में कोई प्रमाण देखते हो जिसको बिना किसी प्रमाण के हम स्वीकार कर लें? और इस बारे में हम नौकरों के समान उनके आज्ञाकारी बन जाएं? और जहां से भी सच आए हम उसे रद्द नहीं करते और हम यह जानते हैं कि युक्तिपूर्ण बात अन्त:करण को पवित्र करने वाले के लिए खोई हुई धरोहर है। इसलिए हम इन्कार किए बिना उसे ले लेते हैं और हम मूर्खों से अल्लाह की शरण चाहते हैं।

हे सम्मानितों के गिरोह! तुम्हें मालूम है कि इमाम मलिक बड़े इमामों में से एक इमाम थे। और वह ईसा की मृत्यु हो जाने की आस्था रखते थे, इसी प्रकार इमाम इब्ने हज़्म जिनके ज्ञान एवं संयम की गवाहियां दी जाती हैं (इसी आस्था पर थे) और इसी प्रकार बहुत से सदाचारी ईसा अलैहिस्सलाम की मौत की आस्था रखते थे। यह मसीह की मृत्यु की आस्था रखने में मैं कोई प्रथम व्यक्ति नहीं हूं और न ही मैं अकेला हूँ। और मैं असमय नहीं आया, क्या तुम मुजद्दिदों (सुधारक) के (आने के) समय को नहीं जानते। क्या तुम नहीं देखते कि आकाश भीषण वर्षा के लिए तैयार खड़ा है और पृथ्वी उसे स्वीकार करने के लिए तैयार है। और इससे पहले ये दोनों (आकाश और पृथ्वी) गठरी के समान बन्द थे। फिर पृथ्वी को फाड़ कर अलग किया गया और आकाश को खोल दिया गया और ख़ुदा का वादा पूर्ण हो गया। तो उठो और देखो अगर देख सकते हो और ख़ुदा ऐसा नहीं कि अपने वादे के विरुद्ध करे क्योंकि वह समस्त सच्चों से अधिक सच्चा है। और ख़ुदा के रहस्यों में सूक्ष्म भेद और उसकी भविष्यवाणियों में रूपक होते हैं। क्या तुम इन सब को समझ चुके हो या तुम आश्चर्य करते हुए इन्कार करते हो? और ख़ुदा के बहुत से कार्य ऐसे हैं जिनकी वास्तविकताएं गुप्त रखी गई हैं। और उनके रूप बिगाड़ दिए गए हैं और उनके बाग़ों को छिपा दिया गया है तथा उनके विलक्षण और सूक्ष्म बातों को नितांत सूक्ष्म कर दिया गया है, यहां तक कि बुद्धिमानों की बुद्धि इस स्थान पर भटक गई और इन बातों की प्राप्ती से चिन्तकों की सोच असमर्थ हो गई। और तुम लोग जानते हो कि ख़ुदा

के कथनों की प्रतिष्ठा ख़ुदा के कार्यों की प्रतिष्ठा से कम नहीं है। अपितु इन दोनों का एक ही स्रोत है और उन दोनों में से प्रत्येक दूसरे के लिए गवाह है। और यह बातें सत्याभिलाषियों के लिए लाभप्रद सदुपदेश हैं कि वे ख़ुदा के कार्यों को सोच-विचार की दृष्टि से देखें। फिर कथनों को कार्यों पर रख कर अच्छी तरह सोच विचार करें। क्योंकि उदाहरणों को गहराई से देखना ज्ञान की उन्नति के लिए सर्वाधिक दृढ़ माध्यम है और उन भ्रमों को कुचल देने के लिए जो लू के समान तीव्रता से चलते हैं, इसी कारण से हमने उचित समझा कि यहाँ पर रबुबियत के कुछ कार्य लिखें जिन के कारण दार्शनिकों की बुद्धि आश्चर्यचकित हो गई है। तो इनमें से अधिकतर गुमराह हो गए और हिदायत प्राप्त लोगों में से न हुए। फिर उसने एक क़ौम को तो दया के स्थान पर और दूसरी क़ौम को प्रकोप के स्थान पर कर दिया है और समस्त संसार को एक ही हालत पर नहीं रखा। उदाहरण के तौर पर तुम देखते हो कि एक ऐसी स्त्री जिसका पति मर जाता है उसे बीमार गर्भवती छोड़ जाता है तो वह स्त्री अपने आस-पास लाचारी और मुसीबत देखती है कोई उसकी गर्भावस्था की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता और उसका कोई भी उद्देश्य उसके लिए उपलब्ध नहीं होता। और शरीर ढांकने के लिए उसके पास कोई पुरानी चादर भी नहीं होती और न ही खाने के लिए खजूर होती है। और अपने सीने को छिपाने के लिए उसके पास कमीज़ भी नहीं होती और घास वाली ज़मीन की ओर जाती है और घास से अपने वस्त्र बना लेती है। और चक्की चलाने के कारण उसके हाथ खुरदरे हो जाते हैं और जंगल के कांटों से पिंडलियाँ ज़ख्मी हो जाती हैं और अत्याचारियों की लौंडियों के समान जीवन व्यतीत करती है। फिर वह प्रसवपीड़ा, घुटन और बेचैनी के बाद समय से पहले बच्चा जनती है जो अपूर्ण, बौना, अन्धा और बनावट में अधूरा होता है। और वह बच्चा जन्म के समय से ही नाना प्रकार की कठिनाइयां देखता है और उसकी मां को बच्चा जनने वाली स्त्रियों के समान भोजन उपलब्ध नहीं होता ताकि जिस से उसका दूध बढ़े और बच्चे की ख़ुराक के लिए पर्याप्त हो जाए। फिर वह उसके स्तन को चूसता है और इससे पूर्व कि उसका पेट भरे

छोड़ देता है और जब वह युवावस्था को पहुंचता है और पूरा जवान हो जाता है तो वह नौकरों-चाकरों में शामिल कर दिया जाता है और नितांत दु:शील और उपद्रवी स्वभाव वाला व्यक्ति उसे अपना सेवक बना लेता है या वयस्क होने से पूर्व उसे पकड़ लिया जाता है और जानवरों के समान बेच दिया जाता है। फिर वह अकेलेपन की अवस्था के साथ नौकर होने के कष्टों को सहन करता रहता है और कभी उसकी दरिद्रता उसे किसी उद्दंड काफ़िर की ओर आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खींच कर ले जाती है और वह उसके पास अत्यंत आज्ञाकारी बन कर आ जाता है चाहे वह (स्वभाव से) फिरऔन और शद्दाद का बाप ही हो। फिर वह अपनी तबाह करने वाली दरिद्रता के कारण उसके दासों में शामिल हो जाता है। और कभी-कभी उसका मालिक उसको मारता और गालियाँ देता है और अपने डंडे से उनको मारता है और उसकी पसलियां तोड़ देता है और बहुत सख़्ती से पूछ-ताछ करता है कि क्यों एक पल के लिए भी उसकी दृष्टि से ओझल हो गया तथा भाग गया जबकि वह अभी सरल स्वभाव का बच्चा है जो बुरे-भले को नहीं जानता और उदाहरण स्वरूप कहते हैं कि "चूल्हे में उपले डालो" और जब इस कार्य को अच्छे ढंग से नहीं कर पाता तो उसे थप्पड़ मारते हैं और उसकी ग़लती पर उसे डंडे मारते हैं। वे नहीं चाहते कि यह कुछ खाए और उसका खाना-पीना सभा वालों को क्रोधित कर देता है। चाहे उसने निम्नकोटि का भोजन ही किया हो या ज्वार बाजरा की रोटी ही खाई हो। वे सदैव उसके दोष निकालने में लगे रहते हैं और कोई उस पर दया नहीं करता। फिर वह चारों ओर से दुखों और कष्टों का सामना करता है और उसे ख़ुशी नहीं मिलती। उसे गर्म मसाले पीसने पर भी अच्छी तरह मारते हैं और कभी उसे पजामे में कमरबन्द को बिलम्ब से डालने पर पीटा जाता है। और उसे गला-सड़ा भोजन खाने के लिए देते हैं जो दुर्गन्धयुक्त हो चुका हो या उसे रोज़ेदारों के समान भूखे पेट छोड़ देते हैं।

और गन्दी नाली से पानी पीता है जहाँ से चौपाए भी पानी पीने से बचते हैं। और वह दूषित चीज़ें खाता है कि जिस से कुत्ते भी घृणा करते हैं। और जब

देश में अकाल पड़ता है तो वह सर्वप्रथम (इस का) निशाना बनता है। और जब कोई संक्रमित रोग आता है तो वह रोग का शिकार बनता है और जब बच्चे चेचक के रोग में ग्रस्त हो जाते हैं तो वह चेचक के कारण भूसे के समान हो जाता है और जब दोबारा दातं उगते हैं तो उसके दांत कमज़ोर हो जाते हैं और वह खाना चबाने की शक्ति नहीं रखता। और जब वह घायल हो जाता है तो उसका घाव नहीं भरता और घाव पर ठीक प्रकार से मांस नहीं आता और कभी उसे झाड़-पोछ करने या बर्तन धोने के लिए कहा जाता है। तो थोड़ी ग़लती पर उसे मारा जाता है और कभी उसे बोझ ढोने वाले जानवर के समान उसका प्रयोग किया जाता है और कोई आंख उस पर आंसू नहीं बहाती अपितु बार-बार वह इतना अधिक बोझ उठता है कि मासिक धर्म वाली स्त्री के समान उसका खून बहने लगता है और वे (मालिक) उसे घोड़े के बच्चे के समान पृथ्वी पर जो असमतल है ऐसे दौड़ाते हैं जैसे अश्वपाल घोड़े को। और कभी उंटनी की तरह उस पर सवारी करते हैं और कभी पूरी रात या आधी रात तक जगाते हैं। और कभी उसे लकड़ियाँ फाड़ने का आदेश दिया जाता है वह तब तक लकड़ियाँ फाड़ता रहता है जब तक कि उसके हाथों में छाले पड़ जाते हैं और टांगे लड़खड़ाने लगती हैं। फिर उसे सूखी रोटी खाने के लिए देते हैं। तो (अपनी यह हालत देख कर) उसकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं वह सूखी रोटी खाता है और उसे चोभ लगा कर भिगाया जाता है। और कभी उसकी बहुत पिटाई होती है तो कोई उस पर दया नहीं करता अपितु उनका क्रोध और अधिक भड़कता है फिर वे अपने अत्याचारों से उस को कुचल देते हैं और वह बहुत शिकायत करता है परन्तु किसी के दिल पर उसकी बात का प्रभाव नहीं होता अपितु व्यंग्य में उसका मूंह फाड़ देते हैं और वह कुत्ते के समान फटकार लगाते हैं। तो प्रत्येक कठोर स्वभाव वाले से उसके होश उड़ जाते हैं। न उसके सगे भाई उससे प्रेम करते हैं और न ही सोतेले भाई और वे उसे बेकार आदमी समझते हैं। जब वह किसी के साथ प्रेम करता है तब भी उसके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार नहीं किया जाता। और जब वह खेती करता है तो उसके खेत में दाना नहीं उगता और यदि दाना उग भी

जाए तो वह गूदे से खाली होता है। और उसकी भूमि पर ओलावृष्टि होती है या उसकी खेती नष्ट हो जाती है और वह भूख के कारण मर जाता है और यदि वह इधर-उधर से धन एकत्र कर ले तो उस पर विनाश का चक्रवात चल पड़ता है और उसे अफ़सोस की आंधियां तथा दिल का दर्द पकड़ लेता है। और जब वह शिकायत करता है तो लोग उस पर उपहास करने लगते हैं और मूर्ख लोगों की ओर उसे सम्बद्ध कर देते हैं और वह कुंवारा ही अपनी आयु गुज़ार देता है यहां तक कि उसके सिर के बाल बुढ़ापे के कारण सफ़ेद हो जाते हैं। और जब वह शादी करता है तो ऐसी औरत से करता है जो निर्लज्ज, झगड़ालू और अवज्ञाकारी होती है तथा नितांत कुरूप तथा लंबे मुख वाली और घृणा योग्य होती है। फिर उसका जीवन समय के कष्टों (को सहन करने) में तथा दुर्भाग्य में व्यतीत होता है। और कभी-कभी चाहता है कि दरिद्रता के कारण मर जाए और स्वयं को ऐसे चटियल मैदान में पाता है जहां न कोई वृक्ष होता है न खाने के लिए कोई भोजन। और इसी प्रकार संकटों में जीवन व्यतीत करता है और हर वर्ष बीमार पड़ता है, फिर कभी उसकी आँख दर्द करती है और कभी उसे तिल्ली का रोग होता है तथा कभी वह ज़ुकाम से दोचार होता है और कभी उसे ऐसा रोग लग जाता है जो लम्बे समय तक रहता है। यहाँ तक कि वह बीमारी उसे हड्डियों का पिंजर बना देती है और अन्ततः उसका जीवन समाप्त हो जाता है और वह मृत्यु के सुपुर्द कर दिया जाता है।

इसलिए अब सोच और फिर विचार कर फिर ख़ुदा की सुन्नतों को जो दुनिया में जारी हैं स्मरण कर। क्या ख़ुदा के कार्यों में ऐसी जटिल बातें नहीं पाई जातीं जो समझ से परे हैं और क्या ऐसे रहस्य नहीं हैं जो गिने नहीं जा सकते। फिर हे असहाय! ख़ुदा के कथनों से उसके कार्यों पर अनुमान लगा और अल्लाह की भविष्यवाणियों की जटिलताओं और कठिनाइयों पर आश्चर्य न कर और किसी मुजद्दिद के मामले तथा उसकी बात की सच्चाई (पर आपत्ति करने) में जल्दबाज़ी न कर और यह न कह कि मैंने वे निशान नहीं देखे जिनके बारे में मुझे ख़बर दी गई थी और न ही वह निशानियां मैंने देखीं जो मुझ तक पहुँची। अतः अल्लाह

तआला ने अपनी समस्त बातों को पूरा कर दिया है और अपने समस्त निशानों को प्रकट कर दिया है परन्तु ख़ुदाई कथनों की वास्तविकता तुझ पर वैसे ही गुप्त रही जिस प्रकार ख़ुदाई कार्यों की वास्तविकता गुप्त रही और बहुत सी ऐसी भविष्यवाणियां हैं जिनको रूपकों और सूक्ष्म संकेतों के साथ सुसज्जित किया गया है। और वादे के पूरा होने के समय उन्हें सामान्य जैसा कर दिया जाता है और उनकी वास्तविकताओं को ख़ुदा तआला की ओर से बारीक से बारीक कर दिया जाता है क्योंकि अल्लाह तआला इन बातों से अपने बन्दों की परीक्षा लेता है। क्या तुम लोगों के स्वप्नों पर दृष्टि नहीं डालते कि किस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपों में प्रकट होते हैं और किस प्रकार उनका अर्थ छिपा कर रखा जाता है तथा उनकी वास्तविकता प्रदर्शित नहीं होती सिवाए उन बुद्धिमानों पर जिन्हें ख़ुदा की ओर से दिया जाता है और वे केवल अपने अनुमान से बात नहीं करते अतः तू ख़ुदा की सुन्नतों से भाग कर कहां जाएगा? और जब स्वप्न में तुझे कहा जाता है कि तेरा वह बेटा जो मर चुका था दोबारा लौट आएगा और शीघ्र ही तेरे पास आएगा तो तू और तेरे साथी कभी इसे वास्तविकता पर चरितार्थ नहीं करते और न तू उसकी क़ब्र को इस आशा के साथ देखता है कि तेरा बेटा उससे जीवित बाहर आएगा और लोगों के साथ उसकी मौत के बाद दोबारा आने के बारे में झगड़ा भी नहीं करता अपितु अपने स्वप्न का अर्थ निकालते हुए तू कहता है कि निस्संदेह मेरे यहाँ उसी के समान दूसरा बेटा पैदा होगा मानो वही लौट आएगा।

फिर ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में तू इतना अचम्भित क्यों है यह तो इन्साफ पर आधारित नियम नहीं है और प्रत्येक बात अल्लाह की ओर से है। इसलिए ऐसे लोगों की तरह जल्दी मत कर जो तुझ से पहले मर गए और गुमराह हुए और तुझ जैसों को गुमराह किया। और तू जानता है कि विरोधियों ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया ताकि मेरे कार्य को नाकाम करें और मेरी जमाअत को अस्त-व्यस्त कर दें। यदि यह कार्य ख़ुदा के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो वे उसे निस्सन्देह टुकड़े-टुकड़े कर देते और अवश्य हमें नष्ट और समाप्त कर देते। और ये लोग हर प्रकार के उपाय कर चुके और लोगों को हमारे

विरुद्ध भड़का चुके और हमारे विनाश की प्रतीक्षा करते रहे तो फिर ये स्वयं ही अपमानित हो कर सांसारिक संकटों में ग्रस्त हो गए। और ख़ुदा ने हमारी प्रतिष्ठा को बढ़ाया तथा हमारे प्रमाणों को विजयी किया और शत्रुओं के मूंह काले कर दिए और उनके फिरऔन (बटालवी) ने कहा मुझे छोड़ दो ताकि मैं मूसा को मार दूँ। मैंने ही उसे ऊंचे स्थान पर पहुँचाया था और मैं ही इसे गढ़े में गिराऊंगा और मैं उसे अपमानित होने वाले लोगों के गढ़े में गिरादूंगा और मेरे ख़ुदा ने फ़रमाया :

انی مهین من اراد اهانتك وانی معین من اراد اعانتك۔

(अर्थात मैं उसे अपमानित करूंगा जो तेरा अपमान करता है और मैं उस व्यक्ति की सहायता करुंगा जो तरी सहायता करता है- अनुवादक) अत: मेरे ख़ुदा ने उसे उसके अंहकार का स्वाद चखा दिया और उनके स्तर को नीचे कर दिया। निस्संदेह अल्लाह अंहकार करने वालों को पसन्द नहीं करता। और तू देख रहा है कि लोग किस प्रकार हमारी ओर आ रहे हैं और हमारा ख़ुदा हम पर किस प्रकार उपकार करता है और ख़ुदा कैसे इस (बटालवी) की ज़मीन को चारों ओर से कम करता चला जा रहा है और नेक लोग दुनिया के कोने कोने से किस प्रकार हमारे पास चले आते हैं और यह सब ख़ुदा की कृपा से है ताकि वह लोगों पर प्रकट कर दे कि हमारे दुश्मन ही झूठे हैं। निस्संदेह वह जिसे चाहता है सम्मान देता है और जिसे चाहता है उसे उन्नति प्रदान करता है। उसके फ़ज़्ल (कृपा) को रद्द करने वाला कोई नहीं। सुनो निस्संदेह सच विजयी हो चुका है और उन लोगों पर तबाही है जो षड्यंत्र रचते हैं और छल का प्रयोग करते हैं।

और ख़ुदा की सुन्नत के निशानों को उसके कार्यों पर रख कर देख, क्या तू उनकी जटिलताओं को समझता है? या उसकी पूर्ण विशेषताओं की वास्तविकता को अपनी परिधि में ले चुका है? फिर तुझे क्या हो गया है कि उसके कार्यों की शैली से उसके कथनों की शैली पर बोध नहीं करता और गुमराहों का मार्ग ग्रहण करता है। क्या तू नहीं देखता कि कभी कभी कोई व्यक्ति मुसीबतों में ग्रस्त हो जाता है और आज़माया जाता है और उसके बाह्य आचरण से ज्ञात नहीं होता

कि वह पापियों में से है। फिर आपदाएं उस पर टिड्डी की तरह या अंधे तीर के समान आती हैं, वह व्याकुल, परेशान और हक्के-बक्के व्यक्ति के समान भटकता फिरता है हालांकि कभी वह उत्तम संपत्ति का स्वामी था और अब वह दरिद्र लोगों के समूह में से गिना जाता है यहां तक कि फटे-पुराने कपड़ों का मोहताज है। और इस से पहले कहा करता था कि मैं धन और सन्तान में सबसे बढ़ कर हूँ तथा मुझे वरदान और सौभाग्य प्राप्त है और कहा करता था कि मैं सदाचारियों में से हूं और दृढ़ संकल्प करने वाला, जागरूक प्रकृति वाला बहादुर तथा ईमानदार हूं और वह यह भी दावा करता था कि मुझे हदीस और पवित्र क़ुर्आन में बड़ी निपुणता प्राप्त है और अपने अंदर नाना प्रकार के ज्ञान एकत्रित किए हुए है। फिर ख़ुदा का प्रारब्ध और उसका निर्णय आ गया और उसकी बला उस पर उतरी और उसकी आँखों और कानों की शक्ति को छीन लिया और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसे प्रथम श्रेणी का मूर्ख बना दिया।

फिर वह अपमानित मूढ़ता और स्पष्ट जहालत में प्रसिद्ध हो गया और उस स्वर्ग से निकाल दिया गया जिसमें सम्माननीय लोगों की तरह रहता था। फिर मूर्खता, बदनामी, जहालत और दुर्भाग्य उसे विरसे में मिली संपत्ति और निर्धारित हिस्सों के समान उसे मिली। फिर बुलन्द आकाश से दुराचारियों के समान गिर गया। और लोग जानते हैं कि उसका संकट बड़ा है और उसकी घटनाएं बड़ी हैं फिर भी वे उसके पास से उपहास करते हुए गुज़र जाते हैं। वह उपाय तो करता है परन्तु वह सामर्थ्य नहीं रखता कि अल्लाह तआला की तक़दीर से भाग सके चाहे वह पतली कमर वाले घोड़ों पर सवार हो कर भागे। और कभी-कभी वह दो वर्ष के घोड़े के समान तेज़ी दिखाता है और कभी सामान्य घोड़े के समान आगे बढ़ता है लेकिन अल्लाह की तक़दीर आती है और उसे तेज़ आंधी में बच्चे के समान फेंक देता है। सदैव कायर के समान कांपने लगता है और कोमल कली की तरह हिलने लगता है और ज़रूरत से अधिक सोचने लगता है फिर भी चकनाचूर करने वाले दु:ख से मुक्ति नहीं पाता और निराश और घाटा पाने वाले लोगों के समान जीवन व्यतीत करने लगता है। फिर उसके दिल में विचार

पैदा होता है कि वह दूर-दराज़ की लम्बी यात्रा करे ताकि तक़्दीर के संकटों का निवारण कर सके और मनोकामनाएं पाने वालों में से बन जाए।

फिर उदाहरण के तौर पर उस से लोग कहते हैं कि काबुल का अमीर उलेमा का पोषण करता और उदारता में तेज़ वर्षा के समान है तो वह इसे सुनने से मदोन्मत के समान हो जाता है और अपने कुछ दोस्तों के साथ काबुल जाने का इरादा करता है ताकि वे उसे उच्च पद पर बैठा दें और उन पर रुपयों की वर्षा हो, और वह अपने उस बेटे को जो उसी जैसा है अपने सफ़र का साथी बनाता है केवल इस भय से कि उसके चले जाने के बाद मुर्तद न हो जाए, हमेशा यात्रा पर रहता है और उसकी आंख रात को भी नहीं लगती और सोती नहीं। अंतत: कठिन परिश्रम और नाना प्रकार के कष्ट सहन करने के बाद काबुल पहुँच जाता है और कुछ कर्मचारियों से बात करता है और चापलूसी तथा कपट के तौर पर दोस्ती का इज़्हार करता है और अपने धर्म को इस भय से कि इनाम से वंचित रह जाने या इस भय से कि अमीर अब्दुर्रहमान उसे अपमानित करे, छिपाता है। और इसी प्रकार जीविका की तंगी के कारण उसके दिल ने (इस काम) को सुन्दर बना कर दिखाया और फिर आवभगत के तौर पर प्रत्येक अमीर के सामने सज्दा करता है और हुकूमत के प्रत्येक पदाधिकारी के सामने गिरता है और तब उस पर झूठों के बारे में यह उदाहरण चरितार्थ होती है कि بِئْسَ الفقیر علی باب الأمیر। "निकृष्टतम दरवेश वह है जो अमीर के दरवाज़े पर जाता है"

सारांश यह कि वह अमीर के कर्मचारियों के साथ प्रेम पूर्वक बात करता है और उनकी मुलाक़ात से प्रसन्न होता है और नंगे पांव अमीर के महल तक चल पड़ता है ताकि अपनी दरिद्रता प्रकट करे। और उसे कोई नहीं कहता कि तू सवारी पर सवार हो जा या यह दान ले लो और भिखारी के समान आग्रहपूर्वक पीछे पड़ कर मांग रहा होता है। और वह अपना भेस बदल लेता है तथा अपना चेहरा छिपा लेता है ताकि वह अपराधियों की तरह गिरफ़्तार न हो और उनके लिए उनकी जूतियों से अधिक आज्ञाकारी हो जाता है और उनके भोजन से अधिक उनके अन्दर फ़ना हो जाता है और उन्हें इस प्रकार सलाम करता है जैसे नौकर

चाकर करते हैं। फिर उसे अमीर की चौखट पर और एक क़ैदी के समान ले जाते हैं तो वह उसके आगे सज्दा करने वालों की तरह गिर जाता है और उसकी इस प्रकार प्रशंसा करता है कि "हे महान बादशाह और महान सम्राट! मुझे और मेरी सन्तान को ग़रीबी और भुखमरी ने जकड़ लिया है और मैं आपके पास दूर-दराज़ से अत्यंत कष्ट उठा कर आया हूँ। कृपया आप मुझ पर दान कीजिए क्योंकि ख़ुदा दान देने वालों को प्रतिफल प्रदान करता है।

फिर अमीर उसे कठोर भाषा से सम्बोधित करता है और तनिक नर्मी नहीं दिखाता और कहता है कि बैठ जा और क्रोधित होकर उस से बात करता है फिर यह दरिद्र विचार करता है कि उसकी मौत का समय आ गया। फिर ऐसे समय में उसका ईमान अल्लाह तआला की अनुकम्पाओं पर नहीं रहता और करीब था कि बादशाह के भय से उसका पेशाब निकल जाए। और इसी प्रकार अल्लाह तआला सृष्टि के उपासकों को अपमानित करता है। फिर वह आदमी शाही घर से निकलता है और अमीर को विश्वास हो जाता है कि वह एक झूठा आदमी है। फिर बादशाह के पास उसे संयमियों के समान ठिकाना नहीं मिलता। परन्तु जहाँ तक उस अभिमानी, मूर्ख और अपमानित का संबंध है तो वह समझता है कि शीघ्र ही बड़े-बड़े उपहार उसको दिए जाएंगे और अमीर उसका सम्मान करेगा और उसे उसके पास पद मिलेगा अथवा उसे अपने सानिध्य प्राप्त लोगों में सम्मिलित करेगा। वह अभी अपने विचारों के ताने-बाने बुनने में लगा होता है और शिकारियों के समान हुलिया बदलने में व्यस्त होता है कि कुछ बुद्धिमान उसके उपद्रव से अवगत हो जाते हैं और उसकी स्वभाविकता और झूठ से सूचित किए जाते हैं। फिर उसे अचानक भय का रोग लग जाता है और उसकी आँखों से नींद उड़ जाती हैं और सोचने लगता है कि शीघ्र ही वह क़त्ल कर दिया जाएगा। और दिल ही दिल में भयभीत हो जाता है क्योंकि वह अपनी आँख से बादशाह का दबदबा और उसके दण्ड के तरीके को देख रहा होता है। करीब है कि उसकी जान निकल जाए और एक मृतक के समान नीचे गिर जाए या उसे डरने वाले उपद्रवियों के समान बेहोशी पड़ जाए फिर वह भागने लगता है और

रात को यात्रा करने वालों के साथ प्रयासों से यात्रा करता है और अपने जीवन को अमीरुल मुस्लेमीन की ओर से एक इनाम समझता है या उसके इनाम का कुछ भाग प्राप्त कर लेता है जो उसकी ग़रीबी में कोई कमी नहीं करता। अतः न उसे सज्दः लाभ देता है और न ही खड़े रहना अपितु उसे ज्ञात हो जाता है कि वह बादशाह के समक्ष सम्मानितों में से नहीं है। अतः बुद्धिमान बादशाह उस पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करता अपितु वह स्वयं ही ख़ुद पर अत्याचार करता है कि उसे कोई समुद्र और तालाब उसे लाभ नहीं पहुंचा सकता। अतः वह अपमानित, निंदनीय और ज्वर में अपने घर जाने का इरादा करता है और प्रत्यक्ष रूप से यह दिखाता है कि वह सफल और सम्मानित होकर लौटा है हालांकि वह ख़ाली हाथ और घाटा उठा कर लौटा है। परन्तु वह लानत करने वालों के भय से अपनी अवस्था को छिपाता है। और इसी प्रकार अपना जीवन कष्टग्रस्तों के समान गुज़ारता है। फिर वह उस देश से वापिस लौटता है। और थोड़ी देर के लिए सब्र करता है और कुछ समयोपरांत दूसरे लोगों की ओर मुख फेरता है परन्तु वह किसी चौखट से भलाई नहीं देखता। दर-बदर फिरता है और कुत्तों की तरह उसे धुतकार दिया जाता है और उसकी कंगाली और दरिद्रता उसे अपमान के जंगलों में डाल देती है। और एक देश से दूसरे देश की ओर निष्कासित कर दिया जाता है और वह थोड़े से धन के लिए यात्रा की कठिनाइंया सहन करता है यहां तक कि वह हर स्थान की ठोकरें खाता और हर देश का वासी बन जाता है। हर पहाड़ पार करता और हर सभा में जा घुसता है। फिर वह नंगे शरीर और मूंह काला करवा कर और घातक रोग में ग्रस्त हो कर असफ़ल लौटता है। वह ऐसा दिन नहीं देखता जो उसके दुखों का निवारण करने वाला हो। और कोई ऐसी क़ौम नहीं देखता जो उस से सहानुभूति और सहयोग करे और उसे मौत भी नहीं आती ताकि समस्त दुःख दूर हो जाएं। फिर दुर्भाग्यशाली लोगों की तरह अपने भाग्य को कोसता है और इसी प्रकार वह भीख मांगने वाले फ़क़ीरों के समान और पीछे पड़ कर मांगने वालों और मुहताजों की तरह जीवन व्यतीत करने लग जाता है और कंगाली उसे मार देती है यहां तक कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती

है तथा उसकी समझ बूझ में विघ्न पड़ जाता है।

वह कोशिश करता है कि उपर आए परन्तु गड्ढा सामने आ जाता है। वह ऊपर चढ़ना चाहता है परन्तु ढलान उसके आड़े आ जाती है। और हमेशा क़ौम की निंदा सुनता है और कष्टदायक तीर उसे चुभोते हैं तथा कभी-कभी उसकी बात पर क्रोधित होते हैं और साधारण सी ग़लती पर उसे मारते हैं। और मामूली ग़लती पर अधिक से अधिक निन्दा करते हैं और करीब होता है कि धारदार तलवार से उसे क़त्ल कर दें और दिल जलाने और गाली देने से नहीं रुकते। और उदारता उनकी प्रकृति में नहीं होती। अपितु कभी-कभी उसे जूतों से मारते हैं या डंडों और रस्सियों से उसे पीटते हैं यहां तक कि वह स्वयं को घबराए हुए अकेले व्यक्ति के समान पाता है। और वह हर वह बात जिससे बचना चाहता था उसका सामना करता है और वह कहता है कि काश कि मैं इससे पहले मर जाता और वह इस बात के लिए विवश होता कि दुखों से ग्रसित लोगों के समान दूर तक ले जाने वाली जुदाई तथा दुखदायी यात्रा को अपनाए। फिर वह पैदल चल पड़ता है और जल्दी-जल्दी पैर चलाता हुआ रात में प्रवेश करता तथा वह बाढ़ की आपदा में जा घुसता है। और अधिकतर उसके सामने अभिष्ट ढांचा दिखाई देता है या कोई उसे प्रेम की अभिव्यक्ति द्वारा अपनी ओर बुला रहा है। तो वह प्रसन्न हो जाता और उस (बुलाने वाले) की ओर कष्ट सहन करते तथा बहादुरी दिखाते हुए तैयारी की सवारी दौड़ाता है। अपने ऊंट को विभिन्न चालें चलाते हुए मील पर मील दूरी तय कर के उसे कमज़ोर कर देता है और अन्ततः हानि एवं निराशा ही पाता है। और यह प्रकट होता है कि बुलाने वाले ने झूठ बोला, और सिद्ध हो जाता है कि उसकी यात्रा केवल संकट और व्यंग्य मात्र ही है। और उसकी आशा झूठी और ऐसा विचार है जो मोतियाबिन्द के रोग की कल्पनाओं जैसा है और दुश्मनों के हंसी ठट्ठा और गालियों के साथ-साथ हानि ही अंजाम होता है और अन्ततः घटनाएं उसे बूढ़ा कर देती हैं और उस पर आकस्मिक मौत आ जाती है फिर वह हड्डियों का ढांचा हो कर मर जाता है और उसने फटे-पुराने कपड़े पहने हुए होते हैं। अतः उसके जनाज़े को उठाते समय कोई

रोने वाला उस पर नहीं रोता और उसकी जुदाई पर कोई भी आँख उसके लिए आँसू नहीं बहाती और उसके बच्चे उसकी मौत के बाद अधर्मी हो जाते हैं और ईसाई बन जाते हैं तथा शैतानों के साथ मिल जाते हैं। और उसके भागीदार उस के वीरान घर के स्वामी हो जाते हैं और वे केवल लानत के अतिरिक्त कुछ भी उसकी ओर नहीं भेजते। फिर उसका नाम इस संसार से काट दिया जाता है और अन्तत: उसका परिणाम धर्म और दुनिया की हानि, दोनों लोकों में मूंहकाला तथा ख़ुदा से दूरी होती है।

और एक दूसरा व्यक्ति है जो सम्मान, सौभाग्य और इक़बाल वाले घर में पैदा हुआ। दरिद्रता उसके माता-पिता के निकट कभी नहीं आई तथा वह नहीं जान सका कि तंगदस्ती क्या चीज़ होती है और बुद्धिमान अध्यापकों ने उसकी शिक्षा को पूर्ण कर दिया और उसके होंठ के हिलते ही उसके सेवक दौड़ पड़ते हैं। और जो (चीज़) उसकी मन पसन्द है उसकी प्राप्ति के लिए दौड़ पड़ते हैं। तू देखता है कि उसका कुंआ पानी का उदगम है और उसकी ज़मीन पर हरियाली है। उसका प्रत्येक कार्य सफ़ल होता है। वह स्वाभिमान और गर्व से चलता है और वह प्रशंसनीय जीवन व्यतीत करता है और लोग उसे सौभाग्यशाली और नेकों में से समझते हैं।

अधिकतर तू एक पापी आदमी को देखेगा कि वह सुन्दर कद काठी वाला सुदृढ़ और सर्वाधिक चुस्त रहता है। वह आरामदायक लिबास, में गर्व से चलता है। उसका तीर ख़ुशियों के निशाने से कभी नहीं चूकता। उसका पसंदीदा ताज़ा मांस सीखों पर भूना जाता है उसके लिए शोरबे में रोटी चूर कर, मुर्गे कोयलों पर भूने जाते हैं और मृग के समान चौकड़ियां भरता है। कभी वह जंगल में भी ख़ज़ाना पा लेता है। कई बार मनुष्यों को मृग-तृष्णा की चमक दिखा कर शिकार कर लेता है इसके बावजूद वह किसी प्रकार की तंगी और कष्ट को नहीं देखता, और किसी कठिनाई का सामना नहीं करता और सुन्दर स्त्रियों को मिलने से, संगीत सुनने और धन, सन्तान, संपत्ति और ज़मीनों और नौकर-चाकरों से बहुत सा भाग प्राप्त करता है बावजूद इसके कि वह बुराइयों में बहुत शीघ्रता करता है और निषेध कार्यों से

तौबः नहीं करता और बुराइयों को नेकियों के माध्यम से दूर करने की चिन्ता नहीं करता और मृत्यु से पूर्व अपनी ग़लतियों का निवारण नहीं करता अपितु वह निषिद्ध कार्यों पर साहसी हो जाता है और अतिश्योक्ति करने वालों की तरह ख़ुदा की सीमाओं से बाहर निकलता है और संयम ग्रहण नहीं करता बल्कि संयमियों और शरीफ़ों की मुलाकात से नाराज़ होता है और ईमानदारों के निकट होने से नफ़रत करता है अपितु गाने बजाने वाली औरतों से मेल-जोल रखता और व्यभिचारिणी स्त्रियों के दर्शन की इच्छा करता है तथा परिजनों की नसीहत नहीं सुनता अपितु नसीहत करने वालों को बिच्छू की तरह डंक मारता है और क़बीले की नसीहत की ओर ध्यान नहीं देता★अपितु वह सांप के समान उन पर आक्रमण कारी हो जाता है और उसके कर्मों को समेटा नहीं जा सकता अपितु वह दिन प्रतिदिन पापों

★**हाशिया :-** कुछ हिन्दू पंडित कहते हैं कि मनुष्यों की श्रेणियों (मर्तबों) का अन्तर पिछले कर्मों के कारण है। और जान लो कि वह ऐसी क़ौम है जो मनुष्यों की श्रेणियों में अन्तर पर दृष्टि करते हुए आवागमन की आस्था रखती है, और वे कहते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवर नाना प्रकार की नेकियों और बुराईयों के कारण पैदा हुए हैं, और वे इस पर आग्रह भी करते हैं तथा सब के सब इस से सहमति भी रखते हैं और तुम जानते हो कि ये विचार आध्यात्म ज्ञान से प्रकट नहीं हुए, और न ही सही ज्ञान के दरिया से निकले और इन भ्रमों पर कोई भी ठोस तर्क इस बात पर स्थापित नहीं हुआ अपितु कमज़ोर सोच-विचार और हिदायत की कमी के कारण जब वे मूल वास्तविकता तक न पहुंच पाए तब उन्होंने हैरानी और अंधेपन की अवस्था में भ्रमों को अपना लिया। और वे उनके लिए एक तर्क भी स्थापित न कर सके। अपितु तू शीघ्र ही जान लेगा कि उनके भ्रम के विरुद्ध तर्क स्थापित हो चुके हैं और सबूत का यह बोझ उनकी गर्दन पर होगा कि सिद्ध करें कि जो रूह इस दुनिया से कूच करके चली जाती है वह निश्चित रूप से इस दुनिया में वापस आती है और गवाहों की एक जमाअत उसे देखती है, लेकिन वे सच्चों की तरह गवाह प्रस्तुत न कर सके और तेरे लिए इस आस्था के ग़लत होने पर यही तर्क पर्याप्त है कि यह आस्था ख़ुदा की व्यवस्था के विरुद्ध है। और यह आस्था उस ख़ुदा को जो कि पूर्ण, सामर्थ्यवान, स्रष्टा है, कमज़ोरों और बेकार लोगों के समान बना देती है। और तुम जानते हो कि उसने बहुत से वरदान (नेमतें) मनुष्यों के लिए उत्पन्न कर दिए हैं और मनुष्यों के वरदान और उसके कर्मों के पैदा करते समय इनका नामों निशान तक न था जैसा कि उसने पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और जो कुछ उसने चाहा आकाश और पृथ्वी में पैदा किया ताकि समस्त लोकों

में उन्नति करने लगता है और हर ऐसे घोड़े पर सवार होता है जो हट्टा-कट्टा होता है और प्रत्येक झगड़ालू से घोर शत्रुता में बहुत बढ़ जाता है और बड़े सिर वाले ऊंट के समान दिखाई देता है और अपने जीवन को निरंकुश होने तथा लम्बी नींद की तरह गुज़ार देता है। और अपना घर नेक लोगों से दूर रखता है तथा पापी और अभागे के साथ बैठता है और कभी मस्जिद में नहीं आता अपितु रुपया पैसा ढूंढता रहता है और शराब के जामों की ओर झुक जाता है और वह

शेष हाशिया- के प्रतिपालक की आज्ञा से लोग लाभ प्राप्त करें। और निस्संदेह इन्सान और उसके कर्मों का अस्तित्व इन सृष्टियों के अस्तित्व में आने के बाद पैदा हुआ है जैसा कि तुम देखते हो कि हमारा अस्तित्व पृथ्वी और आकाश और उन तत्वों पर जिन पर जीवन का आधार है, के बाद अस्तित्व में आया। और (इस से) इन्कार करना एक प्रकार की मूर्खता, जहालत और कज बहसी है। फिर उस दयालु ख़ुदा जिस ने हमारे जन्म से पूर्व बहुत से वरदान हमारे लिए उत्पन्न किए, यह क्योंकर माना जा सकता है कि उसने इन वरदानों के प्रदान करने के पश्चात् अपना विधान परिवर्तित कर दिया है। और एक कृपण और कंजूस की तरह हमें अपने कर्मों पर छोड़ दिया है। फिर वे लोग जो इन विचारों में डूब चुकें है और यह सोचते हैं कि यह दुनिया आवागमन की धुरी पर चक्कर लगा रही है, वे कहते हैं कि सृष्टियों के तत्वों को किसी ने पैदा नहीं किया अपितु प्रत्येक रूह ख़ुदा की तरह अनादि और स्वयंभू है और इसी प्रकार शरीर स्वयंभू है और यह ऐसी बात है जो सृष्टियों के रचयिता के इन्कार का परिणाम है। क्योंकि जब इन्होंने संसार के रचयिता (ख़ुदा) के अस्तित्व का इन्कार कर दिया तो वे सब चीज़ों के अनादि होने का इक़रार करने पर विवश हो गए फिर उन्होंने विवशता की अवस्था में प्रत्येक वस्तु को स्वयंभू ठहरा दिया। अत: उन्होंने समझा कि संसार का रचयिता (ख़ुदा) (उन) शरीकों (भागीदारों) में से एक है। अत: उनके भ्रमों के ग़लत होने पर और उनकी आस्था के खण्डन पर अन्वेषकों के नज़दीक यही दूसरा तर्क है। क्योंकि अल्लाह तआला जो समस्त चीज़ों को स्थापित किए हुए है और पृथ्वी और आकाश का जीवन उसी पर आधारित है, कैसे संभव हो सकता है कि वह पदार्थों में से किसी एक वस्तु के समान हो और इन पदार्थों के स्वयंभू तथा अनादि होने में उनके समान हो? यदि अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला (ख़ुदा) उनमें से एक और उनके समान होता तो फिर कैसे संभव होता कि उसका प्रतिपालन समस्त रूहों और शरीरों को अपनी परिधि में ले सके। अपितु वह इस स्थिति में तो दूसरे लोगों के लिए भाई के समान होता न कि वदान्यता का स्रोत होता बल्कि समस्त लोकों का प्रतिपालक। और इन परिस्थितियों में पृथ्वी और आकाश के बनाए रखने वाले के साथ तुलना न होती। फिर इस स्थिति में उसके अस्तित्व पर कोई तर्क स्थापित नहीं हो सकती।

चाहता है कि कुछ सुर्ख़ शराब के प्याले उसे दिए जाएं और शराब को दोस्तों की महफिल और जमावड़े में तुच्छ दुनिया को अपना बुत बना लेता है फिर उसमें तल्लीन हो जाता है और उसी की ओर आकर्षित होता और उसका लालची बन जाता है, और हमेशा उस पर गर्व करता है और धर्म तथा आखिरत के दिन के लिए अच्छी कृतियां जो काम आए ग्रहण नहीं करता। और उसका समस्त जीवन रुपया एकत्र करने में गुज़र जाता है और लालच उसके दिल पर भड़कती हुई

शेष हाशिया- और तर्क किस प्रकार स्थापित हो सकता है जबकि उसने (उनके कथनानुसार) कोई चीज़ पैदा नहीं की अपितु वे उसकी परिधि से दूर हो गईं। और स्वस्थ हृदय तथा सद्बुद्धि फ़तवा नहीं देती कि ख़ुदा का अस्तित्व बिना किसी तर्क और स्पष्ट प्रमाण के बाक़ी रहे।

फिर जब उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि भिन्न-भिन्न प्रकार की सृष्टियां अच्छाइयों और बुराईयों का अनिवार्य परिणाम हैं तो उनके लिए अनिवार्य था कि यह भी इक़रार करें कि जानवरों के प्रकार नेकी और बदी के प्रकारों से अधिक नहीं हो सकते और यह विचार तो अनायास पंच ज्ञानेन्द्रियों के अवलोकन के आधार पर ग़लत है। अत: निस्सन्देह यह विचार मानवीय मनगढ़ंत बातें हैं जो व्याकुलता के समय बुन ली गईं हैं क्योंकि जब वे लोग सच को नहीं पा सके तो उन्होंने अंधों के समान अंधेरे में तीर चलाते हुए अपनी राय प्रस्तुत की और वे हिदायत प्राप्त न थे। फिर यह बात मालूम होती है कि यदि आवागमन ख़ुदा की ओर से इसी प्रकार होता तो यह आवश्यक था कि लोगों की कमी ओर अधिकता, जानवरों की संख्या के परिवर्तन के अधीन होती और यह बात स्पष्ट तौर पर ग़लत है और अनुभव के हिसाब से साफ़ असत्य है क्योंकि हम वर्षा के मौसम में अधिकतर बहुत से परवाने, कीड़े-मकोड़े, पतंगे और मेंढक और नाना प्रकार के जीव-जन्तु देखते हैं और हम भली भांति जानते हैं कि वे मनुष्यों की संख्या से कई गुना अधिक होते हैं अपितु हिसाब लगाने पर मनुष्य उस का दसवां भाग भी नहीं होते। फिर यदि ये जानवर इंसानों की रूहें होती फिर तो अनिवार्य होता कि वर्षा ऋतु में मनुष्यों में से कोई भी व्यक्ति पृथ्वी पर शेष न रहता, परन्तु हम इन्सानों की संख्या में कोई कमी नहीं देखते इसके बावजूद कि पृथ्वी पर सरीसृप और कीड़े-मकोड़े प्रचुरता से पैदा होते हैं अपितु दिन-प्रतिदिन उनमें (इंसानों में) वृद्धि होते हुए देखतें हैं। जहाँ तक उनका यह कथन कि (कीड़े-मकोड़े) रूहें हैं जो आकाश की आबादियों से उतरती हैं तो यह व्यर्थ कार्य है जो कि तर्कों के अभाव और आरोपों के उत्पन्न होने के कारण अपना लिए गए। मैं इन विचारों पर स्थापित किए गए तर्क को तर्क नहीं समझता अपितु ये अनुचित बातें है जो उनके मुंह से बिना प्रमाण के निकलती हैं, जैसा

अग्नि के समान लपकता है और हर ओर से दिल उस पर आकर्षित हो जाते हैं और प्रत्येक इच्छा की पूर्ति होती है तथा उसकी हांडियां हमेशा चढ़ती-उतरती रहती हैं और उस की स्वीकारिता के दिन उससे दूर नहीं होते। उस से विष दूर किया जाता है और उसके मधुर पानी में बरकत दी जाती है। वह अपनी नेमतों में महरूमी का दिन नहीं देखता और न ही उसके सौभाग्य में पतन है बावजूद

शेष हाशिया- कि डूबते हुए आदमी की तरह जो मौत के भय से तिनके का सहारा लेता है, और यदि आकाशों, नक्षत्रों, सूर्य और चन्द्रमा पर लोग संतुष्टि से आबाद होते तो निस्संदेह उनके साथ बहुत से जानवर अर्थात् कीड़े-मकोड़े ऐसे होते जिन की रूह मानव शरीरों से इन प्राणियों में चली जाती। और अवश्य वह व्यवस्था पृथ्वी की व्यवस्था के समान सर्वांगपूर्ण होती जो दूसरी आबादियों की मोहताज न होती। फिर रूहों को ऐसी कौन सी आवश्यकता सामने आती कि पृथ्वी पर उतरें और यह स्पष्टीकरण सद्बुद्धि के निकट क्यों कर सही हो सकता है? क्या इस आस्था के समर्थकों में से कोई एक भी प्रतिभा नहीं रखता।

फिर जबकि (अल्लाह की) आदत इसी प्रकार जारी है कि हर प्रकार के कीड़े मकोड़े इसी मौसम में पैदा होते हैं और इसी प्रकार ख़ुदा के कानून की व्यवस्था जारी है। इन कुछ दिनों के अतिरिक्त कीड़े मकोड़े बाक़ी दिनों में इतनी अधिकता पैदा नहीं होते। यदि इसका कारण लोगों की रूहों का बरसात के दिनों में रेंगने वाले कीड़े-मकोड़ों में परिवर्तित होना होता तो खोज-बीन के समय यह बात उन कठिनाइयों में से होती जो हल नहीं हो सकती अपितु उन बातों में से जो स्पष्ट तौर पर खंडित और असंभव हैं और प्रत्येक दृढ़ राय रखने वाले के निकट बहुत से एतराज़ों का कारण हैं। क्या तुम विचार करते हो कि लोग इन्ही दिनों में दूसरे दिनों की अपेक्षा अधिक पाप करते हैं फिर वे मरते हैं और ख़ुदा की ओर से दण्ड के तौर पर कीड़े-मकोड़ों में परिवर्तित हो जाते हैं।

फिर विचार कर! क्या यह ऐसी बात है कि तेरा दिल पूर्ण सांत्वना के साथ उसे स्वीकार करता है या ख़ुदा का विधान तथा उसकी व्यवस्था इस पर गवाही देती है? फिर हम अवलोकन करते हैं कि बहुत से रेंगने वाले कीड़े-मकोड़े और छोटे कीड़े कुआं खोदते समय पृथ्वी के तल से निकलते हैं, अपितु उस के पानी में बारीक-बारीक कीटाणु पाए जाते हैं जो परखने के समय वे (कीटाणु) छिपे नहीं रहते या प्रत्यक्ष रूप से सूक्ष्मदर्शी यंत्र के द्वारा दिखाई देते हैं। अब तुम्हारी क्या राय है? क्या तुम सोचते हो कि रूहें पहले पृथ्वी पर उतरीं फिर धरती में धंसा दी गईं और यहां तक कि वे पाताल तक पहुँच गईं?

हे दरिद्र! ख़ुदा से डर यदि तू यह कहे कि उन अपूर्ण लोगों का हाल क्या होगा जो

इसके कि वह अपना जीवन दुष्कर्मों में गुज़ार देता है। उस पर बिजली नहीं गिरती और न सांप डसता है और उसका नाम पृथ्वी से मिटाया नहीं जाता अपितु उसकी सन्तान बहुत होती है। उसके आस-पास उस के पोते इकट्ठे होते हैं और प्रत्येक भरी सभा में ऊंचे स्थान पर बैठता है और हर उस सभा में जिसमें बड़े-बड़े लोग उपस्थित होते हैं वही उन का सभापति होता है और

शेष हाशिया- अपूर्णता की अवस्था में मर गए और इस संसार से गुनाह का बोझ लेकर गुज़र गए क्योंकि वे इस संसार में अपने गुनाहों की क्षतिपूर्ति के लिए दोबारा नहीं आएंगे। फिर उनकी पूर्ति कैसे होगी और वे कैसे मुक्ति पाएंगे, या वे अपूर्ण अवस्था में ही (स्वर्ग में) दाखिल कर दिए जाएंगे या हमेशा के लिए अज़ाब में छोड़ दिए जाएंगे? तो सुन, हमारी आस्था यह है कि नर्क अपूर्ण लोगों को पूर्णत: तक पहुँचा देगा और लापरवाहों को होशियार करने वाला, और सोने वालों को जगाने वाला है और अल्लाह ने उसका नाम (उस में) प्रवेश करने वालों की मां रखा है क्योंकि यह माओं के अपने बेटों के पोषण करने के समान उन का (नर्क वालों का) पोषण करती है। और हमारा विश्वास है कि उस दिन एक युग के पश्चात् हर आँख तेज़ हो जाएगी और फिर दीर्घ काल गुज़ारने के बाद प्रत्येक दुर्भाग्यशाली सौभाग्यशाली बन जाएगा और वे (नर्क वाले) आग में कुछ समय तक ठहरेंगे जितना ख़ुदा तआला चाहेगा। परन्तु उसके निश्चित (समय) का हमें ज्ञान नहीं फिर वह अवधि मनुष्य के जीवन की अपेक्षा स्थाई है और बहुत अधिक उपकार करने वाले ख़ुदा के उपकारों पर दृष्टि डालते हैं तो उस अवधि को सीमित पाते हैं और वास्तविक रूप से वे उस में हमेशा के लिए अंधों के समान छोड़ नहीं दिए जाएंगे। और उनके कार्य का परिणाम ख़ुदा की दया तथा हिदायत और अंधी क़ौम हो जाने के बाद ख़ुदा का अध्यात्म ज्ञान ही होगा। और हमारा विश्वास है कि अज़ाब का स्थाई होना अल्लाह तआला के स्थाई होने की तरह नहीं है अपितु हर अज़ाब का एक अन्त है और हर प्रकार की निंदा के बाद दया और (अल्लाह की) शरण है और निस्संदेह अल्लाह तआला समस्त दयावानों से अधिक दयालु है। इसके बावजूद वे सब मुक्ति के दर्जों के मामले में एक समान नहीं हैं। अपितु अल्लाह तआला ने कुछ को कुछ पर पुण्य एवं दर्जों में श्रेष्ठता दी है, और किसी प्रकार का एतराज़ उसके कार्य पर नहीं पड़ सकता क्योंकि वह बादशाह है। फिर उसने अपने कुछ बन्दों को विशेषताओं में उच्च पद प्रदान किए हैं और कुछ को कम दर्जे की श्रेष्ठता दी है ताकि वह सिद्ध करे कि वही स्वामी है जो चाहता है, करता है। इस में सृष्टि के किसी अधिकार का हनन नहीं होता और जबकि ख़ुदा का अस्तित्व ही हर एक का मूल कारण है और प्रत्येक हरकत और

लोग उसे समस्त सभाओं का चंद्रमा और समस्त लोगों का सरदार समझते हैं और उसके नौकर-चाकर उसके सिरहाने खड़े रहते हैं यहां तक कि वह अपनी नींद से जाग जाता है और वह खाता-पीता है यहां तक कि उसका पेट फूल कर कुप्पा हो जाता है। वह दूध का बड़ा बर्तन भी खाली कर देता है न उसका पेट ख़राब होता है और न ही उसके पेट में दर्द होता है और वह

शेष हाशिया- स्थिरता का स्रोत है और वह प्रत्येक जीवन पर निगरान है तो फिर यह सही नहीं होगा कि हमेशा के अज़ाब को उसकी ओर सम्बद्ध किया जाए। और बन्दा प्रत्येक पक्ष से अधिकृत नहीं होता अपितु वह समस्त सृष्टि का स्रष्टा और सम्पूर्ण कायनात को क़ायम रखने वाले ख़ुदा के प्रारब्ध के अधीन होता है। और मनुष्य की प्रत्येक प्रकार की शक्ति अल्लाह के हाथ और इरादे से उत्पन्न की हुई है और उसके दुर्भाग्य और सौभाग्य में ख़ुदा का बड़ा हस्क्षेप है। फिर वह कमज़ोर बन्दे को हमेशा के अज़ाब में कैसे छोड़ देगा, बावजूद इसके कि वह जानता है कि वही प्रत्येक दुर्भाग्यशाली और सौभाग्यशाली का स्रष्टा है। और काम यद्यपि बन्दा ही करता है परन्तु अल्लाह सब से पहला कर्ता धर्ता है और हर बन्दा उस के हाथ की रचना है और वही समस्त लोकों का रचयिता है। निस्संदेह वह बहुत दयालु, दानशील, और कृपालु है और उसकी दया उसके प्रकोप से और उसकी नर्मी उसकी कठोरता से प्रबल है और कोई दया में उसकी बराबरी नहीं कर सकता। अत: वह पूर्णतया समाप्त नहीं करता। अन्जामकार परीक्षा के अन्त में दया करता है और अत्याचारी लोगों की तरह पूर्णतया कुचलता नहीं अपितु अन्तिम दिनों में अपनी नर्मी का हाथ विस्तृत कर देता है और नारकियों में से मुट्ठी भर ले लेता है, सारांश यह कि ख़ुदा के हाथ और उसकी मुट्ठी की ओर देख, क्या यह ऐसा हाथ है जो किसी नारकी को वंचित छोड़ देगा। और इसी प्रकार उसने नारकियों के बारे में संकेत करते हुए एक सुन्दर बात की है जिसमें महान आशा और ख़ुशख़बरियों की सूचना है।

फिर उसने फ़रमाया कि "वे उसमें उस समय तक रहेंगे जब तक आकाश और पृथ्वी स्थापित हैं केवल उस (अवधि) के जो तेरा रब चाहे, तेरा रब जो कुछ चाहता है उसे कर के रहता है।" अत: तू इस (उपरोक्त आयत में मौजूद) अपवाद को गहरी और हिदायत की नज़र से देख और निराश लोगों के समान कुधारणा न रख। और ईसाइयों के ख़ुदा पर तो बहुत ही आश्चर्य है कि जिसने उन (ईसाइयों) के विचार के अनुसार अपने बेटे को सूली पर चढ़ा दिया और उसने इकलौते बेटे को क्रोधित दीवाने की तरह खो दिया और प्रतिफल एवं दण्ड देने में इन्साफ, नर्मी और उपकार के मार्ग पर नहीं चला अपितु उस ने ऐसे हमेशा

प्रत्येक अच्छी सवारी पर सवार होता है और उसका एश्वर्य उसके लिए दान की तरह है जायदादों और नौकरों का प्रेम उस के दिल में अंकित हो जाता है और वह नहीं जानता कि ईमान क्या है। और न वह कोई छोटा-बड़ा गुनाह छोड़ता है और कोई भी उसकी आदत और जीवन चरित्र की प्रशंसा नहीं करता। इन समस्त खूबियों के बावजूद वह सामान्य एवं विशेष लोग बार-बार उसके पास

शेष हाशिया- के अज़ाब से डराया जो एक पल के लिए समाप्त नहीं होगा। फिर इस जैसे महाप्रकोपी ख़ुदा में दया कहां, जिसने अपने प्रिय बेटे को काफ़िरों के सुपुर्द कर दिया? और दयावान तथा सदाचारियों की तरह अपने अज़ाब में कमी नहीं की अपितु उसने अपने बन्दों को हमेशा के लिए नर्क में धकेल दिया। अत्यंत अप्रियता की सीमा तक अज़ाब को बढ़ा दिया फिर उसने दावा किया कि उसने अपने बेटे को क़त्ल किया ताकि वह पापियों को मुक्ति दिलवाए। अत: यह केवल अत्याचारियों और झूठों का तरीका है। फिर हम अपनी बात की ओर लौटते हैं और कहते हैं कि निस्संदेह हिंदुओं ने हिदायत के मार्गों को त्याग दिया है इसलिए तू उन निरर्थक बातों का अनुसरण न कर जिन्हे मूर्खों ने बनाया है और ख़ुदा से मांग कि वह तुझे सद्मार्ग की हिदायत दे। क्या तू नहीं देखता कि उन्होंने विरोधाभासी बातों को अपने अन्दर इकट्ठा कर रखा है और उन्होंने अपनी व्यर्थ बातों के कारण लोगों को हंसाया है। और वे खुला-खुला झूठ गढ़ लाए हैं। उनकी आस्था के कारण उन पर अनिवार्य है कि अपने ख़ुदा से विनयपूर्वक दुआ करें, ताकि वह इंसानों के अतिरिक्त समस्त जानवरों को फ़ना कर दे जो आकाश के नीचे पाए जाते हैं अर्थात् गायों में से और भैंसों और बकरियों में से और उन के अतिरिक्त विभिन्न् जानवरों में से। और इसी प्रकार प्रत्येक स्त्री को चाहे उनकी पत्नी हो या उनकी माओं में से हो और बेटियों और बहनों में से हो मृत्यु दे ताकि उनके बाप-दादों की रूहें आवागमन तथा अपमानित करने वाले अज़ाब★ से मुक्ति प्राप्त करें। अपितु यह दुआ उनका सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य तथा सबसे बड़ी मनोकामना होनी चाहिए। यदि वे लोग अपनी आस्था पर अटल हैं और इस पर विश्वास रखते हैं परन्तु वे इसके विपरीत दुआएं करते हैं और उनकी पुस्तक वेद इनको प्रेरणा देती है कि वे ख़ुदा से दुआ करें ताकि बहुत सी गांए और घोड़े और जानवरों के सन्दर्भ से उन्हें धनी कर दे। और वेद इस प्रकार की दुआओं से भरा पड़ा है। जैसा कि (यह बात) उन लोगों से छुपी

★ **(नोट):** यदि आवागमन सच होता तब तो अनिवार्य है कि जो भी यह आस्था रखे वह विवाह करने से बचे। क्योंकि हो सकता है कि जिससे विवाह कर रहे हों वह स्त्रियां उनकी बेटियां हों या उनकी बहनें या माओं की माएं हों। इसी से

आते हैं। और पूर्ण प्रेम के साथ उसे दोस्त बनाते हैं यहां तक कि उसकी क़ब्र उसकी मौत के बाद दर्शन करने वालों के लिए दर्शन-स्थल बन जाती है। और प्रतिदिन सुबह-शाम आस्था रखने वाले लोग उसके मज़ार पर देख-भाल लिए जाते हैं। और इस आदमी के सौभाग्य पर और उन लोगों के दुर्भाग्य पर जिनका

शेष हाशिया- नहीं जिन्होंने ऋग्वेद को ध्यानपूर्वक पढ़ा है और पंडितों से चिंतन-मनन करते हुए सुना है। फिर यदि वेद ख़ुदा की ओर से होता तो कदापि संभव न था कि उसमें ऐसी दुआएं मौजूद होतीं जो पापियों के पापों के बिना संभव ही नहीं। और तू हिन्दुओं को देखता है कि वे किस प्रकार चाहते हैं कि उन के लिए गायों और भैसों का झुंड हो। और इन बातों के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यत्न करते हुए अपना जीवन व्यतीत कर देते हैं। मानो कि वे चाहते हैं कि बुराई हमेशा मौजूद रहे अपितु उनका वेद पसन्द करता है कि पापियों के पापों की निरन्तरता कभी समाप्त न हो। जहाँ तक इस विषय में सबसे अच्छी और अधिक सही बात है और उचित स्तंभों पर स्थापित है तो वह वही है जिसे अल्लाह तआला ने अभिलाषियों के लिए पवित्र क़ुरआन में स्पष्टतापूर्वक वर्णन किया है कि यह दुनिया हमेशा नहीं रहेगी अपितु इसके लिए समाप्ति निर्धारित है और इसका एक अंत है और इसके बाद एक और दुनिया है जिसे प्रतिफल और दण्ड का दिन कहा जाता है। और उस दुनिया के वरदानों को वही पाएगा जिसने अपने रब की ख़ुशी के लिए कठिनाइयों को एश्वर्य के मुक़ाबले पर ग्रहण किया और कष्टों को ऐश-व-आराम पर प्राथमिक दी और भिन्न-भिन्न प्रकार के संकटों पर सब्र किया। फिर वे लोग जिन्होंने इस सौभाग्य को पा लिया तथा प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त किया। उपकारी ख़ुदा के निकट दो क़ौमें हैं। उनमें से एक क़ौम ऐसी है जो ख़ुदा के मार्ग में अपने प्राणों और संपत्ति के साथ प्रयास करते हैं और ख़ुदा के मार्ग में अपने प्रिय धरोहर में से सब का सब दे देते हैं और ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए अपने प्राणों को बेच देते हैं और स्वयं पर दूसरों को प्राथमिकता देते हैं चाहे वे स्वयं तंगी और कष्ट में रहें। तथा अपने रब्ब के लिए सज्दा करते हुए खड़े होते और रोते हुए रात गुज़ारते हैं। और न्याय करने और इच्छाओं की पूर्ति के लिए हद पार नहीं करते अपितु अपने धन को ख़ुदा की प्रसन्नता के अनुसार ख़र्च करते हैं और दरिद्रो एवं भिक्षुओं के समान जीवन व्यतीत करते हैं। और दूसरी क़ौम वह है कि ख़ुदा स्वयं ही उनको मुक्ति दिलाने का अभिभावक बन जाता है और उनके लिए ऐसे काम करता है जो उनकी शक्ति में नहीं होते कि वे स्वयं अपनी मुक्ति के लिए करें। फिर उन पर भिन्न-भिन्न प्रकार की मुसीबतें उतारता है और उन्हें धन, प्राण और फलों की कमी से आज़माता है फिर इस (आज़माइश) के कारण इन पर दया करता है और इन

वर्णन इससे पहले तुम सुन चुके हो कोई तर्क नहीं, और यह मालूम नहीं किया जा सकता कि किस प्रकार ये लोग दंड देने वालों के सुपुर्द किए गए और दूसरे किस प्रकार इनाम प्राप्त लोगों में शामिल किए गए।

ये वे रहस्य हैं जिनके अन्त तक दृष्टि नहीं पहुँच सकती और न किसी प्रकार के विचार उन तक पहुँच सकते हैं। फिर जब ये जटिलताएं ख़ुदा के कार्यों में मौजूद हैं तो अल्लाह के कथनों में ऐसे उदाहरण क्यों न पाए जाएं? तुझे क्या हो गया है कि तुम हक़ीम (ख़ुदा) के कथनों को उसके कार्यों पर अनुमान नहीं करते? जबकि यह आमने-सामने रखे हुए दो दर्पणों के समान हैं और दो जुड़वा बच्चों की तरह हैं। तो इन दोनों में पूर्ण समानता का होना आवश्यक है। इसलिए तू इस सीमा से आगे मत बढ़ जो मुश्किल बात को

शेष हाशिया- पर रहमतें तथा नाना प्रकार की बरकतें उतारता है। जैसा कि शेष रहने वाले नेक और उचित व्यवहार करने वालों पर उतारता है। और उन्हें अपने प्रियजनों में सम्मिलित कर लेता है और इन आपदाओं को उनकी इबादत समझता जाता है क्योंकि वे संकटों पर धैर्य करते हैं। फिर अल्लाह तआला उनको उन स्तरों तक पहुँचा देता है जो संयमियों, नेकों और इबादत करने वाले गिरोह और चुने हुए लोगों का स्थान होता है। और उन से उसी प्रकार प्रसन्न होता है जिस प्रकार उस क़ौम से प्रसन्न हुआ जो उसकी इबादत करते हैं और उसे प्राथमिकता देते हैं तथा उन्हें सफ़ल लोगों में गिनता है और प्रत्येक के लिए वही पसंद करता है जो उनके लिए उत्तम है और वह सृष्टि के हितों को खूब जानता है। तो यहां पर ऐतराज़ का कोई स्थान शेष नहीं रहता क्योंकि उन्होंने अपने कष्टों का बदला पा लिया है। और ख़ुदा की पूर्ण कृपा से असीमित इनाम दिया गया और वे सच्चाई के पद में बड़े-बड़े ईमानदारों की तरह दाख़िल कर दिए गए हैं और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक अनश्वर आनन्दों को प्राप्त कर लिया है और वे ऐसी जन्नत के वारिस हो गए कि जिसकी नेमतें कभी भी समाप्त नहीं होंगी और उन्होंने कुछ दिनों के कष्ट के बदले अनश्वर नेमतें पा ली हैं और सदैव के लिए अपने रब्ब के स्वर्ग में दाखिल हो गए हैं। और दुनिया पल भर की अवधि का नाम है। उसकी कटुता और मिठास समाप्त हो जाएगी और उसका आनन्द तथा कष्ट शेष नहीं रहेगी फिर इसी कारण से ज्ञानियों की दृष्टि उसकी ओर नहीं झुकती। और यह वह चीज़ है जिसे ख़ुदा ने मेरे दिल पर इल्हाम किया है इसलिए तू इसे ले और कृतज्ञ लोगों में से हो जा। (इसी से)

आसान कर देती है। और उस सही बात को रद्द मत कर जिसको स्वीकार करना आवश्यक है और पक्षपाती न बन।

हे अल्लाह के बन्दो! सुनो और फिर विचार करो, फिर स्वीकार करो यदि तुम सत्याभिलाषी हो। निस्सन्देह अल्लाह का नबी ईसा मृत्यु पा चुका और हमें उसकी मृत्यु के बारे में सृष्टि के सरदार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूचना दी। फिर उसकी मृत्यु पर बहुत से विद्वानों और बुद्धिमानों ने गवाही दी जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के समय गवाही देने वाले ने गवाही दी थी अर्थात् ख़ुदा के ख़लीफ़ा हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ जो सर्वाधिक संयमी थे और बहुत से बड़े-बड़े उलेमा और इमाम इसी अक़ीदे की ओर गए हैं। और मसीह के पुनरागमन का शब्द आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में नहीं अपितु इस उम्मत की ओर मसीह के उतरने का शब्द आया है और आध्यात्मज्ञानियों के निकट शब्द रुजू (लौटना) और नुज़ूल (प्रादुर्भाव) में बहुत अन्तर है। हे मोमिनों के गिरोह! ख़ुदा से डरो और हे नेक लोगों के गिरोह! सच को स्वीकार करो।

और जान लो कि ख़ुदा का सानिध्य किसी की विरासत नहीं होता अपितु ये दिन ख़ुदा के आदेश से बदलते रहते हैं। वह जिस पर चाहता है अपनी वाणी अवतरित करता है। और उसकी श्रेष्ठता और बढ़ाई इसी मांग करती है। क्या तुम लोग उसके साथ युद्ध करोगे कि उसने ऐसा क्यों किया या झगड़ा करने के लिए खड़े हो जाओगे? इसलिए विचार करो ऐसी विचार जिसमें टेढ़ेपन का मिश्रण और भेद-भाव न हो और अपने दिलों को हर प्रकार के पक्षपात से पवित्र करो और ऐसा न हो कि तुम्हें (पक्षपात का) सैलाब बहा के ले जाए। हे संयमियों की सन्तान! संयम का प्रदर्शन करो, संयम का। जान लो कि मुझे ख़ुदा ने खड़ा किया है और उसी ने मुझे भेजा और उसने मुझ से वार्तालाप किया अत: तुम इस बात से बचो कि जानबूझ कर ख़ुदा से युद्ध करो। आज मेरी नौका के अतिरिक्त कोई नौका नहीं है, और मेरा हाथ हर उस हाथ के ऊपर है जो ख़ुदा की प्रसन्नता चाहता है। अत: सच को उसके प्रकट होने के पश्चात् पीठ पीछे मत फेंको और

स्वयं को दंड का पात्र न बनाओ और मुझे ख़ुदा के सम्मान और उसके प्रताप की क़सम, मैं कदापि काफ़िर नहीं हूं और न ही मैं उसके कलाम से भागने वाला और मुर्तद और नास्तिक हूं अपितु तुम्हारे पास सच आ चुका है फिर तुम नफ़रत करते हुए सच से विमुख न हो और हमारे मत को हदीसों तथा क़ुर्आन की गवाही से शक्ति प्राप्त होती है। फिर उसकी शक्ति इमामों और अध्यात्म ज्ञानियों की गवाही से दोगुनी हो गई है। फिर बुद्धि ने उसे जो शरीअत के आदेशों का आधार है शक्ति प्रदान की है। फिर ख़ुदा के निरन्तर निश्चित इल्हामों से शक्ति प्राप्त हुई है तो हम विश्वास को छोड़ कर कल्पना की ओर क्यों जाएं। वास्तविकता यह है कि हम ने एक मज़बूत सहारे की शरण ली है और हम ने ख़ुदा की रस्सी को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया है और हम ने अहले बिदअत (धर्म में नए-नए ख़राब कार्य शुरू करने वाले) की तरह कोई बिदअत प्रस्तुत नहीं की।

तुम भलि भांति जानते हो कि मसीह मौऊद मज़बूत सलीब को तोड़ेगा तो वह यही युग है यदि तुम विश्वास करने वाले हो। क्या तुम नहीं देखते कि किस प्रकार सलीब को बुलन्द किया गया है और किस प्रकार उसके बारे में झूठी बातें फैलाई गई हैं। और मामला किस सीमा तक पहुँच गया है। और सुअर एवं शराब बहुत बढ़ गई। इस्लाम बहकाने वाले उपद्रवियों के पैरों तले रोंद दिया गया। क्या यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो कि रसूलों में सर्वश्रेष्ठ और मख़्लूकों में चुने हुए हैं, की हदीसों में पाया नहीं जाता कि मसीह मौऊद उसी समय आएगा जब सलीब के प्रभुत्व का समय होगा और उसका फित्न: हर तरफ़ जोश मारेगा। इसलिए मसीह के समय की पहचान के लिए यही सुदृढ़ बुनियाद तथा यही सब से बड़ी निशानियों में से है।

फिर यदि तुम यह समझते हो कि मसीह मौऊद इस सदी के आरम्भ पर नहीं आया और ईसाइयों के फ़ित्ने अभी तक चरम सीमा तक नहीं पहुँचे फिर तो तुम्हारे लिए यह बात अनिवार्य है कि तुम यह विश्वास करो कि ये फ़ित्ने दूसरी सदी के आरम्भ तक लम्बे हो जाएगें या भविष्य में आने वाली सदियों तक रहेंगे। यदि ईसाइयों के फ़ित्ने की आयु लम्बी अवधि तक है तो हे विवेकवानो! उस

अवधि तक इस्लाम का क्या हाल होगा।

क्या तुम्हें यह बात पसंद है कि दज्जाल पादरियों के फ़ित्ने बढ़ते रहें और दो सौ साल या कई सदियों तक लम्बे हो जाएं क्योंकि पादरियों का प्रभुत्व मसीह के प्रकटन के समय तक आवश्यक है जैसा कि स्पष्ट रूप से रसूलों में सर्वोत्म रसूल आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में वर्णन आया है। इस मामले में तुम्हारी क्या राय है? क्या तुम इस पर राज़ी हो कि अल्लाह तआला इन लोगों को गुमराह करने के लिए एक लम्बे समय तक मुहलत दे और इस्लाम के सिद्धांतों की जड़ उखाड़ दी जाएगी तथा मुसलमानों में से कोई भी पृथ्वी पर शेष रहे। हे लोगो! जान लो कि ख़ुदा के नज़दीक मसीह के प्रकटन का समय सलीब के उपद्रव के प्रकटन का ही समय है इसीलिए कहा गया है कि वह सलीब को तोड़ेगा। इसलिए तुम एक बुद्धिमान आदमी की तरह जो तर्क ढूंढता है विचार करो और ख़ुदा के लिए गवाही देने के लिए खड़े हो जाओ। फिर इस दयनीय उम्मत की मान्य बात यह है कि मसीह सदी के आरम्भ पर ही आएगा। फिर तो यह सदी का आरम्भ तुम्हारे विचार के अनुसार खाली गुज़र गया और कोई नहीं आया और दूसरी सदी के आरम्भ तक आने की आशा समाप्त हो गई। और तुम्हारे विचार के अनुसार आवश्यक है कि पादरियों के फ़ित्ने उस समय तक बढ़ते रहें क्योंकि उन फ़ित्नों का समय मसीह मौऊद के समय के लिए बतौर शर्त है जैसा कि मख़्लूक के सरदार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें अवगत किया है। इन उपद्रवों का समय मसीह के (युग के लिए) शर्त है। अतः इस्लाम पर यह एक बड़े संकटों में से है कि सलीब का दबदबा लम्बे समय तक रहे और खास-व-आम लोगों की गुमराही का समय लम्बा हो जाए। फिर तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सोचते नहीं और तुम ख़ुदा की नेमतों का कृतज्ञ होने की बजाए अवज्ञा करते हो और इन्कार करते हो? जबकि तुम्हारे पास सच अपने समय पर आ चुका है परन्तु तुम मुंह फेरते हो। और अपना भाग्य यह बना लेते हो कि तुम मुझे काफ़िर कहते हो और संयम धारण नहीं करते। क्या तुम ख़ुदा के मामूर बन्दे को काफ़िर कहते हो और तुम उन चीज़ों पर हठधर्म हो जिन का

स्वाभिमानी ख़ुदा की ओर से ज्ञान तुम्हें नहीं दिया गया और जल्दबाज़ों की तरह बात करते हो। क्या तुम (पवित्र क़ुर्आन-अनुवादक) को भुला चुके हो जो फ़रिश्ता ले कर आया या तुम लापरवाह क़ौम हो। क्या तुम धार्मिक बातों में सुस्ती करते हो और भरसक प्रयास के साथ दुनिया पर मुग्ध हो गऐ हो? और जब तुम सच के करीब से गुज़रते हो तो उपहास करते हो सिवाए कुछ हिदायत प्राप्त लोगों के। और तुम में से अधिकतर लोग सच्चों को क्रोध और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। निस्सन्देह ख़ुदा का क्रोध उनके क्रोध से बहुत बड़ा है और वह अपने मामूर बन्दों के लिए बहुत स्वाभिमान रखता है।

और मैं ऐसा नहीं कि उस (ख़ुदा) पर झूठ कहूं। निस्संदेह वह मेरा ख़ुदा है जिसने मुझे अच्छा ठिकाना प्रदान किया और नेकी का व्यवहार किया और वह झूठ गढ़ने वालों को कदापि मुहलत नहीं देता और तुम लोग ख़ुदा की सुन्नतों को जानते हो फिर भी तुम विमुख हो जाते हो और उसकी किताब को पढ़ते हो फिर सत्यनिष्ठों के युग को नहीं समझते। ख़ुदा ने तुम्हें बुद्धि, प्रतिभा और प्रवीणता की कृपा प्रदान की जो गुमराही से बचाती है, फिर भी ख़ुदा की हुज्जत तुम्हारे ऊपर तुम्हारे दूसरे दोस्तों की तुलना में अधिक पूर्ण हो चुकी है यदि तुम विमुख होने वाले हो तो अनपढ़ों और सत्य को न पहचानने वालों के समस्त गुनाह तुम्हारी गर्दन पर हैं। और निस्संदेह मैंने जैसा कि मुझे आदेश था उसे पहुँचा दिया और ख़ुदा के इल्हाम को मैंने खोल-खोल कर वर्णन किया इसलिए अब किसी इन्कारी के लिए बहाना शेष नहीं रहा और न ही किसी दुश्मन के लिए बात करने का साहस, और सच प्रकट हो गया। और अल्लाह तआला ने सन्देह करने वालों के समस्त सन्देहों का समापन कर दिया। मेरा मामला गुप्त और छिपा हुआ नहीं रहा और जो गुप्त था वह प्रकट हो गया। यदि तुम सच्चे हो तो सच्चाई को उसके प्रकट होने के बाद मत छिपाओ।

और तेरे दिल में यह बेचैनी पैदा न हो कि उलेमा तो मसीह के आकाश से उतरने की प्रतीक्षा कर रहें हैं, फिर हम इस कथन को कैसे स्वीकार कर लें जो उलेमा के कथन के विपरीत है? क्योंकि मसीह की मृत्यु अटल और

निश्चित आयतों से सिद्ध है। और निरन्तरता वाली हदीसों से जो पुख़्ता सबूत को पहुँची हुई है। अत: जो बात हदीसों की निरंतरता और क़ुर्आन तथा विश्वास और प्रमाण से सिद्ध हैं उसका मामला ऐसी बात की तरह नहीं जोकि कल्पना से प्राप्त की गई हो जो मानवीय हाथों की अपवित्र गंदगियों के स्पर्श से खाली हो। फिर हर तरह का अमन इस बात के मान लेने में है जिसमें हदीस, क़ुर्आन, बुद्धि और आत्मविस्मृति भी एक दूसरे के सहायक हैं और पहलों की पुस्तकों में इसके उदाहरण मिलते हैं। क्योंकि प्रतिरूपी तौर पर आना ऐसा मामला है जो पहले ग्रन्थों में मान्य है। जहाँ तक किसी का साक्षात् आकाश से उतरना है तो यह ऐसा मामला है जिसका उदाहरण पूर्व काल में नहीं मिलता। क्या तूने नहीं सुना है कि जब ईसा अलैहिस्सलाम से एलिया के उतरने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने क्या तावील (स्पष्टीकरण) की और उसे वास्तविकता से रूपक की ओर फेर दिया। जबकि यहूदियों ने ग्रन्थ के शाब्दिक अर्थों को पकड़ लिया और तावील (स्पष्टीकरण) की ओर नहीं झुके। बल्कि उन्होंने मसीह की तावीलात पर उसका इन्कार किया और उसे झूठा ठहराया और उन्होंने कहा कि यह नास्तिक है जो स्पष्ट आदेशों को उसके शाब्दिक अर्थों से फेरता है और स्पष्ट बातों से मुंह फेरता है। फिर अल्लाह ने उन (यहूदियों) पर अपना प्रकोप उतारा और उन्हें लानती बना दिया। इसलिए तुम यहूदियों के सूराख़ (धोखा) और धिक्कृत कथन से बचो और दुराचारी लोगों के पगचिन्हों पर चलने से बचो और जो बात इस से पूर्व ईसा कर चुका है और जो अब कह रहा है उसे स्वीकार करो। इस अंधकारमय समय में ईसा के उतरने का उदाहरण पूर्वकाल में ऐलिया के उतरने की तरह हैं। अत: हे बुद्धिमानों! सीख प्राप्त करो और बुरे लोगों के मार्ग को ग्रहण न करो। और उस बात का विरोध मत करो जिसे अल्लाह तआला ने नबी की ज़बान से वर्णन किया है।

और जो नबियों में सर्वश्रेष्ठ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस में दमिश्क इत्यादि के बारे में आया है उसका अधिकांश भाग ख़ुदा के रुपक में से हैं और उसके नीचे गूढ़ संकेतों की शैली में रहस्य हैं जैसा कि पहले

नबियों के धर्मग्रन्थों में ख़ुदा की यही सुन्नत रही है फिर यहां भी संभव है कि हम या हमारे अनुयायियों में से कोई दमिश्क में जाए और (मसीह के) आकाश से उतरने का हदीस में शब्द नहीं आया कि कोई सन्देह करने वाला सन्देह करे। क्या तुम्हारे लिए मसीह की मृत्यु के बारे में क़ुर्आन और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गवाही पर्याप्त नहीं?

अत: हे मित्रगण! इन दोनों गवाहियों के बाद दूसरी किस बात पर ईमान लाओगे? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अन्वेषकों की तरह विचार नहीं करते? क्या तुम्हारे पास ख़ुदा और उसके रसूल की ओर से तवफ़्फ़ा के अर्थों के बारे में जो कि पवित्र क़ुर्आन में ईसा की चर्चा के स्थान में आया है कोई प्रमाण है। तो तुम इस प्रमाण पर विश्वास करते हो और संयम का मार्ग अपनाते हो या अपनी ओर से स्पष्टीकरण करते हो यदि तुम सच्चे हो तो (तुम्हारे पास) कोई प्रमाण है तो उसे हमारे समक्ष प्रस्तुत करो। और तुम कदापि शक्ति नहीं रखते कि कोई प्रमाण प्रस्तुत कर सको। इसलिए तुम झूठ की ओर न झुको यदि तुम संयमी हो। और अपने आप को मनगढ़त व्याख्याओं से बचाओ और हिदायत न छोड़ो, अन्यथा तुम शीघ्र ही पकड़े जाओगे
और जब तुम्हारे लिए कोई बहाना और तर्क शेष नहीं रहेगा। फिर तुम्हे क्या हो गया है कि क़यामत के दिन से नहीं डरते?

जहाँ तक हमारी बात है तो हम "तवफ़्फ़ी" के अर्थों में वही कहते हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने और जो कुछ आप के सहाबा रज़ियल्लाह ने जिन्हें नुबुव्वत के झरने से ज्ञान दिया गया था फ़रमाया। और हम इसके विरुद्ध किसी की कोई राय कथन स्वीकार नहीं करते। परन्तु वही जो ख़ुदा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन के अनुकूल हो। और जब तवफ़्फ़ी के अर्थों के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान से सच स्पष्ट हो गया और सिद्ध हो गया कि तवफ़्फ़ी के अर्थ मारना और फ़ना करना है न कि "रफ़ा" तथा पूरा-पूरा उठाना, जैसा कि विरोधियों का विचार है।

अत: आवश्यक है कि हम साबित शुदा सत्य को श्रद्धा और निष्ठाभाव से

स्वीकार करें और हम मूर्खों एवं धूर्तों की बात की परवाह न करें। और (क़ुरआन की) आयतों और तर्कों से प्रमाणित बातों के विपरीत (प्रत्येक बात) की हम व्याख्या करें और भ्रमों को विश्वास पर प्राथमिकता न दें, और न अंधकार को प्रकाश पर प्राथमिकता दें और न मानवीय कथनों को ख़ुदा जोकि समस्त रहस्यों का ज्ञानी है, के कथनों पर प्राथमिकता दें। क्या हम स्पष्ट आदेशों को अस्पष्ट बातों के लिए त्याग दें या निश्चित बातों को काल्पनिक बातों के लिए नष्ट कर दें। और ऐसा केवल अत्यंत मूर्ख और अनपढ़ ही करेगा।

क्या तू नहीं देखता कि दमिश्क के मीनारे के निकट मसीह का उतरना यह मांग करता है कि वह उस स्थान में स्वयं उतरे। और यह बात अटल सुदृढ़ स्पष्ट आदेशों की दृष्टि से जाइज़ नहीं है और कोई संदेह नहीं कि इस स्थान पर मसीह के उतरने की यह आस्था उस मृत्यु की घटना के विरुद्ध है जो क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों से समझी जाती है। यही कारण है कि धर्मनिष्ठ इमाम ईसा की मृत्यु की ओर गए हैं। और उन्होंने कहा कि मसीह मृत्यु पा गए और मुर्दों से जा मिले। जैसा कि इमाम मालिक, इमाम इब्ने हज़म और इमाम बुख़ारी इत्यादि बड़े-बड़े हदीस विदों का यही मत है। और इसी पर बड़े-बड़े "मौतज़िला" (मुसलमानों का एक संप्रदाय -अनुवादक) की सहमति है। और कुछ औलिया किराम ने कहा है कि ईसा का जीवन हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन की तरह नहीं अपितु वह तो हज़रत इब्राहीम और मूसा के जीवन से भी कम है। फिर उस ने इस ओर संकेत किया है कि ईसा का जीवन अन्य नबियों के जीवन के समान है न कि इस दुनिया के जीवन के समान जैसा कि मूर्खों का विचार है। और जान ले कि हज़रत ईसा के जीवन पर कभी इज्मा नहीं हुआ अपितु हम अधिक हक रखते हैं कि हम उनकी मौत पर इज्मा का दावा करें। जैसा कि तुमने इस से पहलों की राय सुन ली हैं।

और तू जानता है कि उम्मत के अधिकांश बड़े-बड़े उलेमा व्यापक तौर पर उसकी मृत्यु की ओर गए हैं और शेष उलेमा इनकी बातों को सुनने के बाद चुप रहे। और बुद्धिमानों के नज़दीक इसी का नाम इज्मा है। फिर तुम जानते

हो कि अल्लाह की किताब ने व्यापक तौर पर मसीह की मृत्यु का वर्णन कर दिया है। फिर जिसने उसका विरोध किया उसने झूठ बोला और हम ऐसे इज्मा को स्वीकार नहीं करते जो क़ुर्आन का विरोधी हो। और हमारे लिए अल्लाह की किताब पर्याप्त है। और हम दूसरों की बातें नहीं सुनते। और यह अल्लाह की कृपा और दया का परिणाम है कि सहाबा, ताबईन, और वे इमाम जो इनके बाद आए वे ईसा की मृत्यु की ओर गए हैं। और हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मैराज की रात ईसा को ऐसे नबियों के वर्ग में देखा जो मृत्यु प्राप्त हैं और आखिरत के घर में जा चुकें हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देखना ग़लत नहीं अपितु वह स्पष्ट सच और महानतम ख़ुदा की ओर से कश्फ़ है।

फिर तुझे क्या हो गया कि तू रसूले मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुर्आन की गवाही स्वीकार नहीं करता। और मूर्ख व्यक्ति के समान खण्डन करने योग्य बात पर खुश होता है और अन्वेषकों की नज़र से तू नहीं देखता। फिर किसी के लिए संभव नहीं है कि सहाबा के कथन या आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में से तवफ़्फ़ा की तफ़्सीर मौत के अतिरिक्त होने के कोई अन्य रिवायत प्रस्तुत करे। वे इस पर कभी भी सामर्थ्य नहीं पा सकेंगे चाहे निराशा के साथ मर जाएं। फिर इस से अधिक बड़ा तर्क कौन सा होगा यदि दिल में लेशमात्र भी ख़ुदा का भय हो? निस्संदेह ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु और उसके जीवित रहने की बहस इन मुबाहसों की वास्तविक जड़ है। फिर जबकि हमारी सच्चाई वास्तव में प्रकट हो चुकी है तो आंशिक बातों में कोई बहस शेष नहीं रही। अपितु आवश्यक है कि आंशिक बातों को ऐसे अर्थों की ओर फेर दें जो वास्तविकता के अनूकूल हों जैसा कि ईमानदारी और न्याय का तरीका है। हम उन अर्थों को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे जो सच के विरोधी हों और जिससे विरोधाभास अनिवार्य ठहरता हो अपितु हम अन्वेषकों की तरह उन्हें मूल की ओर लौटाएंगे।

झगड़ालू विरोधी उलेमा में से कुछ ने कहा है कि निस्सन्देह मुतवफ़्फ़ी के

अर्थ "अमातत" मौत देने के हैं और इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है क्योंकि यह अर्थ नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा से प्रमाणित हैं। किसी को साहस नहीं कि वह उस अर्थ का खण्डन करे जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से निकला हो। अपितु इससे कुफ्र और अवज्ञा की आशंका है तथा अज़ाब और दण्ड तथा धर्म की हानि का भय है। परन्तु हम यह नहीं कहते कि ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके और मुर्दों में शामिल हो गए ताकि आंहज़रत सल्लम की ख़बर में हमें बुरूज़ के तौर पर हम विश्वास अनिवार्य हो अपितु इस आयत का अर्थ यह है कि वह अपने उतरने के बाद अवश्य मृत्यु पाएंगे। अत: कोई ऐतराज़ शेष नहीं रहा और ऐतराज़ करने वाले की बात रद्द हो गई।

रहा हमारा उत्तर तो जान ले कि यह बात जल्दबाज़ी और विचार की कमी के कारण की गई है और यदि इस बात का कहने वाला विचार कर लेता तो इस वाद-विवाद से निस्सन्देह लज्जित हो जाता और अवश्य पापियों, सीमा से बढ़ने वालों की तरह क्षमायाचना करता। क्या उसने इस فلما تو فیتنی में भरपूर विचार नहीं किया? क्योंकि यह आयत इस बात पर स्पष्ट प्रमाण है कि ईसा अलैहिस्सलाम भूतकाल में मृत्यु पा चुके न इस बात पर आधारित है कि भविष्य में किसी युग में मरेगा। क्योंकि "तवफ़्फ़ेतनी" भूतकाल की ओर मार्गदर्शन करता है और अरबी व्याकरण यहाँ निर्णायक के तौर पर है।

फिर यदि तुम व्याकरण की विद्या को नहीं मानते और भूतकाल के अक्षरों के परिवर्तन से भविष्यकाल बनाते हो तो यह तेरी ओर से और तुझ जैसों की ओर से अन्याय है। और इसके बावजूद तेरा झगड़ा तुझे कोई लाभ नहीं देगा और इस पहलू से भी तू झूठों में से ठहरेगा। क्योंकि मसीह इन आयतों में कहता है कि मेरी क़ौम मेरी मृत्यु के पश्चात् गुमराह हुई थी न कि मेरे जीवन में। फिर यदि तू समझता है कि ईसा अलैहिस्सलाम अभी तक आकाश पर जीवित हैं तो तुझ पर अनिवार्य है कि इक़रार करे कि ईसाई भी अभी तक सच पर हैं गुमराह नहीं हुए और इच्छाओं के ग़ुलाम नहीं हुए। अत: हे दरिद्र तू कहाँ जा रहा है तुझे तो तर्कों ने घेर रखा है

और सच प्रकट हो चुका और तू जानबूझ कर सच को छिपा रहा है।

हे अतिश्योक्ति करने वाले! अतिश्योक्ति के मार्गों से बच और घमण्ड के मार्ग को त्याग दे। और ख़ुदा को पाप से क्रोधित न कर और तू गुनाह के स्थान पर मत जा और तौब: तथा क्षमा में जल्दी कर और उस आदमी की तरह न बन जो मुर्दार खाने का अभ्यस्त है और उसकी गन्दगियों की परवाह नहीं करता और अल्लाह की चौखट पर तौब: करने वालों के समान दौड़।

اَطِعْ ربَّكَ الجَبّار أهلَ الاوَامِرِ وَخَفْ قَهْرَه وا ترُكْ طريق التجاسرِ

अपने रब का जो सर्वशक्तिमान और आदेश देने का अधिकारी है आज्ञापालन कर और उसके प्रकोप से डर और अकारण के साहस का मार्ग छोड़ दे

و كَيفَ عَلى نَار النَّهَابِر تصبِرُ وأَنْتَ تَأَذّى عِنْد حَرّ الهَواجِرِ

और तू नर्क की अग्नि को कैसे सहन कर सकेगा हालांकि तू तो दोपहर की गर्मी से भी कष्ट महसूस करता है

وَحُبُّ الهَوىٰ واللهِ صِلٌّ مُدمِّرٌ كمَلْمَسِ أفعىٰ نابِمٍ فى النَّواظرِ

और लोभ-लालसा से प्रेम, ख़ुदा की क़सम! एक घातक सांप है जो सांप की केंचुली के समान ऊपर से नर्म दिखाई देती है

فَلا تختَرُوا الطَّغوىٰ فَإِنّ إِلٰهنَا غَيورٌ عَلٰى حُرُماتِه غَير قاصِرِ

तुम उद्दंडता न अपनाओ क्योंकि हमारा उपासक अपनी मर्यादा की सुरक्षा के प्रति स्वाभिमानी है और कोताही करने वाला नहीं

ولا تقعُدَنْ يا بْنَ الكِرام بمُفسِدٍ فترجِعَ مِن حُبِّ الشّرير كخاسرِ

हे प्रतिष्ठितों के बेटे! उपद्रवी के साथ न बैठ अन्यथा तू दुष्ट से प्रेम के कारण घाटा पाने वाले के समान लौटेगा

وَلَا تَحْسَبَنْ ذَنْبًا صَغِيرًا كهيِّنٍ فَإنّ وَدادَ اللَّمَمِ إحدَى الكبَائِرِ

और तू छोटे गुनाह को भी सामान्य न समझ क्योंकि छोटे गुनाह से प्रेम भी बड़े गुनाहों में से एक गुनाह है

وآخرُ نُصحِى توبَة ثم توبَة وَمَوتُ الفتىٰ خَيرٌ لَهٗ مِن مَناكِرِ

और मेरी नसीहत यह है कि क्षमायाचना कर, फिर क्षमायाचना कर और गुनाहों में लिप्त होने से जवान का मर जाना बेहतर है

हे नेक लोगो! मैंने **हुज्जत** को पूर्ण करने के लिए तुम तक सच्चाई पहुँचा दी है। यद्यपि उसमें कुछ कटुताएं भी हैं। अत: तुम सोच-विचार करो ख़ुदा तुम्हारी सहायता करेगा निस्संदेह ख़ुदा तआला ऐसे लोगों की सहायता अवश्य करता है जो सोच-विचार करते हैं। तुम्हारे दिल में यह असमंजस पैदा न हो कि मसीह मौऊद काफ़िरों से लड़ाई करेगा और दुष्ट लोगों को क़त्ल करेगा और सत्ताधारी बादशाहों की तरह बाहर निकलेगा। हालांकि यहां ऐसी शक्ति नहीं है और न ही सेनाओं, शानो शोकत प्रतिष्ठा और बादशाहों वाला दबदबा है।

जान लो कि ये किस्से और रिवायतें सही नहीं हैं और प्रत्येक वह व्यक्ति जो शुद्ध रूप से हदीस की पुस्तकों में विचार करता है वह इन रिवायतों की ग़लतियों को जान जाएगा। और तुम जानते हो कि सही बुख़ारी जो अल्लाह की किताब के बाद समस्त पुस्तकों से अधिक सही है और उसमें आया है कि मसीह युद्ध नहीं करेगा इसलिए इस वाक्य पर विचार करो क्योंकि यह वाक्य और इस जैसे अन्य वाक्य तुम्हें तसल्ली देंगे और दिल के सन्देहों को दूर कर देंगे इसलिए कि यह वाक्य और उदाहरण सिद्ध करते हैं कि मसीह लोगों से लड़ाई नहीं करेगा अपितु शत्रुओं का भ्रमों से निवारण के द्वारा मुंह बंद करेगा और हिकमत से भरपूर बातें करेगा और आकाशीय निशान दिखाएगा। यहां तक कि वह उनके दिलों से द्वेष को निकाल देगा और उनके शैतानों को मार डालेगा। परन्तु यह न तलवार के द्वारा और न भालों के द्वारा अपितु आकाशीय हथियार के द्वारा और वह गिड़गिड़ाने और दुआ के साथ अपनी विजय का इच्छुक होगा न कि तीरों और भालों के द्वारा, और यही कारण है कि वह याजूज और माजूज के साथ युद्ध नहीं करेगा। अपितु वह ख़ुदा से दुआ करेगा कि वह उसे अपनी ओर से विजय और उन्नती प्रदान करे फिर अन्तत: वही विजय प्राप्त करने वालों में से हो जाएगा।

फिर वह कथन जो इस सही हदीस और सच्ची ख़बर की विरोधी हो वह रद्द की हुई और ग़लत है और उसे मूर्खों में से किसी मूर्ख के अतिरिक्त कोई स्वीकार नहीं करता। फिर तुम जान लो कि समझाने, प्रचार करने और हुज्जत को पूर्ण करने के बिना लोगों का क़त्ल करना बुरी बात है कि कोई भी बुद्धिमान और

सदप्रवृति वाला उस से प्रसन्न नहीं होता। तो फिर यह बात न्यायवान, दयालु, उपकारी, हमदर्दी करने वाले ख़ुदा की ओर किस प्रकार सम्बद्ध की जा सकती है। यदि यह वैध होता तो इसके सब से अधिक योग्य आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम होते। और तुम सुनते आए हो कि आहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक लम्बे समय तक काफ़िरों और दुराचारियों के रक्तपात पर सब्र करते रहे और उनके अत्याचार और कष्ट की प्रचुरता और नाना प्रकार के दुख और कठिनाइयां उठाईं यहां तक कि आपको आपके शहर मक्का से निकाल दिया फिर आपका पीछा करते हुए क्रोधित अवस्था में क़त्ल करने की नीयत से आप का पीछा किया। लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा सब्र किया कि जिसका उदाहरण पहले नबियों में नहीं मिलता। यहां तक कि अत्याचार अपने चरम सीमा को पहुँच गया और उसकी अवधि लम्बी हो गई तो उस समय खूब सुनने वाले और सर्वज्ञानी ख़ुदा की ओर से यह आयत उतरी

اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّھُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَ اِنَّ اللّٰہَ عَلٰی نَصْرِھِمْ لَقَدِیْرُ۔

(अल हज्ज- 22/40)

अर्थात वे लोग जिन से (अकारण) जंग की जा रही है उन को भी (जंग करने की) अनुमति दी जाती है क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया है और अल्लाह उनकी सहायता करने पर समर्थ है।

फिर देखो कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के अत्याचार पर किस प्रकार लम्बे समय तक सब्र किया और बुराई का बदला भलाई से दिया यहां तक कि प्रतिफल देने वाले ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई और काफ़िरों के समस्त बहाने समाप्त हो गए। फिर जान लो कि अल्लाह तआला उस क़साई के समान नहीं है जो बकरी को किसी अपराध के बिना ज़िबह कर दे अपितु वह शहनशील और न्यायवान है जो कि हुज्जत को पूरा किए बिना किसी को नहीं पकड़ता और वही है जिसने मुझे अपनी ओर से भेजा है इसलिए तुम पर आवश्यक है कि तुम मूर्खता और पक्षपात से दूर रहो।

और बहुत से उलेमा और नेक लोग हैं जिन्होंने पूरे ज्ञान और अनुभव के

बावजूद मेरा अनुकरण किया है उनको काफ़िर ठहराया गया तथा उन पर लानत भेजी गई और भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठे आरोपों के द्वारा उन्हें कष्ट पहुंचाया गया परन्तु वे डटे रहे क्योंकि सच और आध्यात्म ज्ञान के प्रकाश ने उनके लिए रोशनी कर दी थी और उन्होंने मेरी बात की पूरे विश्वास के साथ पुष्टि की और वे बिना किसी संदेह के सत्यापन करते हुए ईमान लाए और उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी ताकि लोग जान लें कि ये लोग गवाह हैं। और तू सच्चाई का प्रकाश उनके मस्तकों पर चमकता हुआ देखता है और ज्ञान की बातें उनके मुहं से निकलती हैं और दृढ़ता उनके बुलन्द साहस से प्रकट होती है और संयम उनके चेहरों पर नज़र आता है और अवैध चीज़ों (के निकट जाने) का साहस नहीं करते और समस्त लोकों के प्रतिपालक से डरते हैं। और सन्तुष्टि सदैव उन पर उतरती है अल्लाह तआला ने उनके अन्दर के जौहर को पवित्र कर दिया है और उनके आध्यात्म ज्ञान को उन्नति दी है और उनके ईमान रुपी दर्पण को चमका दिया और सच्चाई और संयम का प्याला उन्हें पिलाया और उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार का ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान प्रदान किया और उन्हें अपने नेक बन्दों में सम्मिलित किया। फिर वे ख़ुदा के लिए मेरे आज्ञापालन में खड़े हो गए और अपने इरादे को मेरे इरादे के लिए त्याग दिया और मेरी खातिर अपनी पत्नियों, अपने मित्रों, अपने पुत्रों और अपने बापों का विरोध मोल ले लिया और मेरे पास तौब: करके आए। वे ऐसी क़ौम में से आए हैं कि जिनकी प्रशंसा मेरे ख़ुदा ने की है और मुझे इल्हाम में फ़रमाया कि "तू देखेगा की उनकी आखों से आँसू जारी होंगे। वे तुझ पर दरुद भेजेंगे और कहेंगे कि हे हमारे रब्ब! हमने एक मुनादी करने वाले की आवाज़ सुनी जो ईमान की ओर बुलाता है अत: हम ईमान ले आए हैं। हे हमारे रब! अत: हमें गवाहों में लिख।" सारांश यह कि ये लोग मुझ से हैं और मैं उनसे सिवाए कुछ लापरवाहों के क्यूंकि वे (कुछ) जो हमारे साथ मौखिक रूप से तो संबंध रखते हैं लेकिन उनके दिल हमारे साथ नहीं या वे थोड़े से पानी के बाद सूख गए। और अल्लाह उसे खूब जानता है जो दुनिया वालों के सीनों में है। फिर मुबारक हो उन लोगों को जिन्होनें सत्य की वसीयतें सुनी और दृढ़ता

ग्रहण की और उन्होंने उसके बाद अपनी पत्नियों, बेटों और ख़ानदान वालों की बात नहीं सुनी तथा सुस्त नहीं पड़े अपितु विश्वास में और अधिक बढ़ गए।

फिर सारांश यह कि हिदायत प्रकट हो गई है और अल्लाह ने सच स्पष्ट कर दिया है और वे दिन चढ़ गए जिन की लोग और फिर्के प्रतीक्षा कर रहे थे और वादे वाली बातों का समय निकट आ गया और रमज़ान के महीने में चन्द्र और सूर्य को ग्रहण लगा। और तुम देखते हो कि सवारी के ऊंट और दस महीने की गर्भवती ऊटनियाँ बेकार हो गईं और समुद्र फाड़ दिए गए हैं और पुस्तकें प्रकाशित की गईं हैं और याजूज, माजूज और उनकी फौजें बाहर आ गईं हैं। और पर्वत टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए और क़यामत की निशानियां प्रकट हो गईं और उपद्रव चरम सीमा को पहुँच गए हैं और ज़मीन हिला दी गई और आसमान फट गया इसलिए ख़ुदा से डरो और सर्वप्रथम मूँह फेरने वाले न बनो।

और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सच्चे कश्फ़, सच्चे स्वप्न, ख़ुदा से वार्तालाप, इल्हामी बातों और लाभप्रद ज्ञानों से मैं ही विशिष्ट हूँ और मेरे ख़ुदा ने ज्ञान और धर्म में मुझे विशाल जानकारियां प्रदान की हैं और मुझे इस सदी का मुजद्दिद (सुधारक) बना कर भेजा है और उसने मेरा नाम वर्तमान बुराइयों को दृष्टिगत रखते हुए ईसा रखा है क्यों कि अधिकतर बुराइयां ईसाई क़ौम की ओर से हैं।

और जो शुद्ध हृदय, ठीक इरादे, पूर्ण निष्कपटता और सच्ची श्रद्धा के साथ मेरे पास आएगा और कुछ समय तक मेरी संगत में रहेगा तो अल्लाह तआला उस पर मेरी वास्तविकता खोल देगा। और मेरा महत्व प्रदर्शित करने के लिए उसे कुछ निशान तथा चमत्कार दिखाए जाएंगे जो मेरे पास लापरवाह और कपटाचारी बन कर आते हैं। और ख़ुदा से डरने वालों और तौब: करने वालों के समान सच्चाई को तलाश नहीं करते, तो यही लोग हैं जो मुझ से दूर हो गए जबकि वे निकट थे। वे लोग दूरी और वंचित होने पर राज़ी हो गए और नहीं चाहते कि उन्हें आध्यात्म ज्ञान से भाग दिया जाए।

इस बात पर उन्हें केवल नीयतों की ख़राबी, लापरवाही और धार्मिक असावधानी ने ही तैयार किया है।

सच्चाई यह है और मैं सच ही बोलता हूँ कि मुझे वही आदमी देखेगा जो लोभ-लालच और इच्छाओं से अलग हो। और वह आदमी मुझ से कोई संबंध नहीं रखता जो कहता है "मेरे लड़के और मेरी औरतें, मेरा घर और मेरा बाग़" (अर्थात् दुनियादारी में डूबे हुए लोग) और निस्संदेह वह सच से दूर रखे जाने वालों में से है। और मैं अपनी क़ौम के पास इसलिए आया हूं ताकि बुरी आदतों से उन को रोकूं। और उन्हे शिष्टाचार, एकेश्वरवाद का मार्ग दिखाऊं और इस्लाम धर्म के सिवा हमारा कोई धर्म नहीं और समस्त रहस्यों के ज्ञानी अल्लाह की किताब पवित्र क़ुर्आन के सिवा हमारी कोई किताब नहीं और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुलअंबिया के अतिरिक्त हमारे लिए कोई नबी नहीं। अल्लाह उन्हें बरकतें दे और उनके दुश्मनों को लानतियों में से बनाए और तुम गवाह बने रहो कि हम अल्लाह की किताब क़ुर्आन को दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए हैं। और हम रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों का जो सच और आध्यात्मिकता के स्रोत हैं, अनुकरण करते हैं। और जिस (बात) पर उस युग में इज्मा (सर्वसम्मति) हो चुका है उसे स्वीकार करते हैं। जिसमें हम न कुछ बढ़ाते हैं न कम करते हैं। हम इसी पर जीवित हैं और इसी पर मरेंगे। और जिस ने इस शरीअत में कण भर भी बढ़ोतरी की या कमी की या इज्मा की आस्था का इन्कार किया तो उस पर ख़ुदा, फरिश्तों एवं समस्त लोगों की लानत है।

यह मेरी आस्था है और यही मेरा उद्देश्य और मनोकामना भी है। मैं इज्मा के सिद्धान्त में अपनी क़ौम के साथ कोई मतभेद नहीं रखता और न मैं बिदअत करने वालों की तरह नई चीज़ें लेकर आया हूँ। बल्कि मुझे धर्मं के नवीनीकरण और उम्मत के सुधार के लिए इस सदी के सिर पर अवतरित किया गया है। इसलिए मैं इन लोगों को तर्कसंगत ज्ञान और सही घटनाओं में से वे बातें जो वे भूल चुकें हैं, स्मरण कराता हूं। और मेरे रब्ब ने इस युक्ति के कारण कि जिसका उसने जन हित को लाभ पहुँचाने के लिए इरादा किया है और अपराधियों और दुराचारियों पर हुज्जत पूर्ण करने के लिए और इसलिए कि ताकि अपनी भविष्यवाणी को पूरा करे और इसलिए कि वह अपने वादे को पूर्ण करे और

अपनी बात को पूर्ण करे और अपराधियों का मूंह बंद करे, मुझे रूहानी बुरूज़ के तौर पर ईसा इब्ने मरयम बनाया है।

यह मेरा दावा है और ये मेरे तर्क हैं। तुम मेरे दावे और मसाइल में किसी प्रकार का टेढ़ापन नहीं पाओगे। और मेरी यह पुस्तक ईमानदारों के लिए एक पैग़ाम है। हे क़ौम के उलेमा! सोच-विचार करो और भत्सर्ना करने से पहले मामले की छान-बीन करो। हे अल्लाह के बन्दो! सुनो और फिर ख़ुदा से डरो, निस्संदेह मैंने ख़ुदा के आदेश को पहुँचा दिया और वह भी पहुँचाया जो छिपा हुआ था। फिर हे पृथ्वी! सुन, और हे आकाश! तू गवाह रह मैं लोगों और उन के षड्यंत्रों से नहीं डरता और मैं सच का अनुकरण करता हूं और उनकी अतिरिक्त बातों का अनुकरण नहीं करता। और मेरे रब ने मुझ से जो वादा किया है मुझे उस पर दृढ़ विश्वास है और वही मेरी प्रत्येक आशा और उद्देश्य को पूर्ण करने वाला है। निस्सन्देह आकाश और पृथ्वी अपने स्थान से परिवर्तित हो सकते हैं और सर्दी तथा गर्मी उलट सकती है लेकिन ख़ुदा का कथन नहीं बदल सकता और न ही उसका इरादा इन्सान के छल से उसके साथ युद्ध करने वाला निस्संदेह हानि उठाने वाला है। हे लोगो! ख़ुदा के दिनों और उसके प्रकाश से विमुख न हो और लापरवाह मत बनो क्योंकि उनके गुज़रने के बाद पछतावा रह जाएगा तथा अतिश्योक्ति न करो, ज़ुल्म न करो और सीमा से अधिक न बढ़ो क्योंकि अल्लाह सीमा से बाहर जाने वालों को पसन्द नहीं करता। हे मुसलमान पुरुषों और स्त्रियों के गिरोह! ख़ुदा से डरो क्योंकि संयम की इसी दौर और समय में आवश्यकता है, और विचार करो और एक-एक करके खड़े हो जाओ फिर संयमियों की तरह सोचो न कि शत्रुता करने वालों के समान, और ख़ुदा से सत्याभिलाषी बनते हुए दुआ करो।

और तुम्हारी बुद्धि, ईमान, प्रतिभा, और आध्यात्म ज्ञान उन भ्रमों पर कैसे राज़ी हो जाते हैं जिनके बारे में तुम ख़ुदा की किताब में कोई निशान नहीं पाते? और सलामती का मार्ग तुम त्याग देते हो और उससे विमुख होते हो, और तुम स्पष्ट वास्तविक और प्रत्यक्ष बात का अनुकरण नहीं करते जिसके घटित होने में

कोई संदेह नहीं, और आंशिक मामलों की कुछ परिस्थितियों को दृढ़तापूर्वक पकड़े हुए हो। बावजूद इसके कि वे मामले स्वयं में मतभेद और विरोधाभासों से भरे हुए हैं। फिर उनके मूल से जो उनके लिए माओं के समान हैं कोई अनुकूलता नहीं पाई जाती। अनुकूलता तो दूर रही अपितु उसमें अधिकता से विरोधाभास और घृणा पाई जाती है। फिर तुम देखो! तुमने किस प्रकार अपनी आस्थाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार की बुराई, विरोधाभास और झूठ एकत्र कर लिए हैं और तुमने अपनी मूर्खता से धर्म और क़ौम के शत्रुओं को सहायता दी। अत: वे व्यंग्य करते हुए सच पर हमले करते हैं।

जहाँ तक गुज़रे हुए नेक लोग हैं तो वे आस्थाओं और विचारों में तुम्हारे समान न थे अपितु गुप्त बातों का ज्ञान ख़ुदा के हवाले करते थे और वे संयमी थे। आपत्ति करने वाले प्रश्नकर्ता के एतराज़ के समय उनका इन मामलों के बारे में सिवाए इसके और कोई उत्तर न होता था कि वे उस रहस्मयी बात को सर्वज्ञानी और बाख़बर ख़ुदा के सुपुर्द करते थे। वे संक्षिप्त रूप से ईमान लाते थे और विवरणों को ख़ुदा के हवाले करते थे। इसी कारणवश उन्होंने इन भविष्यवाणियों के मतभेदों के बारे में बहस नहीं की और न उनके घटित होने से पहले इस बारे में बोलने का इरादा कमज़ोरी और हद से बढ़ने और गुनाह के भय से किया। और उन्होंने कहा कि हम उन पर ईमान लाते हैं परन्तु हम उन में हस्तक्षेप नहीं करते और न ही वे किसी बात पर हठ करते थे।

फिर उनके बाद ऐसे नालायक और टेढ़े स्वभाव वाले उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने उनकी वसीयतों और तरीके को खो दिया और डींगे मारना तथा जोश उनमें प्रकट हुआ और उन्होंने परोक्ष की ख़बरों के बारे में उद्दंडता करते हुए आपत्ति की और ऐसे मामलों में बहस की कि जिनके बारे में बहस करना उनका अधिकार न था। अत: वे स्वयं गुमराह हुए और दूसरों को भी गुमराह किया और वे अंधी क़ौम थे। क्या तू नहीं देखता कि कैसे उन्होंने अपने पास से मसीह के आसमान से उतरने की बात बना ली। और तू खैरुल अंबिया के आदेशों में और गुज़रे हुए लोगों की बातों में आकाश का शब्द कदापि न पाएगा।

जहां तक शब्द नुज़ूल अर्थात आकाश से उतरने का संबंध है तो यह सच है हम इस बारे में उनसे नहीं झगड़ते और न हम इस सिलसिले में उनकी बात को रद्द करते हैं। अपितु हम इस पर उसी प्रकार ईमान लाते हैं जिस प्रकार वह ईमान लाते हैं और हम इन्कार करने वाले नहीं। हमारे निकट इस मामले में सिवाए स्वीकार करने के कुछ नहीं और जिस ने इंकार किया तो उसने उसका इन्कार किया जो क़ुरआन और हदीस में आया है और निस्संदेह वह नास्तिकों में से है। हाँ हम इस नुज़ूल के शब्द को ऐसे अर्थों पर चरितार्थ करते हैं कि जो मतभेदों से पवित्र और ऐतराज़ों से सुरक्षित है और वह बुरूज़ी नुज़ूल है जिस पर अल्लाह की सुन्नत पिछले युगों से जारी है। अत: हमारा इंकार केवल इस बात से है कि मसीह आकाश से स्वयं उतरे क्योंकि यह बात अल्लाह की सुन्नतों और स्पष्ट आयतों के विरुद्ध है क्योंकि पवित्र क़ुरआन ने हम पर अनिवार्य किया है कि हम मसीह की मृत्यु पर ईमान लाएं और उसे मृत्युप्राप्त लोगों में से मानें। अत: मसीह के जीवित रहने और इस नश्वर संसार में उनके दोबारा आने की आस्था से क़ुरआन और उसके स्पष्ट आदेशों का इन्कार अनिवार्य ठहरता है। इस तरह की बात सिवाए उन लोगों के जिनके दिल पर पर्दे पड़े हुए हैं कोई नहीं करता और वे सच्चाई को न पहचानने वाले और विमुख होने वालों में से हैं। क्या हम निरर्थक कल्पनाओं के लिए क़ुरआन को छोड़ दें?★ विश्वास और अध्यात्म ज्ञान को अपने हाथ से फ़ेंक दें और बिल्कुल तर्कसंगत बात से सबसे बुरी बात की ओर लौट आएं और स्वयं को मूर्खों में सम्मिलित कर लें? और जो अल्लाह की आयतों में सोच-विचार करता है और उसकी स्पष्ट आयतों की पहचान करने में उसकी आंख अंधी नहीं, उसके लिए मसीह की मृत्यु पर ईमान लाने और यह इक़रार करने के कि 'नुज़ूल' का शब्द स्पष्ट रूप से प्रतिरूपी तौर पर है, और

★नोट -: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुछ हदीसों में स्पष्टता से आया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आयु मसीह अलैहिस्सलाम की आयु से आधी है। फतहुल बयान के लेखक ने लिखा है कि यह हदीस सहीह है और इसके रावी सिक़ा अर्थात मज़बूत हैं। इसी से।

अत्याचारियों से मूँह फेरने, के अतिरिक्त कोई चारा नहीं।

क्या तुमने इससे पहले सुना है कि एक व्यक्ति दुनिया से चला गया फिर कुछ समय पश्चात आकाश से उतर आया? क्या तुम नबियों में इसका उदाहरण देखते हो? और तुमने सुन लिया है कि किस प्रकार पहले इलियास के नुज़ूल का भावार्थ निकाला गया। हे बुद्धिमानो और विवेकवानो! तुमने वह क़ौम देखी है जिसने एलिया के नुज़ूल की घटना को प्रत्यक्ष (ज़ाहिरी) तौर पर चरितार्थ किया और स्वभाविक दुष्टता तथा नेकी से दूरी के कारण मसीह का इन्कार किया और उन पर अपमान और कंगाली की मार मारी गई और वह लानती बनाए गए।

हे भाइयो! यदि तुम मसीह की मौत पर ईमान नहीं लाते और उसे जीवित ख़ुदा के अर्श (सिंहासन) पर चढ़ाते हो तो तुम अल्लाह की सच्चाई और झूठ में अंतर कर देने वाली किताब पर ईमान नहीं लाए। अत: विचार करो कि कौन शांति का अधिक हक़दार है? और किस ने कल्पनाओं का अनुसरण किया और विश्वास के मार्गों को छोड़ दिया? इसके अतिरिक्त यह कि तुम मुसलमानों को काफ़िर ठहराते और सच्चों को झुठलाते हो। और सच और विश्वास वालों के विरुद्ध कठोर शब्द प्रयोग करते हो क्या यह संयम और संयमियों का तरीका है?

और तुम सुन चुके हो कि हम मसीह के उतरने के समर्थक हैं और स्पष्ट बयान से इसका इक़रार करने वाले हैं। निस्संदेह यह सच अनिवार्य है और न हमारे लिए और न किसी और के लिए वैध है कि झगड़ने वालों के समान इससे विमुख हो जाए या अहंकारियों के समान इसे स्वीकार करने में आनाकानी करे क्योंकि सच से केवल अत्याचारी, हद से बढ़ने वाला और धोखा देने वाला या दुराचारी, कपटी, झूठा ही विमुख होता है। उसके स्वीकार करने से तौबा करने वाला दिल पहचाना जाता है। अत: अब देखो कि क्या हम स्वीकार करने से विमुख हो रहे हैं या तुम विमुख होने वाले हो? क्या तुम समझते हो कि मसीह इब्ने मरियम अवश्य आकाश से ज़मीन पर वापिस आएगा हालांकि तुम रुजू (लौटने) का शब्द सय्यदुर्रुसुल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शुभ वाक्यों में नहीं पाते। क्या तुम्हें इसका इल्हाम किया गया या बेईमानी करने वालों के समान

अपनी ओर से रुजू का शब्द बना रहे हो?

और स्पष्ट हो कि यह वह विशेष शब्द है जो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो चले जाने के बाद वापस आता है और यात्रा से वापसी की ओर लौटता है। अत: सृष्टि में सर्वाधिक पूर्ण व्यक्ति और नबियों के इमाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में ऐसा नहीं मान सकते कि वह यहां रुजू का शब्द छोड़ दें और नुज़ूल का शब्द प्रयोग करें और प्रचंड विद्वानों और विवेकवानों के समान बात न करें। मेरी इस बात को बहस करने वाले अहंकारियों के समान पीठ पीछे न फेंको अपितु पूर्ण विवेक के साथ अच्छी तरह विचार करो क्योंकि यह मामला ख़ुदा के निकट बड़ा महान और महत्वपूर्ण है। इसको स्वीकार करना शुभ और अपनाना सौभाग्य और सदकर्म है और इसको ठुकराना, ठुकराने वाले बहिष्कृतों के लिए ही बला है।

और उलेमा में से कुछ का कहना है कि "तवफ़्फ़ी" का शब्द अरबी भाषा में पूरा-पूरा लेने के अर्थों में भी आता है और इस स्थान पर ख़ुदा की वाणी में यही भाव है और जब उनसे इस का प्रमाण मांगा जाता है तो वे कविगण (अरब के साहित्य) में से कोई गवाही प्रस्तुत नहीं कर सकते और नबियों के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए अर्थों का तो उन्होंने इंकार कर दिया है और ऐसे कोई अर्थ प्रस्तुत नहीं किए जो प्रचंड विद्वानों के निकट आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अर्थों से अधिक विस्तृत हों और उन्होंने अपना दावा सिद्ध नहीं किया अपितु बेसुध लोगों के समान बात की।

और उन्हें इस भाषा में विस्तार प्रदान नहीं किया गया वे सिवाए उस द्वेष के जो प्राचीन युग से उनकी धरोहर है, कुछ नहीं जानते। हाय अफसोस उन पर! अरबी का उन्हें कोई ज्ञान नहीं और केवल व्यर्थ दावों के उनके पास कुछ नहीं और इसके बावजूद वे वाद-विवाद से नहीं रुकते और न मूर्खतापूर्ण बहस को छोड़ते हैं अपितु इस तीरंदाज़ी के लिए सामने आते हैं और प्रबल अज्ञानता के साथ बहस के लिए खड़े होते हैं। और इस स्थान पर उन्होंने अपने हाथों से अपनी पोल खोली है क्योंकि वे वार्तालाप के उचित प्रयोग से अनभिज्ञ हैं। दीर्घ अवधि तक

वे चुप रहे और जब बोले तो ग़लत बात की और बुद्धिमानों के समान एक भी युक्ति का शब्द नहीं बोले और उन्होंने स्वयं को गर्भवती ऊंटनी के समान प्रकट किया और स्वयं को उस ऊंटनी के समान प्रकट किया जिसके प्रसव के दिन निकट हों, फिर जब जना तो एक चुहिया को जन्म दिया या चुहिया के बच्चे से भी विकृत और छोटा, यह है उनका ज्ञान और इस (ज्ञान) से अधिक उपद्रवी उन विद्वानों का व्यवहार है। वे लोगों को सद्कर्मों का आदेश देते हैं और स्वयं को भूल जाते हैं और वे वह कहते हैं जो वे स्वयं नहीं करते और जब उन्हें न्यायकर्ता बनाया जाए तो वे न्याय नहीं करते। वे चाहते हैं कि जो कार्य उन्होंने नहीं किया उस पर उनकी प्रशंसा की जाए और जब वे नमाज़ पढ़ते हैं तो दिखावा करते हुए नमाज़ पढ़ते हैं। सिवाए कुछ विनम्रता धारण करने वालों के, वे मस्जिदों में चुगलियां करते हैं और अपने भाइयों का गोश्त खाते हैं।

जहां तक शब्द "तवफ़्फ़ी" का संबंध है जिसे वे अरबी भाषा में खोज रहे हैं तो जान ले कि वह वास्तव में इस भाषा में केवल मृत्यु देने के अर्थों में प्रयोग होता है। विशेष रूप से जबकि इस (तवफ़्फ़ी) का कर्ता अल्लाह हो और कोई पुरुष या स्त्री कर्म हो तो यह केवल कब्ज़-ए-रूह अर्थात मृत्यु देने के अर्थों में आता है। तू शब्दकोष और साहित्यिक पुस्तकें इसके विरुद्ध नहीं देखेगा और जो अरबी भाषा के शब्दकोष की छान-बीन करे और अपनी चेतन शक्ति को उसकी ओर दौड़ा-दौड़ा कर थका दे तो वह इस शब्द को, इन जैसे स्थानों पर अल्लाह की ओर से सिवाए मौत देने और मारने के अर्थों के कदापि नहीं पाएगा। पवित्र क़ुरआन में इस शब्द का कई बार वर्णन किया गया है और अल्लाह ने जहां भी यह शब्द प्रयोग किया है मौत देने के अर्थों में ही प्रयोग किया और अपने वर्णन में शब्द "तवफ़्फ़ी" को "इमातत" (अर्थात मर गया) के अर्थों में लिया है। और इसमें भेद यह है कि "तवफ़्फ़ी" का शब्द मौत के बाद किसी वस्तु के अस्तित्व की मांग करता है इसमें उन लोगों का रद्द है जो मृत्यु के बाद रूहों के जीवित रहने की आस्था नहीं रखते क्योंकि शब्द "तवफ़्फ़ी" शब्द "इस्तीफ़ा" से उद्धृत है और इसमें किसी वस्तु को मार देने और फ़ना कर देने के बाद लेने

का संकेत है। और शब्द "अख़ज़" जीवन पर दलालत करता है क्योंकि लुप्त को नहीं लिया जा सकता और न ही वह "अख़ज़" करने और प्राप्त करने के योग्य होता है और यह पवित्र क़ुरआन के ज्ञान में से है क्योंकि इस (क़ुरआन) ने अरब की क़ौम को उनकी शुभ इल्हामी भाषा की ओर लौटाया है ताकि वे जान लें कि आत्माएं शेष रहती हैं और "मआद" (अर्थात वापिस जाना) सच है और ताकि वे नास्तिकों और दहरियाओं की आस्था से रुक जाएं।

अत: जबकि इस शब्द के प्रयोग से उद्देश्य दिलों को रूहों के शेष रहने की ओर फेरना था तो "तवफ़्फ़ी" के अर्थ (शरीर) को मौत देने के साथ-साथ रूह को शेष रखने के हुए। अत: सदमार्गों★ को अपना ले और गुनाह के मार्ग से बच। और इस बारे में केवल उस मूर्ख के जो अरबी नहीं जानता या उस मूर्ख के जो लोगों को अपनी दुष्टता के कारण भड़काता है और कोई बहस नहीं करता और जो इस कलाम में त्रुटि निकालने के लिए उठा और झुठलाने और मुंह बंद कराने के लिए खड़ा हो तो उस पर अनिवार्य है कि वह इस बारे में अज्ञानता के युग के काव्यों में से कोई काव्य या इस अरब की क़ौम के कवियों में से कोई काव्य प्रस्तुत करें और यदि उन्होंने ऐसा न किया और वह कदापि ऐसा नहीं कर सकेंगे और वे शत्रुता से न रुके तो निस्संदेह दुष्ट प्रवृति की अविभूति से उन्होंने स्वयं पर दो लानतें एकत्र कर लीं। पहली लानत यह कि उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम के कथन का सत्यापन न किया और इस क़ौम के इमाम की गवाही से उनके दिल संतुष्ट न हुए और दूसरी लानत यह कि उन्होंने संदेह करते हुए शब्दकोशों को खंगाला, फिर वे लज्जित होते हुए ऐसी निराशा से लौटे जो नर्क की पीड़ा के समान है फिर वे अपमानित और हताश होकर बैठे रहे।

★**हाशिया :-** जबकि "तवफ़्फ़ी" के अर्थों में (आत्मा) को जीवित रखते हुए मौत देने के अर्थ हैं तो इसीलिए यह शब्द इंसान के अतिरिक्त किसी और के लिए इस प्रकार प्रयोग नहीं किया जाता। अपितु इंसान के अतिरिक्त प्रजातियों के लिए मौत देना, विनाश और नष्ट करना शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यह नहीं कहा जाता कि अल्लाह ने गधे या साही और सांप और चूहे की "तवफ़्फ़ी" की क्योंकि उनकी आत्माएं मनुष्यों की आत्माओं के समान शेष नहीं रहतीं।

तू जान ले कि एक स्वाभिमानी मनुष्य जान-बूझकर ऐसी मत नहीं रखता जो निराशा का कारण हो सिवाए ऐसे व्यक्ति के जिसने अपने ऊपर से लज्जा और मानवता का लिबास उतार फेंका हो और प्रत्येक प्रकार के दंड और शत्रुता पर राज़ी हो गया हो और स्वयं को घाटा पाने वाले निंदनीय लोगों से मिला दिया हो। तुम मुझसे शब्द "तवफ़्फ़ी" के बारे में केवल अज्ञानता के कारण बहस करते हो क्योंकि मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते। मैं अरबी भाषा के समुद्र में उतरा और गहराई तक गया और उसकी बुलंद चोटियां पार कीं और उसके अंदर तक प्रवेश किया। मैंने उसके ताज़ा फल चुने और कोई पक्ष नहीं छोड़ा और अरब की क़ौम के काव्यों की अच्छी तरह छानबीन की और पृष्ठ-पृष्ठ देखा परंतु मैंने शब्द "तवफ़्फ़ी" को अरब के साहित्य एवं अरब के कवियों में से किसी के काव्य में (आत्मा) को जीवित रखते हुए मौत देने के अतिरिक्त किसी अर्थों में नहीं पाया, और इसके अतिरिक्त विभिन्न अर्थों में उन्होंने इस शब्द को (किसी) संदर्भ और संकेत के बाद ही प्रयोग किया और अल्लाह के कर्ता होने के रूप में उन्होंने इसके केवल यही अर्थ किए हैं और इस बात को अरब के विद्वानों में से हर छोटा-बड़ा जानता है उदाहरण स्वरूप आप इस भाषा (अरबी) वालों में से किसी को लिखें कि

أن اللهَ تَوَفّٰی فلانًا من الأحباب أو الجیران

तो इस वाक्य से वह अरब का व्यक्ति उस मनुष्य की मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ अर्थ नहीं समझेगा और यह विचार कदापि नहीं करेगा कि अल्लाह तआला ने उस (मनुष्य) को सुला दिया या उस स्थान से उसके शरीर के साथ उठा लिया अपितु वह मोमिनों के तरीके के अनुसार उसकी मौत पर "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन" कहेगा। अत: तबाही हो, हर प्रकार की तबाही हो इन्कार करने वालों के लिए।

क्या तुम मसीह के लिए एक अर्थ स्वयं बनाते हो और शेष समस्त दुनिया के लिए और अर्थ? यह तो बहुत ही अन्यायपूर्ण विभाजत है। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम्हें कोई नसीहत जगाती नहीं और न कोई व्याख्या तुम्हें सचेत करती है और न तुम संयमियों के समान सच्चाई की ओर लौटते हो। क्या इस बुद्धिमता और

प्रवीणता से इन्कार करने वालों ने मुझे झुठलाया है? क्या इस सरसता और निपुणता से वह मुझसे बहस करेंगे? अत: उन्हें चाहिए कि अपमान से मर जाएं परंतु मेरा नहीं ख्याल कि वे लज्जित हों। वह ऐसी क़ौम हैं कि भर्त्सना करने वालों की भर्त्सना की परवाह नहीं करते। जब निर्लज्जता सीमा से पार हो जाए तो प्रत्येक अपमान उनके लिए सुखद हो जाता है। वह अपने पड़ोसी पर टूट पड़ते हैं परंतु अपने घर से बेख़बर हैं। अत: अल्लाह ने उनका पर्दा उठा दिया और उन्हें अपमानित होने वालों में से बना दिया। और मुझे उन पर विजयी कर दिया। अत: वह पक्षियों के समान घोंसले में दुबक गए और पीछा करने के समय पहाड़ी बकरों के समान पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए और हमने शास्त्रार्थ के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया तो वे जंगली जानवरों के समान वनों की ओर भाग गए और हमने उनके लिए कई प्रकार की दावतें प्रस्तुत कीं और हमने उस मश्कीज़े (अर्थात चमड़े की बोतल-अनुवादक) का बंद अपने कंधे से न उतारा और न ही हम थके मांदे हुए। प्रत्येक काना गुमराह व्यक्ति हम पर चिल्लाया और हर निर्लज्ज और बेलगाम व्यक्ति हम पर गुर्राया, प्रत्येक कुत्ता हम पर भौंका यद्यपि वह बहुत वृद्ध था। अत: जब हम खड़े हुए तो उन्होंने लंबी तान ली, या वे मुर्दों में से हो गए।

لما رأى النَّوكَى خلاصةَ أَنْضُرى   فرُّوا وَوَلَّوا الدُّبُر كالمتشوّرِ

जब मूर्खों ने मेरे शुद्ध स्वर्ण को देखा तो वे भाग गए और उन्होंने लज्जित व्यक्ति के समान पीठ फेर ली।

إنْ يشتِموا فلقد نزَعتُ ثيابهمْ   وتركتُهم كالميّت المتنكّرِ

यदि वे गालियां देते हैं तो मैंने भी उनके कपड़े उतार कर उनका नग्न प्रदर्शित कर दिया है। और उनको ऐसे शव के समान बना छोड़ा है जिसकी पहचान ही न हो सके।

هم يشتِمون ولا أخاف لسَانهم   إنى أرىٰ ألطافَ ربٍّ أكبرِ

वह गालियां देते हैं और मैं उनकी गालियों से नहीं डरता क्योंकि मैं महान रब की मेहरबानियों को देख रहा हूं।

نزلتْ ملامةُ لائمى مِن حُبّهِ   مِنى بمنزلةِ المحبّ الموثَرِ

ख़ुदा के प्रेम के कारण निंदा करने वाले की निंदा का आना मेरे लिए प्रिय दोस्त के समान है।

يا لائمی دَعْ کلَّ لوم وانتظِرْ　　ستَرَی بروقَ الحق بعد تبصُّرِ

हे मेरी निंदा करने वाले! निंदा को छोड़ दे और प्रतीक्षा कर तू अवश्य सुजाखा होने के बाद सच्चाई के प्रकाश को देख लेगा।

جَلّت وَصَایانا هدًی لٰکنّها　　کبُرتْ علیك ولیتَها لم تکبُرِ

हमारे उपदेश निर्देशों की दृष्टि से उत्तम हैं लेकिन वे तेरे लिए कठिन हैं काश कि वह दूभर न गुज़रतीं।

हे लोगो! पल भर के लिए विचार करो और झूठ के लिए स्वयं को तबाही में न डालो। मसीह की मौत पवित्र क़ुरआन से, फिर हदीस से, फिर शब्दकोश की गवाही और मातृभाषी की (गवाही) से, फिर बुद्धि और विवेक और खोज-बीन से, फिर गुज़रे हुए युग के उदाहरणों से सिद्ध है। अत: मानवीय छल प्रमाणित बात को समाप्त नहीं कर सकता।

और रिवायतों की निरंतरता पर दृष्टि डालें तो "नुज़ूल" भी सत्य है और हदीसों में विभिन्न प्रमाणों से सिद्ध हो चुका है। अत: ऐसी बात की ओर आओ जो कुछ हदीसों का कुछ दूसरी हदीसों के संकलन से और पवित्र क़ुरआन के मध्य से मतभेद को दूर कर दे। और वह बुरूज़ (प्रतिरूप) है जो कृपालु ख़ुदा की सुन्नत से सिद्ध है और (इसमें) कोई संदेह नहीं कि वह प्रत्येक प्रकार की संतुष्टि प्रदान करता है और इस बारे में कोई संदेह नहीं रहता यदि हम नुज़ूले मसीह के अर्थ में बुरूज़ के तरीके पर विश्वास करें जैसा कि एलिया का नुज़ूल स्पष्टता से वर्णित है तो इस अवस्था में जब (पारस्परिक विपरीत) पंक्तियां (एक दूसरे पर) पारस्परिक चरितार्थ हो जाती हैं और संदेह दूर हो जाते हैं और सत्याभिलाषियों के दिल संतुष्ट हो जाते हैं और यदि यह (नुज़ूल बुरूज़ी) न हो तो कोई सूरत नहीं कि हम क़ुरआन के साथ-साथ रिवायतों और हदीसों पर ईमान रख सकें। हे विवेकवानो! हर प्रकार की भलाई बुरूज़ की आस्था में है और यह कदापि अधर्मता नहीं अपितु इस बारे में रब्बुल आलमीन की ओर से उदाहरण गुज़र चुके हैं।

जान लो हे कुधारणा रखने वालो! और अपमान करने वालो! और बहस और लड़ाई में जल्दी करने वालो! कि मैं महान ख़ुदा से केवल तुम्हारी भलाई चाहता हूं और मैं तुम्हें निचाई से ऊंचाई की ओर और रेत के टीले वाले स्थान से वरदानों के बाग़ में, और ऊंची-नीची ज़मीनों अर्थात पहाड़ों से समतल मार्ग की ओर ले जाना चाहता हूं।

अतः क्या तुम अपनी भलाई चाहते हो या तुम इन्कार करने वालों में से हो? क्या युग उस अंधेरी रात के समान नहीं जिसने अपने पर्दे डाल दिए हों और धर्म उस यात्री के समान हो गया जिसने अपना ऊंट खो दिया हो। क्या तुम्हें मुझे स्वीकार करने से इस बात का भय है कि जो माल-ए-ग़नीमत (अर्थात युद्ध में शत्रु से प्राप्त संपत्ति) तुम ने इकट्ठा किया है वह तुम खो दोगे या उस से हाथ धो बैठोगे जो माल से जुड़वा हैं? कदापि नहीं, यह ऐसा विचार है जो विद्वानों और अध्यात्म ज्ञानियों को शोभा नहीं देता और इस दुनिया और परलोक में सम्मान सबका सब अल्लाह के लिए है। मर्द वे हैं जो नहीं डरते चाहे उन्हें छुरियों से ज़िबह कर दिया जाए या उनसे जीवन यापन के साधन छीन लिए जाएं।

क्या अभी तक तुम्हारी मूर्खता एवं अंधकार दूर नहीं हुआ? और मुझे क्या हुआ है कि मैं तुम में से प्रत्येक को वार्तालाप और बातचीत में अत्यंत झगड़ने वाला देखता हूं और तुम बहुत अच्छे से जानते हो कि मैं अधर्मियों और दुराचारियों के समान झूठी बातें नहीं लाया और न मैंने तुम पर बिदअतों (अर्थात धर्म में कोई नई बात स्वयं ले आना) का द्वार खोला है अपितु तुम्हारे मरने के बाद मेरा मामला तुम्हारे लिए हसरत का कारण होगा। अतः कहां हैं वे कान जिन से तुम सुनो? और कहां हैं वे आंखें जिनसे तुम देखो? और कहां है वह दिल जिनसे तुम समझो? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम झूठी व्यर्थ बातों को नहीं छोड़ते? और सुंदर हीरे-मोतियों को स्वीकार नहीं करते? तुम मुसलमानों को मस्जिदों से रोकते हो और अपनी दुनिया के लिए धनवानों का सम्मान करते हो। सच्चाई स्पष्ट हो गई है फिर भी तुम स्वीकार नहीं करते और हिदायत स्पष्ट हो गई लेकिन तुम उसकी ओर नहीं आते। तुम किबला वालों को काफ़िर ठहराते हो और नहीं रुकते। क्या

तुमने किसी दिन मरना नहीं या तुम हमेशा रहने वालों में से हो? इन द्वेषों के होते हुए तुम ईमान के आनंद को कैसे प्राप्त कर सकते हो? और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के इंकार से उसकी मिठास शेष नहीं रही। तुमने हमारे सम्मानों को माल-ए-ग़नीमत के समान समझा और तुम लोगों को हमारे विरुद्ध भड़काते हो और एक के बाद दूसरी चीज़ उनके सामने डालते हो। तुमने अपने कपटों और झूठों से लोगों को ख़राब कर दिया है और अपने हाथ से उनके दिल सच्चाई से फेर दिए हैं। हे धोखा देने वालो! जान लो अनपढ़ों का गुनाह तुम्हारे सिर है। क्या तुमने मोमिनों का इन्कार करना बहुत आसान बात और सच्चों को झुठलाना सामान्य बात समझा है हालांकि अल्लाह के निकट यह बहुत संगीन अपराध है।

और तुम सदैव इन्कार पर अडिग रहे और तुम क़हहार ख़ुदा की पकड़ से न डरे और न भयभीत हुए यहां तक के हमारा मामला जिस सीमा तक पहुंचना था पहुंच गया और अल्लाह ने तुम्हारी दुआएं तुम पर उल्टा दीं। निस्संदेह वह उपद्रवी क़ौम से प्रेम नहीं करता। हे लोगो! मैं अपने दावे में सच्चाई पर हूं। अतः मुझसे बहस करने से बचो और यदि तुम मेरा कहा नहीं मानते और मेरे प्रहार से नहीं डरते और न ही हिदायत की ओर मुख करते हो और न गुमराही से रुकते हो।

نَدۡعُ اَبۡنَآءَنَا وَ اَبۡنَآءَکُمۡ وَ نِسَآءَنَا وَ نِسَآءَکُمۡ وَ اَنۡفُسَنَا وَ اَنۡفُسَکُمۡ ۟ ثُمَّ نَبۡتَہِلۡ فَنَجۡعَلۡ لَّعۡنَتَ اللّٰہِ عَلَی الۡکٰذِبِیۡنَ ﴿۶۲﴾

(सूरह आले इमरान आयत नम्बर 62)

"तो आओ हम अपने बेटों को बुलाएं और तुम अपने बेटों को और हम अपनी स्त्रियों को और तुम अपनी स्त्रियों को और हम अपने लोगों को और तुम अपने लोगों को, फिर गिड़गिड़ा कर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की लानत (अभिशाप) डालें" और जो कुछ हमारे मध्य है उसमें अल्लाह से फैसला मांगें ताकि मामले का निर्णय हो जाए और सच्चाई स्पष्ट हो जाए और अल्लाह के बंदे झूठी क़ौम से मुक्ति पा जाएं। और मैं मुबाहला (अर्थात शास्त्रार्थ) के मैदान में अपनी पुस्तक जिसमें ख़ुदा की ओर से मेरे इल्हाम हैं, के साथ उपस्थित हूं।

अत: मैं पुस्तक को बहुत आदरपूर्वक और विनम्रता से पकड़े हुए हूँ और मैं सर्वसम्मानित और सामर्थ्यवान ख़ुदा से दुआ करते हुए कहता हूं, हे मेरे रब! यदि तू जानता है कि मेरी यह पुस्तक झूठ से भरी हुई है और यह तेरी दया से और वरदान से तेरा इल्हाम और तेरी वाणी और तेरे संबोधन नहीं हैं तो एक वर्ष के अन्दर मुझे मृत्यु दे दे और मुझे ऐसा अज़ाब दे जो तूने दुनिया में से किसी को न दिया हो और जिस प्रकार तू झूठे तौर पर ख़ुदा की ओर झूठ गढ़ने वालों को विभिन्न दंडों से मारता है मुझे मार ताकि क़ौम मेरे उपद्रव से मुक्ति प्राप्त करे और लोगों पर मेरा अपमान स्पष्ट हो जाए।

हे मेरे रब! यदि तू जानता है कि यह बातें तेरी बातें हैं और इल्हामों में से हैं और मैं तेरे निकट झूठा नहीं अपितु तूने ही मुझे उपद्रवों और बिदअतों के प्रकटन के समय अवतरित किया है तो उन लोगों को अज़ाब दे जिन्होंने मेरा इन्कार किया और मुझे झुठलाया और फिर आज मुबाहला के लिए आए। और तू उनमें से किसी एक को भी आने वाले वर्ष तक सलामत न छोड़ और उनमें से कुछ पर कोढ़ का रोग डाल दे और कुछ पर कष्ट और कुछ को अन्धा कर दे और कुछ पर मिर्गी डाल दे और लकवा और जलोदर (अर्थात जिसमे रोगी को अत्यधिक प्यास लगती है) की बीमारी या कोई दूसरी बीमारी, या उन्हें अज़ाब की अवस्था में मृत्यु दे दे। और कुछ को बेटों, पोतों और पत्नियों, मित्रों और प्रियों और भाइयों की मृत्यु के आज़ाब में ग्रसित कर और तुम सब के लिए आवश्यक है कि तुम आमीन कहो।

अत: यदि तुम में से कोई एक वर्ष तक सही सलामत बच गया तो मैं इक़रार कर लूंगा कि मैं झूठा हूं और मैं तुम्हारे पास विनम्रता पूर्वक पश्चाताप करते हुए आ जाऊंगा और अपनी पुस्तकें जला दूंगा और मैं यह बात शुद्ध नियत से प्रकाशित करूंगा और मैं समझूंगा कि तुम सच्चों में से हो। रही तुम्हारी दुआ तो तुम में से प्रत्येक ख़ुदा से यह दुआ करे: हे हमारे रब! यदि यह व्यक्ति झूठा है तो इस पर अपना अज़ाब उतार और एक वर्ष तक उसे अपमानित करने वाले अज़ाब से मृत्यु दे और उस पर अपना अज़ाब भेज और उससे

अपने बन्दों को मुक्ति दे। हे अत्यंत दयालु ख़ुदा! हे हमारे रब! यदि यह सच्चा है और तेरी ओर से है तो एक वर्ष की अवधि तक हम पर आकाश से अज़ाब भेज और तू हम में से किसी भी मुबाहला करने वाले को न छोड़ और हमें अज़ाब दे, हमें टुकड़े-टुकड़े कर दे, हमें हलाक कर दे और हमें नष्ट कर दे और हम पर आपदाएं और बीमारियां डाल दे जैसा कि तू उपद्रवियों पर डाला करता है और तुम्हारी दुआ के अंत पर हमारा कर्तव्य है कि हम कहें- आमीन।

फिर तुम्हारे लिए यह भी अनिवार्य है कि मुबाहला से पहले तुम मसनून इस्तेख़ारा करो और इन दुआओं को गिड़गिड़ा कर अल्लाह की कृपा तलाश करो: हे हमारे रब यदि यह सच है तो तू हमें वंचितों में से न बनाना। हे हमारे रब! हमें सामर्थ्य प्रदान कर कि हम तेरे मार्ग में खड़े हो जाएं और सत्य की अवहेलना न करें और न हम हानि उठाने वालों में से हों। हे हमारे रब! हम डरते हैं कि हम काले मुख के साथ तेरी ओर लौटाए जाएं। अत: हम पर दया कर। हे हमारे रब! अपनी ओर से हमें हमारे मार्ग दिखा हमारी आंखें खोल और हमें नेकों का मार्ग दिखा। अत: तुम रातों के अंतिम भाग में रोते हुए खड़े हो और अपने रब से रो-रो कर मांगो और कुधारणा न करो और अल्लाह की दया के दिनों से निराश न हो। निस्संदेह अल्लाह के दिन अचानक आने वालों के समान आते हैं।

और तुम्हारा अंतिम उपचार मुबाहले के मैदान में निकलना है और तुम्हारे लिए अनिवार्य है कि तुम्हारा गिरोह पूरे दस से कम न हो या अधिक हो चाहे इस मैदान में एक हज़ार तक हो ताकि अल्लाह हमारे और तुम्हारे मध्य निर्णय कर दे और पापियों का उन्मूलन करे और दुनिया पर हुज्जत पूर्ण कर दे।

यह वह अंतिम उपाय है जिसका इस बारे में हमने इरादा किया है अत: विचार कर और ठीक मार्गों के लिए अल्लाह को पुकार और निराश होने वालों की तरह न बैठ

أَلَا يَا أَيُّهَا الحُرُّ الكَرِيْم　　تَدَبَّرْ يَهْدِكَ المَوْلَى الرَّحِيْم

हे आज़ाद सम्मानित पुरुष! सोच विचार कर। कृपालु ख़ुदा तुझे हिदायत देगा।

وَلا تبخَلْ ولا تقصُدْ فسادا　　أتُطفىء ما حَضَا الربُّ العظيم

कंजूस मत बन और उपद्रव का इरादा भी न कर। क्या तू उसे बुझा सकता है जिसे महान ख़ुदा ने प्रकाशमान किया है।

وَمَا جِئنَا الورىٰ فی غیرِ وقتٍ وَقَد هَبّتْ لِقارِبِها النَّسِيْم

और हम सृष्टि के पास असमय नहीं आए। अपने समय पर ठण्डी हवा चली है।

जो त्रुटिपूर्ण बात करने के बाद अपनी बात को वापस ले ले तो ख़ुदा के यहां उसके लिए महान प्रतिफल है और उसका परिणाम संयमियों के साथ होगा और वह महान पुण्य प्राप्त करेगा और आखिरत में बड़ा फल प्राप्त करेगा जिसके बाद कोई मौत नहीं और उस (जन्नत) के वरदान और आनंद समाप्त होने वाले नहीं हैं। अत: जो अल्लाह की इच्छा के लिए खड़ा हुआ उसके लिए आकाश की बादशाही में इसका फल है और ख़ुदा के यहां उसका सम्मान किया जाएगा और उसे उत्तम प्रतिफल दिया जाएगा। हे भाइयों के गिरोह! तुम पर अनिवार्य है कि तुम मेरी बात को प्रतिफल देने वाले अल्लाह के लिए सुनो और उद्दंडता के मार्गों से बचो और अहंकार और घमंड से बचो। अल्लाह का संयम धारण करो और प्रतिफल को याद रखो और दुनियादारों और सच से वंचितों का चाल-चलन अपनाने से बचो और मेरी इस पुस्तक को मुझ पर क्रोध करते हुए और घृणा करते हुए न पढ़ो। संभवत: किसी बात को तुम एक परिस्थिति के अनुसार समझो जब कि उस परिस्थिति के विरुद्ध हो और संभव है कि तुम किसी मामले को वास्तविकता के विरुद्ध समझो जबकि वह बिल्कुल मूल वास्तविकता हो क्योंकि तुम ख़ुदा की ओर से की गई वह्यी की वास्तविकता को नहीं जानते और तुम शीघ्रता से बिना सोच विचार किए बोलते हो। देखो तुम अपने दुनिया के मामलों के लिए कितनी सावधानी बरतते हो और यदि इन दुनिया के मामलों पर कोई कठिनाई आ जाए तो तुम अपनी कठिनाई पर धैर्य नहीं करते और तुम कष्ट देने वाली वस्तु को दूर करने के लिए पूरा प्रयास करते हो और उसको दूर करने के लिए तुम अपना धन, अपने समय और अपनी शक्तियां खर्च करते हो और तुम अपने पूरे विवेक और बुद्धि से इस ओर ध्यान देते हो और तुम धैर्य रखने वालों

के समान बैठते नहीं। अत: जबकि नश्वर वस्तुओं की ओर तुम्हारा इतना अधिक ध्यान है जो कुछ समय और मोहलत के बाद समाप्त होने वाली हैं तो कैसे तुम दूसरे मामलों से अनभिज्ञ हो सकते हो, जो शेष रहने वाले और स्थाई भी हैं जिन की कमी भस्म करने वाली अग्नि तक पहुंचा देती है। क्या तुम नश्वर वस्तुओं को नित्य रहने वाली बातों के समान समझते हो और तुम सांसारिक जीवन की चाहत रखते हो और हमेशा रहने वाली जन्नत को भूल जाते हो?

हे लोगो! स्वयं को पवित्र करो और अपनी भावनाओं को पवित्र करो और सच्चाई को सोच विचार करते हुए देखो। तुम्हें कमज़ोर रिवायतें और बेतुकी बकवास धोखा न दे और तुम्हें उनकी ओर लगाव नहीं लगाना चाहिए कि तुम अल्लाह के कलाम को आलस्य की अवस्था में अपनी पीठ पीछे फेंक दो।

और तुम सुन चुके हो कि अल्लाह के नबी ईसा का देहांत रब्बुल आलमीन के कलाम से सिद्ध है। और हदीसें उसके रफ़ा अर्थात शारीरिक उठाए जाने के बारे में चुप हैं और तुम्हारे हाथों में केवल इच्छाएं हैं और इस बारे में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई रिवायत सिद्ध नहीं और न इसके बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि सल्लम ने कोई वाक्य कहा और न एक शब्द बोला और तुम जानते हो कि चढ़ना उतरने★ की एक शाखा है अत: जब चढ़ना सिद्ध नहीं तो उतरना एक झूठी आशा है। अत: तुम रद्द की हुई बातों को न अपनाओ और यदि तुम मेरी बातों से मुख फेरते हो और मेरी वसीयत पर नहीं चलते तो

★हाशिया :- वह रफ़ा अर्थात उठाए जाना जिसका पवित्र क़ुरआन में ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में वर्णन है वह कदापि शारीरिक रफा या उठाया जाना नहीं इसीलिए वर्णन के प्रसंग में तवफ्फी का वर्णन है ताकि लोग जान लें कि यह आध्यात्मिक रफ़ा है जैसा कि ईमान वालों की मृत्यु के बाद यही अल्लाह की सुन्नत रही है क्योंकि वह क़ब्ज़-ए-रूह अर्थात मृत्यु देने के बाद अल्लाह की ओर उठाए जाते हैं और जन्नत के वरदानों में प्रसन्नता पूर्वक प्रवेश करते हैं और यह आयत इसलिए उतरी ताकि यहूद और मसीहियों के मध्य निर्णय कर दिया जाए क्योंकि यहूदियों का विचार है कि मसीह झूठों में से था और निंदनीय था और प्रियों में से अल्लाह की ओर जाने वाला न था और उन्होंने कहा कि निस्संदेह वह सलीब दिया गया और तौरात के आदेश के अनुसार सलीब पर

मुझे डर है कि कहीं तुम उन लोगों में सम्मिलित न हो जाओ जो अल्लाह के वरदानों की नाशुकरी करते हैं और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है उसे काटते हैं और इंकार करते हुए उद्दंडता करते हैं। इस मामले में मैं पहला व्यक्ति नहीं और न मैं कोई अप्रिय बात लेकर आया हूं। अत: तुम कैसे मेरी पकड़ कर सकते हो और मुझे मेरे मामले में कठिनाई में डाल सकते हो? क्या पहले

शेष हाशिया :- मरने वाले का अल्लाह की ओर रफ़ा नहीं होता अपितु उसकी ओर से (उस पर) लानत होती है और धुतकारे गए लोगों में से बना दिया जाता है। और ईसाइयों ने कहा कि वह अल्लाह का बेटा था अत: वह सृष्टि को मुक्ति देने के लिए सलीब पर चढ़ाया गया और बात के आरंभ में ही रफ़ा से रोका गया और लानत दिया गया और अज़ाब दिया गया और झूठों के समान तीन दिन के लिए नर्क में डाला गया फिर आकाश की ओर उठाया गया और अल्लाह ने सदैव के लिए उसे अपनी दाईं ओर जगह दी। अत: यहूद ने कोताही और अत्याचार और (मसीह का स्तर) गिराने का मार्ग अपनाया और ईसाई कोताही के साथ बुहतात की ओर गए। अत: अल्लाह ने ईसा के बारे में जो अधिक ठीक बात थी वर्णन की और फ़रमाया कि वह सलीब पर नहीं मरा अपितु प्राकृतिक रूप से उसका देहांत हुआ और मृतकों से जा मिला। फिर प्रियों के समान बिना लानत डाले और आग में डाले उसका रफ़ा किया गया। सारांश यह कि यह निर्णय यहूदियों तथा ईसाइयों के मध्य अल्लाह तआला की ओर से है ताकि वह अपने बंदे को लानत के आरोपों और रफ़ा के न होने से बरी करे और वह वह निर्णय है जो अधिक सच्चा है और उत्तम है। अत: जिस बात में उन्होंने मतभेद किया उसका अल्लाह ने उनके मध्य निर्णय कर दिया और वह उत्तम निर्णय करने वाला है।

और यदि यह उद्देश्य न होता तो इस घटना के वर्णन करने का कोई कारण न था अपितु यदि यह घटना इस परिस्थिति के विरुद्ध मान ली जाए तो यह सब व्यर्थ और ख़ुदा के कार्य पर आरोप होता। क्या अल्लाह की ज़मीन विस्तृत न थी कि अल्लाह मसीह को गुफ़ाओं में से किसी गुफ़ा में छिपा देता जैसा कि पीछा करते समय उसने समस्त नबियों से महान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छिपाया। अत: विचार कर कि कौन सी ऐसी ज़रूरी आवश्यकता थी कि उसे आकाश पर उठाया गया। क्या अल्लाह निर्लज यहूदियों के प्रभुत्व से डर गया और उसने विचार किया कि वह उसे ज़मीनों में से निकाल देंगे। क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह बहुत हिकमत वाला है। वह प्रत्येक कार्य आवश्यकतानुसार करता है और किसी युक्ति की मांग के बिना लाभ रहित कार्य की ओर ध्यान नहीं करता। अत: किस युक्ति ने अल्लाह को मसीह के आकाश की ओर रफ़ा करने पर विवश किया। क्या उसे पृथ्वी में छिपाने के लिए स्थान नहीं मिला? अत: बुद्धिमानों के समान विचार करो। इसी से

लोगों की बातें तुम पर गुप्त कर दी गई हैं अपितु वह महान सूचना है जिससे तुम विमुख होते हो। अपने प्राणों पर अत्याचार न करो और मेरे पास शुद्ध नियत से आओ और अल्लाह तुम्हारे दिलों से प्रत्येक संदेह दूर कर देगा और तुम पर संतुष्टि के प्रकाश उतारेगा और तुम जानते हो कि नसारा के उपद्रव और झूठे मामलों में उनका धोखा सृष्टि के रब की ओर से एक निर्णायक (के आगमन) मांग करता था। अत: वह ख़ुदा जिसने मसीह को यहूद की सलीब से मुक्ति दी और उच्च स्थान पर उसका रफ़ा किया अर्थात उठाया, उसने इरादा किया कि दूसरी बार उसे नसारा की सलीब से मुक्ति दे। अत: इस कार्य के लिए उसने मुझे निर्णायक एवं न्यायिक बना कर भेजा है और उसके नाम पर मेरा नाम रखा है ताकि मैं सलीब को नष्ट करूं और जो निर्देश के कर्तव्यों में से उस (मसीह) से शेष रह गया था उसे पूर्ण कर दूं।

अत: प्रत्येक वह कार्य जो मैं करता हूँ यदि वह (मसीह) जीवित होता है तो यह उसकी ज़िम्मेदारी थी और इसी प्रकार परोक्ष के ज्ञानी ख़ुदा ने मुक़द्दर किया है और मैं उसके अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उतना ही ज़माना गुज़रने पर आया हूं जितना मूसा के बाद ज़माना गुज़रने के बाद वह मसीह आया था और निस्संदेह इसमें विवेकवानों के लिए निशान है और अल्लाह तआला के निशानों में से एक यह है कि उसने मेरे नाम के क्रम में मेरे समय का क्रम गुप्त रखा यदि तू चाहे तो गुलाम अहमद क़ादियानी (1300) की संख्या पर विचार कर।

अत: यह रब्बुल आलमीन की मुहर है और इसमें इस ओर संकेत है कि उसने मुझे इस कार्य के लिए धर्म का सुधारक बनाया है और सद्बुद्धि स्वीकार नहीं करती कि अल्लाह जोकि स्वाभिमान है इन उपद्रवों के समय चुप रहता यहां तक कि इस सदी के सिर पर सुधारक भी अवतरित न करता। क्या तुम्हारे हृदय संतुष्ट होते कि अल्लाह देखता रहे कि इस कमज़ोर क़ौम पर यह कष्ट आते रहें फिर भी वह उनको दूर करने और इस अंधकार के निवारण की ओर ध्यान न दे और न ही अल्लाह की सहायता में से कोई बात प्रकट हो और शैतान की संतान

ख़ुदा के वलियों को ख़ुशी-ख़ुशी संतुष्ट अवस्था में गालियां निकालें। क्या तुम देखते नहीं कि कैसे मूर्खता का पर्दा अपनी इंतिहा को पहुंच गया है और किस प्रकार प्रत्येक नफ़्स ने अपने मरणोत्तर जीवन को भुला दिया सिवाए उस नफ़स के जिसकी अल्लाह ने सुरक्षा की और देखभाल की। क्या तुम अवलोकन नहीं करते कि किस प्रकार गुमराह क़ौमें अपनी उद्दंडता में बढ़ गई हैं और सच की नाव और उसके चलने और ठहरने में रोक उत्पन्न हो गई है।

क्या युग सुधारकों के लिए चीख़-चीख़ कर पुकार नहीं रहा? क्या पीड़ितों के लिए समय नहीं आया कि रब्बुल आलमीन की ओर से उनकी सहायता की जाए? क्या तुम इस्लाम के उन्मूलन के समय की प्रतीक्षा कर रहे हो जबकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का धर्म (हलाकत के) गढ़े के किनारों तक जा पहुंचा है। तुम्हें क्या हो गया है कि सहानुभूति करने वालों के समान दुख नहीं बांटते।

أحاط النّاسَ مِن طَغْوَى ظلامٌ عَلَا ماتٌ بِهاعُرِفَ الإمامُ

فَلَا تَعْجَبْ بِمَا جِئْنَا بِنُوْرٍ بَدَتْ عَيْنٌ إذَا اشْتَدَّ الْأُوَامُ

उद्दंडता के कारण अंधकार ने लोगों को घेर लिया है। यह वे निशानियां हैं जिन से समय के इमाम की निशानदही की गई है। अत: आश्चर्य न कर उस नूर पर जो हम लाए हैं। क्योंकि परोक्ष से एक झरना प्रकट हो रहा है जब भी प्यास बढ़ती रही।

क्या तुम्हारा मसीह आकाश के फट जाने और सृष्टि की व्यवस्था में रुकावट आ जाने के बाद आएगा? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम समयों को पहचानते नहीं और न दिनों पर विचार करते हो? क्या तुम नहीं देखते कि आपदाएं उतर रही हैं और निशान प्रदर्शित हुए और पाप बढ़ गए और उपद्रव निरंतर उत्पन्न हो रहे हैं और कठिनाइयां बढ़ गईं। क्या तुम में विचार करने वाला कोई व्यक्ति नहीं? या तुम इस घाटे की दुनिया को पसंद करते हो या तुम अल्लाह की दया से निराश हो गए हो? या तुम मूर्खता की ओर लौट गए हो और तुमने पुराने तरीके अपना लिए हैं? क्या तुम ख्याल करते हो कि अल्लाह ने इस उपद्रव के सुधार

के लिए इस सदी के सिर पर कोई सुधारक अवतरित नहीं किया या इन हलाक करने वाले उपद्रवों के समय अपनी सुन्नत पर अमल करना रोक दिया है? क्या शैतानों की अधिकता के समय रूहुल क़ुदुस की आवश्यकता न थी। अतः तुम बिल्कुल एक ओर न झुक जाओ और अल्लाह की बातों को विचार करते हुए देखो क्या तुम उपद्रवों की अग्नि और आपदाओं के युग को नहीं देखते और तुम सुनते हुए नहीं सुनते और तुम्हें पुकारा जाता है फिर भी तुम चुप रहते हो, मानो कि तुम मर गए हो या तुम पर मिर्गी ग्रस्त लोगों के समान बेहोशी छा गई है और जब तुम बोलते हो तो अत्याचारियों के समान बोलते हो और जब तुम पकड़ते हो तो क्रूर लोगों के समान पकड़ते हो और जब तुम शास्त्रार्थ करते हो तो धागे से भी अधिक कमज़ोर और कबूतर के बच्चों से भी कमज़ोर रायों से शास्त्रार्थ करते हो और लोगों में से मूर्खों के गिरोह ने तुम्हें घेरा हुआ है। अतः तुम ने उन्हें भी अपने समान गुमराहों में से बना दिया। तुम्हें हिदायत की चाबियां दी गई परंतु तुमने विवेक और समझ के बदले में गुमराही को अपना लिया और आवारा लोगों के समान मूर्खता पर गिर पड़े।

और तुम में से एक गिरोह ने लोगों को मेरे विरुद्ध भड़काया और आवाज़ लगाई कि इसने पवित्र क़ुरआन और सुन्नत को छोड़ दिया है। सुनो झूठों पर अल्लाह की लानत है जो अपनी गुमराही पर अडिग रहते हैं और अपने अहंकार और अपनी उद्दंडता से नहीं रुकते और न वे रुकने वाले हैं और उन्होंने हम पर अत्याचार नहीं किया अपितु अपने आप पर अत्याचार किया है और छल करने वालों का छल उनके मूंहों पर पड़ा। उन्होंने अख़बारों में अपनी मूर्खताएं प्रकाशित कीं। और शिकारी के समान छल किए और खुला-खुला झूठ प्रस्तुत किया और जब मैंने देखा कि उन्होंने अपने तरकश खाली कर दिए हैं और झूठी बातों से अपनी आवश्यकताएं पूरी कर ली हैं तो मैंने वह सब कुछ प्रकाशित किया जो इस अवसर पर उचित था जिस प्रकार की सत्यनिष्ठों का कर्तव्य है। अतः उन्होंने मेरे मुकाबले से मुंह मोड़ा और मेरे भाले से (डर कर) भागे और झूठों के समान अपने मुंह छिपा लिए।

हे लोगो! अपने प्राणों पर दया और नरमी करो और अत्याचार न करो और रुक जाओ और सीमा से न बढ़ो और डरो और दुस्साहस न करो और मौत को याद रखो और गुमराह न हो। और अपने गुज़रे हुए पूर्वजों को याद करो। क्या तुम समझते हो कि तुम दुनिया और उसके आनन्दों में रहने के लिए छोड़ दिए जाओगे और तुम्हें क़यामत और उसके प्रतिफल और दंड की ओर नहीं खींचा जाएगा और तुम प्रतिफल और दंड के दिन के स्वामी की ओर नहीं ले जाए जाओगे? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम हिदायत के मार्ग पर नहीं चलते और न तुम सीमा से बढ़ने के रोग का उपचार करते हो और सच्चाई का अपमान करते हुए गुज़रते हो।

जान लो कि अल्लाह की कृपा मेरे साथ है। और अल्लाह की आत्मा मेरे भीतर बोलती है। मेरा भेद और मेरे मामले की वास्तविकता मेरे रब के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। वही है जो मुझ पर उतरा और मुझे प्रकाशमान हो जाने वालों में से बना दिया, कितने ही निशान तुम पर प्रकट किए गए फिर भी तुम उनसे विमुख होते हुए गुज़र जाते हो। क्या तुम नहीं जानते कि सूर्य और चंद्रमा का ग्रहण न मेरे सामर्थ्य में था और न तुम्हारे सामर्थ्य में है अपितु इन दोनों का रमज़ान में इकट्ठे होना तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध था। अत: तुमने इन दोनों निशानों को अप्रियता से देखा। मानो कि अल्लाह ने तुम्हें इस (माध्यम) से अज़ाब दिया जिसको तुम्हारे व्यक्तित्व पसंद नहीं करते थे। अत: तुमने हिदायत पाए हुए लोगों के समान विचार न किया और यदि तुम्हारे बस में होता तो तुम सूर्य और चंद्रमा को उनके ग्रहण के स्थान से हटा देते और उनके क्रम को परिवर्तित करने के लिए आकाश तक जा पहुँचते यदि तुम सामर्थ्य रखते। अत: अल्लाह ने तुम्हारे मूंह काले कर दिए और तुम्हारे मुंह तोड़ दिए और तुम्हें सामर्थ्य न हुआ कि अल्लाह के कार्य को रद्द करते अत: तुम अपमानित होकर छिप गए।

क्या तुम क़सम खाते हो कि कृपालु ख़ुदा की ओर के इस कार्य से तुम सहमत थे और शैतान के समान अपनी इच्छाओं से तुमने अल्लाह से युद्ध नहीं किया। और क्रोधित व्यक्ति के समान तुम्हें उदासीनता ने नहीं पकड़ा? अत: तुम

यदि सच्चे हो तो क़सम उठाओ। क्या तुम क़सम उठाते हो कि तुम आथम की मृत्यु पर राज़ी हो इसके बाद भी कि उसने सत्य को छिपाया और क़सम न उठाई? अत: यदि तुम सच्चे हो तो क़सम उठाओ क्या तुम क़सम उठाते हो कि जो मेरे रब ने मेरी सहायता की और मुझे प्रतिष्ठित किया और मुझे सम्मान दिया और प्रतिदिन मेरे गिरोह को बढ़ाया तुम इस पर राज़ी हो? अत: यदि तुम सच्चे हो तो क़सम उठाओ। क्या तुम क़सम उठाते हो कि तुम इस पर प्रसन्न हो कि मेरे रब ने तुम्हें मेरे मुक़ाबले में अपमानित किया और मेरे लेख के समान तुमने अरबी भाषा में लिखने का कुछ भी सामर्थ्य न पाया। अत: यदि तुम सच्चे हो तो क़सम उठाओ। क्या तुम क़सम खाते हो कि तुम इस बात पर राज़ी हो कि तुम पवित्र क़ुरआन को समझने में असमर्थ रहे और तुम्हें सामर्थ्य न हुआ कि जो रहस्य क़ुरआन के मैंने लिखे हैं उन जैसे तुम लिख सको और तुम्हें सामर्थ्य न हुआ कि तुम इस मैदान में मेरा मुक़ाबला कर सको। अत: यदि तुम सच्चे हो तो क़सम उठाओ।

और मेरी सच्चाई पर मुझसे और मेरे दावे से पहले एक सदपुरुष गवाही दे चुका है। उसने कहा कि यही आने वाला ईसा मसीह है और उसने मेरा नाम और मेरी बस्ती का नाम भी बताया और उसने अपने मुरीद करीम बख़्श को कहा कि यह वह है जिसकी सूचना मेरे रब की ओर से मुझे दी गई है। अत: मेरी वसीयत को दृढ़ता पूर्वक पकड़ ले इसी प्रकार उसने कहा कि उलमा उस का इन्कार करेंगे और उसे झुठलाएंगे। अत: तू उनके साथ न बैठना और मेरी नसीहत याद रखना। अत: जब उस (नेक) का मुरीद बुज़ुर्ग और बूढ़ा हो गया तब उसने मेरा युग पाया। अत: वह मेरे पास मेरी अख्याति की अवस्था में आया और कहा:- मेरे पास तुम्हारे बारे में एक गवाही है अत: मुझसे मेरी बात सुन लो। फिर उसने भीगी आंखों और बहते हुए आंसुओं के साथ जो कुछ अपने शेख से सुना था वर्णन किया यहां तक कि मेरी आंखें भर आईं। फिर जिस प्रकार उसके वलीउल्लाह मुर्शिद ने उसे वसीयत की थी उसने उस सूचना को प्रकाशित कर दिया और क़सम खाकर कलिमा तय्यबा की गवाही के साथ यह रिवायत

हर कान तक पहुंचा दी और मैंने उसकी अनुमति से एक पुस्तक प्रकाशित की और सुनी हुई बातें इसमें पिरो दीं और उस क्षेत्र के विद्वानों ने उसका विरोध किया और उन्होंने हर प्रकार के उपाय किए कि उसको उसकी इस गवाही से फेर दें। परंतु उसने उत्तर दिया मैं इसे कभी नहीं छिपाऊंगा और आध्यात्मिक ज्ञान के बाद मैं जानते-बूझते अंधा नहीं बनूंगा। अत: उसने उसे जैसा कि उसका अधिकार था, प्रकाशित कर दिया और सामान्य और विशेष हर वर्ग तक उसे पहुंचा दिया। फिर अल्लाह ने उसे मृत्यु दे दी और मोमिनों के रहने की जगह की ओर उसका रफा किया।

अत: अब वर्णन करो, क्या तुम क़सम देते हो कि तुम कृपालु ख़ुदा की ओर से इस निशान पर राज़ी हो और तुमने अपने हृदय में घृणा नहीं की और न शत्रुता से क्रोधित हुए। अत: क़सम खाओ यदि तुम सच्चे हो। क्या यही तुम्हारा संयम और ईमानदारी है कि मुसलमानों में से एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने यह रिवायत अल्लाह की क़सम खाकर और कलिमा पढ़कर वर्णन की परंतु तुमने विमुख होते हुए मुंह फेर लिया। यद्यपि उसकी क़ौम में से न्यायप्रिय गवाहों ने गवाही दी कि वह सच्चा, सत्यनिष्ठ, नमाज़ी, रोज़ा रखने वाले संयमियों में से है और इसी प्रकार तुम्हें अल्लाह तआला ने कई बार चेतावनी दी परंतु तुम हिदायत पाने वालों के समान ख़बरदार न हुए।

क्या तुम क़सम ख़बरदार हो कि तुम प्रसन्न हो कि अल्लाह ने तुम्हारी दुआएं नहीं सुनी और मेरी सुरक्षा की और मुझे निर्दोष रखा, मुझे सम्मान दिया और तुम्हारी बुरी नियतों के कारण तुम्हारी नाक मिट्टी में मिला दी। अत: यदि तुम सच्चे हो तो क़सम उठाओ। और यदि तुम्हारा यह विचार है कि तुम सच्चाई पर हो और हम झूठ पर हैं तो अल्लाह तुम्हें ऐसे तर्कों से जिन्हें तुम पसंद नहीं करते आज़ाब क्यों देता है? और तुम हमारे अपमान के प्रतीक्षक हो जबकि तुम इस मामले में अपमानित होते हुए पकड़े जाओगे बल्कि अल्लाह हर पल तुम्हारी मूर्ति तोड़ रहा है और अपने बंदे को दलील से ऊँचा कर रहा है और वह अहंकार करने वालों की गर्दन तोड़ रहा है। अत: तुम्हें क्या हो गया है कि

पश्चाताप करते हुए सुधार नहीं करते और न क्षमा चाहने का समय पाते हो और न डरते हुए तौबा करते हो। और तुम्हारे विचार में मैं लोगों को धोखा देता और सृष्टि को गुमराह करता हूं और इसके साथ-साथ मेरे अंदर और भी बुराइयां हैं। जबकि तुम पवित्र क़ौम हो और तुम में कोई बुराई और उद्दंडता नहीं है इसके बावजूद अल्लाह तुम्हें अपमानित करता है और तुम्हें पीड़ादायक दण्ड देता है। अत: तुम कदापि सामर्थ्य नहीं रखते कि उसके दण्ड को लौटा दो और न तुम मेरे पास मुक़ाबला करते हुए आते हो। निस्संदेह अल्लाह ने मुझ पर बाह्य और आंतरिक रूप से वरदानों की भीषण वर्षा की है और आरंभ से अंत तक मुझे वरदानों से ओत-प्रोत किया है और मुझ पर इल्हामों के द्वार और मुकाशिफ़ात (अर्थात तन्द्रावस्था) के बागीचे खोले हैं। अत: जो मेरे पास चालीस दिन तक ठहरेगा तो मुझे आशा है कि वह उनमें से कुछ देख लेगा। अत: क्या यह संभव है कि तुम सामना करो या तुम उन से विमुख होते हो?

और अल्लाह ने मुझे ख़ुशख़बरी दी और कहा: हे अहमद! मैं तेरी समस्त दुआएं स्वीकार करूंगा परंतु तेरे शरीकों★ के बारे में नहीं। अत: उसने मेरी समस्त दुआओं का ऐसे उत्तर दिया कि यह स्थान उसके संक्षिप्त वर्णन के लिए भी अपर्याप्त है कहाँ यह कि इसका विवरण और इसकी पूर्ण की अवस्था दर्ज की जाए। क्या तुम इसमें मेरा मुक़ाबला कर सकते हो या विमुखता दिखाते हुए फिर जाओग।

और अल्लाह ने मुझे मेरे बेटों के बारे में ख़ुशख़बरी पर ख़ुशख़बरी दी यहां तक कि उनकी संख्या को तीन तक पहुंचा दिया और मुझे अपने इल्हाम द्वारा उनके अस्तित्व से पूर्व सूचना दी। अत: मैंने विशेष और सामान्य में यह ख़बरें उनके प्रकटन से पूर्व प्रकाशित कर दीं। और तुम इन विज्ञापनों को पढ़ते हो, फिर भी तुम उन से घृणा के कारण आलस्य बरतते हुए गुज़रते हो और मेरे रब ने मुझे चौथे बेटे की रहमत के तौर पर ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया कि वह

★हाशिया :- इस वाक्य के बारे में एक घटना है लेकिन इस स्थान पर उसके वर्णन की आवश्यकता नहीं। इसी से

तीन को चार करने वाला होगा। अत: क्या तुम्हारे लिए संभव है कि तुम विरोध करते हुए खड़े हो जाओ और चार होने वालों को चार होने से रोक दो। अत: हर प्रकार के उपाय करो यदि तुम सच्चे हो और हमने कई वर्ष पहले यह सब एक विज्ञापन में लिखा था अत: उस को ध्यानपूर्वक पढ़ो। निस्संदेह उसमें देखने वालों के लिए निशान हैं। फिर मुझ पर इस घटना को दोहराया गया जबकि मैं नींद और जागने की मध्य अवस्था में था। तो चौथे (बेटे) की रूह ने आलम-ए-कश्फ़ में मेरे सुलब (वीर्य) में हरकत की और उसने अपने भाइयों को पुकारा और कहा। मेरे और तुम्हारे बीच ख़ुदा की ओर से एक समय की अवधि निर्धारित है मैं समझता हूं उसने पूरे एक वर्ष की ओर संकेत किया है या ख़ुदा की ओर से (निर्धारित की गई) किसी और अवधि की ओर संकेत है।

जान लो कि अल्लाह हर मैदान में मेरी सहायता करता है और तुम्हें हर स्थान पर अपमानित करता है और हे षड्यंत्र रचने वालों के गिरोह! वह अल्लाह तुम्हारे छल तुम ही पर उलटाता है। यदि तुम्हारी आंख मुझे अपमान से देखती है तो आओ हम अल्लाह को अपने और तुम्हारे मध्य निर्णायक बनाएं। क्या तुम चाहते हो कि हमारा झूठ या तुम्हारा झूठ प्रदर्शित हो जाए? तो आओ हम अल्लाह की तक़दीर के अंतर्गत शास्त्रार्थ करने के लिए खड़े हों, और यदि तुम शास्त्रार्थ करने से बचो तो मेरे पास आओ और पूरे एक वर्ष तक मेरे पास ठहरो ताकि यदि तुम सत्याभिलाषी हो तो मैं ख़ुदा तआला के कुछ निशान तुम्हें दिखाऊं और यदि तुम इन निशानों को देखने से भी विमुखता दिखाओ तो तुम्हारे लिए अनिवार्य है पवित्र क़ुरआन के रहस्य और ज्ञान में मेरा मुक़ाबला करो और तुम कदापि इसका सामर्थ्य नहीं रखते चाहे तुम हसरत से मर जाओ क्योंकि यह वह ज्ञान है जिसे सिवाए पवित्र लोगों के और कोई छू नहीं सकता। तो यदि तुम यह न कर सको तो मुझसे अरबी भाषा में लिखने का मुकाबला कर लो क्योंकि अरबी इल्हामी भाषा है इसमें सिवाए नबी के या कुछ चयनित वलियों के किसी को पूर्णता नहीं दी गई। और यदि तुम ने इसमें मुकाबला न किया और तुम कदापि मुकाबला नहीं करोगे। तो वर्तमान युग के उपद्रवों के सुधार और ईसाइयों

और विभिन्न मूर्तिपूजकों के संप्रदायों के खण्डन में पूर्ण तर्क से उनका मुंह बंद करने के लिए एक पुस्तक तुम लिखो और एक पुस्तक मैं लिखूंगा और हम पर अनिवार्य होगा कि सिवाए अल्लाह की किताब में से लिखने के न हम अपनी ओर से कुछ लिखें और न तुम अपनी ओर से कुछ लिखो। और तुम कदापि ऐसा न कर सकोगे और न तुम्हें इस स्तर का सम्मान दिया जाएगा क्योंकि यह समय के मार्गदर्शक और अंधकार को दूर करने वाले के कारनामों में से एक कारनामा है (अर्थात्) वह मार्गदर्शक जिसकी अल्लाह की ओर से पवित्र रूह के साथ सहायता की गई और उसे व्यापक ज्ञान प्रदान किया गया और उसे वार्ता माधुर्य प्रदान किया गया और यदि तुम इन मुकाबलों में से किसी एक में भी विजयी हो गए तो मैं अल्लाह की ओर से नहीं। अत: यदि इन सब मामलों से जो हमने तुम्हारे सम्मुख प्रस्तुत किए हैं तुम उनसे विमुख हुए तो तुम्हारे पास कोई बहाना शेष नहीं रहेगा और तुमने स्वयं गवाही दे दी कि तुम झूठों में से हो। क्या तुम बिना ज्ञान के मुझे झुठलाते हो फिर जब हमने तुमको बुलाया तो तुम इंकार और लापरवाही करते हुए भाग गए।

और हमने इन निशानों का वर्णन ख़ुदा के वरदानों से आनंद प्राप्त करने और ख़ुदाई कृपाओं का धन्यवाद करने, इसी प्रकार दुष्ट स्वभाव पर हुज्जत पूरी करने और रब्बुल आलमीन के वरदानों में बढ़ोतरी के लिए किया है क्योंकि धन्यवाद करने से वरदान निरन्तर मिलते रहते हैं और महा कृपालु ख़ुदा के वरदान स्थाई तौर पर साथ रहते हैं।

सारांश यह कि मैंने यह बातें सत्याभिलाषियों को निमंत्रण देने के लिए कमज़ोर संयमियों पर दया करते हुए प्रस्तुत कीं। अत: जो मेरे मामले में संदेह में है और मेरी जमाअत को काफ़िर ठहरता है तो उसे चाहिए कि रज़ामंदी और अपनी इच्छा से मेरी ओर दौड़े और हिदायत पाने के लिए इन तरीकों में से कोई तरीका चुने न कि लड़ाई के उद्देश्य से और जमी होने के लिए। और वह मूर्खता और ग़लतियों पर राज़ी न हो और मेरे पास विनम्रता धारण करने वालों के समान आए तो मुझे आशा है कि अल्लाह उस पर दया करेगा और उसे संतुष्ट

होने वालों में से बनाएगा परन्तु मुझे यह आदेश नहीं दिया गया कि मैं उन लोगों को निमंत्रण दूं जो अपने पास से और अपनी हार्दिक इच्छा से आयतें बना लेते हैं और फिर कहते हैं यदि तुम ख़ुदा की ओर से हो तो हमें इस तरह की आयतें दिखाओ और यदि तुम ऐसी आयत न दिखाओ तो हम कदापि मानने वाले नहीं। यही वे लोग हैं जो अपनी रायों से प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह को आदेश दें कि वह उनकी इच्छाओं का अनुसरण करे। अत: वह सदैव के लिए गुमराही में छोड़ दिए जाएंगे। और निस्संदेह अल्लाह उनके पर्दे दूर नहीं करेगा और उनको कदापि पवित्र नहीं करेगा। निस्संदेह यही लोग अहंकारी हैं। सिवाए उन लोगों के जिन्होंने तौबा की और सुधार कर लिया। अत: यही लोग हैं जिन पर दया की जाने वाली है। अल्लाह धरती पर किसी के अधीन नहीं और वह अपने बंदों प्रभुत्व रखता है न कि गुलामों और सेवकों के समान। मेरा रब पवित्र है मैं तो केवल एक भेजा हुआ बंदा हूं।

फिर क़ौम ने कुछ बातें मुझ पर हुज्जत के तौर पर प्रस्तुत कीं जिनका हम विस्तार से वर्णन करते हैं ताकि उन्होंने जो भी बहाने प्रस्तुत किए हैं हम उनका उन्मूलन कर दें और ताकि हम सच का द्वार सत्याभिलाषियों पर खोल दें। इन आरोपों में से एक यह है कि वे कहते हैं कि आथम अवधि के अंदर नहीं मरा अपितु उसके बाद मरा और गवाहों से उसका ईमान लाना साबित नहीं और न ही सिद्ध हुआ कि वह डरने वालों, लौटने वालों में से था।

अत: जान लो कि उसकी मौत की भविष्यवाणी सच्चाई की ओर न लौटने की शर्त पर थी और अटल आदेश के समान न थी जैसा कि कुछ जानवरों का विचार है। फिर उसका जीवन भी इस शर्त से बंधा हुआ था कि सच्चाई को स्वीकार करने के पश्चात उस पर स्थापित रहे और यदि वह स्थापित न रहे तो उस अत्यंत मूर्ख के लिए मौत का आदेश है। अत: हमारे रब की बात सच्चाई से पूर्ण हो चुकी यद्यपि मूर्खों में से कुछ इसका इंकार करें।

और तू सुन चुका है कि वह (सच्चाई) छिपाने और उसे प्रकट न करने और इंकार पर अड़े रह कर रब को क्रोधित करने के बाद मर गया और यही

रब्बुल आलमीन का इल्हाम था। क्या तुम उस मूर्ख, अत्यंत काफिर की मौत को नहीं देखते कैसे इंकार करने पर अड़े रहने के बाद उसने अचानक उसे आ लिया और यह सब कुछ उसकी मौत से पहले महाकोपी ख़ुदा के इल्हाम में दर्ज था और स्पष्ट रूप से बता दिया गया था कि वह अवश्य पकड़ा जाएगा और गवाही छिपाने, धोखा देने और अहंकार के बाद मारा जाएगा। फिर इस भविष्यवाणी को छपवा कर समस्त देशों और क्षेत्रों में भेजा गया। और आथम अंतिम विज्ञापन से सात महीने के बीच मरा और वह विज्ञापन उसकी मौत की भविष्यवाणी और एक चेतावनी थी। क्या वे मेरे इल्हामों में सोच-विचार नहीं करते और न मेरी बातों पर गौर करते हैं और मेरे निशानों से व्यंग करते हुए गुज़र जाते हैं। वे इस दुनिया पर राज़ी हो गए और प्रतिफल के दिन को भूल गए। अत: मैं उनके दिलों पर लगी मुहरों का और रब्बुल आलमीन के लगाए हुए तालों का कैसे उपचार करूं?

संक्षिप्त यह कि निस्संदेह आथम अवधि के भीतर रहमान ख़ुदा की भविष्यवाणी से डरा और हार्दिक भय के साथ सच्चाई की ओर लौटा क्योंकि उसने विश्वास किया था कि उसके मरने का समय निकट है और उसके बेरिया बिस्तर समेट दिए गए हैं। अत: वह पकड़े जाने वालों के समान अपने बारे में डरा और उसका अधिकार था कि उसे (दोबारा) दुस्साहस के समय तक मोहलत दी जाती और लड़ाई और इन्कार के समय तक उसे छोड़ दिया जाता। अत: अल्लाह ने उसे उस समय तक मोहलत दी है कि वह अपने कुफ्र और उद्दंडता की ओर लौट गया। अल्लाह ने उसे दुनिया और आख़िरत में अज़ाब देने के लिए मार दिया और पहलों में भी अल्लाह की यही सुन्नत गुज़री है। जहां तक आथम के महाप्रकोपी ख़ुदा से डरने का संबंध है तो परिस्थिति और घटनाओं पर विचार करते समय यह तुम पर गुप्त नहीं रहेगा। क्या तुमने नहीं देखा कि उस आथम ने मुझसे अज़ाब की सूचना सुनने के बाद स्वयं को कैसे विभिन्न चिंताओं में डाल दिया और लोगों तथा मित्रों से पृथक हो गया और पागलों के समान यात्रा की कठिनाइयां अपनाने लगा और भय ने उसे घरवालों और दोस्तों से दूर कर

दिया यहां तक कि भयभीत होने के कारण उसके होश उड़ गए और अत्यंत भय से उस की बुद्धि को पागलपन ने जकड़ लिया और वह पागलों के समान एक शहर से दूसरे शहर भागता रहा और प्रत्येक मार्ग पर उस व्यक्ति के समान चक्कर लगाने आरंभ कर दिए जिसे मौत का भय लग जाए और बहुत से लोगों ने उस यात्रा के ज़माने में उसे देखा कि वह रो रहा था या उस की चीख़ने की आवाज़ थी। और उन्होंने गवाही दी कि देखने में वह अत्यंत पीड़ा और दुख में ग्रसित था उस व्यक्ति के समान जो प्यास से मर रहा हो या गिरफ्तार अपराधियों के समान हो।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह डरा और अपनी उद्दंडता से भय की ओर आकर्षित हुआ और कोई संदेह नहीं कि हमारी भविष्यवाणी के चाबुक ने उसके हृदय पर प्रभाव डाला और मेरे वाक्यों ने उसके कानों के पर्दों को खटखटाया, इस कारण वह ख़ुदा के प्रकोप से डरा और कुछ सीमा तक गुप्त रूप से हिदायत के मार्ग को अपनाया फिर मौत से अमन में आकर उसका हृदय कठोर हो गया और अल्लाह तआला डरने वालों को इस दुनिया में अज़ाब नहीं देता यहां तक कि वह डरने वालों के तौर-तरीक को परिवर्तित करे और उसने अपने प्रियजनों के पास अपने भय का इक़रार किया और जो कुछ उसकी तड़प के दिनों में उस पर गुज़रा था वह उन्हें बताया और हर मामला जिसे उसने अपने गिरोह से छिपाया उसके आंसुओं के सैलाब ने उसे प्रकट कर दिया और जो कुछ उसने झूठ से छिपाया आंखों के आंसुओं ने उसे प्रकट कर दिया और जो कोई भी खोजबीन करने वालों के समान उसके निकट आया उसने आथम को पागलों के समान पाया और दीवानों के समान हाथ पांव मारते पाया और उसने देखा कि वह अपने दिन अत्यंत गर्मी वाले दिनों के समान गुज़ार रहा है और मार्ग से भटके हुए के समान चिल्ला रहा है और दिन दुखों और चिंताओं में गुज़रता है मानो कि उसने मौत के चिन्ह से मौत को सामने देख लिया और उसके मित्रों में से जो भी उसके घर तक पहुंचा और उसका हाल पूछने का प्रयास किया तो उसने उसे बौखलाया हुआ और स्पष्ट रूप से भयभीत व्यक्ति के समान पाया

और उसे खुशी में नहीं अपितु दुख और दर्द में देखा। फिर जब अवधि के महीने गुज़र गए और उसने समझ लिया कि वह बच गया है तो उसने अपने भय के रहस्य को गुप्त रखा और प्रकट न किया लेकिन भय के लक्षणों को छिपाने में सफल न हो सका। अत: उसने अपने शैतान के बहकाने से बहाने बना लिए और कहा कि निस्संदेह मैंने अवधि के दिन भय से और कांपते हुए गुज़ारे लेकिन मैं इल्हामी भविष्यवाणी से नहीं डरा अपितु दुश्मनों से डरा जिन्होंने शेर के समान मुझ पर हमला किया। क्योंकि उन्होंने और विभिन्न उपाय करते हुए मेरे पहले स्थान पर मुझ पर सिधाया हुआ सांप छोड़ा और मैंने उसे आक्रमण करने वालों के समान देखा। अत: मैं उस के भय से एक शहर से दूसरे शहर की ओर भागा कि संभवत: मैं उस आपदा से बचाया जाऊं लेकिन मैं इसमें सुरक्षित रहने वालों के समान नहीं छोड़ा गया बल्कि मुझ पर कुछ हथियारबंद लोगों ने हमला कर दिया। फिर मैं दूसरे दामाद की ओर भागा। तो शत्रुओं ने उसी प्रकार आक्रमण किया जिस प्रकार मेरे आने से पहले किया था और वह ख़ूनी फ़रिश्ते थे। अत: मैंने उन्हें प्रत्येक उस स्थान पर देखा जहां मैंने शरण ली और प्रत्येक शहर में जहां मैंने क़दम रखे, मैंने उन्हें अत्यंत भयभीत कर देने वाला देखा और वे हत्यारों के समान मुझ पर तीर ताने हुए घात में बैठे थे।

अत: इस कारणवश कि जब उन्होंने मुझे भालों और शस्त्रों, डंडों और तेज़ धार तलवारों और अजगर की फुंकार से डराया तो मैं एक शहर से दूसरे शहर को भागा और उन्होंने चाहा कि वह अचानक मुझे ज़हर दे दें और जब मेरा हृदय गला दबाए जाने वाले के समान घुटा और दुख तेज़ आंधी के समान टूट पड़े तो मैंने उचित समझा कि अंतिम स्थान पर अपना पड़ाव डाल दूं और अपने दामाद के परिवार में रहूं और स्थायी निवास करने वालों के समान यात्रा समाप्त कर दूं।

यह वे विचार हैं जो उसने अवधि गुज़रने के बाद प्रकट किए और अवधि के अंदर गवाहों के समक्ष मूंह से ऐसी कोई बात न की और न ही अपने विचारों को अख़बारों में प्रकाशित किया और जनसामान्य में से किसी

को इस की सूचना नहीं दी अपितु अधिकारियों को भी शिकायत नहीं की और इन कठिनाइयों के बारे में न्यायाधीश को भी ख़बर न दी और उसने रोज़ेदारों के समान समय गुज़ारा पर इसके साथ अज़ाब के फ़रिश्ते देखने और भय और चिंता का भी इक़रार किया और इक़रार किया कि उसने डरते-डरते वे दिन गुज़ारे और अकाल मृत्यु से भयभीत रहा और विचार किया कि वह मिट जाने वालों में से है। देखो उस सांप को जिसका वह वर्णन कर रहा है, क्या बुद्धि उसे स्वीकार करती है या उसका इंकार करती है? अत: तुम रहस्य को समझ जाओ यदि तुम विचार करने वाले हो।

फिर तुम जानते हो कि वह एक स्थान से दूसरे स्थान और (पहले) पड़ोसियों से (नए) पड़ोसियों की ओर भागा और उसके शहर ने उसे दूसरे शहरों की ओर फेंक दिया परंतु इसके बावजूद उसने अवधि के अंदर कोई ऐसा बहाना प्रकट नहीं किया जो शैतान के समान उसने बाद में गढ़ लिया और न ही अधिकारियों और सहायकों और मर्दों और औरतों और पुत्रों के सामने रोया। क्या इस प्रकार के झगड़ों और घृणाओं और बदला लेने के बिगुलों में बुद्धि स्वीकार करती है कि वह व्यक्ति जो हमारे धर्म का शत्रु और हमारे सम्मान का ईर्ष्यालु है ऐसे आक्रमणों के समय धैर्य रखे और न हमारा दोषारोपण करें और न अधिकारियों के पास शिकायत करे अपितु इस पर तो अनिवार्य था कि हमारा अपराध प्रकट करता और हमारा इरादा सिद्ध करता और हमें बुराइयों का दंड दिलवाता। क्या तूने नहीं देखा की अवधि के बाद कैसे आथम और उसकी क़ौम ने अकारण खुशी मनाई और प्रत्येक ने धोखा देने के लिए नृत्य किया और दुष्टता की कमान से तीर चलाए। अत: कैसे उन्होंने इस प्रकार की स्पष्ट विजय से विमुखता दिखाई? क्या यह ऐसी बात है जिसे विवेकवानों की बुद्धि स्वीकार करती है या बुद्धिजीवियों और बुद्धिमान स्त्रियों का हृदय इस पर संतुष्ट होता है? क्या यह है वह जिसकी इन दज्जालों, धर्म के शत्रुओं और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शत्रुओं से आशा रखी जाती है? अत: यदि तुम मोमिन हो तो विचार करो।

क्या तुम नहीं देखते कि उनकी पत्रिकाएं और अख़बार इस्लाम धर्म और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अपमान से भरे हुए हैं। अतः इस स्थान पर कैसे उन्होंने अपनी आंखें मूंद ली। अल्लाह की क़सम निस्संदेह वह मेरे और मेरे स्वामी मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शत्रु हैं और मेरे विरुद्ध बड़े लालची हैं कि काश उन्हें मुझे विभिन्न प्रकार के कष्ट देने का सामर्थ्य हो यदि हम उनके अंडों में से एक अंडा भी तोड़ दें तो वह अवश्य अपने प्रलोभन से हमारे विरुद्ध अधिकारियों को भड़काएंगे। अतः कैसे उन्होंने हमारी ओर से हलाक करने के लिए प्रहार और निर्दयी व्यवहार देख कर धैर्य रखा। क्या उन्होंने नेकी से उत्तर दिया और बुराई का बदला बुराई से देना न चाहा? उन्होंने हमारी ओर से पहला आक्रमण देखा और क्षमा किया और धैर्य रखा फिर दूसरा आक्रमण देखा तो भी उन्होंने क्षमा किया और धैर्य रखा। फिर तीसरा आक्रमण देखा तो फिर भी उन्होंने क्षमा किया और धैर्य रखा और इस प्रकार उन्होंने तीन आक्रमणों तक किया। अतः तुम क़सम उठाओ कि क्या उन शैतानों के ऐसे शिष्टाचार हैं?

क्या तुम्हारी दूरदर्शिता गवाही देती है कि यह दुष्ट काफ़िर और पापी शत्रु जो इस्लाम क़ौम और ख़ुदा की शरीअत की शत्रुता में प्रत्येक क़ौम से आगे बढ़ गए हैं। उन्होंने हमें अपराधी और निष्ठुर पाकर फिर भी क्षमा करते हुए नष्ट करने में कोताही बरती अपितु यह एक चाल और बहाना है उस भय को छिपाने के लिए जो आथम से अवधि के दिनों में भिन्न-भिन्न प्रकार की चिंताओं से प्रकट हुआ। इसी कारण न तो उसने क़सम उठाई और न मामले को इस देश के अधिकारियों तक लेकर गया, और पलट गया और विमुख हो गया और कहा कि हम ऐसी क़ौम हैं जो क़समों से बचते हैं हालांकि इससे पहले वह मुकद्दमों में हलफ़ उठा चुका था और झगड़ा समाप्त करने के लिए इन (ईसाइयों) के यहां भी हलफ़ उठाना अनिवार्य है और जो इन्कार करे तो वह उन के निकट पापियों में से है।

और उनके यसू ने और विभिन्न हवारियों ने और ईसाइयों के बड़े लोगों

ने भी हलफ़ उठाया है जबकि क्लार्क ने कहा कि हमारे निकट हलफ़ उठाना ऐसा ही है जैसे मुसलमानों के निकट सूअर हालांकि प्रत्येक पादरी ने और पौलूस ने जोकि झूठों का सरदार था हलफ़ का सूअर खाया। अत: आथम और उसके स्पष्ट झूठ और दुष्ट कार्य को देखो कैसे उसने क़सम खाने से सर्वज्ञानी ख़ुदा के प्रकोप के भय से मुंह मोड़ा यद्यपि मैं उसे क़सम खाने पर बहुत सा धन प्रस्तुत कर रहा था और मैंने कहा कि यदि तुम्हें इस वचन के पूरा होने में संदेह है तो अपने हलफ़ से पहले मुझसे (धन) ले लो अपितु मैंने पुरस्कार एक हज़ार से कई हज़ार तक बढ़ा दिया और यदि वह अधिक की मांग करता तो बिना वचन तोड़े हम उसे और बढ़ा देते। अत: उसका कर्तव्य था कि वह मेरे पास प्रसन्नता पूर्वक आता और हलफ़ उठाता और समस्त जनों में अपनी सच्चाई फैलाता लेकिन वह तो भौंचक्के व्यक्ति के समान फ़रार हो गया और अपमानित व्यक्ति के समान गिर गया और भय की परछाइयों ने उसका इस प्रकार पीछा किया जैसे दीवानों पर भय सवार होता है। अत: उससे उसकी औकात दिख गई और उसका पर्दा फट गया और सच्चाई स्पष्ट हो गई और ख़यानत करने वालों का झूठ प्रदर्शित हो गया। फिर हलफ़ से इन्कार के समय उस पर अनिवार्य था कि वह अपने झूठे आरोपों पर तर्क प्रस्तुत करता और अपनी व्यर्थ बातों का विषय गवाहों के द्वारा सिद्ध करता परंतु उसने इन व्यर्थ बातों पर कोई दलील प्रस्तुत नहीं की और न ही उन आपदाओं के समय किसी अधिकारी के दरवाज़े पर दुहाई दी जैसा कि पीड़ितों का तरीका है। अत: उसके झूठ और झूठी बातों पर पाठकों के निकट इससे बड़ी और कौन सी दलील है। और उसने बार-बार इक़रार किया कि इन दिनों में उसे अपने प्राणों का भय लग गया और उसने वह कुछ देखा जो ऐसा व्यक्ति देखता है जिसे मृत्यु के निकट होने का विश्वास हो।

और दुखों के क़ैदखाने से और बीमारी से निढाल हो जाने वालों के चिकित्सालय से निकलने के बाद लोग उसकी मुलाकात के लिए दौड़े और उसके मुख पर बहुत आश्चर्य किया। अत: जिसने भी उसके मुख के हाव-भाव को ध्यानपूर्वक देखा और उसकी दर्दनाक आवाज़ पर ध्यान दिया तो उसने जान

लिया कि "आथम" ने अपनी पिछली हालत बदल ली है और भड़कती हुई आग को बुझा दिया है और स्वयं को लाचारों के समान प्रकट किया है। और हर बड़ी सभा में बार-बार विचित्र प्रकार की विनम्रता से रोया। अत: प्रत्येक ने जो उस के साथ या उसके आस-पास था उसका रोना सुना और समझ गया कि वह मौत के तीरों और उनकी नोक से डर गया है और उसने व्याकुलों के समान दिन गुज़ारे। शेष रही उसकी क़ौम तो वह मेरे इल्हाम में उपस्थित शर्त की कैद को भूल गए जोकि इल्हाम का आधार थी। और उसके डरने पर विचार न किया जो सीमा से बढ़ गया था और वे क्रोध और गुस्से से बिल्कुल अंधे हो गए और शैतानों के समान अपनी दुष्टता दिखाई और गुस्से से दाँत पीसे और वे सीमा से बढ़ने वाले थे।

और मूर्खों तथा उसके मूर्ख साथियों ने मेरे बारे में बुरा-भला कहा और कहा कि निस्संदेह हम विजयी होने वालों में से हैं और हमने उनको समझाया परंतु वह मूर्खता से न रुके और पूर्णत: सीमा से गुज़र गए। उन्होंने युद्ध की अग्नि भड़काई और जंड (के वृक्ष) के अंगारों के समान भड़क उठे और न रुके और न ही विचार विमर्श किया अपितु बहुत भड़के और झगड़ा किया और दु:शीलता और अत्याचार प्रकट किया और भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ गढ़े। और अपशब्दों दोषारोपण और व्यंग्य की ओर आकर्षित हो गए और अर्थहीन बातें बकने और आरोप लगाने में हद से बढ़ गए और हमारी ओर पागलों के समान इकट्ठे होकर और अकेले-अकेले आए और वास्तविकता को कपटियों और बहाने बनाने या सच्चाई को छिपाने वाले दज्जाल के समान छिपाया और वे बाज़ारों में चलते हुए व्यंग करते थे जैसा कि झूठों की आदत है और वे झूठ गढ़ने को सुसज्जित करते थे, और हर एक ने हमारे बारे में जो चाहा वह कहा और उन्होंने लड़कों और मूर्खों को व्यंग के समय पीछे लगा दिया और वे लोगों को इस भविष्यवाणी के बारे में धोखा देते थे जिसे वे स्वयं नहीं समझे या यदि समझे तो उसमें परिवर्तन कर दिया और उन्होंने शहरों में उपद्रव करते हुए तबाही मचा दी। और उनके साथ हमारे विद्वानों ने भी चुग़ली करने वालों अपितु जानवरों के समान चीते की

खाल पहनने वालों और बहा ले जाने वाले प्रचंड बाढ़ के समान आक्रमण किया और उन्होंने ईसाइयों और उनके छल कपट का अनुकरण किया और साहस करते हुए संयम के वस्त्र को पीछे फेंक दिया और ज़बान दराज़ियों और भिन्न-भिन्न प्रकार की बुराई से हमारा उन्मूलन करना चाहा और गवाहों के समान ईसाइयों की सहायता की और प्रत्येक व्यक्ति मुहम्मद हुसैन बटालवी या शेख नज्दी के समान ईमानदारी और धार्मिकता से दूर था।

और आश्चर्य है कि आथम बिल्कुल खामोश और चुप था, कुछ बोलता नहीं था, अपितु उसने मुझे लिखा कि मैं उनसे और उनके कार्य से पृथक हूं और मैं जानता हूं कि यह मूर्खों, सीमा से बढ़ने वालों में से है। फिर कुछ समय बाद उसका हृदय कठोर हो गया और वह गुमराहों में से हो गया लेकिन इसके बावजूद उसने स्वयं को उनके अपशब्दों और आरोपों और उनकी मूर्खता और उनकी बकवास बकने में सम्मिलित नहीं किया और उनसे दूर हटकर एकांतवास में रहने वालों और छिपने वालों के समान बैठ गया और यदि वह मुझे झूठा समझता था और स्वयं को कष्ट में ग्रसित समझता था तो उसका अधिकार था कि वह सर्वप्रथम झुठलाने वाला होता और सबसे पहले निंदा करने वाला होता अपितु उस पर अनिवार्य था कि वह मेरा झूठ विज्ञापनों द्वारा प्रकाशित कर देता। फिर इसी पर न रुकता अपितु दंड के लिए अधिकारियों को शिकायत करता। उसने ऐसा नहीं किया बल्कि डरने वालों के समान चुप रहा। और तू जानता है कि यदि वह मेरे झूठ से अवगत होता और उस पर मेरे हृदय की बुराई प्रकट होती इसी प्रकार यह कि उसने यह सारी कठिनाई मेरी वजह से सहन की थी इस अवस्था में मानवीय स्वभाव की मांग थी और धार्मिक और बौद्धिक आवश्यकता थी कि उसका क्रोध तूफान के समान हरकत में आता और वह अत्याचार का बदला चुकाने के लिए तत्पर हो जाता है। अत: किस चीज़ ने उसे रोका कि वह गढ़े हुए मुर्दे के समान हो गया और निराश और दुखी व्यक्ति के समान छिप गया। क्या इस स्थान पर बुद्धि आश्चर्यचकित नहीं हो जाते? और विचार उभरते और संदेह बढ़ नहीं जाता? फिर मैंने उसे जन-सामान्य पर सच स्पष्ट करने के

लिए क़सम उठाने के लिए बुलाया और क़सम खाने पर ढेरों धन न कि सामान्य सा धन देने का उससे वादा किया ताकि वह (धन से) भरे हुए थैले और प्रसन्न हृदय के साथ वापिस आता परंतु वह लौट गया और क़सम न खाई। फिर मैंने उस पर लानत की और मैंने कहा कि तुम पर अल्लाह की लानत यदि तुमने कठोर हृदय के साथ विमुखता दिखाई परंतु न तो मेरे पास आया और न झूठ को छोड़ा। अत: न तो वह स्वयं आया और न ही क़सम खाई और पिछली आपदा को याद रखा और विश्वास कर लिया कि अब तो वह अवश्य पकड़ा जाएगा।

और तेरे लिए वे गतिविधियाँ पर्याप्त हैं जो मृत्यु की भविष्यवाणी सुन कर और मर जाने के लक्षण देख कर उससे हुईं और अत्यंत भय ने उसे पकड़ा यहां तक कि आवाज़ भी परिवर्तित हो गई। और वह उस शिकार के समान भागने लगा जो जंगल में भयभीत होकर भागता है और न उसे कोई वृक्षों वाली ज़मीन मिलती है और न चटियल मैदान! और उसने बुद्धिमानों के मार्ग को छोड़ दिया। फिर जब उसने देखा कि भय (की अवस्था) छिप नहीं सकती और देखने वाले अंधे नहीं, तो उसने प्रसिद्ध कर दिया कि आक्रमण करने वाले हर जगह उसका पीछा कर रहे हैं और प्रत्येक स्थान पर वे चढ़ गए हैं यहां तक कि वह उनके पीछा करने के कारण पागल हो गया हालांकि उसने न उनका प्यादा देखा और न सवार। अत: इस भय ने उसे मोहलत न दी अपितु उसके कारण उसका अन्त:करण राख हो गया और मुलाकात करने वालों ने उसे देखा कि वह अपना समय रोने और आहें भरने में गुज़ारता है और उसकी आंख से आंसुओं का सैलाब बह रहा है, ऐसी स्त्री के आंसुओं के समान नहीं जिसका कोई भी बच्चा जीवित नहीं रहता अपितु उससे भी बढ़कर। और उसे विश्वास था कि वही पराजित होगा और लोग उसे फांसी दे देंगे। अत: जैसा कि शिकार जब पकड़ने वाले शिकारी जानवरों का आभास करता है तो उस घने झुंड में छिप जाता है जो टहनियों वाला और पत्तों से लदा होता है और स्वयं को हर बड़े वृक्ष के नीचे कांपते हुए शरीर के साथ छिपा लेता है, इसी प्रकार वह (आथम) पागलों के समान इधर उधर भटकता रहा।

फिर अवधि समाप्त होने के बाद झूठ गढ़ लिया कि हमारा गिरोह उसके

घर में उतरा है और अपनी तलवारें ताने हुए उसको मारने के लिए तीव्रता से उस पर आक्रमण किया ताकि वह अचानक आक्रमण करने वालों के समान अकस्मात उसका वध कर दे। अत: इस प्रकार के झूठ और आरोपों से उसकी वास्तविकता प्रदर्शित हो गई और उसकी जड़ी बूटी और वृक्ष पहचाने गए और प्रकट हो गया कि वह इस्लाम से डरा यद्यपि उसने अपने उद्देश्य को छिपाया। क्या तू नहीं जानता कि किस प्रकार उसने इक़रार किया कि वह सांप से डरा और यह तो मालूम ही है कि सांप को हमारी ओर से आदेश नहीं दिया गया था और न ही सिधाया हुआ था और सांप अल्लाह के आदेश से डसता है मनुष्य के आदेश से नहीं। अत: सिद्ध हुआ कि वह प्रतिफल और दंड के स्वामी ख़ुदा के प्रकोप से डर गया और कृपालु ख़ुदा की भविष्यवाणी से अपने हृदय में भय का आभास किया और यह वह रूजू (लौटने) की शर्त है जो मन्नान ख़ुदा के इल्हाम में थी। अत: उसने हार्दिक भय के कारण इस शर्त से लाभ प्राप्त किया फिर सही बात को छिपा लिया।

और सांप की घटना बड़ी सफ़ाई से गवाही देती है कि भय पूर्ण रूप से आकाशीय प्रारब्ध से था न इनसे न उनसे। और तू सुन चुका है कि मैंने उसे क़सम उठाने के लिए बुलाया। अत: यही भय था जिसने उसे इंकार की ओर लौटा दिया और मैंने उसे कहा कि मैं तुझे तावान (मुआवज़ा) देने वालों के समान पुरस्कार दूंगा और यदि तू चाहे तो इस (क़सम) से पहले मुझसे लेकर किसी ईमानदार व्यक्ति के पास (रकम) जमा करवा ले परंतु वह मेरे डण्डे से डर गया बावजूद यह कि उसे मेरे पुरुस्कार पर सूचना थी और जब वह फिर गया और क़सम न खाई तब मैंने कहा हे व्यक्ति! इससे पहले तेरे विशेष विद्वान और तेरी क़ौम के बड़े लोग क़सम उठा चुके हैं क्या तू उनसे महान है या तू उन्हें झूठों में से समझता है? अत: उसने मेरी बात का उत्तर न दिया और न सच्चों के समान क़सम खाई और उसका झूठ ऐसी बात है जो छिपाने से छिप नहीं सकता और किसी झूठ से सीधा नहीं हो सकता अपितु वह स्पष्ट बातों और प्रकाशित प्रमाणों में से है। परंतु विरोधी ऐसी क़ौम हैं जिन्हें दुश्मनी और शत्रुता की अग्नि ने अंधा

कर दिया है जैसे कि दोपहर की तेज़ धूप गिरगिट की आंख को अंधा कर देती है। अत: कोई संदेह नहीं कि सच्चाई प्रकट हो गई है और झूठ समाप्त हो गया और झूठ के उपासकों के मुख काले हो गए और कोई संदेह नहीं कि इस महा झूठे की मौत ने इस बारे में हर झूठे को मार दिया। और मैं देख रहा हूं कि ज़बानों को लगाम डाल दी गई है और हुज्जत पूरी हो गई है और सच प्रकट हो गया है चाहे वह उसे ना पसंद करें।

और इससे पूर्व पिछले विज्ञापनों में हमने आथम की मृत्यु से पहले वर्णन किया है कि वह लौटने और पश्चाताप करने से इन्कार और झूठ पर अडिग रहने के बाद मर जाएगा। अत: हम मन्नान ख़ुदा का बहुत धन्यवाद करते हैं कि उसने उसी प्रकार किया जैसा कि इससे पहले युग में लिखा गया था और उसी प्रकार पूरा किया जिस तरह मेरी हार्दिक इच्छा थी और आथम ईसवी महीनों से आधे ईस्वी महीने गुज़रने के बाद मर गया और उसके एक शहर से दूसरे शहर भागने ने उसे कोई लाभ न पहुंचाया और यदि तू पसंद करे तो इस वाक्य से उसकी मृत्यु का समय जान ले-

"बद ख़सलत दज्जाल आथम हलाक़ करने वाले हाविया के अज़ाब में गिर गया"
1896

और यह ख़ुदा के निशानों में से एक निशान है क्योंकि जब उसने न्याय के मार्गों को छोड़ दिया तो अल्लाह ने उसे जीवित न छोड़ा बल्कि जब उसने वास्तविकता के रहस्य को छिपाया तो उसे मिट्टी के नीचे छिपा दिया गया। अत: सच्चाई स्पष्ट हो गई और झूठ भाग गया और काफ़िरों के झूठ नष्ट हो गए। हे संकीर्ण विचार तथा पक्षपात् करने वालो! तुम कहां ले जाए जा रहे हो? हे काफिले से पीछे रह जाने वालो! क्या तुम्हारे लिए समय नहीं आया कि तुम तौबा करो अत: खड़े हो जाओ और इस नाज़ व नखरे और नफरत को समाप्त करो और साहस करते हुए अल्लाह से मुकाबला न करो।

हे लोगो! निस्संदेह आथम मर गया और सच का बाज़ झूठ पर टूट पड़ा अत: अपने प्राणों पर दया करो और मौत को याद करो और इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि रजिऊन पढ़ते हुए तौब: करो और निस्संदेह संयम कंधों तक लम्बे

संवारे हुए बालों में और लंबी दाढ़ी और नंगे टखनों और बांधी हुई पगड़ियों और मूंढी हुई मूंछों और भिन्न भिन्न प्रकार की रस्मों में नहीं। संयम तो केवल ग़लती के बाद ठीक को अपनाने और सूचित होने के बाद सच की ओर लौटने और उद्दंडता के दिनों को याद करके अत्यंत दुखी होने और उपद्रवी क़ौम से दूरी बनाए रखने और अपने अहंकार और छल को रब्बुल आलमीन ख़ुदा के लिए छोड़ने में है। और निस्संदेह संयमी, सत्य को स्वीकार करने से उसी प्रकार प्रसन्न होते हैं जिस प्रकार अपने महबूब के लापता होने के बाद मिलने से प्रसन्न होते हैं या उद्देश्य की प्राप्ति से जो वंचित होने के बाद प्राप्त हो। और जब उन्हें नसीहत की जाए तो विनम्रता से नसीहत को स्वीकार करते हैं। अत: कर्मों को अच्छी तरह परखो क्या तुम अपना संयम उन उदाहरणों जैसा पाते हो? तुम्हें क्या हो गया है कि तुम उपद्रव से नहीं रुकते और प्रतिफल तथा दंड के दिन का भय तुम्हें डराता नहीं। तुम्हारे बागीचे पर आपदा टूट पड़ी है। हे स्वप्नों में रहने वाले गिरोह तुम्हें आलस्य ने कैसे लापरवाह कर दिया है निस्संदेह आथम की मौत में सूझ बूझ रखने वालों के लिए निशान हैं क्या इससे पहले उन खबरों के बारे में तुमने मेरा विज्ञापन नहीं पढ़ा? अब उसका इंकार केवल शैतानों के गिरोह के और कोई नहीं कर सकता।

تَذَكَّرْ مَوْتَ دَجَّالٍ رُذَالٍ   وَقُوْدِ النَّارِ آتَمَ ذِی الْخَبَالِ

उस कमीने दज्जाल की मृत्यु को याद कर जो आग का ईंधन (और) उपद्रवी आथम है।

اَتَاهُ الْمَوْتُ بَعْدَ كَمَالِ دَجْلٍ   وَاِنْكَارٍ وَّ مَكْرٍ فِي الْمَقَالِ

अत्यंत धोखेबाज़ी और इन्कार और वार्तालाप में छल के बाद उसे मौत आ गई।

اَرَاهُ اللّٰهُ هَاوِيَةً وَّ ذُلًّا   وَفِي النِّيْرَانِ اُلْقِىَ كَالدَّمَالِ

ख़ुदा ने उसे नर्क और अपमान दिखा दिया और वह आग में डाल दिया गया सूखे हुए गोबर के समान।

كَمِثْلِيْ كَانَ فِيْ عُمْرٍ وَّسِنٍّ   سَمِيْنَ الْجِسْمِ اَبْعَدُ مِنْ هُزَالِ

वह आयु में मेरे जैसा था, मोटा शरीर रखने वाला और कमज़ोरी से दूर था।

وَمَا اَرْدَاهُ اِلَّا حُبُّ كُفْرٍ وَاَحْبَابٍ وَّ اَمْلَاكٍ وَّمَالِ

और नहीं हलाक किया उसे परंतु कुफ़्र, मित्रों, धन-दौलत के प्रेम ने।

فَرٰى اَرْضًا بِخَوْفٍ بَعْدَ اَرْضٍ فَمَانَفَعَتْهُ حِيَلُ الْاِنْتِقَالِ

उसने भय के कारण एक स्थान के बाद दूसरे स्थान को पार किया। अत: एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के बहाने ने उसे कोई लाभ न दिया।

وَدُقَّتْ هَامَةُ الْكَذَّابِ حَقًّا بِاَطْرَافِ الزِّجَاجِ اَوِ الْعَوَالِيْ

और झूठे की खोपड़ी वास्तव में अच्छे से कूट दी गई भालों के दस्तों या फलों से।

وَقَدْ هَابَ الْمَنَايَا ثُمَّ اَنْسٰى زَمَانَ الْمَوْتِ مِنْ زَهْوِ الضَّلَالِ

और वह मौतों से डरा फिर उसने भुला दिया मौत के समय को, गुमराही से उत्पन्न होने वाले अहंकार के कारण।

فَفَكِّرْ كَيْفَ اَدْرَكَهُ الْمَنِيَّه مُقَدَّرَةً لَّهٗ بَعْدَ الْخَبَالِ

अत: तू सोच कि मौत ने उसे किस प्रकार घेर लिया जो उसके लिए उस की बुद्धि की ख़राबी के बाद निर्धारित थी।

تَوَفَّاهُ الْمُهَيْمِنُ عِنْدَ خُبْثٍ وَاِصْرَارٍ عَلٰى سُبُلِ الْوَبَالِ

मुहैमिन ख़ुदा ने उसको दुष्टता के प्रकटन और तबाही के मार्गों पर अड़े रहने के कारण मृत्यु दे दी।

فَاَيْنَ الْيَوْمَ ا۱تَمُ يَاعَدُوِّيْ اَلَمْ يَرْحَلْ اِلٰى دَارِ النَّكَالِ

हे मेरे शत्रु आज आथम कहां है? क्या वह भयंकर दंड के घर की ओर कूच नहीं कर गया?

اَلَمْ يَثْبُتْ بِفَضْلِ اللّٰهِ صِدْقِيْ اَلَمْ يَظْهَرْ جَزَآءُ الْاِفْتِعَالِ

क्या अल्लाह के फ़ज़्ल से मेरा सच प्रकट नहीं हो गया? क्या आरोप लगाने और झूठ बोलने का दंड प्रकट नहीं हो गया।

وَمَا نَجَّاهُ عِيْسٰى وَالصَّلِيْبُ وَلَمْ يَعْصِمْهُ اَحَدٌ مِّنْ عِيَالِ

और न उसे ईसा ने निजात दी और न सलीब ने और न उसके परिवार में से किसी ने बचाया है।

تَجَلَّتْ اٰيَةُ الرَّبِّ الْعَظِيْمِ فَاَيْنَ الطَّاعِنُوْنَ مِنَ الدَّلَالِ

प्रतिष्ठित ख़ुदा का निशान प्रकट हो गया अतः वे कहां हैं जो अभिमान से ताने देते हैं।

وَاَيْنَ اللَّاعِنُوْنَ بِصَدْرِ نَادٍ وَاَيْنَ الضَّاحِكُوْنَ مِنَ الْحَوَالِيْ

और भरी सभा में निंदा करने वाले कहां हैं और (उसके) खुशामदियों में से हंसने वाले कहां हैं?

وَاَيْنَ السَّاخِرُوْنَ مِنَ الْاَدَانِيْ وَمِنْ اَهْلِ الْمَطَابِعِ كَالرِّئَالِ

और कहा हैं व्यंग्य करने वाले कमीने लोगों में से और कहां है छापाखाना वाले जो शुतुरमुर्ग के बच्चों के समान तीव्र थे।

فُؤَادِيْ قَدْ تَاَذّٰى مِنْ اَذَاهُمْ وَقَلْبِيْ دُقَّ مِنْ قِيْلٍ وَّقَالٍ

मेरे हृदय ने उनके कष्टों से दुख उठाया है और मेरा दिल उनकी बातों से तोड़ दिया गया है।

اَطَالُوْا اَلْسُنَ التَّذْمِيْمِ ظُلْمًا فَاُمْرِرْنَا كَاِمْرَارِ الْحِبَالِ

उन्होंने अत्याचार करते हुए मेरा अपमान किया है अतः हम रस्सियों को बल देने के समान बल दिए गए हैं।

وَقَالُوْا كَاذِبٌ يُؤْذِى الْاُنَاسَا وَ يَعْلَمُ مَنْ يَّرَانِيْ سِرَّ حَالِيْ

और उन्होंने कहा कि झूठा है जो लोगों को कष्ट देता है हालांकि मुझे देखने वाला ख़ुदा मेरी हालत के रहस्य से भली-भांति अवगत है।

وَ مَلَـأُوْا كُلَّ قِرْطَاسٍ بِذَمِّيْ فَاَصْبَحْنَا كَمَجْرُوْحِ الْقِتَالِ

और उन्होंने हर काग़ज़ को मेरी बुराई से भर दिया है अतः हम युद्ध के घायल के समान हो गए।

وَمَا خَافُوْا عِقَابَ اللّٰهِ رَبِّيْ اِذَا مَا جَاوَزُوْا سُبُلَ اعْتِدَالِ

और वह मेरे रब अल्लाह के दंड से नहीं डरे जबकि उन्होंने न्याय के मार्गो से आगे बढ़ गए।

فَسَلْ هُمْ اَيْنَ آتَمْ فِي النَّصَارٰى اَرُوْنِيْ فِي الْجُمُوْعِ اَوِ الْعِيَالِ

अतः उनसे पूछ कि ईसाइयों में से आथम कहां है? मुझे वह सभाओं में या उसके परिवार में दिखाओ।

اَمَا مَاتَ الَّذِیْ زَعَمُوْہُ حَیًّا اَمَا دُفِنَ الْمُکَذِّبُ فِی الدِّحَالِ

क्या वह मर नहीं गया जिसको उन्होंने जीवित समझा था? क्या झूठा गढ़े में दफ़न नहीं कर दिया गया ?

اَمَا شَاھَتْ وُجُوْہُ الْمُنْکِرِیْنَ فَقُوْمُوْا وَاشْھَدُوْا لِلّٰہِ لَا لِیْ

क्या इन्कार करने वालों के मुख काले नहीं हो गए? तुम उठो और ख़ुदा के लिए गवाही दो न कि मेरे लिए।

وَلَمْ یَقْتُلْہُ مِنْ اَمْرِیْ ثُبُوْنٌ وَلٰکِنْ جَذَّہٗ حِبٌّ قَلَا لِیْ

उसे किसी गिरोह ने मेरे आदेश से कत्ल नहीं किया लेकिन उसका उन्मूलन कर दिया है मेरे महबूब ने, जो मेरे लिए उसका शत्रु हुआ।

بَدَتْ آیَاتُ رَبِّیْ مِثْلَ شَمْسٍ فَمَا بَقِیَ الظَّلَامُ وَلَا اللَّیَالِیْ

मेरे रब के निशान सूर्य के समान प्रकट हो गए हैं अत: न अंधकार शेष रहा है न ही रातें।

سِھَامُ الْمَوْتِ مَاطَاشَتْ بِمَکْرٍ وَاِنَّ اللّٰہَ یُخْزِیْ کُلَّ غَالِیْ

मौत के तीर किसी बहाने से चूक नहीं गए। और ख़ुदा हर अति करने वाले को अपमानित करता है

تَوَفّٰی کَاذِبًا رَبٌّ غَیُوْرٌ وَمَا آوَاہُ اَحَدٌ مِّنْ مَّوَالِیْ

स्वाभिमानी रब ने झूठे को मृत्यु दे दी और उसके मित्रों में से कोई उसे शरण न दे सका

تُوُفِّیَ وَالسُّیُوْفُ مُسَلَّلَاتٌ عَلٰی اَمْثَالِہٖ مِنْ ذِی الْجَلَالِ

वह मर गया इस हाल में कि मौत की तलवारें और उस जैसों पर महा प्रतापी ख़ुदा की ओर से खींची हुई हैं

تَجَلّٰی صِدْقُنَا وَالصِّدْقُ یَجْلُوْ فَاَشْرَقْنَا کَاِشْرَاقِ اللَّآلِیْ

हमारा सच प्रकट हो गया और सच्चाई प्रकट होकर ही रहती है अत: हम मोतियों के चमकने के समान रोशन हो गए।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَیْنَا یَا ابْنَ ضِغْنٍ وَخَفْ سُوْءَ الْعَوَاقِبِ وَالْمَآلِ

अत: हे द्वेष करने वाले हमारे विरुद्ध जल्दी न कर और बुरे परिणामों और बुरे

अंजाम से डर।

نَزَلْنَا مَنْزِلَ الْاَضْيَافِ مِنْكُمْ   فَنَرْجُوْ اَنْ تَقُوْلُوْا لِیْ نَزَالِ

हम तुम्हारे पास मेहमानों के समान उतरे हैं अत: हम आशा रखते हैं कि तुम लोग मुझे कहो आइए पधारिये।

وَلِیْ فِیْ حَضْرَةِ الْمَوْلٰی مَقَامٌ   وَشَأْنٌ قَدْ تَبَاعَدَ مِنْ خَيَالِ

और कृपालु ख़ुदा के समक्ष मेरा एक उच्च स्थान है और ऐसी शान है कि विचारों से उच्चतर है

وَصَافَانِیْ وَ وَافَانِیْ حَبِيْبِیْ   وَاَرْوَانِیْ بِكَأْسَاتِ الْوِصَالِ

मेरे प्यारे ने मुझ से प्रेम किया और वह मुझे मिला और मुझे मिलने के सौभाग्य से तृप्त किया।

اَرَانِی الْحُبُّ مَوْتِیْ بَعْدَ مَوْتِیْ   وَاَنْأَی تُرْبَتِیْ فَبَدَا زُلَالِیْ

(ख़ुदा के) प्रेम ने मुझे मौत के बाद मौत दिखाई और मेरी गन्दगी को (मुझसे) दूर कर दिया है तो मेरी शुद्धता प्रकट हो गई

وَجَدْنَا مَاوَجَدْنَا بَعْدَ وَجْدٍ   وَاِقْبَالِیْ اَتٰی بَعْدَ الزَّوَالِ

हमने जो कुछ भी पाया है दुख के बाद ही पाया है और मेरा इकबाल मेरे मिटने के बाद आया है।

اِذَا اَنْكَرْتُ مِنْ نَفْسِیْ بِصِدْقٍ   فَوَافَانِیْ حَبِيْبِیْ رَوْحُ بَالِیْ

जब सच्चाई के साथ मैंने अपनी इच्छआओं के अनुसरण से इंकार कर दिया तो मेरा प्रिय जो मेरे हृदय का आराम है मेरे पास आ गया।

اَطَعْتُ النُّوْرَ حَتّٰی صِرْتُ نُوْرًا   وَلَا يَدْرِیْ خَصِيْمٌ سِرَّ حَالِیْ

मैंने नूर की पालना की यहां तक कि स्वयं नूर हो गया। और झगड़ने वाला दुश्मन मेरे हाल के भेद से अवगत नहीं

طَلَعْتُ الْيَوْمَ مِنْ رَبٍّ رَحِيْمٍ   وَجَلَّتْ شَمْسُ بَعْثِیْ فِی الْكَمَالِ

मैंने आज कृपालु ख़ुदा की ओर से उदय किया है और मेरे अवतरण का सूर्य पूर्ण होकर प्रकाशित हुआ है

فَلَا تَقْنَطْ مِنَ اللّٰهِ الرَّءُوْفِ   وَقُمْ وَبِتَوْبَةٍ نَحْوِیْ تَعَالِ

अत: मेहरबान ख़ुदा की ओर से निराश मत हो, उठ और तौब: के साथ मेरी ओर आ।

قَرَيْنَا مِنْ كَمَالِ النُّصْحِ فَاقْبَلْ   قِرَانَا بِالتَّهَلُّلِ كَالرِّجَالِ

हमने पूर्ण भलाई से तुम्हारा सत्कार किया है अत: हमारी मेहमानी को मुर्दों की तरह खुले दिल के साथ स्वीकार कर

وَخَيْرُ الزَّادِ تَقْوَى الْقَلْبِ لِلّٰهِ   فَخُذْ اِيَّاهُ قَبْلَ الْاِرْتِحَالِ

और दिल की बेहतरीन पूंजी ख़ुदा से डरना है अत: (दुनिया से) जाने से पहले उसे ले ले

وَفَكِّرْ فِيْ كَلَامِيْ ثُمَّ فَكِّرْ   وَلَا تَسْلُكْ كَمَرْءٍ لَا يُبَالِيْ

और मेरी बातों पर विचार कर, फिर विचार कर और ऐसे आदमी का तरीका न अपना जो कि लापरवाही करता है।

फिर उलमा ने मुझे खूब गालियां दीं और मुझे अहमद बेग के दामाद के बारे में क्रोध करते हुए कष्ट दिया और उन्होंने कहा कि जैसा इल्हाम में वादा किया गया था और ताकीद की गई थी वैसे वह अवधि के अंदर नहीं मरा अपितु हम उसे बड़ा प्रसन्न और ऐश्वर्य का जीवन गुज़ारते हुए पाते हैं और हम उसमें जीवन की कमज़ोरी का कोई निशान नहीं पाते और न ही रोज़गार में कोई तंगी और वह अब तक जीवित सलामत मौजूद है। इसका उत्तर यह है कि जान लो कि इल्हाम दो भागों पर आधारित था। एक भाग अहमद बेग की मौत के बारे में और एक भाग उसके दामाद के बारे में था जिसे वह अपनी आंखों की ठंडक के तौर पर समझता था। तो अल्लाह ने पहले भाग को अवधि के भीतर पूरा कर दिया और जिस प्रकार ख़ुदा के इल्हाम में सूचना दी गई थी उसके अनुसार अहमद बेग मर गया और उसकी मौत के दुख से उसके परिवार वाले आग में पड़ गए और तेरे सामने उसकी मौत के विवरण प्रकट हो चुके हैं अत: तेरे लिए अनिवार्य है कि तू इस भाग की सच्चाई का विश्वास पूर्वक इक़रार करे।

जहां तक दूसरा भाग है जो उसके दामाद और उसकी मौत के बारे में है तो उसकी मौत में विलंब तेरे हृदय में न खटके क्यों कि यह ऐसी बात है जिसको तू समस्त घटनाओं का अवलोकन करने के बाद ही समझ सकता है। अत: जब

तुम समझ जाओगे तो तुम पर तुम्हारी ग़लती स्पष्ट हो जाएगी और तू इक़रार करेगा कि शैतान ने तुझे सच और वास्तविकता के मार्ग भुला दिए थे और तुझे सीधे रास्ते और समाज से दूर कर दिया और चाहा कि तुझे गुमराहों से मिला दे।

अब हम तेरे सामने पूरी घटना वर्णन करते हैं ताकि तू वास्तविकता से अवगत हो जाए और इस (सच्चाई) से हिस्सा पा ले और ताकि तू दृष्टि रखने वालों में से हो जाए। अतः जान ले कि अहमद बेग की पत्नी और उसका परिवार मेरे खानदान में से थे वह धर्म के मार्गों में मेरे तरीके को अपनाना नहीं चाहते थे अपितु बुराइयों और विभिन्न प्रकार की बिदअतों पर दु:साहस करते थे और वह उन बुराइयों और बिदअतों में सीमा से बढ़े हुए थे। अतः मुझे कृपालु ख़ुदा की ओर से इल्हाम किया गया कि यदि उन्होंने तौब: न की तो वह उन्हें अज़ाब देने वाला है और मेरे रब ने मुझे कहा कि यदि उन्होंने तौब: न की और रुजू से मना किया तो निस्संदेह हम उन पर आकाशों से आपदाएं उतारेंगे और उनके घरों को विधवाओं से भर देंगे। और उन्हें बहुत बुरी और अपमानित अवस्था में मृत्यु देंगे। और यदि उन्होंने तौब: की और सुधार किया तो हम भी उन की ओर कृपा के साथ लौटेंगे और जो दंड देने का हम ने इरादा किया है उसमें बदल देंगे। अतः वे खुशी-खुशी जो चाहते हैं पाएंगे। अतः मैंने हुज्जत पूरी करने के लिए उन्हें नसीहत की और मैंने कहा कि अपने क्षमा करने वाले रब से क्षमा मांगो परंतु उन्होंने मेरी बात नहीं सुनी और मेरी शत्रुता में बढ़ गए तो मैंने उचित समझा कि इस बारे में एक विज्ञापन प्रकाशित करूं संभव था कि वह संयम धारण करें और सदमार्गों की ओर लौट आएं और संभवतः वह इस्तिग़फ़ार करने वालों में से बन जाए।

अतः मैंने वह विज्ञापन प्रकाशित किया जबकि मैं होशियारपुर में था परंतु उन्होंने लापरवाही करते हुए पीठ पीछे फेंक दिया और वह इस मामले में पहला विज्ञापन था और बाकी विज्ञापन जो इस विज्ञापन के बाद प्रकाशित किए गए वह इस विज्ञापन के लिए विस्तार और स्पष्टता के साथ ख़बर देने और पिछली संकलित पंक्तियों के विवरण के समान है और तू जानता है कि इस विज्ञापन की चेतावनी तौबा की शर्त के साथ बंधी हुई थी न कि अटल और बिना मोहलत दिए अवतरित होने

वाले दंड के समान थी और यदि तू चाहे तो मेरा 1886 ई० वाला विज्ञापन जो इस उद्दंड गिरोह का अहंकार तोड़ने के लिए था पढ़ ले। अत: जब वह इस विज्ञापन के बाद भी न रुके और बरबादी का मार्ग न छोड़ा तो अल्लाह ने इस गिरोह के लिए जबकि मैं सोने और जागने की बीच-बीच की अवस्था में था अर्थात तन्द्रावस्था में था कुछ बातों की मुझे सूचना दी और यह कश्फ़ दूसरी बार इस इल्हाम का विवरण था। और उसका विवरण यह है कि मैं सोना चाहता था जब मेरे सामने अहमद बेग की पत्नी की मां प्रकट हुई और मैंने उसे ऐसी अवस्था में देखा है जिसने मुझे दुखी कर दिया और मुझ पर कपकपाहट छा गई और वह यह कि मैंने उसे मुलाकात के समय अत्यंत घबराहट में पाया और उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे तो मैंने उसे कहा: हे औरत तौब: कर! तौब: कर! क्योंकि तेरी नस्ल पर मुसीबत आने वाली है अर्थात तेरी बेटी और नवासी पर, फिर मुझ से वह तन्द्रावस्था जाती रही और मुझे अपने रब की ओर से समझ प्रदान हुई कि यह सर्वज्ञानी ख़ुदा की ओर से पहले इल्हाम का विवरण है।

और عَقِبَ (अर्थात् तेरे पीछे) के अर्थ के बारे में मेरे हृदय में प्रतिफल और दंड के मालिक अल्लाह की ओर से ही डाला गया कि यहां भाव उसकी बेटी और नवासी है न कोई और बच्चा और मेरे दिल में डाला गया कि बला से भाव दो मुसीबतें हैं एक वह मुसीबत जो उसकी बेटी पर आने वाली है और दूसरी वह जो उसकी नवासी पर आएगी और यह दोनों सर्वोत्तम निर्णायक★ (ख़ुदा)

★**हाशिया:-** अहमद बेग की मौत से पहले अपितु समस्त घटनाओं के प्रकाशन से पहले यह कश्फ़ (तन्द्रावस्था) मुझसे होशियारपुर के स्थान पर एक बुज़ुर्ग अब्दुल्ला गज़नवी की संतान में से एक व्यक्ति ने सुना और जैसा कि तू जानता है वह एक संयमी का बेटा था और अब मैं विचारों के मतभेद तथा परिवर्तन के सका नाम भूल गया हूं जबकि उसका चेहरा पहचानता हूं। संभवत: उसका नाम अब्दुर् रहीम या अब्दुल वाहिद था और मुझे विश्वास है कि वह पूछने पर इससे इन्कार नहीं करेगा। अल्लाह बेहतर जानता है जो हृदय में है और अधिक जानता है जो ब्रह्माण्ड में है और उसके साथ दूसरे गवाह भी हैं जो वहां उपस्थित थे मेरा विचार है कि उनमें से एक बाबू इलाही बख़्श अकाउंटेंट मुल्तानी था और मोहम्मद याक़ूब हाफिज़ मोहम्मद यूसुफ का भाई और उसके साथ मोहम्मद यूसुफ तथा अन्य बहुत से मुसलमान थे यदि मैंने उनमें से

की ओर से परस्पर एक समान हैं और जब मैंने शब्द عَقِبَ (अक़िब) के अर्थ खोजने के लिए अरबी शब्दकोश की ओर ध्यान किया तो अपनी दूरदर्शिता को सही तथा वर्णित अर्थों के अनुसार पाया। अत: मैंने अल्लाह का धन्यवाद किया जो इल्हाम प्राप्त लोगों की सहायता करने वाला है।

सारांश यह कि अल्लाह तआला ने इस कश्फ़ (तंद्रावस्था) में उस इरादे को स्पष्ट किया है जिस प्रकार के डराने तथा सचेत करने का उसने इरादा किया है और यह संकेत दिया है कि अहमद बेग की पत्नी और उसकी बेटी पर प्रकोपी ख़ुदा की ओर से मुसीबत आएगी और उसके साथ-साथ अल्लाह तआला ने तौबा और इस्तिग्फार करने की प्रेरणा दी है और उसके द्वारा संकेत दिया है कि अज़ाब रोने-गिड़गिड़ाने और गफ़्फ़ार ख़ुदा की ओर रुजू करने और लौटने से टल जाता है और अज़ाब केवल अवज्ञा, बेबाकी और हद से बढ़ने पर ही आता है और जो तौबा करे और क्षमा याचना करे तो उसके लिए ख़ुदा की रहमत में से हिस्सा है और उसे रुसवा करने वाला अज़ाब नहीं पकड़ता सिवाए इसके कि दुराचारी बन जाए। अत: यह कश्फ मैंने एक विज्ञापन में प्रकाशित कर दिया जैसा कि मैंने इससे पूर्व स्वचंछद लोगों की हिदायत के लिए अपना इल्हाम प्रकाशित किया था। फिर जब इस पर एक लंबा समय बीत गया तो मुझे प्रतिफल देने वाले अल्लाह की ओर से उनके बारे में तीसरी बार इल्हाम किया गया और यह इल्हाम एक नूर की तरह प्रकट हुआ और गुप्त रहस्य से समस्त परदे उठा दिए और यह इल्हाम पूर्व इल्हामों की विस्तृत व्याख्या तथा संक्षिप्त कश्फी शब्दों का विस्तार और सुनने वालों के लिए स्पष्ट वर्णन था।

और इसका विवरण यह है कि अल्लाह तआला ने हद से बढ़ने वाले मेरे निकट संबंधियों के बारे में मुझे संबोधित करके फ़रमाया- "उन्होंने मेरे निशान को झुठलाया और वे पहले से हंसी ठट्ठा कर रहे थे इसलिए ख़ुदा तआला उन सब से निपटने के लिए जो इस काम को रोक रहे हैं तुम्हारा सहायक होगा और

किसी का वर्णन करने में ग़लती की है तो अल्लाह मुझे क्षमा करे क्योंकि विश्वास के साथ मैं उन्हें सम्मिलित नहीं कर सकता और इस घटना पर ग्यारह साल बीत चुके हैं। इसी से।

अंततः उसकी इस लड़की को तुम्हारी ओर वापस लाएगा, कोई नहीं जो ख़ुदा की बातों को टाल सके। तेरा रब ऐसा सामर्थ्यवान है कि जो कुछ चाहे वही हो जाता है।" अतः अल्लाह ने "फसयकफीका हुमुल्लाह" (अल्लाह उनके लिए पर्याप्त होगा) के शब्दों में इस ओर संकेत किया है कि वह रोक डालने वालों को नष्ट करने के बाद अहमद बेग की बेटी को मेरी ओर लौटाएगा। और वास्तविक उद्देश्य (उनको) नष्ट करना था और तू जानता है इसी पर असल दारोमदार था जहां तक नष्ट होने वालों और नष्ट होने वालियों की तबाही के बाद मुझसे उसकी शादी का संबंध है तो इस निशान को मुश्किलें और कठिनाइयां डालकर सृष्टि की नजरों में महानता देना है या परोक्ष के ज्ञाता अल्लाह की ओर से अन्य हिकमतों के लिए या मुसीबतों में ग्रस्त मर्दों तथा औरतों के लिए रहम के तौर पर है क्योंकि वह (अल्लाह) घाव के बाद मरहम लगाता है और गम के बाद प्रसन्नता प्रदान करता है और नहीं चाहता कि अपने कमज़ोर बंदों को तबाह कर दे और उससे बढ़कर दानशील और रहमत करने वाला कौन है और वह सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

और इस बारे में मैं पहले विज्ञापन में रहीम और वह्हाब अल्लाह की ओर से संकेत पाता हूं क्योंकि उसने इस समूह पर आने वाले आज़ाबों और उनकी विधवाओं तथा उनकी विभिन्न मुसीबतों के वर्णन के बाद अपनी रहमत का वर्णन किया है इसलिए उसने मुझे इस प्रकार संबोधित किया कि मानो वह आने वाले दिनों में उन पर रहम करने की ओर संकेत कर रहा है। अतः अल्लाह ने फ़रमाया:- "ख़ुदा तुझे बहुत बरकतें प्रदान करेगा और एक उजड़ा हुआ घर तेरे द्वारा आबाद करेगा और एक डरावने घर को तेरे द्वारा बरकतों से भर देगा।" यह उस ज़माने की ओर संकेत है जो मुसीबतों के ज़माने के बाद उन पर आएगा। जब विज्ञापनों में कथित मुक़द्दर रिश्ते (संबंध) का समय आएगा और उस दिन हमारे रब की बात पूरी होगी और हमारे शत्रुओं के चेहरे काले होंगे और अल्लाह का वादा प्रबल होगा, चाहे वे नापसंद करते हों। निस्संदेह अल्लाह अपनी बात को पूरा करने पर समर्थ है और अल्लाह निस्संदेह दुराचारी क़ौम को रुसवा करता

है। अत: अल्लाह ने जैसा कि "फसयकफीकहुम" में वादा था, उस (लड़की) की शादी के बाद उनमें से 4 लोगों को मार दिया और मुसीबतों के भेड़िए ने उसकी बिदाई के बाद उन में तबाही फैला दी जैसा कि जानने वालों से छुपा नहीं। अत: अल्लाह ने उस लड़की के बाप और उसकी दो भुआओं और उसकी नानी को मार दिया और उनमें से हर एक बढ़-बढ़ कर बोलने वाला और हद से बढ़ने वाला था। जिनकी मौत (मुक़द्दर) है उन में से अब केवल एक शेष है। अत: अल्लाह के आदेश को देख कैसे वह धरती की ओर उसके किनारों से आया और उस घड़ी की प्रतीक्षा करो जिसमें वह अपनी कठोरता को पूर्ण करेगा क्योंकि वह अपने कथन को ग़लत सिद्ध नहीं होने देता और वह इल्हाम प्राप्त लोगों को रुसवा नहीं करता।

और जान ले कि 'फ़सयकफ़ीक हुमुल्लाह' में 'फ़' अक्षर रहमान ख़ुदा की ओर से उद्दंड लोगों के झुठलाने के वर्णन के बाद है, यह इस ओर संकेत था कि अज़ाब और दंड केवल झुठलाने और शत्रुता करने के समय आता है। अत: जब उन्होंने विवाह के बाद झुठलाया और हंसी ठट्ठा किया और मुझे भिन्न-भिन्न प्रकार के कष्ट पहुंचाए तो अल्लाह ने उसके बाप अहमद बेग को मार दिया और उन की हंसी को रोने में बदल दिया और उनको उस गम से ढक लिया जिसने यूनुस अलैहिस्सलाम की क़ौम को अज़ाब के लक्षण देखने के बाद ढक लिया था और मरने वाले की मौत तथा दामाद के बारे में भय ने उन्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की व्याकुलता में डाल दिया। जब उनकी स्त्रियों तक अहमद बेग की मौत की खबर पहुंची और वे उस खबर से पहले काफ़िर मर्द के समान थीं और घोर विरोधियों के समान थीं, उन्होंने अपने गरेबान फाड़ डाले और अपने आंसू बहाए और अपने गाल पीटे और अपनी शत्रुता को याद किया। और मुसीबतें टूट पड़ीं और मुसीबतों की मूसलाधार बारिश उन पर बरसी और धरती उनके पैरों तले से हिल गई। फिर उनके विचारों में (उनके) दामाद की मौत उभरने लगी। और कहने लगीं जबकि उनकी आंखों से आंसू बह रहे थे, कि यह वह है जिसका रहमान ख़ुदा ने वादा किया था और रसूलों ने सच कहा।

सारांश यह कि उन लोगों ने अपने दिलों में भय महसूस किया और विश्वास कर लिया कि निकट ही उनका दामाद अवश्य मर जाएगा जिस प्रकार कि उसका ससुर दंड का भागीदार होकर मर गया क्योंकि यह दोनों एक ही इल्हाम में एक साथ संबोधित थे और एक की मौत दूसरे के लिए गवाह के समान थी और इंसान का यह स्वभाव है कि वह वस्तुओं की वर्तमान अवस्थाओं को दूसरी वस्तुओं के हालतों पर अनुमान करता है जो किसी भी पहलू से उससे समानता रखती हों। अत: वह समझ लेता है कि भविष्य में होने वाली घटनाएं उसी प्रकार होंगी जैसे पहले उदाहरण देखे जा चुके हैं और मौजूदा हालात को देखकर आने वाले हालात का अनुमान लगाता है, इसी प्रकार विवेक रखने वालों की आदत होती है। अत: जब मेरे खानदान के सम्मुख अहमद बेग की मौत से एक उदाहरण प्रकट हुआ और एक बड़ी मिसाल प्रकट हो गई तो अत्यधिक रोने गिड़गिड़ाने के साथ-साथ वे बहुत डर गए और हंसी ठट्ठा करने और मज़ाक उड़ाने का तरीका भूल गए और उनकी ज़बान को लगाम लगा दी गई और वे भौचक्कों की तरह हो गए। और अपनी बकवास छोड़ दी और अपनी बातों पर लज्जित हुए और मुसीबत के मारों के समान उनकी गर्दनें झुक गईं।

और तूने जान लिया है कि यह इल्हाम उस खानदान को डराने के लिए था और चेतावनी तथा उसकी शर्त उस समूह के लिए थी और उनके दामाद का इस मामले से कोई संबंध न था। फिर यह उचित बात नहीं कि यह समझा जाए कि उनके दामाद का दिल पिछली बेबाकी पर अड़ा रहा बावजूद अपने ससुर की मौत देखने के जो मौत की भविष्यवाणी में उसका भागीदार था बल्कि गवाही देने वालों ने यह गवाही दी कि इस घटना के बाद वह अत्यंत भयभीत हुआ, निकट था कि इस मुसीबत को सुनकर उसकी जान निकल जाती और वह स्वयं के बारे में डरा और (अपने इस) विवाह को आसमानी मुसीबतों में से एक मुसीबत समझा। और यदि तू संदेह करता है तो जानने वालों, देखने वालों से पूछ ले।

सारांश यह है कि जब वे अहमद बेग की मौत के बाद डरे और उसकी मौत ने हर एक को भयभीत कर दिया और उन पर कपकपी तारी हो गई तो उनका

अधिकार था कि वे इल्हाम में (वर्णित) शर्त से लाभ उठाते क्योंकि अज़ाब के लिए शर्त थी न कि निश्चित आदेश, जैसा कि लोगों का भ्रम है। अत: "अहमद बेग" के घरवालों से पूछो कि मीआद के अंदर उसकी मौत के बाद उसकी विधवा होने वाली पत्नी पर क्या बीती और किस प्रकार उस पर मुसीबतें टूट पड़ीं और दिल पर गमों ने आक्रमण कर दिया और उसका न तो कोई सहानुभूति करने वाला मित्र बाकी रहा और न औलाद का कोई संरक्षक रहा और वह सुख समृद्धि तथा शानो शौकत वाली होने के बाद असहायों के समान बैठी रह गई और कैसे उसने आंसू बहाती हुई आंख और तड़पते दिल के साथ उसकी मौत की खबर सुनी और उस पर कैसी कैसी बीती। और उस मुसीबत के बाद उसे दामाद की मौत के भय ने खा लिया और उसने मीआद के दिन कांपते हुए गुज़ारे और उसी प्रकार उसकी मां और उसकी बहनें भी डर गईं और दामाद की मौत की फिक्र से घुल गईं और उन्होंने गम के प्याले पिए। और अपने समय को दुआओं, रोज़ों तथा दान दक्षिणा से भरने लगीं और ग़म से उनके आंसू थमते न थे और हर समय उनके दामाद की मौत उनके सामने मंडराती रही। यदि तुझे सन्देह है तो उस बस्ती के रहने वालों से पूछ।

सारांश यह है कि जब उन्होंने तौबा की (पश्चाताप किया) तो अल्लाह भी रहमत और क्षमा के साथ उनकी ओर आया जैसा कि यह हमेशा से ख़ुदा की सुन्नत में से एक सुन्नत है क्योंकि वह स्वयं अपनी *वईद* (भविष्यवाणी में वर्णित चेतावनी की शर्त-अनुवादक) को निरस्त नहीं करता और न न्याय के मार्ग को छोड़ता है और न ही हद से बढ़ने वालों के समान अत्याचार करता है। और तुझ पर अनिवार्य है कि तू मेरे पिछले विज्ञापनों को पढ़ और अपनी नज़र के सामने भिन्न-भिन्न स्थानों को इकट्ठा कर, जब तू ऐसा करेगा तो तू सही परिणाम तक पहुंच जाएगा और स्पष्ट शर्तों से अवगत हो जाएगा और ग़लती के तरीके और ग़लती करने वालों से मुक्त हो जाएगा। और तू जानता है कि इस मामले में मैंने तीन विज्ञापन भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रकाशित किए और इस मामले में हर इल्हाम के साथ शर्त थी जैसा कि पिछले बयान में मैं तेरे लिए वर्णन कर चुका हूं। क्या तुम्हें इसकी खबर नहीं मिली जो पिछले

सालों में मैंने प्रकाशित किया? अत: तुम भेड़ बकरियों या ऊँटों की तरह किधर जा रहे हो और बुद्धिमानों के समान विचार नहीं करते।

फिर मैंने यह नहीं कहा कि मामला इतने पर ही समाप्त हो गया और अंतिम परिणाम वही है जो प्रकट हो गया और इस परिणाम पर भविष्यवाणी की वास्तविकता समाप्त हो गई बल्कि मामला अपने स्थान पर ठहरा हुआ है और कोई उसे अपने बहाने से टला नहीं सकता और तक़दीर महान ख़ुदा की ओर से अटल तकदीर है और करीम ख़ुदा की कृपा से उसका समय आएगा। अत: उस हस्ती की क़सम जिसने हमारे लिए मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवतरित किया और आपको समस्त रसूलों तथा सृष्टि में से सर्वश्रेष्ठ बनाया, यह निस्संदेह सच्चाई है तू अवश्य देख लेगा। और मैं इस भविष्यवाणी को अपनी सच्चाई या झूठ जांचने की कसौटी बनाता हूं और मैंने अपने रब से खबर पाने के बाद ही यह कहा है और मेरे खानदान के लोग अवश्य एक बार फिर फसाद करने की ओर लौटेंगे और दुष्टता तथा शत्रुता में बढ़ते जाएंगे, तब उस दिन मेरे रब की ओर से मुक़द्दर तक़दीर उतरेगी, वह जो निर्णय कर ले उसे कोई टालने वाला नहीं और जो वह प्रदान करे उसे कोई रोकने वाला नहीं। और मैं उन्हें देख रहा हूं कि वे अपनी पहली हालत की ओर मुड़ गए हैं और उनके दिल कठोर हो गए हैं जैसा कि मूर्खों का स्वभाव है और वे भय के दिन भूल गए हैं और इन्कार तथा उद्दंडता करने की ओर लौट आए हैं **अत: अवश्य अल्लाह का आदेश आएगा जब वह देखेगा कि वे बढ़ते जा रहे हैं।** और अल्लाह किसी क़ौम को जबकि वे डर रहे हों, अज़ाब नहीं देता।

हे बढ़-बढ़ कर बातें करने वालो, झुठलाने वालो! तुम जान लो कि हमारी सच्चाई इस प्रकार चमकेगी जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश के साथ चमकता है और तुम्हारा झूठ बगदाद के इर्द-गिर्द तक फैल जाएगा। क्या तुम उसे रोक रहे हो जो अल्लाह तआला ने इरादा किया है? क्या तुम्हारी योजना आसमान की बुलंदियों तक पहुंच सकती है? अत: जो भी योजना तुम्हारे पास है वह कर गुज़रो और मुझे कष्ट देने में कोई ढील न दो और फिर रब्बुल आलमीन की सहायता को देखो। हसरत है इस ज़माने के उलमा पर! उनमें विवेक का नूर

शेष नहीं रहा और चिंतन मनन का दूध सूख गया है। हमने उन्हें सुनाने का बहुत प्रयत्न किया परंतु वे नहीं सुनते और हमने उनको पैग़ाम दिया परंतु वे स्वीकार नहीं करते और वे मेरी पुस्तकों को नापसंदीदगी से पढ़ते हैं और हमसे नफरत करते हुए दूर भागते हैं। हे बुद्धिमानो! तुम जानते हो कि यूनुस की क़ौम अज़ाब से बचा ली गई हालांकि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी में तौबा (प्रायश्चित) की शर्त नहीं थी और इसी कारण यूनुस अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला से नाराज़ होकर चले गए और आज़माइश के जंगलों में भटकते फिरे और इस घटना के आधार पर अल्लाह ने आपका नाम यूनुस रखा क्योंकि उन्हें मायूसी के बाद संतुष्टि प्रदान की गई और वह निराशा के बाद सफल हुए और सर्वाधिक दयालु ख़ुदा ने उन्हें नष्ट होने से बचा लिया। यह सब मुसीबत उन पर केवल इसलिए आई कि रहमान ख़ुदा की भविष्यवाणी में कोई शर्त मौजूद न थी और यदि उन्हें किसी शर्त का ज्ञान होता तो वह नाराज़ होकर वहां से भाग न जाते और न मदहोशों के समान भटकते फिरते और जब हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम ने ग़लतफहमी के आधार पर दृढ़ता और धैर्य को त्याग दिया और वहां से चले गए तो अल्लाह तआला ने आपको मछली के पेट में पहुंचा दिया। फिर उस मछली ने आपको एक सूखे और चटियल मैदान में फेंक दिया और यह सब कठिनाइयां उन पर इसलिए आ पड़ीं क्योंकि उन्होंने अपने स्थान को छोड़कर संकीर्ण विचारधारा का प्रदर्शन किया और अपने स्थान को सर्वज्ञानी ख़ुदा के आदेश के बिना छोड़ दिया और जल्दबाज़ों जैसा रवैया अपनाया। अल्लाह तआला का उन्हें मछली के पेट में पहुंचाना उस नाराज़गी की ओर संकेत करने के लिए था जो आप से परेशान लोगों के समान घटित हुई। इसीलिए अल्लाह तआला ने आपका नाम ज़ून्नून रखा क्योंकि आप से "नून" अर्थात जल्दीबाज़ी प्रकट हुई थी और दिल में भरे हुए क्रोध का प्रदर्शन हुआ। हालांकि किसी को रब्बुल आलमीन ख़ुदा से नाराज़ होना उचित नहीं।

अत: सारांश यह है कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का वृतांत जो सर्वशक्तिमान ख़ुदा की पुस्तक में वर्णन हुआ है इस बात का प्रमाण है कि

कभी-कभी अल्लाह तआला का अज़ाब बिना किसी शर्त के जो भविष्यवाणी में वर्णित हो विलंबित कर दिया जाता है जैसा कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के प्रचार-प्रसार के बाद अज़ाब को विलंबित कर दिया गया। अत: उस भविष्यवाणी के घटित होने में विलंब का हो जाना, जिसमें रुजू (लौटने) की शर्त भी पाई जाती हो क्योंकर आपत्ति के योग्य ठहर सकता है? अत: ख़ुदा से डरते हुए विचार करो और अपने संयम और धर्म को न भूलो। हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का क़िस्सा पवित्र क़ुरआन, पूर्व पुस्तकों और नबी करीम की हदीसों में मौजूद है और वहां दंड के वर्णन के साथ किसी शर्त का वर्णन नहीं। और अगर तुम इस बात को मानने के लिए तैयार न हो तो तुम पर अनिवार्य है कि इस क़िस्से में कोई शर्त हमें दिखाओ। आंखें रखने के बावजूद अंधे न बनो और जान लो कि इस क़िस्से में कदापि कोई शर्त मौजूद नहीं थी। और इसीलिए हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम आज़माइश में डाले गए और मलामत का पात्र बने। आप पर बहुत से गम आए और आपको दिल की तंगी ने पकड़ लिया यहां तक कि आप मौत के निकट पहुंच गए और समस्त पूर्व कठिनाइयों को भूल गए और उन्होंने विश्वास कर लिया कि वह बहुत बड़ी आज़माइश में डाले गए हैं। आपका आज़माइश में पड़ने का कारण सिवाय इसके और कुछ नहीं था कि आप ने यह समझा कि अज़ाब निश्चित और अटल है और यह कि वह अज़ाब आपकी इच्छा के अनुसार निर्धारित समय पर अवश्य आएगा परंतु निर्धारित समय बीत गया और उन्होंने अज़ाब की गंध तक भी न सूंघी और न वह चैन-सुकून को महसूस कर सके। अत: इस घटना की आपबीती ने उन्हें व्याकुल कर दिया और चिंताओं ने उनको घेर लिया और क्योंकि वह अपनी क़ौम की इस हालत को देख चुके थे कि वे झगड़े में हद से बढ़ गए और उन्होंने इन्कार करने में जल्दबाज़ी से काम लिया है। इस पर उन्होंने समझ लिया कि वह अपनी क़ौम के मुक़ाबले में हार गए हैं। अत: उन्होंने निर्णय कर लिया कि मैं झूठा बन कर अपनी क़ौम के पास वापस नहीं जाऊंगा और न ही उपद्रवियों की लानतान सुनूंगा। आप को कोई मार्ग न सूझा जिसे अपनाते, लाचार आपने स्वयं को ठाठें मारते हुए समुद्र

में डाल दिया परंतु ख़ुदा की रहमत ने आपको इस प्रकार बचा लिया कि उन्हें जब्बार ख़ुदा के आदेश से एक बड़ी मछली ने निगल लिया। और उन्होंने बड़े निराश दिल के साथ बहुत बड़ी मुसीबत उठाई। अत: ज्ञात हुआ कि यदि अज़ाब के उतरने में कोई शर्त होती तो यूनुस अलैहिस्सलाम इस व्याकुलता की अवस्था को न पहुंचते और लज्जित लोगों के समान अपनी कौम से दूर न भागते। क्या तुम पहले लोगों की पुस्तकों और हज़रत खातमुन्नबीय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन को नहीं पढ़ते? क्या तुम उन में कोई शर्त पाते हो? अगर तुम सच्चे हो तो उसे हमारे सम्मुख प्रस्तुत करो। अत: अब उन भविष्यवाणियों के बारे में तुम्हारी क्या राय है जिन्हें तौबा और रुजू (पश्चाताप तथा गुनाह को त्यागने) की शर्त से बांध दिया गया है? क्या यह आवश्यक नहीं कि अल्लाह तआला अपनी रहमत और कृपा के साथ निर्धारित शर्तों का पास रखे? हमने तेरे सम्मुख इस किस्से का विवरण वर्णन कर दिया है और तुम पर विवेक तथा विश्वास के द्वार खोल दिए हैं तुम्हें क्या हो गया है कि तुम सच्चाई को विवेक की आंख से नहीं देखते और मक्खियों के समान गंदगी पर जा गिरते हो और शहद तथा मिठाई से मुंह मोड़ते हो और तुम झूठ तथा ग़लत बयानी की अतिशयोक्ति की ओर दौड़ते हो और पवित्र चीज़ों का स्वाद नहीं चाहते और बुरी चीज़ों पर मरते हो और सच्चाई तथा धर्म को ग़लत ठहरा कर तुम प्रसन्न हो और तुमने उस प्रतिफलदाता के आदेश को जिसके उपकारों ने ब्रह्मांड को ढका हुआ है, फेंक दिया।

بِوَحْشِ الْبَرِّ يُرْجَى الْاِئْتِلَافُ   وَكَيْفَ الْاِئْتِلَافُ بِمَنْ يَّعَافُ

जंगल के जानवरों से मित्रता की आशा की जा सकती है परन्तु उससे कैसे मित्रता हो सके जो नफरत रखता है?

قرينا المُعرضين بطيّباتٍ   فردّوا ما قرينا هم وَعافوا

हमने विमुख होने वालों की पवित्र वस्तुओं से आवभगत की तो उन्होंने हमारी आवभगत को ठुकरा दिया और घृणा की।

بِحُمْقٍ يَّحْسَبُوْنَ الدَّرَّ ضَرًّا   وَاَجْيَافُ الْفَسَادِ لَهُمْ جُوَافُ

मूर्खतावश वे दूध को हानिकारक समझते हैं और फसाद के मुर्दे उनके निकट मछली हैं।

فَمَا اَرَدَی الْعِدَا اِلَّا اِبَاءٌ   وَظَنُّ السَّوءِ فِيْنَا وَاعْتِسَافُ

शत्रुओं को सिवाए इन्कार करने और हमसे कुधारणा तथा अत्याचार के, किसी चीज़ ने नष्ट नहीं किया।

كِلَابُ الْحَيِّ قَدْ نَبَحُوْا عَلَيْنَا   وَلَا يَدْرُوْنَ حِقْدًا مَّا الْعَفَافُ

क़बीले के कुत्ते हम पर भौंकते हैं और वे द्वेष के कारण नहीं जानते कि परहेज़गारी क्या चीज़ है।

وَقَدْ صِرْنَا حُدَيَّا النَّاسِ طُرًّا   وَبُرْهَانِيْ لِمُرَّانِيْ ثِقَافُ

हम समस्त लोगों से मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए और मेरी दलील मेरी बर्छी की नोक बन गई।

اَرَى ذُلًّا بِسُبْلِ الْحَقِّ عِزًّا   وَوَهْدِيْ فِيْ رِضَا الْمَوْلٰى شِعَافُ

मैं ख़ुदा तआला के मार्ग में अपमान को सम्मान समझता हूं और ख़ुदा की रज़ामंदी में मेरी निचली धरती (अर्थात् मेरी विनम्रता) पहाड़ की चोटियों (के समान) है।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْزِيْنِ اَبَدًا   اَنَا الْبَازِى الْمُوَقَّرُ لَا الْغُدَافُ

और निस्संदेह अल्लाह मुझे कदापि अपमानित नहीं करेगा क्योंकि मैं सम्मानित बाज़ (अर्थात् साहसी बाज़) हूं न कि काला कौवा।

فَمَا لِلْعَالِمِيْنَ نَسُوْا مَقَامِيْ   قُلُوْبٌ فِيْ صُدُوْرٍ اَوْ وِحَافُ

उलमा को क्या हो गया है कि मेरा मुक़ाम (स्थान) भूल गए उनके सीनों में दिल हैं या काले पत्थर?

وَقَامُوْا كَالسِّبَاعِ لِهَتْكِ عِرْضِيْ   وَمَابَقِيَ الْوِفَاقُ وَلَا الْوِلَافُ

वह मेरे मान सम्मान को चोट पहुंचाने के लिए हिंसक पशुओं के समान खड़े हुए और उनके बीच न तो सौहार्द रहा और न ही प्यार।

وَلَا يَدْرُوْنَ مَاحَالِيْ وَقَالِيْ   فَاِنَّ مَقَامَنَا قَصْرٌ نِيَافُ

और वे मेरे हालात को तथा जो मैं कहता हूँ उसको नहीं जानते क्योंकि हमारा मुकाम एक ऊंचा महल है।

تَرَاهُمْ مُّفْسِدِيْنَ مُكَذِّبِيْنَا   وَسِيْرَتُهُمْ عُنُوْدٌ وَّانْتِسَافُ

तू उनको फसादी तथा झुठलाने वाला पाता है और उनका चाल-चलन गुमराह और

केवल बातें बनाना है।

فَمِنْ كُفْرَانِهِمْ ظَهَرَ الْبَلَايَا   وَقَحْطٌ ثُمَّ ذَافٌ وَّانْجِعَافُ

उनकी नाशुक्री के कारण मुसीबतें और अकाल पड़े, फिर महामारी और बर्बादी।

وَاِنَّ الْمُلْكَ اَجْدَبَ مَعَ وَبَاءٍ   وَيُرْجٰى بَعْدَهُ سَبْعٌ عِجَافُ

और निस्संदेह देश में अकाल पड़ गया और महामारी भी है और उसके बाद 7 वर्ष के अकाल का भय है।

اِذَا مَا جَاءَ اَمْرُ اللّٰهِ مَقْتًا   فَلَا اَعْنَابَ فِيْهِ وَلَا السُّلَافُ

जब ख़ुदा का आदेश (उसके) क्रोध के कारण आएगा तो न देश में अंगूर रहेंगे और न अंगूर का रस।

وَهٰذَا كُلُّهٗ مِنْ سُوْءِ عَمَلٍ   وَبِرٍّ ضَيَّعُوْهُ وَمَا تَلَافَوْا

और यह सब दुराचार और इस बात का परिणाम है कि उन्होंने भलाई को नष्ट कर दिया और उसकी भरपाई न की।

فَتُوْبُوْا اَيُّهَا الْغَالُوْنَ تُوْبُوْا   وَاَرْضُوْا رَبَّكُمْ تَوْبًا وَّصَافُوْا

अत: हे बढ़-बढ़ कर बातें करने वालो! तौबा करो, तौबा करो और तौबा से ख़ुदा को राज़ी करो और निष्ठावान बन जाओ।

وَخَافَ اللّٰهَ اَهْلُ الْعِلْمِ لٰكِنْ   غَوِيٌّ فِي الْبَطَالَةِ لَا يَخَافُ

ज्ञानी लोग ख़ुदा से डरते हैं परंतु बटाला शहर में एक गुमराह है जो नहीं डरता।

لَهٗ شِيَمٌ كَاَنَّ الْبِيْشَ فِيْهَا   وَمَعَهَا عُجْبُهٗ سَمٌّ زُعَافُ

उसकी ऐसी आदतें हैं मानो उसमें मीठे तेलिए (सिंघिया) का विष है और उसके साथ ही उसका अहंकार एक घातक विष है।

لَهٗ عِنْدَ اللُّبَانَةِ كُلُّ مَيْلٍ   وَتَلْبِيَةٌ بِطَوْعٍ وَّالطَّوَافُ

आवश्यकता के समय तो उसमें पूरा मैलान (झुकाव) है और हाँ में हाँ मिलाना और आगे-पीछे चक्कर काटना है।

وَلَمَّا حَازَ مَطْلَبَهٗ وَاَقْنٰى   فَبَارٰى كَالْعِدَا وَبَدَا الْخِلَافُ

और जब उसने अपना मतलब निकाल लिया और उसे पा लिया तो शत्रु के समान मुक़ाबले पर आ गया और विरोध स्पष्ट हो गया।

عَلَى الْاِسْلَامِ هٰذَا الرَّجُلُ رُزْئٌ وَمَقْصَدُهٗ فَسَادٌ وَّ ازْدِهَافٌ

यह व्यक्ति इस्लाम के लिए एक मुसीबत बना हुआ है और उसका उद्देश्य उपद्रव फैलाना तथा झूठ बोलना है।

फिर उलमा के ऐतराजों तथा सन्देहों में से जो उन्होंने अज्ञानियों में फैलाए एक यह है कि उन्होंने कहा कि यह व्यक्ति न तो अरबी भाषा जानता और न ही फारसी में से कुछ जानता है, तो फिर भला अरबी भाषा की शैलियाँ कैसे जान सकता है? फिर भी उन्होंने अपनी प्रशंसा की और दावा किया कि हम ही प्रचंड विद्वानों में से हैं और कहा कि सुसज्जित तथा सुन्दर इबारतें और अछूते कसीदों (काव्यों) में से जो कुछ उसने अरबी भाषा में लिखा है वह उसका स्वयं का लिखा नहीं, न उसका स्वभाव उन इबारतों के मोतियों तथा जवाहरात का सीप (सीपी) है बल्कि यह शामियों (अर्थात सीरिया के रहने वालों) में से किसी व्यक्ति ने लिखे हैं और उसने इस काव्य को लिखने के लिए मेहनताना लेने वालों के समान बहुत माल लिया है। अत: यदि यह सच्चा है तो अब उस व्यक्ति के जाने के बाद लिख कर दिखाए।

अत: अफसोस है उन पर! वे संदेहों की नींद से जागते नहीं और न नज़रों को सच्चाई तथा सही चीज़ के बगीचों में छोड़ते हैं और न न्याय करने वालों का मार्ग अपनाते हैं। उन्होंने अल्लाह को हीन वस्तुओं तथा छोटी-छोटी इच्छाओं के लिए त्याग दिया है। अत: कब तक वे सुख सुविधाओं से युक्त लोगों के समान जीवन व्यतीत करेंगे? वे कुत्ते के पिल्ले की तरह बंद आंखों से देखने की कोशिश करते हैं परंतु देख नहीं सकते। उनमें से कुछ, कुछ से मूर्खता में समानता रखते हैं और वे परस्पर एक समान हैं और जब उनसे कहा जाए कि जो सच्चाई खुल गई है और जो चंद्रमा प्रकाशमान हो गया है उसकी ओर आओ तो उनके दिल तंगी महसूस करते हैं और वे नफरत करते हुए भाग जाते हैं। यही वे लोग हैं जिनके पर्दे अल्लाह ने फाड़ दिए और उनकी आंखों को धुंधला दिया है। अत: तू उन्हें अंधों के समान देखता है। वे चाहते हैं कि वे धरती में उसके सुधार के समय उपद्रव फैलाएं और उन्होंने धर्म और अमानत को टुकड़े-टुकड़े कर दिया

है। जब उनसे उनके कर्मों के बारे में पूछा जाएगा तो क्या उनकी बातें उनको लाभ देंगी या जब उनका उपद्रव प्रकट हो जाएगा तो उन्हें उनकी ग़लत बयानी कोई लाभ देगी? वे अपने दिलों का राज़ जानने वाले (ख़ुदा) से नहीं डरते और अपने छोटे-बड़े गुनाहों से बाज़ नहीं आते और हद से बढ़ते हुए धरती में उपद्रव मचाते हैं। वे अल्लाह के आदेशों को त्यागते हैं और परवाह नहीं करते और वे अपने अहंकार की धुन में चलते हैं और परवाह नहीं करते, बुराइयों का इरादा करते हैं और उनसे नहीं रुकते। क्या वे यह समझते हैं कि वे दुनिया तथा उसकी मौज मस्ती में छोड़ दिए जाएंगे और क़यामत तथा उसके प्रतिफल की ओर हांक कर नहीं ले जाए जाएंगे और उपद्रवियों के समान पकड़े नहीं जाएंगे? क्या वे समझते हैं कि वे अपने निगरान की निगाह में और अपना हिसाब लेने वाले की निगाह के नीचे नहीं हैं? क्या अल्लाह उसे नहीं जानता जो वे बेईमानों के समान करते हैं।

वे शैतान के जंगल में प्रवेश करते हैं और रहमान के बाग को छोड़ते हैं और वे सच्चाई के पास से हंसी-ठट्ठा करते हुए गुज़रते हैं और जब उनसे कहा जाता है कि सच्चाई को स्वीकार कर लो जिस प्रकार उलमा ने स्वीकार किया है और मेरे पास आओ जिस प्रकार संयमी आ गए हैं, तो वे अपने गालों को अहंकारियों के समान फुला लेते हैं और कहते हैं कि अगर यह सच्चा है झूठा नहीं तो क्यों शामी (अर्थात सीरिया वाले) के जाने के बाद उसने कोई किताब नहीं लिखी? यदि यह लेखक है तो अब उसके जाने के बाद हमारे पास कोई किताब लाए।

अतः अब हम आए हैं ताकि हम उन (पुस्तकों) का उदाहरण प्रस्तुत करें बल्कि उनसे महानतम और अल्लाह तआला झूठों की योजनाओं को असफल करने वाला है और हमने यह पुस्तक लिखी है और उसे इसी प्रकार संकलित किया है जिस प्रकार पिछली पुस्तकों को संकलित किया था ताकि हम तर्क को तोड़ दें और उनकी जड़ काट दें और ताकि हम झूठ बोलने वालों के बहानों को टुकड़े-टुकड़े कर दें और यह मेरी ओर से अरबी में मानो अंतिम पुस्तक है

और मैंने इसमें अरबी के साहित्यिक मूल्य रखने वाले गद्य और उत्तम श्रेणी के काव्य लिखे हैं ताकि शोर करने वालों के शोर को दूर करने के लिए यह एक शक्तिशाली आवाज़ हो और ताकि हम झूठ गढ़ने वालों का घर उसकी बुनियादों से उखाड़ दें और उनके दिलों की गन्दगी को उसके स्थान में ही कुचल दें और ताकि हम बेबाकी करने वालों के मुँहों पर थप्पड़ मारें।

और निस्संदेह अरबी भाषा में बावजूद मेरे प्रयत्न की कमी तथा जिज्ञासा की कमी के मुझे जो श्रेष्ठता प्राप्त है वह मेरे रब की ओर से एक स्पष्ट निशान है ताकि वह लोगों पर मेरे ज्ञान और मेरे साहित्य को प्रकट करे। अत: क्या विरोधियों के गिरोहों में कोई है जो मेरे मुक़ाबले पर आए? और इसके साथ-साथ मुझे 40,000 शब्द अरबी भाषा के सिखाए गए और मुझे साहित्यिक ज्ञान पर पूर्ण प्रभुत्व प्रदान किया गया, बावजूद अधिकतर समय मेरी बीमारी और फुर्सत की कमी के। और यह मेरे रब की अनुकंपा है कि उसने मुझे बनी फुरात* से अधिक माहिर बनाया और मेरे वर्णन को मीठे पानी से अधिक मीठा बनाया और जिस प्रकार उसने मुझे मार्गदर्शक तथा महदी बनाया है उसी प्रकार मुझे सर्वोत्तम वक्ता बनाया है। कितने ही उत्तम साहित्यिक गुण मुझे प्रदान किए गए और कितने ही बहुमूल्य अछूते ज्ञान मुझे सिखाए गए। अत: जो अरबी भाषा का माहिर और उसे साहित्यकारों के समान उत्तम वर्णन का हुनर है यदि वह इन्कार करने वाले विरोधियों में से है तो मैं उसे मुक़ाबले के लिए बुलाता हूं।

और मैं गद्य तथा पद्य में श्रेष्ठता रखता हूं और मुझे उनमें सुबह के प्रकाश के समान प्रकाश प्रदान किया गया है और यह मनुष्य का काम नहीं, यह तो रब्बुल आलमीन का एक निशान है। अत: जिसने इसके बाद भी इन्कार किया और घर बैठा रहा और न मुझसे मुक़ाबला किया और न सामना किया तो निश्चित रूप से उसने मेरी सच्चाई पर गवाही दी, यद्यपि उसने गवाही को छुपाए रखा।

हाय अफसोस! उन लोगों पर जो मुझे इन्कार करते हुए याद करते हैं वे

---

* **बनी फुरात** से अभिप्राय अब्बासी वज़ीरों में से अबुल हसन अली, अबू अब्दुल्लाह जाफ़र, अबू ईसा इब्राहीम और उनके पिता मुहम्मद बिन मूसा बिन हसन बिन फुरात हैं। प्रकाशक

मेरे सम्मुख मैदान में क्यों नहीं आते? वे अपने स्थानों पर गधे के समान हेंकते हैं और एक योद्धा के समान नहीं निकलते। वे केवल बिना फल वाली शाखा के समान हैं या खजूर के ऐसे वृक्ष के समान जिस पर फल नहीं। फिर उसके बावजूद वे अज्ञानियों को धोखा देते हैं। वे तो केवल वीरान घर के समान हैं या गिरी हुई दीवारों के समान हैं। वे लोगों को वह सिखाते हैं जो वे स्वयं नहीं करते और ऐसी बात कहते हैं जिस का स्वयं पालन नहीं करते। उनकी आग बुझ गई और उनके अंगारे ठंडे पड़ गए और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी और उनकी कमज़ोरी के बाद उसने उन्हें तबाह कर दिया। अत: तू उन्हें मुर्दों के समान गिरे हुए पाता है न कि जीवित लोगों के समान। और इस देश में नौ उपद्रिवियों का गिरोह था और वे धरती में उपद्रव करते थे और नेक लोगों के मार्ग पर नहीं चलते थे और वे नेक नहीं थे। मैंने उन में अहंकार तथा इन्कार को ऐसे वाक्य के समान पाया जिसके विभिन्न घटकों की प्रासंगिकता है या ऐसी बीमारियों के समान पाया जो बर्बादी और कष्ट देने में परस्पर समान होती हैं और मैंने उन सब को हद से बढ़ने वाले शत्रुओं में से पाया।

और उनमें से एक व्यक्ति अमृतसरी है जिसे रुसुल बाबा कहा जाता है वह ऐसा व्यक्ति है जो सच्चाई और नेकी को नहीं पहचानता और हमारे निशानों का उसने अत्यधिक इन्कार किया और मूर्खों के समूह उससे मिल गए और वे गिरगिट के समान सूर्य के मुक़ाबले पर बैठ गए और दावा किया कि हम साहित्यकारों के समान तुम से मुक़ाबला करना चाहते हैं परंतु जिस प्रकार तुम चाहते हो वैसे हम तेरे पास नहीं आएंगे बल्कि तू हमारे पास अजनबियों के समान आ और जब तू आएगा तो हम मुक़ाबला करने वालों के समान मुक़ाबला करेंगे।

प्रारंभिक तौर पर मैंने मूर्खों के मुक़ाबले पर प्रयास करने को पसंद न किया और मेरे आंतरिक सम्मान ने मूर्खों की सभा में जाने से मुझे रोका। फिर मैंने सोचा कि जो शौचालय में जाता है उस पर कोई दोष नहीं। अत: जो कुछ उन्होंने कहा मैंने स्वीकार कर लिया और जिधर उनका झुकाव हुआ मैं भी झुक गया और मैंने उन्हें लिखा कि मैं तुम्हारे सभा में मुक़ाबला के लिए लिखना स्वीकार करता हूं।

अत: तुम पर भी अनिवार्य है कि तुम भी जैसे मैं तुम्हारी आंखों के सामने लिखूं वैसे ही लिखो या जो मैं लिखूं वह मुझे सुनाओ जैसा कि तुम्हें अपने ज्ञान का अहम है। अत: वे मौन हो गए और चुप हो गए मानो कि वे मुर्दों में से हैं। और उसके बाद एक विज्ञापन प्रकाशित किया गया और सूचनाएं प्रसारित कर दी गईं और हमने उन्हें कष्ट दिया और उन्हें क्रोध दिलाया परंतु वे कुछ अक्षर भी सही प्रकार से अदा न कर सकने वाले व्यक्ति के समान मौन रहे। और ऐसे व्यक्ति के समान मौन हो गए जो अपमान की धूल से धूमिल किया गया हो, अत: हम उनके यहां से सफल होकर लौटे। हाय अफसोस रुसुल बाबा पर! वह तव्वाब ख़ुदा से न डरा और उसने अपमान और तबाही देखी। उसने एक अग्नि भड़काई फिर उसे भय तथा व्याकुलता के कारण बुझा दिया और वह दुखों में भटकता रहा। फिर मौत के पंजे से डरा और हर प्रकार की बेबाकी को भूल गया परन्तु अहंकारियों जैसा स्वभाव नहीं छोड़ा।

اَلَا اَيُّهَا الْاَبَّارُ مِثْلَ الْعَقَارِبِ   اِلَامَ تُرِىْ كِبْرًا وَّ لَىَّ الشَّوَارِبِ

अनुवाद: हे बिच्छुओं के समान डंक मारने वाले! तू अहंकार तथा मूछों को ताव देना कब तक प्रदर्शित करता रहेगा।

وَمَا اَنْتَ اِلَّا قَطْرَةٌ تَحْتَ وَهْدَةٍ   فَلَا تَتَصَادَمْ بِالْبُحُوْرِ الزَّغَارِبِ

अनुवाद: तू तो उथले सागर में से एक बूंद की हैसियत रखता है ठाठें मारते हुए सागरों से टक्कर मत ले।

और उन 9 लोगों में से जिनकी ओर मैंने संकेत किया एक नीच व्यक्ति है जिसका नाम असगर (अर्थात छोटा) है और अपने गुमान में वह स्वयं को अकबर (अर्थात बड़ा) समझता है और निर्लज्जता पूर्वक झूठ गढ़ते हुए मेरा अपमान करता है और सभाओं एवं समारोहों में मुझे गालियां देता है। वह शीघ्र जान लेगा कि कैसे वह अपमानित किया जाता है। वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता है और पूर्णत: संयम के मार्ग पर नहीं चलता। वह काम वासनाओं की मोहरों को तोड़ना चाहता है, चाहे पापों के द्वारा ही क्यों न तोड़े और आनन्दों के फल

चुनना चाहता है, चाहे हराम वस्तुओं से ही क्यों न प्राप्त करे और इसी प्रकार के उसके मित्र हैं। और वह दोगली प्रवृत्ति में मुनाफिकों से भी आगे बढ़ गया है और बुरे स्वभाव में पक्का हो गया। यहां तक कि चुगल खोरी में अपने भाइयों से आगे निकल गया। मैं उसके शैतान को दूर करने का कोई मार्ग नहीं पाता सिवाय इसके कि मैं उसे आज़माइश के लिए बुलाऊं और मद्दे मुक़ाबिल के सम्मुख मुक़ाबला के लिए इच्छुक व्यक्ति के समान आऊँ ताकि अज्ञानी और विद्वान का स्पष्ट निर्णय हो जाए। वह मुझे अपने मुक़ाबले के लिए बुलाता था। अत: आज हम वैसे ही करके उसे राज़ी करते हैं जैसा वह चाहता है। मैंने कुछ साल पूर्व उसे संबोधित किया था ताकि उसके दिल पर गहरे बादल के समान जो कुछ छा गया है उसे दूर करूं तो मैंने कहा कि मेरे पास अभिलाषियों के समान आओ और मेरे ज्ञान से लाभान्वित हो। यदि हमने तुझे हल्के मींह वाले बादल के समान देखा या तुझसे थोड़ी सी भी श्रेष्ठता सिद्ध हो गई तो हम तुझ को और तेरे उत्तम वर्णन को मान जाएंगे और तेरी बुलंद शान की खूबियां फैला देंगे तब उसके बाद तेरे लिए वैध होगा कि तू हमारे लेख की त्रुटियां निकाले और वाक्य रचना की त्रुटियों पर हमारी पकड़ करे जैसा कि तू अज्ञानियों के समान विचार करता है। इसके अतिरिक्त हम तुझे उत्तम वक्ता और अरबी भाषा में प्रचंड समझेंगे और तेरे लिए हमारे लेख का अपमान करना और नुक्ताचीनी करना वैध होगा जो तेरे सिवा किसी और के लिए वैध न होगा। और लोगों के यहां विद्वानों तथा साहित्यकारों के समान तेरी प्रशंसा की जाएगी।

अपने ज्ञान तथा बुलंद मर्तबा को सिद्ध करने से पूर्व तेरा आरोप लगाने का तरीका केवल लज्जा को त्यागने वाले मूर्ख का स्वभाव है और ऐसे अंधे की आदत है जो प्रकाश को नहीं देखता। अत: वह प्रकाशमान दिन को अंधकारमय समझता है और मूसलाधार वर्षा को बिना पानी वाला बादल समझता है और यदि तू इस मैदान के मर्दों में से है और उस घर वालों का परम मित्र है तो दोष निकालने से पूर्व हमें अपनी वाक्य रचना का कमाल दिखा और इस किताब जैसी किताब लिख। फिर मेरे और अपने बीच बुद्धिमानों में से किसी एक को मध्यस्थ

बना। तो यदि उस मध्यस्थ ने तेरे कमाल और तेरे उत्तम वक्तव्य की गवाही दी और समझा कि तूने मेरे लेख से उत्तम लेख प्रस्तुत किया है और तुमने मेरे क्रम से उत्तम क्रम दिखाया है तो उसके बाद तुझे अधिकार होगा कि तू मेरे प्रयत्न को निरर्थक कहे और मेरे शुद्ध सोने को मिलावट युक्त घोषित करे और तू मेरे चमकदार मोती को अंधकारमय रात्रि के समान और मेरे स्पष्ट वर्णन को मिटे हुए मार्ग के समान समझे और तू मेरी त्रुटियों को सम्पूर्ण विश्व में फैला दे। और यदि तूने यह न किया, और तू कदापि नहीं कर सकेगा, तो लानत करने वालों की लानत से डर।

اَلَا لَا تَعِبْنِیْ کَالسَّفِیْهِ الْمُشَارِزِ   وَاِنْ کُنْتَ قَدْ اَزْمَعْتَ حَرْبِیْ فَبَارِزِ

सावधान! अज्ञानी योद्धा के समान मुझ पर दोष न लगा और यदि तूने मुझ से जंग करने का इरादा कर लिया तो मैदान में निकल।

وَاِنَّکَ تَذْکُرُنِیْ کَرَجُلٍ مُّحَقِّرٍ   وَتَلْمِزُنِیْ فِیْ کُلِّ اٰنٍ کَمَارِزِ

और निस्संदेह तू मेरा वर्णन एक घृणा करने वाले व्यक्ति की तरह करता रहता है और मुझ पर हर पल छिद्रानवेषी के समान आरोप लगाता रहता है।

وَاِنَّا سَمِعْنَا کُلَّ مَا قُلْتَ نَخْوَةً   اَتَحْسَبُ خَضْرَاءِیْ بِحُمْقٍ کَتَارِزِ

और निस्संदेह हमने सुन लिया है जो कुछ तूने अहंकार पूर्वक कहा है। क्या तू मेरी हरियाली को मूर्खतावश सूखी हुई चीज़ समझता है।

وَمَا کُنْتُ صَوَّالًا وَّلٰکِنْ دَعَوْتَنِیْ   وَقَدْ بَانَ اَنَّکَ تَزْدَرِیْنِیْ کَغَارِزِ

और मैं आक्रमण करना नहीं चाहता था परंतु तूने मुझे बुलाया और निस्संदेह प्रकट हो चुका है कि सुई चुभोने वाले की तरह तू मुझ पर दोष लगाकर दुख देता है।

وَلَا خَیْرَ فِیْ طَغْوَاكَ یَا ابْنَ تَکَبُّرٍ   وَیَفْقَأُ رَبِّیْ عَیْنَ دُوْنٍ مُّعَارِزِ

हे अहंकारी! तेरे हद से बढ़ने में कोई भी भलाई नहीं और मेरा रब कमीने शत्रु की आंख फोड़ देगा।

فَحَرِّجْ عَلٰی نَفْسٍ تُبِیْدُكَ وَاجْتَنِبْ   مَنَاهِجَ فَقْأٍ فَاجَئَتْكَ کَفَارِزِ

अतः अपने दिल को, जो तुझे नष्ट कर देगा, भली-भांति वश में कर ले और अंधेपन

के रास्तों से बच जो भटका देने वाले मरुस्थलीय मार्गों के समान यकायक तेरे सामने आ जाएंगे।

وَلَا تَنْتَهِجْ سُبُلَ الْغَوَايَةِ وَاكْتَئِبْ عَلٰى مَاعَرَاكَ وَتُبْ بِقَلْبٍ اٰرِزٍ

और तू गुमराही के रास्तों पर न चल और उस मुसीबत पर दुखी हो जो तुझ पर आ पड़ी है और मजबूत दिल के साथ तौबा कर।

और उपरोक्त ऐतराज़ करने वालों में से एक भटका हुआ शैख़ बटालवी और गुमराह पड़ोसी है जिसे मुहम्मद हुसैन कहते हैं और वह झूठ बोलने और ग़लत बयानी में सबसे आगे निकल गया है और निस्संदेह उसने इन्कार किया और अहंकार से काम लिया और उसका प्रचार प्रसार किया यहां तक कि कहा गया कि वह अहंकार करने वालों का अगुवा है और हद से बढ़ने वालों का सरदार और गुमराहों का सरगना है। वही है जिसने दूसरों के मुझे काफ़िर क़रार देने से पहले मुझे काफ़िर ठहराया और मेरी पुस्तकों पर आरोप लगाया और अपनी छुपी हुई मूर्खता को प्रकट किया। और उसने कहा कि ये पुस्तकें त्रुटियों से भरी हुई और ह्रास के कीचड़ में गिरी हुई हैं और साफ स्वच्छ पानी के समान नहीं हैं। और यह आदमी निस्संदेह अज्ञानियों में से है और जो कुछ उसकी पुस्तकों में गद्य, पद्य और काव्य पाए जाते हैं तो वह उनका सामर्थ्य नहीं रखता बल्कि ये ऐसे शब्द हैं जो दूसरों की लेखनी से निकले हैं। तो मैंने उत्तर दिया: हे मूर्खों के सरदार और बुद्धि एवं विवेक के शत्रु! जो भी तुम समझ रहे हो उससे मेरी पुस्तकें निस्संदेह बरी हैं और जो तू गुमान करता है उससे पवित्र हैं, सिवाए लिपिक की भूल चुक के या अनजाने में होने वाली मेरी कलम की भूल के न कि अज्ञानियों की अज्ञानता के समान। अत: यदि तुझे सामर्थ्य है कि तू उनमें कोई ग़लती सिद्ध करे तो हर ग़लत शब्द के मुक़ाबले मुझसे एक दिनार प्राप्त कर और सोना चांदी इकट्ठा कर और मालदारों में से हो जा। और यह इनाम है जो तेरी इच्छा के अनुसार है और इससे तेरी आंखें ठंडी होंगी और तेरे पांव इससे आराम पाएंगे और तू हमेशा की भागदौड़ से मुक्ति पाएगा और भटकने वाले भिखारी की तरह दर-दर की ठोकरें नहीं खाएगा और खुशहालों की तरह बैठ जाएगा। और उस के माध्यम से तू अन्य प्रकार के मज़दूरियों और विभिन्न

धोखेबाज़ियों से और सुन्नत की शत्रु "इशाअतुस्सुन्ना" नामक पत्रिका के प्रकाशन और धोखा और झूठ और उपदेश करने से मुक्त हो जाएगा और आराम प्राप्त लोगों के समान जीवन व्यतीत करेगा।

हां परंतु मैं चाहता हूं कि इससे पहले तेरी सरसता की सुगंध देख लूं और तेरी सुबोधता की महक का दर्शन कर लूं ताकि मैं समझ जाऊं कि तू इस सनअते बलागत के उलमा में से है और इस आक्रमण की योग्यता रखने वाला है और तू मूर्खों, गुमनामों तथा अंधों में से नहीं है।

फिर ऐसा हुआ कि अपने खोटे नसीब की कमज़ोरी और अपने दुर्भाग्य के कारण उसने यह इनाम स्वीकार न किया और अपने दिल को इस शर्त के स्वीकार करने के लिए तैयार न किया और अपमान तथा तिरस्कार से डर गया और भयभीत व्यक्ति के समान छुप गया और कहा कि यदि हम चाहें तो हम भी उस जैसा लिख सकते हैं परंतु हमारे पास समय नहीं है। हालांकि न तो वह अपने घर से निकला और न उसने अपने साहस का नमूना दिखाया और जो बोला तो केवल व्यर्थ बातें करने वालों के समान ही बोला। और मैंने अपने इनाम में उसकी प्रसन्नता का ध्यान रखा ताकि किसी बहाने से उसकी बुद्धि को परखूं और उसके दूध से मक्खन निकालूं, और उसकी अज्ञानताएं प्रकट करूं। मानो कि ऊंघ उसकी आंखों में उतर आई या शैतान ने उसे भागने के लिए प्रेरित किया अत: मैंने देखा कि उसकी गर्मी ठंडी हो गई और उसका संकल्प बूढ़ा हो गया और वह अत्यंत बूढ़ों के समान दिखाई देने लगा।

अल्लाह की क़सम मैं विश्वास रखता हूं कि वह एक या दो पंक्ति लिखने का भी सामर्थ्य नहीं रखता। और जो कुछ कहता है झूठ कहता है बल्कि मैं यह अनुमान नहीं करता कि वह मेरी पुस्तकों को समझ भी सके और सभा में मेरे लेखों का विषय वर्णन कर सके। निस्संदेह वह झूठों में से है और मैं उसे पुराने समय से जानता हूं लेकिन मैं उसकी हालत को छुपाता और उसकी पर्दापोशी करता था बल्कि जब कोई उसके भेद को उजागर करने के लिए बोलने लगता था तो मैं उसकी बात को वहीं समेट देता था और नोंचने वालों से उसके सम्मान को बचाता था। फिर मैंने

देखा कि वह हद से बढ़ने के समय कोई परवाह नहीं करता और अपने अहंकार को नहीं छोड़ता और अपनी मूर्खता के व्यवहार को नहीं त्यागता और ग़लत बातों से तौबा नहीं करता बल्कि यह गुमान करता है कि उसकी योजना उसे लाभ देती है और इसके द्वारा वह अपने शिकार को काबू कर लेता है। तो जब मैंने देखा कि उसके कर्म अवश्य उसे नष्ट कर देंगे और उसका अहंकार अवश्य उसे व्याकुल कर देगा तो मैंने उसकी बुराइयों में से कुछ अप्रिय बातें प्रकाशित कर दीं। क्योंकि कर्मों का दारोमदार नियतों पर होता है और इसी पर प्रतिफल का आधार है। फिर हम अपनी पहली बात की ओर लौटते हैं। अत: जान ले कि उसने हमें बुलाया फिर इन्कार कर दिया, और उसे इस इन्कार पर केवल इस भय ने उकसाया है जिसने उसे भड़कती हुई अग्नि से जलाया क्योंकि उसने हमारी पुस्तकें पढ़ीं तो उन्हें चमकते हुए मोतियों के समान पाया। तब उसने अपने दिल में भय महसूस किया परंतु प्रदर्शित न किया और जो उसने देखा उस ने उसकी कमर तोड़ दी। अत: वह अपने भयभीत हृदय को दिलेर बनाने पर समर्थ न हुआ और न निर्धारित मैदान में उपस्थित हो सका और न अपना पका हुआ फल और शाखा दिखा सका बल्कि उसने एक नीच मूर्ख व्यक्ति की ओर और ऐसे मुर्गी के चूज़े की ओर संकेत किया जिसके शरीर पर अभी छोटे-छोटे कोमल बाल ही हों और बहाना बनाया और कहा कि मैं अपने बिल से कदापि नहीं निकलूंगा और यह मेरा शिष्य है जिसने मेरी गोद में परवरिश पाई है। अत: इससे मुक़ाबला कर यदि तू मुक़ाबला करने वालों में से है और मैं मारने वालों के भय से सांप के समान बिल में घुसता हूं। तो मैंने कहा: हे इंसान! तू यह गुमान न कर कि किसी षड्यंत्र से तू मेरे पंजे से बच जाएगा, चाहे तू 'अबू ज़ैद सुरूजी' का दादा बन जाए और मैं षड्यंत्र करने वालों के धोखे से खूब परिचित हूं। क्या तू नहीं जानता कि वह तेरे निम्न स्तर के शिष्यों में से है और तेरी शराब से उसने केवल एक घूंट पिया है। निस्संदेह वह ज्ञान शक्ति में तेरे समान नहीं और तेरे ज्ञान के स्तरों में से वह प्रथम स्तर पर भी नहीं है। फिर कहां यह कि वह ज्ञान में तुझसे बढ़कर हो। अत: अपने मामले को एक अज्ञानी और बदज़ुबान के सुपुर्द न कर और धोखा देने वालों में से न बन। और तू जानता है कि वह तेरे

बच्चे के समान है या तेरी रूह का भाई है। उसने केवल तेरी शराब में से पिया है और तेरे दूध से उसका भरण-पोषण किया गया है। अतः उस का किस्सा तेरे किस्से के साथ लपेटा जाता है और तेरी पराजय के बाद उसकी पराजय भी स्पष्ट है। जब हमने कठोर वस्तु को टुकड़े-टुकड़े कर दिया तो कोमल वस्तु स्वयं टूट गई। अतः जब उसने मेरी बात सुनी और मेरा आक्रमण करना देखा तो पहाड़ी बकरे के समान भाग गया। और अपने बिल में जल्दी से घुस गया और लज्जित होने वालों के समान सारी अकड़ भूल गया। और मैंने उसे दुख देने वाले शब्दों और कष्ट देने वाले वाक्यों के साथ क्रोध दिलाया ताकि संभवतः वह मुक़ाबले के लिए खड़ा हो जाए और मेरे पास कुश्ती के लिए आए परंतु वह मैदान में न उतरा और उसने विश्वास कर लिया कि वह आग में गिर जाएगा और पराजितों के समान छुप गया।

फिर इस बात पर एक या 2 महीने बीते थे कि उसने मेरे अपमान के लिए एक पुस्तक प्रकाशित की और नास्तिकता तथा गुमराही को मेरी ओर सम्बद्ध किया ताकि इस प्रकार वह अपनी उस मूर्खता को छुपा ले जो उसे अपमानित कर रही है। और अपने अनुयायियों की आंखों में अपनी शान को सुंदर करके दिखाए और अपने अभिलाषियों के समूह को बढ़ाए और सन्मार्ग के अभिलाषियों के दिलों को कष्ट दे। अतः जब मैंने देखा कि वह अपनी बेहोशी से होश में आ गया है और अपने रोने के बाद हँसा है और अपनी पहली हालत में लौट आया है और तंग होने के बाद सकून में आ गया है और उसके आंसू थम गए हैं और उसकी जलन कम हो गई है, तो मैंने उचित समझा कि दूसरी बार उस पर हुज्जत पूरी करूं और अल्लाह तआला की ओर से उस पर अज़ाब के फरिश्ते नियुक्त करूं। अतः आज मैं इस उद्देश्य के लिए खड़ा हुआ हूं, संभवतः अल्लाह उसे सलामती के घर की ओर हिदायत दे दे। निस्संदेह वह (अल्लाह) बंदे और उसके दिल के बीच मौजूद है और मुसीबत में ग्रस्त लोगों की सहायता करता है।

अतः हे गुमराह शैख़ और अत्यंत झूठे मुफ्तरी! क्या तेरे लिए समय नहीं आया कि तू तौबा करे और दिल को नरम करे? क्या तू इस जीवन से प्रसन्न है जिसमें मुसीबतें ही मुसीबतें हैं और उसके अंत पर मौतें हैं? बहुत बार मैंने तुझे

सदुपदेश के द्वारा जगाया और तेरी आंखों के सामने दर्पण रखे फिर मैंने क़सम उठाई ताकि संभवत: तू क़समों से संतुष्ट हो जाए अत: मैंने कहा ब्रह्मांड के रब की क़सम मैं झूठ गढ़ने वाला नहीं हूं और मैं अल्लाह की शरण में आता हूं कि मैं ग़लतियों की तरफ जाऊं लेकिन तूने केवल कुधारणा की और बेबाकी करने वालों की तरह बोला। हे शैख़! दुनिया फ़ानी है और बाकी रहने वाली हस्ती तो अल्लाह तआला है। तू एक आदमी को शाम के समय ऐशो आराम में देखता है फिर सुबह देखता है कि वह जीवित लोगों में नहीं रहा। और मौत उस सांप को भी नष्ट कर देती है जिसके सामने दम करने वाले असमर्थ हो जाते हैं। और हर चीज़ फानी है और अल्लाह ही शेष रहेगा और अल्लाह की क़सम मेरी निरंतर बरसने वाली वर्षा रहमान की ओर से मूसलाधार बरसी है न कि मनुष्य के प्रयत्नों से। इसी कारण मैंने तुझे बुलाया कि तू गहरे दोस्त की तरह मेरे पास आ जाए परंतु तू ने स्वयं को गर्म पीप की तरह प्रकट किया। निस्संदेह में सामर्थ्यवान ख़ुदा की ओर से सहायता प्राप्त हूं और उसकी अत्यधिक अनुकंपा से मुझे चमत्कार प्रदान किए गए हैं। और उसके निशानों (चमत्कारों) में से एक यह है कि उसने मुझे अरबी भाषा सिखाई है और उसने मुझे साहित्य के बिंदु समझाए हैं और मेरे सामयिक उलमा पर मुझे प्रतिष्ठा प्रदान की है। यदि तू मेरे निशान के बारे में संदेह में है और स्वयं को मेरी सरसता एवं सुबोधता का मुक़ाबला करने वाला समझता है तो इधर-उधर की बातों को छोड़ और मेरे मुक़ाबले पर थोड़ा या अधिक लिख कर दिखा और पुन: तहक़ीक़ कर और जो बीत चुका उसे छोड़ दे। और मैदान में मुक़ाबले के लिए निकल और उसके लिए समय निर्धारित कर और मुझ पर और तुझ पर अनिवार्य है कि हम निर्धारित दिन किसी भी अवस्था में उपस्थित हों और दो लड़ने वालों की तरह लिखित मुक़ाबला करें। अत: यदि तू सरसता एवं सुबोधता तथा उत्तम लेखन में विजयी रहा और ऐसा लेख प्रस्तुत किया जो साहित्यकारों के दिलों को प्रसन्न कर दे तो मैं तेरे हाथ पर अपने समस्त दावों से तौबा कर लूंगा और अपनी हर प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तक को जला दूंगा और अल्लाह की क़सम मैं ऐसा ही करूंगा। देख मैंने क़सम उठाई है और सौगंध दे दी है अत: तू

भी दयनीय उम्मत पर दया कर और प्रकट हो जाने वाले उपद्रव का इलाज कर क्योंकि उपद्रव बहुत बढ़ गए हैं और आफतें प्रकट हो गई हैं और मुसलमानों में से एक बड़ी संख्या को अकारण काफिर ठहरा दिया गया है और उनके बारे में लोगों ने बढ़-बढ़ कर बातें की हैं। अत: उठ खड़ा हो अल्लाह तुझ पर दया करे, और मुनाफिकों के समान न बैठ।

क्या तुझे विश्वास नहीं कि तू प्रकांड उलमा तथा समर्थ साहित्यकारों में से है। फिर इसके साथ तू जानता है कि अल्लाह सच्चों का सहायक और झूठों को अपमानित करने वाला है। अल्लाह सच्चे लोगों का दोस्त है और झूठ गढ़ने वालों का कोई दोस्त नहीं। और अगर तू मुक़ाबले की शक्ति नहीं रखता और मुक़ाबले के लिए खड़ा नहीं होता तो मैं इस बात पर भी राज़ी हूं कि जो बेहतरीन इबारतें और सुंदर वाक्य मैं लिखूं तू मुझे वह (पढ़कर) सुना दे। और अगर तू इस तरीके से सफल हो गया और जो मैंने वर्णन किया है वह उपस्थित लोगों को भली भांति समझा दिया तो मेरे लिए यह पर्याप्त है। परंतु मेरा कई वर्षों से तेरे बारे में अनुभव है कि तू किसी जगह नहीं ठहरता और न झगड़ा खत्म करना चाहता है और मामले के अंत पर बोदे बहाने और झूठी आपत्ति गढ़ लेता है और बहानेबाज़ों की भान्ति भाग जाता है। अत: तुम पर अनिवार्य है कि तू पिछले दिनों की तरह बहाना न बनाए और निर्धारित अखाड़े में निर्धारित समय पर उपस्थित हो। तो यदि तू विजयी रहा और तुझे प्रभुत्व मिला और हिदायत पाने की ओर लौट आया तो मैं तेरे समक्ष आज्ञापालन के पर झुका दूंगा, उस व्यक्ति के समान जो गुमराही से सुधार की तरफ लौटे।

हे झगड़े के बाप! आज मैंने अपना मुख तेरी ओर और तेरे उलमा भाइयों की ओर फेरा है और मैं तुम्हें दावत-ए-आम में बुलाता हूं और मैं शहरी लोगों तथा देहातियों तक यह पैगाम पहुंचाता हूं। अब तुम पर अनिवार्य है कि तुम इस दावत से मुंह न फेरो जैसा कि पिछले दिनों में तुम एक बार इन्कार कर चुके हो, क्योंकि यह (प्रस्ताव) सच्चों और झूठों के बीच निर्णय कर देगा और रब्बुल आलमीन का निशान उससे प्रकाशमान हो जाएगा और मुजरिमों का मार्ग स्पष्ट हो जाएगा।

परंतु मैं विश्वास नहीं करता कि तुम इस मुक़द्दमे के फैसले के लिए उपस्थित हो जाओगे। तुम से और तुम जैसों से इस प्रस्ताव के बारे में उम्मीद टूट चुकी है। मानो कि मैं पहाड़ी बकरों को पहाड़ों की चोटियों से उतारना चाहता हूं या बांझ से बच्चा मांग रहा हूं या लोहे से तेल तलाश कर रहा हूं या पीप में सुगंध खोज रहा हूं। और मेरा विचार है कि मैं ग़लती करने वालों की तरह तुम्हारी ओर ध्यान दे रहा हूं और वंचित लोगों से प्रश्न करने में अपना समय नष्ट कर रहा हूं। यदि मेरा उद्देश्य हुज्जत पूरी करना और हर वर्ग पर सच्चाई को प्रदर्शित करना न होता तो मैं ऐसे न करता। और मैं पहले तुम्हें मुबाहला की दावत देता हूं। अत: यदि तुमने स्वीकार न किया तो मैं तुम्हें दावत देता हूं कि तुम में से कोई एक मेरे पास मेरा निशान (चमत्कार) देखने के लिए आए और मेरे पास पूरा एक साल ठहरे। और अगर तुम यह स्वीकार न करो तो मैं तुम्हें उपरोक्त शर्त पर और जो भविष्य में शर्त होगी उसके साथ अरबी में मुक़ाबले के लिए बुलाता हूं। और यदि तुम अकेले-अकेले मुक़ाबले का सामर्थ्य नहीं रखते तो मैं शत्रुता करने वाले पर तंगी नहीं करता बल्कि तुम्हें अनुमति देता हूं कि तुम में से कुछ लोग कुछ अन्यों के साथ बतौर सहायक बैठ जाएं।

फिर जान ले हे गुमराह शैख़ और झूठे दज्जाल! कि वे 8 लोग जो तेरी शाखा का फल हैं और तेरी अग्नि का इंधन हैं जो 9 संबोधित व्यक्तियों में सम्मिलित हैं, उनमें से तीसरा गुमराह, झूठा, अध्यापक नज़ीर हुसैन खुशखबरी देने वालों के लिए नज़ीर (चेतावनी) है फिर अब्दुल हक★ देहलवी अहंकारियों का सरदार है फिर अब्दुल्ला टोंकी है। फिर मुक़ल्लदीन में से अहमद अली सहारनपुरी है फिर अहंकारियों का सुल्तान (सुल्तानुद्दीन जयपुरी) है जिसने अहंकार और अपमान करने में अपना धर्म

★**हाशिया :-** यह व्यक्ति पवित्र अरबी (भाषा) को "उम्मुल अलसिना" (अर्थात समस्त भाषाओं की माँ) नहीं समझता बल्कि यह उसके निकट इब्रानी (भाषा) से निकली है जबकि इब्रानी भाषा अरबी भाषा के फुज़ला (अवशेष) के समान है। और वह यह विश्वास रखता है कि इस बात को सिद्ध करना ऐसी गुत्थी है जिसे सुलझाना बहुत कठिन है या ऐसे चकमाक के समान है जिससे चिंगारी निकालना कठिन है, बावजूद इसके कि अपनी पुस्तक "मिननुर् रहमान" में हम यह मैदान फतेह करके मुक्त हो चुके हैं और अतिशीघ्र

गवां दिया फिर हसन अमरोही है जो निर्लज्जता का वस्त्र धारण करके और दोस्ती का वस्त्र उतारकर मेरी ओर आया और उसने अपने नाखून भेड़ियों के समान मेरे सम्मान पर गाढ़े और कुत्तों की तरह मेरे वस्त्रों पर अपने पंजे मारे और ऐसे शब्द बोले जो केवल शैतान बोलता है और उनमें से अंतिम अंधा शैतान और गुमराह भूत है उसे रशीद गंगोही कहा जाता है और वह अमरोही के समान अभागा और लानतियों में से है।

अतः यह उन नौ लोगों का समूह है जिन्होंने हमें काफिर ठहराया या हमें गालियां दी और वे फसादी थे और हम उनके साथ दो मशहूर शैखों का वर्णन

शेष हाशिया - वह शहरों तथा देशों में प्रकाशित कर दी जाएगी। अतः उस दिन इन्कार करने वालों के चेहरे काले पड़ जाएंगे। और निस्सन्देह अल्लाह समस्त ब्रह्मांड के रब की ओर से हमारे चिंतन में हमारी सहायता की गई है। और हमने उसमें उन लोगों को खूब लताड़ा है जो कहते हैं कि अरबी अन्य भाषाओं पर सौंदर्य में प्राथमिकता नहीं रखती बल्कि यह पुराने वस्त्र या प्रयोग किए हुए बर्तन और गिरी पड़ी रद्दी, नाकारा और व्यर्थ वस्तु के समान है और हमने अपने दावे को जिस प्रकार सिद्ध करने का अधिकार है सिद्ध कर दिया है और हमने इस बात को स्पष्ट मामलों के समान सही मार्ग पर चलते हुए बिना किसी गलती के दिखा दिया है। अतः हमारे मूर्ख उलमा की तुच्छ राय पर अफसोस है ये तो केवल पशुओं के समान हैं और वस्तुओं के अनुसंधान के मार्गों को नहीं जानते और न विचार-विमर्श करने वाले हैं। बिद्अतें अत्यधिक बढ़ गई हैं और मुसीबतें व्यापक रूप से फैल गई हैं और हर ओर भयानक उपद्रव तथा मूर्ख उलमा हैं। हे सर्वाधिक दयालु अपने बंदों पर दया कर।

अब रहा प्रश्न उस बेहक़ीक़त गलती के कारण का, तो तू जान ले कि यह ऐसी क़ौम है जो भोजन के अवशेष की ओर प्रेरित होती है और स्रोत (चश्मे) को पुनः जारी करने का उन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया और अपनी जान को अनुसंधान के मैदानों के लिए समर्पित नहीं किया बल्कि मूर्ख लोगों के समान अनुसरण पर राज़ी हो गए और जानबूझ कर लापरवाही करने वालों के समान लापरवाही करते हुए विचार-विमर्श तथा सत्यापन के घोड़े अपने हाथों से निकाल दिए। और हमने जब बारीकी से छानबीन की और मामले का गहराई से अनुसंधान किया तो सिद्ध हुआ कि समस्त भाषाएं अरबी भाषा से निकली हैं और इसी लहजा के खज़ानों से निकाली गई हैं और अब वे भाषाएं बिगड़े हुए, परिवर्तित, झुलसे हुए चेहरों के समान और प्रताड़ित घायलों के समान मौजूद हैं और उनकी व्यवस्था बदल दी गई है और उनके स्थान परिवर्तित कर दिए गए हैं और वह सुनियोजित जवाहिरात तथा

करते हैं अर्थात शैख इलाह बख्श तोन्सवी और शैख गुलाम निज़ामुद्दीन बरेलवी और यह दोनों मुंह फेरने वालों में से हैं। अत: हम उन दोनों को उन्हीं में सम्मिलित करते हैं जिन्हें हम ने संबोधित किया ताकि यह दोनों सत्यापन करने वालों या झुठलाने वालों में से हो जाएं और हम उनके बारे में कुछ नहीं कहेंगे सिवाय उसके कि अल्लाह तआला हमें कुछ दिखा दे और वह खूब जानता है जो समस्त ब्रह्मांड के दिलों में हैं परंतु हम उन दोनों को इन संबोधनों का निशाना बनाते हैं और उन दोनों को मुबाहला करने या निशान देखने या सरस एवं सुबोध अरबी में मुक़ाबला

शेष हाशिया - परस्पर जुड़ी हुई लड़ी से निकाल दी गई हैं और बिखर जाने वालों के समान बिखरी हुई हैं। मानो आज उनमें से कुछ बुलंदी पर हैं और कुछ निचले स्तर पर लाठी का सहारा लिए हुए हैं और कुछ ने अपना चेहरा चादर से छुपाया हुआ है और अपनी सूरत को क़र्ज़ से पीड़ित व्यक्ति के समान बदल दिया है। और उन भाषाओं में ऐसे शब्द हैं मानो कि वे दफन कर दिए गए हैं और अपने हमज़ादों (साथ पैदा हुए) से दूर कर दिए गए हैं और उन पर मिट्टी डालने के समान अतिरिक्त बोझ डाल दिए गए हैं। और आज हम उन्हें ऐसे व्यक्तियों के समान देखते हैं जो कब्रों में पड़े बोलें और विभिन्न प्रकार के हादसों से उनकी मौत की खबर सुनने के बाद उठाए गए। या लापता हो जाने वाले के बाद उस प्यारे दोस्त के समान जिस पर शोक सभाएं आयोजित करने के बाद 'इन्ना लिल्लाहि' पढ़ दी जाती है। अत: अब वे (शब्द) ऐसे निकल गए हैं जैसे घर से मुर्दे की लाश को निकाला जाता है या (घर से) भागने वाले लड़के के समान, या निकट संबंधियों द्वारा छोड़ दिए जाने वाले प्रिय संबंधी के समान या भाग जाने वाले लापता पुत्र के समान। फिर उन (भाषाओं) में ऐसे शब्द भी हैं जिन्होंने तनिक भी हानि नहीं उठाई और जिस प्रकार कुशलता के साथ यात्रा की वैसे ही वापस लौटे। और उनमें से वे शब्द भी हैं जिन्होंने दूसरी भाषाओं का प्रभाव अपना लिया यहां तक कि अपना अस्तित्व खो बैठे और मातम करने वालियों के समान उन शब्दों पर उनके वारिस रोए बाद इसके कि वे शब्द खाने की दावतें करने वाले थे और इनाम देने वालों की तरह होने के बाद जनाज़ों की तरह हो गए। और यह उन दावों में से नहीं है जिन पर कोई दलील न हो और न ऐसे मामलों में से हैं जिनके पास सच्चाई न पाई जाए बल्कि उदाहरणों का हमारे पास भंडार है और सन्देह करने वाले हैरान और परेशान व्यक्ति के लिए पर्याप्त कारण हैं। और जिन लोगों ने भाषाओं का अभ्यास किया है और उन के बारे में छानबीन की है और वे अरबी भाषा की विलक्षण विशेषताओं से अवगत हुए और उनका

के लिए बुलाते हैं।

और दूसरे जिन्होंने अपना नाम मौलवी रखा हुआ है बावजूद गुमराहों मूर्खों में से होने के, तो हम अपनी पुस्तक को उनके वर्णन से पवित्र रखते हैं और इस पुस्तक को दुष्टों के अनावश्यक वर्णन की भरमार से गंदा नहीं करते और निस्संदेह वे सिखाए हुए मूर्खों में से हैं जो अपने बड़ों की नकल करते हैं और विचार करने वालों में से नहीं हैं। अत: हे शेख़ इसे मैं भली-भांति जानता हूं कि तू उन आठों का सरदार है और इस बागी समूह के लिए अगुवा के समान है और वे सब गुमराही में

शेष हाशिया - दर्शन किया है तो यही वे लोग हैं जो पूर्ण अनुभव से जानते हैं और खुली-खुली सच्चाई की समझ रखने वाले के समान विश्वास करते हैं कि अरबी अपनी विशेषताओं में अद्वितीय है और अपने मुफ़रदों (वे अक्षर जो अलग-अलग लिखे जाएं) की व्यवस्था में पूर्ण है और अपनी तरकीबों के सौंदर्य में पसंदीदा है और इस (के स्तर) तक धरती की भाषाओं में से कोई भाषा नहीं पहुंचती। जहां तक यूनानी, इब्रानी और हिन्दी आदि का संबंध है तो तू उनके अधिकतर शब्दों को गढ़े हुए तथा बनावटी पाएगा और उनके तथा विशुद्ध मुफ़रद (एकांकी) शब्दों के बीच बहुत अन्तर है। यह बात दलालत करती है कि वह भाषाएं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हैं और न सृष्टि के प्रारंभ से हैं बल्कि सही विवेक गवाही देता है और दिल-दिमाग फ़त्वा देते हैं कि आवश्यकताओं के आ पड़ने के समय वह भाषाएं बनाई गईं और मुफ़रद (एकांकी) शब्दों के विलुप्त होने के समय ढाली गईं और उनके मुफ़रद शब्द अरबी से विभिन्न प्रकार की खयानतों द्वारा चुराए गए। अत: यदि तू सत्याभिलाषी है तो विचार कर। और यह बात स्पष्ट दलीलों तथा प्रकाशमान तर्कों से सिद्ध हो चुकी है और हमारे पास अंग्रेज़ी, जर्मन, लातिनी, रूसी, यूनानी, हिन्दी, चीनी, फारसी, और दूर तथा निकट के देशों की अन्य भाषाओं के मुफ़रदों का बहुत बड़ा भंडार है। और हम सिद्ध कर चुके हैं कि ये पवित्र अरबी शब्दों से परिवर्तित किए गए हैं। यदि तू उन्हें देखे तो तू भय तथा रोब से भर जाएगा और तू तौबा करने वालों, अपनी गलती स्वीकारने वालों के समान हमारी बात की सच्चाई का इक़रार करेगा और तू कहेगा पाक है वह हस्ती जिसने अरबी को "उम्मुल अलसिना" (अर्थात समस्त भाषाओं की मां) बनाया जैसा कि उसने मक्का को "उम्मुल क़ुरा" (अर्थात समस्त बस्तियों की मां) बनाया और इसी संकेत के लिए हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उम्मी बनाया और अरबी भाषा को समस्त ब्रह्मांड की भाषाओं का खातम बनाया जैसा कि हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबियों का खातम

तेरे शिष्य हैं या उनके समान हैं जिन पर जादू कर दिया जाता है। अत: अपने सवार और प्यादों को मेरे पास ले आ और अपना हर प्रकार का छल कपट इकट्ठा कर और विभिन्न उपद्रव कर ले और शत्रुओं में से अपने जत्थे के साथ मेरे पास आ और मुझ पर उस हब्शी के समान आक्रमण कर जिसने रहमान ख़ुदा के काबा पर आक्रमण किया था, फिर प्रतिफल देने वाले अल्लाह की क़ुदरत का दर्शन कर। अत: यदि तुमने मुंह फेर लिया और खामोश पड़ गए और तुमने चेहरे छुपा लिए और तुम भाग गए तो हमेशा के लिए तुम पर हुज्जत पूरी हो जाएगी और वे लोग जो तुझसे

शेष हाशिया - बनाया और क़ुरआन को "उम्मुल कुतुब" (अर्थात समस्त किताबों की मां) बनाया और उसे ऐसा पवित्र धर्म विधान बनाया जिनमें पहलों तथा बाद वालों की किताबें हैं। फिर उपरोक्त ऐतराज़ करने वाले ने कुछ नामों जिनको यह जामिद (स्थिर) समझता है, के नामकरण का कारण पूछा है। अत: तू जान ले कि वे तथा उसी प्रकार के अन्य नाम वास्तव में जामिद नहीं हैं बल्कि यह उन लोगों का विचार है जिन्होंने सही प्रकार से विचार-विमर्श नहीं किया और सुनी सुनाई बातों का अनुसरण किया और अनुसंधान करने वालों के समान गंभीर चिंतन करना अपने ऊपर हराम कर लिया। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ने आदम को नाम सिखाए ताकि वह उसे ज्ञान तथा विवेक में पूर्ण करे। अत: उन लोगों का क्या विचार है? क्या अल्लाह ने उसे निरर्थक नाम सिखाए? क्या वे अल्लाह की ओर गूढ़ अर्थों से रिक्त व्यर्थ बात को संबद्ध करते हैं और उसे व्यर्थ का बनाने वाला क़रार देते हैं? वह पवित्र है और उनकी कल्पनाओं से बहुत बुलंद है। क्या वे नहीं जानते कि नाम सिखाने का उद्देश्य लाभ पहुंचाना था और निरर्थक शब्द विवेक तथा दूरदर्शिता को नहीं पढ़ाते नहीं बढ़ाते और हर वह व्यक्ति जिसे बुद्धि दी गई है जानता है कि वस्तुओं का ज्ञान न होना वस्तुओं के न होने पर दलालत नहीं करता और हम सृष्टि के बहुत से लाभों को नहीं जानते इसके बावजूद यह नहीं कहा जाता कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में यह सृष्टि लाभ रहित है बल्कि ऐसे भ्रमों से चिपटे रहना अज्ञानियों, मूर्खों, कमीनों का स्वभाव है। अत: अल्लाह से डरो और सच्चाई तथा विवेक के उद्गम (खुदा) की ओर निरर्थक शब्दों को सम्बद्ध न करो क्योंकि अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम को नामों के केवल वह अर्थ सिखाए जो रहस्यों के खज़ानों की कुंजियाँ हैं।

और अत्यंत सहज मामलों में से एक यह है कि अनन्त काल तक चलने वाली महान शरीयत और पूर्णत: परिधि में लेने वाला धर्म मांग करता है कि वह ऐसी भाषा में

निरर्थक बातें और मनगढ़त बकवास सीखते थे वे जान लेंगे कि निस्संदेह तू ही झूठा है। अत: वे तुझ पर इस प्रकार रोएंगे जिस प्रकार घाटे में रहने वालों पर रोया जाता है और "इन्ना लिल्लाहे" पढ़ेंगे जिस प्रकार मुसीबत में ग्रस्त लोगों के लिए "इन्ना लिल्लाह" पढ़ा जाता है। अत: तू असहाय छोड़े जाने वालों के समान हो जाएगा इसलिए स्वीकार करने या मुंह फेरने के बारे में अपने दिल से परामर्श ले पूर्व इसके कि तुझे ऊंट के समान ज़िबह कर दिया जाए और तू मलामत किए जाने वालों के साथ मिल जाए। तूने सुन ही लिया है कि मुक़ाबले के लिए पहली शर्त जो तय की

शेष हाशिया - उतरे जो अत्यंत पूर्ण और व्यापक हो। विशेष रूप से वह शरीयत जो ऐसी पुस्तक लाए जिसकी वाक्पटुता चमत्कारी हो और वह समस्त भाषाओं तथा समस्त प्राणियों से उस जैसे वाक्यांश की (मुक़ाबले में) मांग करे। अत: तू जानता है कि यह चमत्कार भाषा की पूर्णता का मोहताज है और मांग करता है कि उसका पात्र मानवीय शक्तियों के समान व्यापक हो क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति के लिए क्रिया विशेषण के समान है और विवेक के मोतियों के लिए सीप के समान है। यदि हम अनुमान कर लें कि कोई दूसरी भाषा अरबी से अधिक उत्तम है तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि वह अलंकार के क्षेत्र में उससे श्रेष्ठ है और धार्मिक ज्ञान के उत्तम वर्णन के लिए अधिक उपयुक्त है। मानो कि अल्लाह ने उस भाषा को छोड़कर और कुरान को इस अपूर्ण भाषा में उतार कर गलती की है। अत: हे असहाय! तौबा कर और नफ्से अम्मारा (तामसिक वृत्ति) की इच्छाओं का अनुसरण न कर और अज्ञानता तथा असहिष्णुता के पर्दे से बच और अभिमानी लोगों के समान अपना सिर न उठा। और तेरा यह कहना कि تَحۡتَ (तहता), تُرَاب (तुराब) और مِيۡزَاب (मीज़ाब) जामिद असमा (अर्थात स्थिर नाम) हैं उनकी व्युत्पत्ति (शब्दकोश की) पुस्तक से सिद्ध नहीं होती तो यह तेरी और तुझ जैसों की भूल है और यह फसाद तुम्हारे अपूर्ण ज्ञान से पैदा हुआ है न कि मुबारक अरबी भाषा की शान में कमी के कारण।

हे असहाय! تَحۡتَ (तहता) का शब्द वास्तव में طِيَّة (तिय्यतुन) था जिसके अर्थ कदम के नीचे और दिशा के दृष्टिकोण से فَوۡقَ (फौका) (अर्थात ऊपर) के मुकाबले पर है। फिर अधिकता से उपयोग होने के कारण طاء (ता) जो है वह تاء (ता) से और ياء (या) جاء (जा) से बदल गई है और इस प्रकार के उदाहरण बहुत हैं और यद्यपि तुझे ज्ञात नहीं परन्तु बहुत से भाषाविदों ने इस बात की गवाही दी है। फिर यह कि تَحۡتَ (तहता) का शब्द जामिद है भी नहीं जैसा कि अज्ञानता के कारण तू समझता है बल्कि (अरब) क़ौम

गई है और हर एक जो शास्त्रार्थ करने के लिए खड़ा हो उस पर जो अनिवार्य है वह यह है कि मुक़ाबला करने वाला मेरी पुस्तक जैसी पुस्तक प्रस्तुत करे, गद्य में संख्या के अनुसार कविता लिखे और पद्य में पद्य के बराबर। और यह लेख अपनी हसीन इबारत में और सुंदरता में बराबर हों। अत: यदि तुम इस पुस्तक जैसी पुस्तक ले आए और 2 महीने तक यह काम अपनी श्रेष्ठता और महानता दिखाने के लिए कर दिया तो मैं तुम्हारे पास क्षमा प्रार्थी तौबा करने वालों के समान आ जाऊंगा और यदि तुम्हें सामर्थ्य न हुआ तो तुम पर अनिवार्य होगा कि ये इक़रार करो कि यह पुस्तक

शेष हाशिया - तथा इस कला के माहिर (मनुष्यों) की पुस्तकों में इसका वर्णन मौजूद है। और हदीस में वर्णन है कि

لا تقوم الساعة حتّٰی تظهر التحوت

अर्थात् क़यामत नहीं आएगी जब तक कि **تحوت (तहूत)** प्रबल न हो जाएं। "**तहूत**" बहुत नीच क़ौम जिस की परवाह नहीं की जाती लेकिन हुकूमत तथा शक्ति उन्हें प्राप्त होगी और वह सम्मानित हो जाएंगे। रहा शब्द تُرَاب (तुराब) तू जान ले कि इस शब्द की व्युत्पत्ति تِرْب (तिर्ब) से हुई है और تِرْب الشَّیْءِ (तिरबु शै) से अभिप्राय अरब देश के निकट एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ पैदा होना है और सअलब कहता है- تِرْب الشَّیْءِ (तिरबु शै): उसके समान और हुस्न तथा सौंदर्य में उसके जैसा। इन दो अर्थों के आधार पर धरती को تُرَاب (तुराब) का नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि वह अपनी संरचना में आसमान की "तिर्ब" है क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ में धरती आसमान के साथ पैदा की गई और मन्नान खुदा की कारीगरी के किस्मों में यह दोनों परस्पर समान हो गए। और इसी प्रकार अल्लाह ने सूर्य, चंद्रमा तथा सितारों से सुसज्जित सात आसमानों की संरचना की और इन्हीं के समान उसने साथ धर्तियां पैदा कीं जो रसूलों, नबियों तथा उनके ज्ञानी वारिसों से सुसज्जित हैं और संभवत: शब्द سَبْعَ اَرَضِیْنَ (सबअ अर्ज़ीन) अर्थात सात धर्तियों में महाद्वीपों की संख्या की ओर संकेत हो। अल्लाह बेहतर जानता है कि उसने इस विभाजन से क्या इरादा किया है और वह भली-भांति जानता है जो ब्रह्मांड में है। "इब्ने बुज़ुर्ज" ने लिखा है कि हर चीज़ जिसका सुधार हो जाए वह ठीक-ठाक हो जाने के बाद "मतरूब" कहलाती है। धरती को "तुराब" इसलिए कहते हैं कि अल्लाह ने उसे निर्माण कार्यों तथा खेती-बाड़ी के लिए ठीक-ठाक किया। अत: इन दोनों अर्थों में से जो तेरे निकट प्रिय हो ले ले और जल्दबाज़ी करने वालों का स्वभाव छोड़ दे। जहां तक शब्द "अलमीज़ाब" का संबंध है तो यदि तू बुद्धिमानों के समान

रहमान ख़ुदा के निशानों में से एक निशान है न कि मानवीय प्रयास से और तुम्हारे इक़रार के बाद मैं तुम पर कोई सख्ती नहीं करूंगा सिवाय इसके कि तुम मेरे पास सत्यापन करते हुए निष्ठापूर्वक आओ। यह प्रक्रिया सबसे अच्छी है और सर्वोत्तम प्रबंध है और इसमें दोनों पक्षों के लिए यात्रा के कष्ट और अपने स्थान को छोड़ने के कठिनाइयों तथा दूसरी परेशानियों से जो यात्रियों को होती हैं, अमन है। फिर इसके बाद यदि ऐसा हो कि तुम्हें मेरे विषय में कुधारणा हुई और यह विचार आया कि इसको सीरिया के लोगों ने लिखा है या किसी अन्य क़ौम ने उसकी सहायता की है तो मैं आमने-सामने मुक़ाबला करना स्वीकार कर लूंगा। इसके बाद कि तुम इक़रार करो कि तुम इस प्रकार के मुक़ाबला से असमर्थ हो और तुम्हें अनुमति है कि तुम कहो कि यह सीरिया के लोगों द्वारा लिखित है और हमें सीरिया वालों से मुक़ाबला का सामर्थ्य नहीं या तुम कहो कि यह अन्य उलमा के द्वारा लिखी गई है और हमें

शेष हाशिया - उस पर विचार करता तो तू लज्जित हो जाता। हे साहित्य की विधियों से वंचित व्यक्ति! तू जान ले कि यह शब्द "अल अज़बु" से निकला है और कहा जाता है कि (अज़बुल माअ) अर्थात पानी बह पड़ा। अतः हे मूर्खों को धोखा देने वाले! "लिसानुल अरब" या दूसरी पुस्तकों की ओर ध्यान दे। और स्वयं को अज्ञानता के कुंए की गहराई में नष्ट न कर। और मैंने बात लंबी होने के भय से तेरे प्रस्तुत किए हुए कुछ शब्दों को छोड़ दिया है न कि उन शब्दों के कठिन होने के कारण। बल्कि वह शब्द बुद्धिमानों के निकट मुश्तक (अरबी भाषा से निकले) होने के दृष्टिकोण से अधिक स्पष्ट हैं। अतः सच्चाई तथा ईमानदारी के अभिलाषियों के समान विचार कर और मैं नहीं समझता कि तू बुद्धिमानों के समान विचार करेगा। अतः अस्सलामु अलैकुम, हम मूर्खों से बात करना नहीं चाहते। क्या तू वही व्यक्ति नहीं है जिसने "तवफ्फी" की बहस के वर्णन के समय تُوُفِّيَ مَا ضَمَنْتَ (तुवफ्फी मा ज़मन्ता) गवाही मांगने के तौर पर पढ़ा था और मूर्खता तथा उद्दंडता के कारण "तफउउल" और "तफ़ईल" के अन्तर को न समझा। अतः यह हैं तुम्हारे ज्ञान तथा विवेक और तुम्हारी प्रतिष्ठा। फिर इस बुद्धि पर और बढ़कर तुम्हारा अहंकार और अकड़ और तुम्हारा लालच और तुम्हारा काफिर ठहराना और तुम्हारा अपमानित करना है। अतः हम खयानत करने वाले मूर्खों तथा झूठों के उपद्रव से सुरक्षा करने वाले, सहायक अल्लाह सहायक की शरण में आते हैं। इसी से।

उनसे मुक़ाबले का सामर्थ्य नहीं (क्योंकि) निस्संदेह वे पूर्ण साहित्यकारों में से हैं। या तुम कहो कि यह मौलवी हकीम नूरुद्दीन द्वारा लिखी हुई है और हमारे लिए संभव नहीं कि उस महान विद्वान का मुक़ाबला करें, हम निस्संदेह अज्ञानियों अनपढ़ों में से हैं। उसके बाद में आमने-सामने मौखिक रूप से सरस एवं सुबोध वर्णन करूंगा और मैं इस बात को बहुत ही मामूली बात समझता हूं अतः तुम भी मुझे कुछ समय के बाद पहचान लोगे।

निस्संदेह वे लोग जो अल्लाह के हो जाते हैं तो अल्लाह उनका हो जाता है। सुनो कि अन्ततः अल्लाह के औलिया ही विरोधियों पर विजयी होते हैं।

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَ رُسُلِيْ (अल मुजादला- 58/22)

(अनुवाद: अल्लाह ने निर्णय कर छोड़ है कि मैं तथा मेरे रसूल ही विजयी होंगे) अल्लाह अपने अवतारों को रुसवा नहीं करता।

यह मेरे तथा तुम्हारे बीच शर्त है। अतः अपने दिलों को बुलंद करो जबकि तुम जानते हो कि उलमा की प्रतिष्ठा अरबी भाषा में है और धार्मिक ज्ञान के भेद खोलने के लिए यही कुंजी है। और पवित्र क़ुरआन के अध्यात्म ज्ञान समझने का यही आधार है। अतः जो व्यक्ति माहिर साहित्यकारों में से नहीं है और न प्रसिद्ध शायरों के समान है तो असंभव है कि वह मर्द ए मैदान फुकहा (धर्म शास्त्रियों) में से हो और शरीयत अर्थात क़ुरआन का भरपूर ज्ञान रखने वालों या समझ रखने वाले फ़ुक़रा में से हो बल्कि वह जानवरों के समान है और सामान्य लोगों तथा अज्ञानियों में से एक है।

जहां तक उस व्यक्ति का संबंध है जो इस भाषा में ताज़ा-ताज़ा वाक्य लिखने पर समर्थ है और बोलने के समय सरस एवं सुबोध वाणी का प्रयोग करता है और वह वर्णाक्षरों के अंतर, तरकीबों की विशेषताएँ और मिश्रित वाक्यों के प्रयोग का ज्ञान रखता है, तो वह वही है जिसे अल्लाह ने इस ज्ञान भंडार में व्यापक चिंतन और तीक्ष्ण बुद्धि प्रदान की है और जो यह दावा करे कि वह ख़ुदा को पाने वालों और अध्यात्मज्ञानी फकीरों में से है परंतु साहित्यकारों के समान इस भाषा के जानने वालों में से नहीं है तो उसकी फकीरी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समान नहीं बल्कि दुनिया तथा परलोक में लज्जित है और तू इस वर्णन पर आश्चर्य न कर और

हकीकत जानने से पहले क्रोधित न हो क्योंकि जो व्यक्ति पवित्र क़ुरआन की मोहब्बत का दावा करता है उसकी बुद्धि इस भाषा में कैसे जंग खाई हुई हो सकती है और कैसे हार्दिक इच्छा तथा प्रेम के दावों के बावजूद वह इस भाषा के प्राप्त करने से असमर्थ रह सकता है और कैसे यह संभव है कि रहमान ख़ुदा का प्यार उसके दिल में न समाए और उपकार स्वरूप अल्लाह तआला उसे अपने नबी की भाषा न सिखाए इसके अतिरिक्त यह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुरआन की मोहब्बत की कसौटी है क्योंकि जिस व्यक्ति ने अरबी से मोहब्बत की तो उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुरआन की मोहब्बत के कारण इस भाषा से मोहब्बत की और जिसने इस भाषा से द्वेष रखा तो उसने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुरआन से द्वेष रखने के कारण से ही इससे द्वेष रखा क्योंकि मोहब्बत करने वाले निशानों से पहचाने जाते हैं। और मोहब्बत का निम्न स्तर यह है कि वह तुझे उस जैसा बनने पर उभारे। यहां तक कि तू महबूब के स्वभाव को प्राथमिकता दे और उन्हें अपनी प्रिय वस्तुओं में से बना ले और जो इस प्रेम को नहीं पहचानता तो निस्संदेह आशिकों के मतानुसार काफिरों में से है। और जिसने पवित्र क़ुरआन और सैयदना खातमुल अंबिया सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मोहब्बत की जैसा कि मोहब्बत और वफ़ा की शर्त है तो मैं नहीं समझता कि वह अरबी भाषा में अज्ञानियों के समान रहेगा बल्कि उसे उसकी मोहब्बत पूर्णता के उच्च स्तर तक पहुंचा देगी और वह हर कलाम में प्राथमिकता ले जाने वाले से आगे बढ़ जाएगा। और उसकी बातचीत चमकदार सफेद मोती के समान हो जाएगी और उसकी वाणी को विचित्र सुगंध से सुगंधित किया जाएगा और भिन्न-भिन्न प्रकार की चमक उसमें पैदा की जाएगी। अत: तू मोहब्बत करने वालों के समान विचार कर। यदि मोहब्बत न होती तो मुझे अरबी भाषा का ज्ञान प्रदान न किया जाता। अत: मोहब्बत के कारण ही मैंने उसे पाया है। तो यह अत्यंत कृपालु ख़ुदा की ओर से मेरी मोहब्बत का निशान है। और समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं इस (उपकार) पर जो उसने प्रदान किया और वह सबसे श्रेष्ठ उपकार करने वाला है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

عِلمی مِنَ الرحمٰن ذی الآلاءِ
باللہ حُزتُ الفضلَ لا بِدَھاءِ

मेरा ज्ञान रहमान खुद। की ओर से है जो नेमतों वाला है मैंने खुदा के द्वारा खुद की अनुकंपा को प्राप्त किया है न कि बुद्धि के द्वारा।

کَیفَ الوصُول إلیٰ مَدارجِ شکرہِ
نثنی عَلَیہ ولَیْس حولُ ثناءِ

हम उसके धन्यवाद करने की मंजिलों तक कैसे पहुंच सकते हैं कि हम उसकी प्रशंसा करते हैं और प्रशंसा का सामर्थ्य नहीं।

اللہ مَولانا و کَافلُ أمرنا
فی ھذہ الدّنیا وبَعْد فناءِ

ख़ुदा हमारा मौला है और हमारे काम का संरक्षक है, इस संसार में भी और मृत्यु के बाद भी।

لولا عنایتہ بزمنِ تطَلُّبی
کادت تُعفِّینی سیولُ بکائی

यदि मेरी निरंतर जिज्ञासा के दौर में उसकी कृपा न होती तो निकट था कि ख़ुदा की याद में रोने गिड़गिड़ाने की बाढ़ मुझे नष्ट कर देती।

بشری لنا إنا وجدْنا مؤنسًا
ربًّا رحیمًا کاشِفَ الغمّاءِ

हमारे लिए खुशखबरी है कि हमने प्यार करने वाला और गम दूर करने वाला पा लिया है जो कृपालु रब है और गम तथा मुसीबत का दूर करने वाला है।

أُعطیتُ مِن إلْفٍ معارفَ لُبَّھَا
أُنزلتُ مِن حِبٍّ بدار ضیاءِ

मुझे महबूब की ओर से अध्यात्मिक ज्ञान का मग्ज प्रदान किया गया है और मैं अपने महबूब की ओर से प्रकाश के स्थान में उतारा गया हूं।

نتلو ضیَائَ الحقّ عند وضوحهِ
لَسْنا بمبتاعِ الدجی بِبَراءِ

हम सत्य के प्रकाश का उसके प्रकट होते ही अनुसरण करते हैं, चंद्रमा उदय हो जाने के बाद हम अंधकार के खरीदार नहीं।

نفسی نَأَتْ عن کل ما هو مظلمٌ
فأنختُ عند منوّری وَجْنائی

मेरी अंतरात्मा प्रत्येक अंधकारमय वस्तु से दूर है, अत: मैंने अपनी मजबूत ऊंटनी को अपने प्रकाशित करने वाले के पास बैठा दिया।

غلبَتْ علی نفسی محبّةُ وجههِ
حتی رَمَیتُ النفسَ بالإلغاءِ

मुझ पर उस की मोहब्बत प्रबल हुई यहां तक कि मैंने अपनी इच्छाओं को बेकार करके निकाल फेंका।

لمّا رأیتُ النفسَ سدّتْ مُهْجَتی
ألقیتُها کالمَیّتِ فی البَیْداءِ

और जब मैंने देखा की मेरी इच्छाएं मेरी रूह के मार्ग में रोक हैं तो मैंने उसे इस प्रकार फेंक दिया जैसे मुर्दा जंगल में पड़ा हो।

اللّٰہ کهفُ الارض والخضراءِ
ربٌّ رحیم ملجأُ الاشیاءِ

अल्लाह ही धरती और आकाश की शरण है और रब्बे रहीम है और सब चीज़ों की शरण स्थली।

بَرٌّ عَطوفٌ مأمَنُ الغرماءِ
ذو رحمةٍ و تبرُّعٍ وَ عَطاءِ

वह सद्व्यवहार करने वाला मेहरबान, मुसीबत में ग्रस्त लोगों की लिए अमन का स्थान है। वह रहमत और उपकार तथा क्षमा प्रदान करने वाला है।

أحدٌ قدیم قائم بوجودهِ
لَم یتخذْ وَلدًا ولا الشرکاءِ

वह अकेला और सदैव से अपने अस्तित्व पर क़ायम है। न उसने कोई पुत्र बनाया है और न ही कोई भागीदार।

وله التفرّد فی المحَامد کلـها
ولہ علاء فـوق کلّ عـلاءٍ

वह सभी गुणों में अकेला ही है। और उसे हर बुलंदी से बढ़कर बुलंदी हासिल है।

العَاقلـون بعَالَمیـن یَرونهُ
وَالعَـارفونَ بہ رأوا أشیـاءٍ

और मनीषियों ने ब्रह्मांड के माध्यम से उसे देखा है। और अध्यात्म ज्ञानियों ने उसके माध्यम से वस्तुओं को देखा है।

هـذا هو المعبود حقًّا لِلْوَرٰی
فَـردٌ وَحیْد مَـبدء الاضواءِ

वही प्राणियों के लिए एकमात्र सच्चा ईश्वर है। एक अकेला है तथा समस्त प्रकाशों का स्रोत है।

هذا هو الحِبُّ الذی آثرتُهُ
ربُّ الوری عینِ الهدی مولائی

यही वह प्रिय है जिसे मैंने (सभी पर) प्राथमिकता दी है। सृष्टि का पालनहार, मार्गदर्शन का स्रोत और मेरा स्वामी है।

هاجتْ غمامۃُ حُبّہ فکأنّها
رکبٌ علٰی عُسْـبُورۃِ الحَدْواءِ

उसके प्रेम का बादल उठा तो मानो वह बादल ठंडी हवा की तेज ऊंटनी पर सवारों के समान है।

ندعوہ فی وقت الکروب تضرّعًا
نرضی بہ فی شدّۃ و رخاءٍ

व्याकुलता के समय हम उसे विनम्रता से पुकारते हैं और कठोरता तथा नरमी में उसी पर प्रसन्न हैं।

حَوجاءُ أُلْفته أثارت حُرّتی
ففدَی جَنانی صولۃَ الحَوجاءِ

उसके प्यार के जोश ने मेरी धूल उड़ा दी। अत: मेरा दिल उस प्यार के जोश पर फिदा हो गया।

أعطی فما بقِیَتْ أمانی بَعْدہٗ
غمَرتْ أیادی الفیض وجہَ رجائی

उसने मुझे इतना दिया कि उसके बाद कोई इच्छा शेष न रही। उसके वरदान के उपकारों की अधिकता मेरी इच्छा की चरम सीमा पर भी छा गई।

إنّا غُمِسنا مِن عنایۃ ربّنا
فی النور بَعْد تمزُّق الاھواءِ

तामसिक इच्छाओं के टुकड़े-टुकड़े हो जाने के बाद हम अपने रब के उपकारों से नूर (अर्थात प्रकाश) में डुबकी लगाए गए हैं।

إنّ المحبّۃ خُمِّرتْ فی مُھجتی
وأری الودادَ یلُوح فی أھبائی

निस्संदेह प्रेम मेरी आत्मा में बसा दिया गया है और मैं देखता हूं कि मोहब्बत मेरे अस्तित्व के कण-कण मैं चमक रही है।

إنی شربت کؤوس موت للْھُدٰی
فوجدتُ بعد الموت عینَ بقاءِ

मैंने सन्मार्ग प्राप्त करने हेतु मौत के प्याले पिए। अत: मौत के बाद मैंने अमर रहने का स्रोत पा लिया।

إنی أُذِبتُ مِنَ الوداد و نارہِ
فأری الغروبَ یسیل من إھرائی

मैं मोहब्बत और उसकी अग्नि से पिघलाया गया हूं और मैं देख रहा हूं कि मेरे आंसू भावुक हो जाने के कारण बह रहे हैं।

الدمع یجری کالسیول صبابۃً
والقلب یُشوَی من خیال لقاءِ

इश्क के कारण आंसू बाढ़ के समान बह रहे हैं और दिल मिलने के विचार से व्याकुल है।

وأری الوداد أنارَ باطنَ باطنی
وأری التعشق لاحَ فی سِیمائی

और मैं देखता हूं कि मोहब्बत ने मेरे अंतर्मन की गहराई को प्रकाशित कर दिया है और मैं देखता हूं कि इश्क मेरे चेहरे पर दिखाई दे रहा है।

الخَلقُ یبغُون اللذاذةَ فی الهویٰ
ووجدتُها فی حُرقةٍ وَ صَلاءٍ

लोग तो लोभ और लालच में आनंद तलाश करते हैं और मैंने उसे पाया है तपन और जलन में।

اللّٰہ مقصد مُهجَتی و أریده
فی کل رشحِ القلم و الإملاءِ

अल्लाह मेरा अभीष्ट है और मैं उसी को चाहता हूं लेखनी के प्रत्येक (स्याही के) कतरे में और हर एक लिखावट में।

یا أیّها الناس اشربوا من قِربتی
قد مُلاءِ من نور المفیض سِقائی

हे लोगो! मेरी मश्क से पियो क्योंकि वास्तविक दानशील (ख़ुदा) के प्रकाश से मेरी मश्क भर दी गई है।

قومٌ أطاعونی بصدق طویّةٍ
والآخرون تکبّروا لغطاءٍ

एक क़ौम ने सच्चे दिल से मेरा आज्ञापालन किया है और दूसरों ने नफ्स के परदे की वजह से अहंकार किया है।

حسدوا فسبّوا حاسدین ولم یزلْ
حسَدتْ لئامٌ کلَّ ذی نعماءٍ

उन्होंने द्वेष किया और द्वेष करते हुए गालियां दीं और ऐसा ही होता रहा है कि कमीनों ने प्रत्येक साहिबे नेमत से द्वेष किया है।

مَن أنکر الحقَّ المبین فإنّهُ
کلبٌ وعَقب الکلبِ سِرْبُ ضِراءٍ

जिसने खुली खुली सच्चाई का इन्कार किया तो वह कुत्ता है इस अवस्था में कि उस कुत्ते के पीछे शिकारी कुत्तों का एक समूह चला आ रहा है।

آذَوا وسبّونی وقالوا کافرٌ
فالیوم نقضی دَینَھم برباءٍ

उन्होंने मुझे कष्ट दिया और गालियां दी और कहा कि यह काफिर है। आज हम उनका कर्जा सूद समेत लौटा रहे हैं।

واللّٰہِ نحن المسلمون بفضلہٖ
لکن نَرٰی جھلٌ علی العلماءٍ

ख़ुदा की क़सम हम उसकी कृपा से मुसलमान हैं परंतु मूर्खता उलमा के सर पर सवार हो गई है।

نختار آثار النّبیِّ وأَمْرَہُ
نقفو کتابَ اللّٰہ لا الآراءٍ

हम नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आसार और आप के आदेश को अपना रहे हैं। हम अल्लाह की किताब का अनुसरण करते हैं न कि दूसरों की बातों का।

إنّا بَراءٌ فی مناھج دینہٖ
مِن کلّ زندیق عدوِّ دَھاءٍ

हम उसके धर्म के मार्गों में प्रत्येक जनदीक और अक्ल के दुश्मन से विमुख हैं।

إنا نطیع محمّدًا خیرَ الوریٰ
نورُ المُھَیمن دَافِعِ الظّلماءٍ

हम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करते हैं जो सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ हैं। बिगड़े काम बनाने वाले ख़ुदा का नूर और अंधकारों को दूर करने वाले हैं।

أفنحن من قوم النصاری أکفَرُ
وَیلٌ لکم ولھذہ الآراءٍ

तो क्या हम ईसाई क़ौम से भी अधिक काफिर हैं अफसोस है तुम पर और तुम्हारी रायों पर।

يا شيخَ أرضِ الخبث أرضِ ''بطالةٍ''
كفّرتنی بالبغض والشحناءِ

हे बटाला की दुष्ट धरती के शैख़! तूने ईर्ष्या और द्वेष से मुझे काफिर ठहराया है।

آذيتَنی فَاخْشَ العواقب بعدهٗ
والنّار قد تبدو من الإيراءِ

तूने मुझे कष्ट दिया है। अत: अब तू इसके बाद अंजामों से डर और आग सुलगाने से अधिकतर भड़क ही उठती है।

تبّتْ يداك تبِعتَ كلَّ مفاسدٍ
زلّتْ بك القدمانِ فی الانحاءِ

तेरे दोनों हाथ टूट जाएंगे तूने हर प्रकार के उपद्रव का अनुसरण किया, विभिन्न दिशाओं में तेरे कदमों ने ठोकर खाई है

أودیٰ شَبابُكَ والنوائبُ أخرفتْ
فالوقت وقت العجز لا الخيلاءِ

तेरी जवानी व्यर्थ हो गई और दुर्घटनाओं ने तेरी बुद्धि मार दी है। अत: यह समय विनम्रता का है न कि अहंकार का।

تبغیْ تباریْ والدوائرَ مِن هوٰی
فعليكَ يسقُط حجرُ كلّ بلاءِ

तू अपनी तामासिक इच्छाओं के कारण मेरी तबाही और पतन चाहता है इसीलिए तुझ पर हर मुसीबत का पत्थर पड़ रहा है और पड़ेगा।

إنی من المَولٰی فكيف أُتَبَّرُ
فاخْشَ الغُيُور ولا تَمُتْ بجفاءِ

मैं तो ख़ुदा की ओर से हूं अत: मैं किस प्रकार नष्ट हो सकता हूं। तू स्वाभिमानी ख़ुदा से डर और अपने अत्याचार से नष्ट न हो।

أفتضرِبنَّ علی الصَّفاة زجاجةً
لا تنتهرْ واطلبْ طريق بقاءِ

क्या तू पत्थर पर शीशे को मार रहा है? आत्महत्या न कर और जीवन के मार्ग की खोज कर।

اُتْرُكْ سبيل شرارة وخباثةٍ
هَوِّنْ عليك ولا تمُتْ بعناءٍ

तू उपद्रव तथा दुष्टता का मार्ग त्याग दे होश से काम ले परिश्रम से स्वयं को नष्ट न कर।

تُبْ أيّها الغالى وتأتى ساعةٌ
تمسى تعُضّ يمينَك الشلّاءِ

हे बढ़ बढ़ कर बातें करने वाले! तौबा कर जबकि वह घड़ी आ रही है कि तू अपने फालिज पड़े दाएं हाथ को दांतों से काटने लगेगा।

يا ليت ما ولدتْ كمثلك حامِلٌ
خفّاش ظلماتٍ عدوّ ضياءٍ

काश कि कोई मां तेरे जैसा अंधकारों का चमगादड़ और रोशनी का शत्रु न जनती।

تسعٰى لتأخذنى الحكومةُ مجرمًا
ويل لكلّ مزوِّر وَشّاءٍ

तू प्रयत्न कर रहा है कि सरकार मुझे मुजरिम समझकर गिरफ्तार करे। हर एक धोखेबाज चुगल खोर पर फटकार है।

لو كنتُ أُعطيتُ الولاءَ لعُفْتُهُ
ما لى ودنيا كم؟ كفانِ كِسائى

अगर मुझे हुकूमत भी दी जाती तो मैं उसे नापसंद करता, मेरा तुम्हारी दुनिया से क्या संबंध है मेरे लिए तो मेरी कमली ही पर्याप्त है।

مُتنا بموت لا يراه عدوُّنا
بعُدتْ جنازتنا من الاحياءِ

हम तो ऐसी मौत मर गए हैं जिसकी वास्तविकता हमारा शत्रु नहीं जानता और हमारा जनाज़ा ज़िन्दों की नजरों से दूर पड़ा हुआ है।

تُغرى بقولٍ مفترًى وتخرّص
حكّامَنا الظّانين كالجهلاءِ

तू मनगढ़त बातों और अटकलों से हमारे उन अधिकारियों को उकसा रहा है जो अज्ञानियों के समान कुधारणा में ग्रस्त हैं।

يا أيّها الاعمٰى أتُنكر قادرًا
يحمى أحبّتَه من الايواءِ

हे अंधे क्या तू उस सामर्थ्यवान (ख़ुदा) का इन्कार करता है जो अपने पास स्थान देकर अपने प्रियों की हिमायत करता है।

أنَسيتَ كيف حمَى القدير كليمَهُ
أو ما سمعتَ مآلَ شمسِ حِراءٍ

क्या तू भूल गया है कि किस प्रकार सामर्थ्यवान ख़ुदा ने अपने कलीम मूसा की हिमायत की और क्या तूने गार-ए-हिरा के सूर्य के अंजाम को नहीं देखा?

نحو السّماء و أمرِها لا تنظُرَنْ
فى الارض دُسَّتْ عينُك العَمْياءِ

तेरी निगाह आसमान और उसके आदेश की ओर कदापि नहीं जाएगी क्योंकि तेरी अंधी आंख तो जमीन में धंसी हुई है।

غرّتْك أقوالٌ بغير بصيرةٍ
سُترتْ عليك حقيقة الانباءِ

तुझे अंधेपन के कारण कुछ बातों ने धोखा दिया है और तुझ पर भविष्य की खबरों की वास्तविकता छुप गई है।

أدخلتَ حزبك فى قليبِ ضلالةٍ
أفهذه من سيرة الصلحاءِ

तूने अपने समूह (अर्थात अनुयायियों) को गुमराही के कुएं में डाल दिया है क्या नेक लोगों की जीवनी ऐसी ही होती है?

جاوزتَ بالتكفير من حدّ التقى
أشَققتَ قلبى أو رأيتَ خفائى

तू मुझे काफिर ठहरा कर संयम की हद से बाहर निकल गया है क्या तूने मेरा दिल

फाड़ कर देखा है या मेरे अन्तरमन को देख लिया है?

كَمِّلْ بخُبثك كلَّ كَيدٍ تقصدُ
واللّٰهُ يكفى العبدَ للإزراءِ

प्रत्येक षड्यंत्र जो तू करना चाहता है अपनी दुष्टता से चरम सीमा तक पहुंचा दे, अपने बंदे को शरण देने के लिए अल्लाह ही पर्याप्त है।

تأتيك آياتى فتعرفُ وَجْهَهَا
فاصبِرْ ولا تترُكْ طريق حياءِ

मेरे निशान तेरे पास आएंगे तो तू उनकी वास्तविकता को पहचान लेगा। अत: धैर्य रख और लज्जा का मार्ग न छोड़।

إنى كتبتُ الكتبَ مثلَ خوارقٍ
اُنظُرْ أعندك ما يصوب كمائى

मैंने मोजिज़ात (चमत्कारों) के तौर पर पुस्तकें लिखी हैं देख क्या तेरे पास ऐसा पानी है जो मेरे पानी की तरह बरसे।

إن كنت تقدر يا خصيم كقدرتى
فاكتُبْ كمثلى قاعدا بحذائى

हे मुझसे झगड़ा करने वाले! यदि तू मेरे समान सामर्थ्य रखता है तो मेरी तरह मेरे सामने बैठकर लिख।

ما كنتَ ترضى أن تُسمَّى جاهلًا
فالآن كيف قعدتَ كاللّكْناءِ

तू तो अज्ञानी कहलाने पर राज़ी न था तो अब सोलीदा ज़बान स्त्री के समान कैसे बैठ गया है।

قد قلتَ للسّفهاء إنّ كتابهُ
عَفِصٌ يُهيج القيء من إصغاءِ

तूने मूर्खों से कहा कि इसकी पुस्तक कड़वी है जिसके सुनने से उल्टी आती है।

ما قلتَ كالادباء قُلْ لِيْ بعدما
ظَهَرتْ عليك رسائلى كقُياءِ

मुझे बता कि तूने साहित्यकारों के समान क्या लिखा है इसके बाद कि तुझे मेरी पुस्तकें उल्टी की तरह दिखाई दीं?

قد قلتَ إنی باسل متوغـلٌ
سَمَّـيتَنی صیدًا من الخیلاءِ

तू ने दावा किया है कि मैं दिलावर हूं और ज्ञान में महारत रखने वाला हूं और अहंकार से तूने मेरा नाम शिकार रखा था।

الیَوم مـنّی قد هـرَبتَ کأرنبٍ
خوفًا مِنَ الا خزاء والإعـراءِ

आज तो तू मेरे मुक़ाबले में खरगोश के समान भागा है रुसवा और नंगा होने के भय से।

فَـکِّرْ أما هذا التخوّف آیـةٌ
رعبًا من الرحمٰـن لـلإدراءِ

विचार कर कि क्या तेरा यह भयभीत होकर डरना तुझे समझाने के लिए रहमान ख़ुदा की ओर से निशान नहीं है।

کیف النضال وأنتَ تهرُب خشیةً
اُنظُرْ إلٰی ذلّ مِنَ اسـتعلاءِ

तू मुझसे किस प्रकार मुक़ाबला कर सकता है हालांकि तू मुझ से डर कर भाग रहा है। देख इस अपमान की ओर जो अहंकार करने के कारण तुझे पहुंचा है।

إنّ المـهَیمِن لا یحبّ تـکبّرًا
مِن خَلْقه الضعـفاء دود فناءِ

निस्संदेह मुहैमिन ख़ुदा अहंकार को पसंद नहीं करता अपनी कमज़ोर सृष्टि की ओर से जो फना का कीड़ा है।

عُفِرتَ مِن سهمٍ أصَابك فاجئًا
أصبحتَ کالاموات فی الجَهْراءِ

तू मिट्टी में मिला दिया गया है उस तीर से जो अचानक तुझे आ लगा है। तू जंगल में पड़े मुर्दों की तरह हो गया है।

الآن أين فررتَ يا ابنَ تصلّفٍ
قد كنتَ تحسبنا مِن الجهلاءِ

हे बढ़ बढ़ कर बातें करने वाले! अब तू कहां भाग गया है तू तो हमें मूर्खों में से समझा करता था।

يا مَن أهاج الفتن قُمْ لنضالنا
كنا نعدّك نَوْجَةَ الحَثْواءِ

हे वह व्यक्ति जिसने उपद्रव मचाया हमारे मुक़ाबले के लिए उठ खड़ा हो हम तो तुझे धूल वाली धरती का तूफान समझते हैं।

نطقى كَمَوْلِيِّ الاَئسِرَّةِ جَنّـةٍ
قولى كقِنْوِ النخل فى الخَلْقاءِ

मेरा बोलना उस बाग के समान है जिसकी घाटियों में दूसरी बारिश हुई हो और मेरा कथन खजूर के गुच्छे के समान है जो उपजाऊ भूमि में हो।

مُزِّقتَ لكنْ لا بضرب هَراوةٍ
بل بالسيوف الجاريات كماءِ

तू टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है लेकिन डंडे की मार से नहीं बल्कि तलवारों से जो बहते पानी की तरह (तेज़) थीं।

إن كنت تحسدنى فإنى باسِلٌ
أُصلى فؤاد الحاسد الخطّاءِ

यदि तू मुझसे ईर्ष्या करता है तो मैं एक दिलावर आदमी हूं ईर्ष्यालु पापी के दिल को जलाता हूं।

كذّبتَنى كفّرتنى حقّرتنى
وأردتَ أن تَطَأَنَّنِىْ كعَفاءِ

तूने मुझे झुठलाया, मुझे काफिर कहा और मुझे तिरस्कृत समझा और तूने इरादा किया है कि मुझे मिट्टी के समान अवश्य पैरों तले कुचल डाले।

هذا إرادتك القديمة مِن هوًى
واللّٰهُ كهفى مُهلِكُ الاعداءِ

यह लोभ तथा लालच के कारण तेरा पुराना इरादा है और अल्लाह मेरी शरण है जो शत्रुओं को नष्ट करने वाला है।

إنی لشرُّ النّاس إن لم یأتِنی
نصرٌ من الرحمٰن للاعلاءِ

मैं अत्यंत अधम सृष्टि हूंगा यदि रहमान ख़ुदा की सहायता मुझे प्रबल करने के लिए न आए।

ما کان أمر فی یدیك و إنّهُ
ربٌّ قدیر حافظُ الضعفاءِ

तेरे हाथ में तो कोई अधिकार नहीं और ख़ुदा की यह शान है कि वह सामर्थ्वान ख़ुदा कमज़ोरों का संरक्षक है।

الکبر قد ألقاك فی درکِ اللظٰی
إنّ التکبّر أردأُ الا شیاءِ

अहंकार ने तुझे नर्क के निचले स्तर में डाल दिया है निस्संदेह अहंकार प्रत्येक चीज़ से अधम है।

خَفْ قهرَ ربٍّ ذی الجلال إلی متی
تقفو هواكَ وتَنزُوَنْ کظِباءِ

प्रतापी ख़ुदा के प्रकोप से डर कब तक तू अपनी इच्छा का अनुसरण करेगा और हिरणों के समान चौकड़िया भरता रहेगा?

تبغیْ زوالیْ والمهَیمن حافظی
عادیتَ ربًّا قادرًا بمِرائی

तू मेरा पतन चाहता है जबकि निगरान ख़ुदा मेरा संरक्षक है। और मुझसे झगड़ा करने में तूने समर्थ ख़ुदा की शत्रुता मोल ले ली है।

إنّ المقرَّب لا یضاع بفتنةٍ
والاجر یُکتب عند کُلّ بلاءِ

ख़ुदा का सानिध्य प्राप्त (व्यक्ति) किसी उपद्रव से नष्ट नहीं होता प्रत्येक मुसीबत के समय उसका प्रतिफल लिखा जाता है।

ما خاب مَن خاف المهيمنَ ربَّهُ
إنّ المهيـمن طالبُ الطلباءِ

जो अपने मुहैमिन रब से डरे वह असफल नहीं होता क्योंकि निस्संदेह निगरान ख़ुदा तो अपने अभिलाषियों का इच्छुक है।

هل تطمَع الـدنيا مذلّةَ صادقٍ
هيئات ذاك تخـيُّل السفهاءِ

क्या संसार सच्चे के अपमान की इच्छा रखता है ऐसा कदापि नहीं हो सकता यह तो मूर्खों का विचार है।

إنّ العواقب للذى هو صالحٌ
والكَرّة الاولٰى لاهـل جفاءٍ

लड़ाई का परिणाम नेक लोगों के पक्ष में ही निकलता है, हां पहला आक्रमण अत्याचारियों की ओर से होता है

شهدتْ عليه، خصيمِ، سُنّةُ ربّنا
فى الانبيـاءِ و زمـرةِ الصلحاءِ

हे मुझसे झगड़ा करने वाले इसी बात पर हमारे रब का व्यवहार साक्षी है जो नबियों और सालेहीन के समूह में जारी है।

مُتْ بالتغيّظ و اللَّظٰى يا حاسدى
إنا نموت بعـزّةٍ قَعْسـاءٍ

हे मुझसे ईर्ष्या करने वाले तू क्रोध तथा अग्नि की लपट से मर जा, हम तो शाश्वत सम्मान के साथ मरेंगे।

إنّا نرىٰ كلَّ العلٰى مِن ربّنا
والخَلْقُ يأتـينا لبَغْـىِ ضياءٍ

हम तो यही पाते हैं कि समस्त प्रगतियां हमारे रब से ही मिलती हैं और सृष्टि प्रकाश की इच्छा में हमारे पास आती है।

هم يذكرونك لاعنينَ وذِكرُنا
فى الصّـالحات يُعَدُّ بعد فناءٍ

(हे ईर्ष्यालु!) लोग तेरा वर्णन तो लानत के साथ करेंगे और नेक कामों के बारे में हमारा वर्णन मृत्यु के बाद भी होता रहेगा।

هل تَهْدِمَنَّ القصرَ قصرَ إلٰهنا
هل تُحرِقَنْ ما صنَعهُ بنّائی

क्या तू उस महल को गिरा देगा जो हमारे उपास्य का महल है क्या तू उस चीज़ को जला डालेगा जिसे मेरे निर्माता (अल्लाह तआला) ने बनाया है?

یرجون عثرةَ جَدِّنا حسداؤُنا
ونذوق نعماءً ا علٰی نعماءٍ

हमारे ईर्ष्यालु चाहते हैं कि हमारा भाग्य बुरा हो हालांकि हम नेमत पर नेमत का स्वाद चख रहे हैं।

لا تحسبنْ أمری کأمْرٍ غُمّة
جاءت بك الآیات مثل ذُکاءٍ

मेरे काम को संदिग्ध काम की समान न समझ, तेरे पास तो सूर्य के समान चमकदार निशान आ चुके हैं।

جاءت خیارُ الناس شوقًا بعدما
شمُّوا ریاحَ المِسك من تلقائی

नेक व्यक्ति मेरे पास शौक से आए हैं बाद इसके कि मेरी ओर से उन्होंने कस्तूरी की सुगंध सूंघी।

طاروا إلیّ بألفة وإرادةٍ
کالطَّیرِ إذْ یأْوی إلی الدَّفْواءٍ

वह मेरी ओर प्रेम तथा श्रद्धा से उड़ते हुए आए हैं, उस पक्षी के समान जो बड़े वृक्ष पर शरण लेता है।

لفَظتْ إلیّ بلادُنا أکبادَها
ما بقی إلا فضلة الفضلاءِ

हमारे देश ने हमारी ओर अपने कलेजे के टुकड़ों को फेंक दिया है और अब विद्वानों में से केवल बचे खुचे ही शेष रह गए हैं।

أو مِن رجال الله أُخفِيَ سرُّهمْ
يأتونى من بعدُ كالشهداءِ

या वे लोग शेष रह गए हैं जिनके हालात छुपे हुए हैं और वह उनके बाद मेरे पास गवाहों के समान आएंगे।

ظهرتْ من الرحمٰن آيات الهُدىٰ
سجدتْ لها أمم من العرفاءِ

रहमान ख़ुदा की ओर से सन्मार्ग के निशान प्रकट हो गए और उन निशानों की वजह से अध्यात्म ज्ञानियों के समूह (ख़ुदा के समक्ष) सजदे में गिर गए।

أما اللئام فينكرون شقاوةً
لا يهتدون بهٰذه الاضواء

परंतु अभागे लोग अपने दुर्भाग्य के कारण इन्कार कर रहे हैं वे उन प्रकाशों से सन्मार्ग को नहीं पा रहे।

هم يأكلون الجِيَفَ مثل كلابنا
هم يشرَهون كأنْسُرِ الصحراءِ

वे हमारे कुत्तों की तरह मुर्दे खा रहे हैं वह रेगिस्तान के गिद्धों के समान मुर्दों के इच्छुक हैं।

خَشَّوا ولا تخشى الرجالُ شجاعةً
فى نائبات الدّهر والهيجَاءِ

उन्होंने मुझे डराया हालांकि बहादुर मर्द बहादुरी के कारण ज़माने की घटनाओं और लड़ाई से डरा नहीं करते।

لما رأيتُ كمالَ لطفِ مهيمنى
ذهب البلاء فما أحسُّ بلائى

जब मैंने अपने मुहैमिन ख़ुदा की अत्यंत मेहरबानी को देखा तो मुसीबत दूर होती गई अत: मैं अपनी कोई मुसीबत महसूस नहीं करता।

ما خاب مثلى مؤمن بل خصمُنا
قد خاب بالتكفير والإفتاءِ

मेरे जैसा मोमिन असफल नहीं रहा बल्कि हमारा शत्रु काफिर ठहराने और फतवा देने में असफल हो गया।

الغَمْرُ يبدو ناجذيه تغيّظًا
اُنظُرْ إلى ذی لوثة عَجْماءِ

मूर्ख व्यक्ति क्रोध से अपने दांत दिखाता है तू उस मूर्ख पशु की ओर देख।

قد أسخطَ المولیٰ لیُرضی غیرہُ
واللّٰہُ کان أحقَّ للارضاءِ

उसने अपने मौला को क्रोधित कर दिया ताकि उसके अतिरिक्त अन्य को प्रसन्न करे और ख़ुदा का राजी किया जाना अधिक उचित और आवश्यक था।

کسّرتُ ظرف علومھم کزجاجۃٍ
فتطایروا کتطایر الوَقْعاءِ

मैंने उनके ज्ञान के बर्तन को शीशे के समान तोड़ दिया अतः वह धूल के उड़ने की तरह उड़ गए।

قد کفّروا مَن قال إنی مُسلمٌ
لمقالۃ ابن بطالۃٍ وعُواءٍ

उन्होंने उस व्यक्ति को काफिर क़रार दिया जो कहता है कि मैं मुसलमान हूं उनकी यह बात (शेख) बटालवी के कथन और उसके चीखने चिल्लाने के कारण है।

خوف المھیمن ما أری فی قلبھمْ
فارتْ عُیونُ تمرُّدٍ وإباءِ

मैं उनके दिलों में मुहैमिन ख़ुदा का भय नहीं देखता बल्कि उनके उद्दंडता और इन्कार के स्रोत ने जोश मारा है।

قد کنتُ آملُ أنّھم یخشونہُ
فالیوم قد مالوا إلَی الاھواءِ

मैं आशा करता था कि वह उससे डरेंगे पर आज तो वह लोभ और लालच की ओर झुक गए हैं।

نَضَوا الثياب ثيابَ تقوى كلُّهمْ
ما بقى إلّا لِبْسة الإغـواءِ

उन सब ने संयम के वस्त्र उतार फेंके और उन पर बहकाने के वस्त्रों के सिवा कुछ शेष नहीं रहा।

هل من عفيفٍ زاهدٍ فى حزبهمْ
أو صالحٍ يخشى زمان جزاءِ

क्या उनके समूह में कोई संयमी और साधक शेष नहीं है या ऐसा नेक जो प्रतिफल दिवस से डरता हो?

واللّٰه ما أدرى تـقيًّا خائفًا
فى فِرقة قاموا لـهدم بـنائى

अल्लाह की क़सम! मैं उस समूह में कोई डरने वाला संयमी नहीं पाता जो मेरी इमारत को ढाने के लिए उठ खड़े हुए।

ما إنْ أرى غيرَ العمائم واللُّحىٰ
أو آنُفًا زاغت من الخيـلاءِ

मैं पगड़ियों और दाढ़ियों या ऐसे नाकों के सिवा जो अहंकार से टेढ़े हो गए हैं और कुछ नहीं देखता।

لا ضيـرَ إنْ ردّوا كلامى نـخوةً
فسيَنجَعَنْ فى آخَـرين ندائى

कोई आपत्ति नहीं यदि उन्होंने मेरे कथन को अहंकार से रद्द कर दिया है। अत: शीघ्र दूसरों में मेरी आवाज़ अवश्य प्रभावकारी हो कर रहेगी।

لا تنظُـرَنْ عجبًا إلىٰ إفتائهمْ
غُسّ تلا غُسًّا بنَقْعِ عَمَاءِ

उनके फतवों को आश्चर्य से न देख एक कमीना अंधेपन के आंधी के कारण (दूसरे) कमीने का अनुसरण कर रहा है।

قد صار شيطان رجيم حِبَّهُمْ
يمسى ويُضحى بينهم لـلقاءِ

धुत्कारा हुआ शैतान उन का प्रिय बन गया है वह उनके बीच मुलाकात के लिए सुबह शाम आता है।

أعمٰی قلوبَ الحاسدین شرورُهمْ
أعری بواطنَهم لباسُ رِیاءٖ

ईर्ष्यालुओं के दिलों को उनके उपद्रवो ने अंधा कर दिया है और उनके अंतर्मन को दिखावे ने नंगा कर दिया है।

آذوا وفی سُبل المهَیمن لا نریٰ
شیئًا ألذَّ لنا من الإیذاءِ

उन्होंने कष्ट दिया, और मुहैमिन ख़ुदा के मार्ग में कष्ट उठाने से अधिक आनंददाई हम किसी चीज़ को नहीं समझते।

ما إنْ أریٰ أثقالهم کجدیدةٍ
إنّی طلیح السَّفر والاعباءِ

मैं उनके बोझों को कोई नए बोझ नहीं पाता। मैं यात्राओं और बोझों का अभ्यस्त और पसंद करने वाला हूं।

نفسی کعُسْبُرةٍ فأُحْنِقَ صَلْبُها
مِن حمل إیذاء الوریٰ وجفاءِ

मेरा नफ्स ऊंटनी के समान है अत: सृष्टि के अत्याचार उठाने से उसकी पीठ दुर्बल कर दी गई है।

هذا ورَبِّ الصادقین لاجْتَنِی
نِعم الجنٰی مِن نخلة الآلاءِ

इस बात को पल्ले बांध ले और सच्चों के रब की क़सम है कि मैं नेमतों की खजूर से अच्छे मेवे चुनता हूं।

إنّ اللئام یحقِّرون وذمُّهمْ
ما زادنی إلا مقام سَناءِ

कमीने लोग तो मेरा अपमान करते हैं और उनकी निंदा मुझे केवल बुलंदी के स्थान में ही बढ़ाती है।

زَمَعُ الاناس يحملقون كثعلبٍ
يـؤذوننى بتحوُّب ومُواءٍ

नीच लोग लोमड़ी की तरह मुझे घूरते हैं और मुझे लोमड़ी और बिल्ली की आवाज निकाल कर कष्ट देते हैं।

واللّٰهِ ليس طريقهم نهج الهدیٰ
بل مُنْيَةٌ نشأت من الاهواءِ

अल्लाह की क़सम उनका मार्ग हिदायत का मार्ग नहीं है बल्कि ऐसी अभिलाषा है जो लोभ और लालच से पैदा हुई है।

أعرضتُ عن هذيانهم بتصامُمٍ
وحسبتُ أن الشرّ تحت مِراءٍ

मैंने उनकी अन्गर्ल बातों से बहरा बनकर मुंह मोड़ लिया और मैंने जान लिया कि बहस-मुबाहसा (शास्त्रार्थ) के नीचे उपद्रव छुपा हुआ है.

حسِبوا تفضُّلَهم لاجل تصبُّرى
فعَلَوا كمِثل الدُّخِّ مِن إغضائى

मेरे सब्र करने के कारण उन्होंने अपने आप को विजयी समझ लिया तो मेरे अनदेखा करने की वजह से उन्होंने धुएं की तरह बुलंदी का प्रदर्शन किया।

مـا بقِى فـيهم عِفّـةٌ وزهادةٌ
لا ذرّةٌ مِـن عيــشةٍ خَشْنـاءٍ

उनमें कोई पवित्रता और संयम शेष नहीं रहा और न ही परिश्रमी जीवन का कोई कण शेष रहा।

قعدوا على رأس الموائد مِن هَوًى
فرّوا من البأساءِ والضرّاءِ

और लोभ तथा लालच के कारण दस्तरखानो पर बैठे हुए हैं और कष्टों एवं कठिनाइयों से भाग निकले।

جَمَعُوْا من الاوباش حزب أراذلٍ
فكأنهم كالخِنْثِ للاحماءِ

उन्होंने लोफरों में से कमीनों का एक समूह इकट्ठा कर लिया मानो कि वे उपलों के समान हैं जो गर्मी प्राप्त करने के लिए होते हैं।

لما كتبتُ الكتب عند غُلوّهمْ
ببلاغة وعذوبة وصفاءٍ

जब मैंने उनके बढ़ बढ़ कर बातें करने के समय पुस्तकें लिखीं जो सरसता एवं सुबोधता और अपनी मिठास और विस्तार से परिपूर्ण थीं,

قالوا قرأنا ليس قولًا جيّدًا
أو قولُ عاربةٍ من الادباءِ

उन्होंने कहा हमने पढ़ ली हैं, (यह) कोई अच्छी बात नहीं। यह साहित्यकारों में से किसी माहिर अरब का कथन है।

عربٌ أقام ببيته متسترًا
أملَى الكتابَ ببكرةٍ ومساءٍ

कोई चोटी की सरस एवं सुबोध भाषा बोलने वाला (साहित्यकार) उनके घर में छुपकर ठहरा हुआ है और वही सुबह शाम पुस्तक लिखवाता है।

اُنظُرْ إلىٰ أقوالهم وتناقُضٍ
سَلَبَ العنادُ إصابةَ الآراءِ

तू उनकी बातों और विरोधी कथन को देख, शत्रुता ने उनसे सही राय छीन ली है।

طَورًا إلى عربٍ عزَوه وتارة
قالوا كلام فاسد الإملاءِ

कभी तूने मेरे कथन को किसी अरब की ओर सम्बद्ध किया और कभी यह कहा कि इस कथन की इमला खराब है।

هٰذا مِنَ الرّحمٰن يا حزبَ العِدا
لا فِعْلَ شاميٍّ ولا رفقائى

हे शत्रुओं के समूह! यह तो रहमान ख़ुदा की ओर से है न यह किसी शाम (सीरिया) वाले का काम है और न मेरे दोस्तों का।

أعلى المهيمنُ شأنَنا وعلومنا
نبني منازلَنا على الجَوزاءِ

निगरान ख़ुदा ने हमारी शान और ज्ञानों को बुलंद कर दिया है इसलिए हम अपनी मंजिलें बुर्ज जौज़ा (मिथुन) राशि पर बना रहे हैं।

خَلُّوا مقامَ المولويّةِ بعدَهُ
وتَستّروا في غَيهَبِ الخَوقاءِ

अब इसके बाद मौलवीयत् का पद छोड़ दो और अंधे कुएं के अंधेरे में छुप जाओ।

قد حُدّدتْ كالمرهفات قريحتي
ففهِمتُ ما لا فهمه أعدائي

मेरा स्वभाव तलवारों के समान तेज़ कर दिया गया है अत: मैं वह चीज़ समझा हूँ जिसको मेरे शत्रु नहीं समझे।

هذا كتابي حازَ كلَّ بلاغة
بهَر العقولَ بنضرة وبهاءِ

यह मेरी पुस्तक है जिसने हर प्रकार की सरसता एवं सुबोधता को अपने अंदर समेट लिया है और इसने ताज़गी और गुणों से बुद्धियों को चकित कर दिया है।

الله أعطاني حدائقَ علمهِ
لولا العناية كنتُ كالسّفهاءِ

अल्लाह ने मुझे अपने ज्ञान के बाग़ प्रदान किए हैं यदि अल्लाह की कृपा न होती तो मैं भी मूर्खों के समान होता।

إني دعوت الله ربًّا محسنًا
فأرى عيونَ العلم بعد دعائي

मैंने अपने अल्लाह उपकारी रब से निवेदन किया तो मेरी दुआ के बाद उसने (मुझे) ज्ञान के स्रोत दिखा दिए।

إنّ المهيمن لا يُعِزّ بنخوةٍ
إنْ رُمْتَ درجاتٍ فكُنْ كعَفاءِ

निस्संदेह संरक्षक ख़ुदा अहंकार करने पर सम्मान नहीं देता यदि तू बुलंदी प्राप्त करना

चाहता है तो धूल समान हो जा।

والله قد فرّطت فی أمری هوًی
وأبیتَ كالمستعجل الخطّاءِ

ख़ुदा की कसम ! तूने लोभ तथा मोह के कारण मेरे मामले में गलती की है और जलदबाज़ दोषी के समान इन्कार कर दिया है।

الحُرّ لا يستعجِلنّ بل إنّهُ
يرنو بإمعان و كشفِ غطاءٍ

पक्षपात से स्वतंत्र व्यक्ति जल्दबाजी नहीं किया करता वह गंभीर दृष्टि से और पर्दा उठा कर देखता है।

يخشى الكرامُ دعاءَ أهل كرامةٍ
رُحمًا على الازواج والابناءِ

शरीफ लोग 'अहले करामत' की दुआ से, अपने बाल बच्चों पर रहम करते हुए, डरते हैं।

عندی دعاء خاطفٌ كصواعقٍ
فحَذارِ ثم حذارِ مِن أرجائی

मेरी दुआ ऐसा तीर है जो बिजलियों की तरह तेजी से अपने निशाने पर जा लगता है। (अत: विरोधी के तौर पर) मेरे निकट आने से बचो और फिर बचो।

والله إنی لا أريد إمامةً
هذا خيالك مِن طريق خطاءٍ

ख़ुदा की क़सम! मेरा इमाम (सुधारक) बनने का स्वयं कोई इरादा नहीं तेरा यह विचार ग़लती से पैदा हुआ है।

إنّا نريد الله راحةَ روحِنا
لا سُؤددًا ورياسة وعلاءٍ

नि: सन्देह हम तो केवल अल्लाह को चाहते हैं जो हमारी रूह का आराम है। हम किसी सरदारी, रियासत और प्रभुत्व को नहीं चाहते।

إنا توكّلنا على خلّاقنا
معطى الجزيل وواهب النعماءِ

हमने अपने पैदा करने वाले पर भरोसा किया है जो बहुत देने वाला और नेमत का प्रदान करने वाला है।

من كان للرّحمٰن كان مكرّمًا
لا زال أهلَ المجد والآلاءِ

जो ख़ुदा का हो गया वह बुज़ुर्ग बन जाता है और हमेशा बुज़ुर्गों और नेमतों वाला बना रहता है।

إن العدا يؤذوننى بخباثةٍ
يؤذون بالبهتان قلبَ بَراءِ

निस्संदेह शत्रु दुष्टता से मुझे कष्ट दे रहे हैं। वे झूठे आरोप लगाकर एक बेगुनाह व्यक्ति के दिल को कष्ट पहुंचा रहे हैं।

هم يُذعِرون بصيحة ونعُدّهم
فى زُمرِ موتَى لا من الاحياءِ

वे चिल्ला कर (हमें) डराते हैं हालांकि हम उन्हें मुर्दों में सम्मिलित करते हैं न कि जीवितों में।

كيف التخوف بعد قربِ مُشجّعٍ
مِن هذه الاصوات والضوضاءِ

साहस प्रदान करने वाले ख़ुदा के सानिध्य के बाद इन आवाजो और शोर-शराबे से डर कैसे पैदा हो सकता है?

يسعى الخبيث لِيُطفِئنّ أنوارَنا
والشمس لا تخفَى من الإخفاءِ

दुष्ट व्यक्ति प्रयत्न करता है कि हमारे नूर को बुझा दे और सूर्य तो छुपाने से छुप नहीं सकता।

إن المهيمن قد أتمَّ نوالَهُ
فضلًا علىّ فصرتُ مِن نُحلاءِ

निस्संदेह संरक्षक ख़ुदा ने अपनी बख़्शिश को चरम सीमा तक पहुंचा दिया है, मुझ पर कृपा करते हुए। अत: मैं बख़्शिश करने वालों में से हो गया।

نعطى العلومَ لدفعِ متربةِ الورى
طالتْ أياديـنا على الفقراءِ

लोगों की तंगी दूर करने के लिए हम ज्ञान रूपी माल प्रदान करते हैं और मोहताजों पर हमारे उपकार बहुत अधिक हो गए हैं।

إن شئتَ ليست أرضُـنا ببعيـدة
مِن أرضك المنحوسة الصَّيداءِ

यदि तू भी कुछ लेना चाहता है तो हमारी धरती कुछ दूर नहीं है तेरी उस क्षेत्र से जो मनहूस, सपाट और पथरीली है।

صعبٌ عليك زمانُ سُؤّلِ محاسِبٍ
إن متَّ يا خصمى على الشحناءِ

हिसाब लेने वाले ख़ुदा के प्रश्नों की घड़ी तुझ पर कठिन होगी। हे मेरे शत्रु यदि तू द्वेष की अवस्था में मर गया।

ما جئتُ مِن غيرِ الضرورة عابثًا
قد جئتُ مثلَ المُزْنِ فى الرَّمْضاءِ

मैं अनावश्यक और अकारण नहीं आया बल्कि में तपती हुई धरती पर बारिश बरसाने वाले बादल के समान आया हूं।

عينٌ جرتْ لعِطاشِ قومٍ أُضجروا
أو مـاءُ نَقْعٍ طافِحٍ لظِماءِ

प्यास से व्याकुल लोगों के लिए एक निरंतर बहने वाला चश्मा हो गया और प्यासों के लिए बहुत साफ साफ पानी जारी हो गया है।

إنى بأفضال المهيمن صادقٌ
قد جئتُ عـند ضرورة و وباءِ

निस्संदेह मैं संरक्षक ख़ुदा की कृपा से सच्चा हूं और मैं अवश्यकता और महामारी के समय आया हूं।

ثم اللئام يكذّبون بخبثهم
لا يقبَلون جوائزی وعطائی

फिर भी कमीने लोग अपनी दुष्टता के कारण मुझे झुठलाते हैं और मेरी क्षमा और दान को स्वीकार नहीं करते।

كَلِمُ اللئام أسنّةٌ مذروبةٌ
وصدورهم كالحَرّة الرَّجْلاءِ

कमीनो की बातें तेज भाले हैं और उनके दिल सख्त पथरीली धरती के समान हैं।

من حارب الصدّيقَ حارب ربَّهُ
ونبيَّه وطوائفَ الصلحاءِ

जो व्यक्ति सच्चे से लड़ाई करता है वह अपने रब और उसके नबी और नेकों के समूहों से जंग करता है।

واللهِ لا أدری وُجوهَ كُشاحةٍ
مِن غير أنّ البخل فارَ كماءِ

अल्लाह की क़सम मैं उनकी शत्रुता का कारण नहीं जानता सिवाय इसके कि कंजूसी ने उन में पानी की तरह जोश मारा है।

ما كنتُ أحسَب أنهم بعداوتی
يذَرون حُكْمَ شريعةٍ غرّاءِ

मुझे यह विचार नहीं था कि वह मेरी शत्रुता में प्रकाशमान शरीयत (धर्म विधान) के आदेश को भी छोड़ देंगे।

عاديتُهم للهِ حين تلاعبوا
بالدِّين صوّالين مِن غُلواءِ

मैं ख़ुदा के लिए उनका शत्रु हुआ जब वह धर्म से खेलने लगे जबकि वे सीमा से बढ़ते हुए आक्रमण करने लगे।

رُبِّبْتُ مِن دَرِّ النبیِّ وعينِه
أُعطيتُ نورًا مِنْ سراجِ حِراءِ

मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूध तथा आपके चश्मे से पोषित हुआ हूं

और गारे हिरा (हिरा नामक गुफा) के सूर्य से मुझे नूर प्रदान किया गया है।

الشمس أُمٌّ و الهلال سليلُها
ينمو و ينشأ مِن ضياء ذُكاءٍ

सूरज मां है और चंद्रमा उसका पुत्र जो सूर्य के प्रकाश से पोषण पाता है।

إنى طلعتُ كمثل بدر فانظروا
لا خير فى مَن كان كالكَهْمَاءِ

निस्संदेह में चौदहवीं के चांद के समान उदय हुआ, अत: तुम देखो। उस व्यक्ति में कोई भलाई नहीं जो कमज़ोर नजर वाली औरतों की तरह हो।

يا ربّ أيِّدْنا بفضلك وانتقِمْ
ممَّنْ يدُعُّ الحقَّ كالغُثّاءِ

हे मेरे रब! हमारी सहायता कर अपनी कृपा से और बदला ले उस व्यक्ति से जो सच्चाई को कूड़ा करकट के समान धुतकारता है।

يا ربّ قومى غلّسوا بجهالةٍ
فارحَمْ وأنزِلْهم بدار ضياءٍ

हे मेरे रब मेरी क़ौम अज्ञानता के अंधकार में चली गई अत: तू कृपा कर और उन्हें प्रकाश के घर में उतार।

يا لائمى إن العواقب للتُّقى
فاربَأْ مآلَ الامر كالعقلاءِ

हे मेरी निन्दा करने वाले परिणाम अंतत: संयमियों के हक में हुआ करता है। अत: तू बुद्धिमानों के समान परिणाम के बारे में विचार कर।

اللّٰهُ أيّدنى وصافا رحمةً
و أمدّنى بالنعم و الآلاءِ

अल्लाह ने मेरी सहायता की है और अपनी रहमत से दोस्त बनाया है और मुझे भिन्न भिन्न प्रकार की नेमतों से सहायता दी है।

فخرجتُ مِن وَهْدِ الضلالة و الشقا
ودخلتُ دار الرشد و الإدراءِ

अत: मैं दुर्भाग्य तथा गुमराही के गड्ढे से निकल गया हूं और मैं सन्मार्ग और हिदायत देने के घर में प्रवेश कर गया हूं।

والله إن الناس سَقطٌ كُلّهم
إلا الذى أعطاه نعمَ لقاءٍ

और अल्लाह की क़सम सब के सब लोग बेकार चीज़ हैं सिवाय उस व्यक्ति के जिसे ख़ुदा ने अपने दीदार की नेमत दी है।

إنّ الذى أروى المهيمنُ قلبَهُ
تأتيه أفواج كمثل ظِماءٍ

वह व्यक्ति जिसके दिल को संरक्षक ख़ुदा ने तृप्त कर दिया हो उसके पास फौज की फौज प्यासों के समान आती है।

ربّ السماء يُعِزّه بعناية
تعنو له أعناقُ أهل دهاءٍ

आसमान का मालिक अपनी कृपा से उसे सम्मान देता है और बुद्धिमानों की गर्दनें उसके आगे झुक जाती हैं।

الارض تُجعَل مثلَ غلمان لهُ
تأتى له الافلاك كالخدماءِ

धरती उसके लिए गुलामों के समान बना दी जाती है और आसमान उसके लिए सेवकों के समान हो जाते हैं।

مَن ذا الذى يُخزى عزيزَ جنابِهِ
الارض لا تُفنى شموسَ سماءٍ

वह कौन है जो ख़ुदा के प्यारे को अपमानित करे आसमान के सूर्य को धरती नष्ट नहीं कर सकती।

الخَلْقُ دودٌ كلهم إلا الذى
زكّاه فضلُ الله من أهواءٍ

संपूर्ण सृष्टि कीड़े की हैसियत रखती है सिवाय उस व्यक्ति के जिसे अल्लाह की कृपा ने मोह माया से पवित्र कर दिया हो।

فانهَضْ له إن كنتَ تعرف قدرهُ
و اسبِقْ ببذل النفس و الإعداءِ

अत: तू उस व्यक्ति के लिए उठ अगर तू उसकी कदर पहचानता है और अपने नफ्स को क़ुर्बान करने और दौड़ाने में प्राथमिकता ले जा।

إن كنت تقصد ذُلَّه فتُحقَّرُ
و ستَخْسَأَنَّ كالكلب يوم جزاءِ

अगर तू उसका अपमान चाहता है तो तू स्वयं अपमानित किया जाएगा और कुत्ते के समान प्रतिफल के दिन दरगाह से दुत्कार दिया जाएगा।

غلبتْ عليك شقاوةٌ فتحقِّرُ
مَن كان عند الله من كرماءِ

तुझ पर दुर्भाग्य का प्रभुत्व हो गया है अत: तू अपमानित समझता है उस व्यक्ति को जो अल्लाह के निकट सम्मानित है।

صعبٌ عليك سراجنا وضياؤنا
تمشى كمشى اللُّصّ فى اللَّيلاءِ

हमारा चिराग और हमारे प्रकाश तुझको बुरे लगते हैं तू अंधेरी रात में चोरों के समान चल रहा है।

تهذى و أَيْمُ اللهِ ما لك حيلة
يومَ النشور وعند وقت قضاءِ

तू अभद्रता कर रहा है और ख़ुदा की सौगंध क़यामत के दिन और निर्णय के समय तेरे लिए कोई बहाना न होगा।

برقٌ من المولى نريك وميضَه
فاصبر كصبر العاقل الرَّنّاءِ

यह मौला की ओर से बिजली है जिसकी चमक हम तुझे दिखाएंगे। अत: तू ध्यान पूर्वक देखने वाले बुद्धिमान के समान धैर्य रख।

و أرى تغيُّظَكم يفور كلُجّةٍ
موج كموج البحر أو هَوجاءِ

और मैं देखता हूं कि तुम्हारा क्रोध गहरे पानी के समान उफान पर है, समुद्र की लहर या तेज़ हवा के समान।

والله يكفى مِن كُماةِ نضالِنا
جَلدٌ من الفتيان للاعداءِ

ख़ुदा की क़सम हमारे योद्धा बहादुरों में से एक जवां मर्द दिलेर ही सब शत्रुओं के लिए पर्याप्त होगा।

إنا علیٰ وقت النوائب نصبرُ
نُزجی الزمانَ بشدّة و رخاءٍ

निस्संदेह मुसीबतों का समय आने पर हम धैर्य रखते हैं हम गरीबी तथा समृद्धि की अवस्था में जमाना गुजार देते हैं।

فِتن الزمانِ ولدنَ عند ظهورِ كمْ
والسَّيل لا يخلو من الغُثّاءِ

तुम्हारे जाहिर होते ही ज़माने के उपद्रव पैदा हो गए और उपद्रवों की बाढ़ कूड़ा करकट से खाली नहीं होती।

عُفْنا لُقِيّاكم ولا أستكرهُ
لو حلَّ بيتى عاسِلُ البَيداءِ

हम तुम्हारे मुक़ाबले से घृणा करते हैं हालांकि मैं नहीं घृणा करता यद्यपि मेरे घर में जंगल का भेड़िया ही उतर पड़े।

اليوم أنصحكم و كيف نصاحتى
قومٌ أضاعوا الدين للشحناءِ

आज मैं तुम्हें उपदेश करता हूं और मेरे उपदेश से कैसे लाभ उठा सकती है वह क़ौम, जिसने धर्म को ही द्वेष के कारण नष्ट कर दिया।

قُلنا تعالوا للنضال وناضِلوا
فتَكنّسوا كالظبى فى الافلاءِ

हमने कहा कि मुक़ाबले के लिए आओ और मुक़ाबला करो तो वे छुप गए जिस प्रकार हिरन जंगलों में छुप जाता है।

لا یبصرون ولا یرون حقیقةً
و تَھالکوا فی بخلھم و ریاءٍ

वह आंखों से काम नहीं लेते और न वास्तविकता को देखते हैं और अपनी कंजूसी और दिखावे में मर चुके हैं।

ھل فی جماعتھم بصیرٌ ینظرُ
نحوی کمثل مبصّر رنّاءٍ

क्या उनके समूह में कोई सूझ बूझ रखने वाला है जो एक विचार करने वाले सुजाखे के समान मेरी ओर देखे।

ما ناضلونی ثم قالوا جاھلٌ
اُنظُرْ إلیٰ إیذاءِھم وجفاءٍ

उन्होंने मुझसे मुक़ाबला तो न किया और कह दिया कि अज्ञानी है। उनके कष्ट देने तथा अत्याचार को देख।

دعوی الکُماۃِ یلوح عند تقابُلٍ
حدُّ الظُباتِ ینیر فی الھیجاءٍ

बहादुरों का दावा मुक़ाबला के समय ही प्रकट होता है। तलवारों की धार जंग में ही चमकती है।

رجلٌ ببطنِ "بَطَالہ" بَطّالۃٌ
تغلی عداوتہ کرعدِ طَخاءٍ

एक व्यक्ति जो बटाला में रहता है बहुत ही नाकारा है उसकी शत्रुता बादल की गरज के समान उफान मारती है।

لا یحضر المضمارَ مِن خوفٍ عرَا
یھذی کنسوان بحجب خفاءٍ

उस भय के कारण जो उसे लगा हुआ है वह मैदान में नहीं आया, वह गुमराही के पर्दों में औरतों की तरह गाली गलौज करता है।

قد آثر الدنیا وجِیفۃَ دَشْتِھا
و الموت خیر من حیاۃ غطاءٍ

उसने संसार तथा उसके जंगल के मुर्दों को पसंद कर लिया, लापरवाही और गुमनामी की जिंदगी से तो मर जाना ही बेहतर है।

يا صيدَ أسيافى إلىٰ ما تأبِزُ
لا تُنجِينّك سيرةُ الاطلاءِ

हे मेरी तलवार के शिकार तू कब तक उछल कूद करेगा? हिरण के बच्चों का किरदार तुझे मुक्ति नहीं देगा।

نَجّستَ أرضَ ''بِطَالة'' منحوسة
أرض محربِئةٍ من الحِرباءِ

तूने बटाला की मनहूस धरती को जो गिरगिटों का मैदान है अपवित्र कर दिया।

إنى أريدك فى النضال كصائدٍ
لا يـر كَنَنْ أحـد إلى إرزاءِ

मैं तुझे मुक़ाबले में शिकारी के समान चाहता हूं अत: चाहिए कि कोई तुझे शरण देने के लिए तैयार न हो।

صدرُ القناة ينوش صدرَك ضربُهُ
ويريك مُـرَّانى بحارَ دماءِ

भाले की नोक का यह हाल है कि उसकी चोट तेरे सीने को छेद देगी और मेरे लचकदार तेज भाले तुझे खून के दरिया दिखा देंगे।

جاشت إليك النفس من كلماتنا
خوفًا فكيف الحال عند مِرائى

मेरे शब्दों से भय के मारे तेरी जान होठों तक आ पहुंची तो मुझ से शास्त्रार्थ के समय तेरा क्या हाल होगा?

أُعطيتُ لُسُنًا كاللقوع مُروِّيًا
وفصيلُها تأثيرها ببهاءِ

मुझे ऐसे मुहावरे सिखाए गए हैं जो बहुत दूधेली ऊंटनी के समान तृप्त करने वाले हैं और उसका बच्चा उसका सुंदर प्रभाव है।

إن شئتَ كِدْ كلَّ المكائد حاسدًا
البدر لا يغسو بلَغْيِ ضِراءٍ

अगर तू चाहे तो प्रत्येक छल कपट और ईर्ष्या करते हुए कर गुज़र। चौदवीं का चांद किसी अंधे की व्यर्थ बातों से बेनूर नहीं हो जाता।

كذّبتَ صدّيقًا وجُرتَ تعمّدًا
ولئن سطا فيُريك قعرَ عَفاءٍ

तूने एक सच्चे को झूठलाया है और जानबूझकर अन्याय किया है और यदि वह तुझ पर आक्रमण कर दे तो तुझे ज़मीन की गहराई दिखा देगा।

ما شمَّ أنفى مرغمًا فى مشهدٍ
وأثَرتُ نقعَ الموت فى الاعداءٍ

मेरी नाक ने किसी जंग में अपमान की गंध नहीं सूँघी और मैंने शत्रुओं में मौत की धूल उड़ा दी है।

واللهِ أخطأتم لنكبةِ بَخْتِكمْ
باريتُمُ ابنَ كريهةٍ فَجّاءٍ

ख़ुदा की क़सम तुमने अपने दुर्भाग्य के कारण ग़लती की है कि उस व्यक्ति से लड़ाई ठानी है जो लड़ाई का धनी और यकायक आक्रमण करने वाला है।

إنى بحقدك كلَّ يومٍ أُرفَعُ
أنمى علَى الشحناء والبغضاءٍ

मैं तेरे द्वेष के कारण प्रतिदिन बुलंद मर्तबा पा रहा हूं और बावजूद तुम्हारी ईर्ष्या और द्वेष के प्रगति कर रहा हूं।

نلنا ثريّاء السّماء وسَمْكه
لنردّ إيمانًا إلَى الغبراءٍ

हमने आसमान के सुरैया सितारे और उसके बुलंदी को पा लिया है ताकि हम ईमान को धरती की ओर लौटाएं।

اُنظُرْ إلى الفتن التى نيرانها
تجرى دموعًا بل عيون دماءٍ

इन उपद्रवों की ओर देखो जिनकी आगें आंखों में आंसू जारी करती हैं बल्कि खून के चश्मे।

فأقامنی الرحمٰن عند دخانها
لفلاح مُدّلجین فی اللـیلاءِ

इन उपद्रवों के धुएं के समय रहमान ख़ुदा ने मुझे खड़ा किया है, अंधेरी रात्रि में चलने वालों को मुक्ति प्रदान करने के लिए।

وقد اقتضتْ زفراتُ مرضَی مقدمی
فحضرتُ حمّالًا کئوسَ شفاءِ

मरीजों की आहों ने मेरे आने की मांग की तो मैं उनकी तृप्ति के लिए प्याले उठाए हुए हाज़िर हो गया।

لما أتیتُ القوم سبُّوا کالعدا
وتخیّروا سُبل الشقا بإباءِ

जब मैं क़ौम के पास आया तो उसने मुझे शत्रुओं के समान गालियां दीं और इन्कार के कारण दुर्भाग्य के रास्ते को अपना लिया।

قالوا کذوب کَیْذُبانٌ کذبۃٌ
بل کافر و مزوِّر و مُراءِی

उन्होंने कहा कि यह मिथ्याभाषी है, महा झूठा है और निपट झूठ है बल्कि काफिर है, धोखेबाज है और दिखावा करने वाला है।

مَن مُخبِرٌ عن ذلّتی و مصیبتی
مولای خَتْمَ الرسل بحرَ عطاءِ

कोई है जो मेरे अपमान तथा मुसीबत की सूचना मेरे मौला खातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम को दे, जो बख़्शिश का सागर हैं।

یا طیّبَ الاخلاق والاسماءِ
أفأنت تُبعدنا من الآلاءِ

हे पवित्र शिष्टाचार और पवित्र नामों वाले नबी! क्या तू हमें अपनी नेमतों से दूर रखेगा?

أنت الذی شغَف الجَنانَ محبّةً
أنت الذی کالرُّوحِ فی حَوبائی

तू वह है जिसकी मोहब्बत दिल में घर कर गई है तू वह है जो मेरे शरीर में रूह (आत्मा) के समान है।

أنت الذی قد جذب قلبی نحوہ
أنت الذی قد قام للإصباءِ

तू वह है कि जिसकी ओर मेरा दिल खिंचा हुआ है तू वह है जो मेरी हमदर्दी के लिए खड़ा है।

أنت الذی بودادہ و بحبّہٖ
أُیِّدتُ بالإلهام و الإلقاءِ

तू वह है जिसकी मोहब्बत और मित्रता के कारण मैं ख़ुदा के इल्हाम और वह्यी से समर्थन पाया।

أنت الذی أعطی الشریعة والهدی
نجّی رقاب النّاس من أعباءِ

तू वह है जिसने शरीयत और हिदायत दी है और लोगों की गर्दनों को बोझ से मुक्ति दी है।

هیئات کیف نفرّ منك کمفسدٍ
روحی فدَتْك بلوعةٍ ووفاءِ

हम तुझसे उपद्रवी के समान कैसे भाग सकते हैं क्योंकि यह असंभव है। मेरी तो जान भी आप पर प्रेम की तपन और वफादारी से कुर्बान है।

آمنتُ بالقرآن صُحفِ إلهنا
وبکل ما أخبرتَ من أنباءِ

मैं अपने उपास्य के आदेशों (अर्थात) क़ुरआन पर ईमान लाया हूं और उन समस्त परोक्ष की बातों पर भी जिनकी तूने सूचना दी।

یا سیدی یا موئلَ الضعفاءِ
جئناك مظلومین من جهلاءِ

हे मेरे सरदार! हे कमज़ोरों की शरण! हम तेरे पास मूर्खों (के अत्याचार) से पीड़ित होकर आए हैं।

إنّ المحبّة لا تضاع وتشترى
إنّا نحبّك يا ذُكاء سخاءٍ

प्रेम कभी नष्ट नहीं होता बल्कि उसके कीमत बढ़ती है। हे दानशीलता के सूर्य निस्संदेह हम तुझ से प्रेम रखते हैं।

يا شمسَنا انظُرْ رحمةً وتحنّنًا
يَسْعَى إليك الخلق للإركاءِ

हे हमारे सूर्य! रहमत और कृपा की निगाह डालिए, सृष्टि आपकी शरण के लिए दौड़ी आ रही है।

أنت الذى هو عينُ كلّ سعادةٍ
تَهوى إليك قلوب أهل صفاءٍ

तू ही है जो हर सौभाग्य का स्रोत है सदाचारियों के दिल तेरी ओर आकर्षित हो रहे हैं।

أنت الذى هو مبدء الانوارِ
نوَّرتَ وجه المدن والبيداءِ

तू ही है जो नूरों का उद्गम है तूने शहरों तथा जंगलों के चेहरे को प्रकाशमान कर दिया है।

إنى أرىٰ فى وجهك المتهللِ
شأنًا يفوق شؤونَ وجهِ ذُكاءِ

मैं तेरे प्रकाशमान मुख पर ऐसी शान देख रहा हूं जो सूर्य के चेहरे की शान से भी बढ़कर है।

شَمْسُ الهُدى طلعتْ لنا من مكّةٍ
عين الندا نبَعتْ لنا بحِراءِ

हमारे लिए मक्का से सन्मार्ग का सूर्य उदय हुआ और हमारे लिए बख़्शिश का स्रोत गारे हिरा से फूटा।

ضَاهَتْ أَياةُ الشمس بعضَ ضيائهِ
فإذا رأيتُ فهاجَ منه بكائى

सूर्य का प्रकाश आप के प्रकाश से कुछ समानता रखता है। जब मैंने आपको देखा तो उससे मेरी तड़प में जोश आ गया।

نَسْعى كَفِتْـيانٍ بدينِ مُحَمَّدٍ
لَسْنَا كرجُلٍ فاقِـدِ الاَعضاءِ

हम जवानों की समान मोहम्मद के धर्म के लिए प्रयासरत हैं। हम ऐसे व्यक्ति के समान नहीं जो असहाय हो।

أَعْلَى المهيمِنُ هِممنا فى دِينهِ
نَبنى مَنَـازِلـنا على الجوزاءِ

निगरान ख़ुदा ने हमारे साहसों को धर्म के लिए बुलंद कर दिया है हम अपनी मंजिलें बुर्जे जौज़ा पर बना रहे हैं।

إنا جُعِـلْنا كالسيوف فندمَغُ
رأس اللـئام وهامة الاعداءِ

हमको तलवारों के समान बना दिया गया है, अत: हम कमीनों के सर और शत्रुओं की खोपड़ी फोड़ देते हैं।

ومِنَ اللئام أرى رُجَيلًا فاسقًا
غُولًا لعينًا نُطفـة السُّفهاءِ

और कमीनों में से मैं एक दुराचारी व्यक्ति को देख रहा हूं कि वह लानती, धोखेबाज और मूर्खों का बीज है।

شَكسٌ خَبيثٌ مُفْسِدٌ ومزوّرٌ
نَحْسٌ يُسمَّى "السَّعْد" فى الجهلاءِ

वह अशिष्ट, अत्यंत उपद्रवी और झूठ बोलने वाला है, मनहूस है जो मूर्खों में नेक कहलाता है।

ما فارقَ الكفرَ الذى هو إرثهُ
ضاهَى أبَـاه وأُمَّـه بعـماءِ

उसने इन कुफ़्र को नहीं छोड़ा जो उसकी विरासत है और अंधेपन में अपने माता पिता के समान हो गया है।

قد كان مِن دُود الهنُودِ وزَرعهم
مِـن عَبـدة الاِصْـنَام كالآبـاءِ

वह हिन्दुओं का कीड़ा था और उन्हीं की खेती में से था, बाप दादाओं के समान मूर्तियों के पुजारियों में से था।

فالآن قد غلَبتْ عليه شقاوةٌ
كانت مُبِـيدةَ أُمِّه العميـاءِ

अब उस पर दुर्भाग्य का प्रभुत्व हो गया है और यही दुर्भाग्य उसकी अंधी मां की बर्बादी का कारण हुआ था।

إنى أراه مُكذِّبًا و مكفِّـرًا
و محقِّرًا بالـسـبّ والإزراءِ

मैं उसे झुठलाने वाला और काफिर कहने वाला और गाली गलौज के साथ अपमान करने वाला और दोष लगाने वाला पाता हूं।

يُؤذِى فما نَشكو و ما نَتَأَسّفُ
كَلْبٌ فيَغْلِى قلبه لِعُواءِ

वह कष्ट देता है तो न हम शिकवा करते हैं और न अफसोस। वह एक कुत्ता है उसका दिल भौंकने के लिए जोश मार रहा है।

كَحَلَ العنادُ جفونَه بعَجاجةٍ
فالآن مَن يحميه من إقذاءِ

शत्रुता ने उसकी पलकों में धूल का सुरमा डाल दिया है अब उसको आंख में तिनका पड़ जाने से कौन बचा सकता है।

يا لاعِنِى إنّ المهَيمِن يَنْظرُ
خَفْ قهرَ ربّ قادر مولائى

मुझे लानत करने वाले! निस्संदेह निगरान ख़ुदा देख रहा है तू मेरे मौला, समर्थ रब के प्रकोप से डर।

الحق لا يُصلَى بنار خديعةٍ
أَنَّى مِن الخفّاش خسرُ ذُكاءِ

सच्चाई को छल कपट की अग्नि से जलाया नहीं जा सकता, चमगादड़ से सूर्य को नुकसान कैसे पहुंच सकता है?

إنی أراك تميس بالخُيَلاءِ
أنَسيتَ يوم الطعنة النَّجلاءِ

मैं देखता हूं कि तू अहंकार से मटक-मटक कर चल रहा है क्या तूने भारी घाव लगने के दिन को भुला दिया है।

لا تتّبِعْ أهْواءَ نفسِك شقوةً
يلقيك حُبُّ النفس فی الخَوقاءِ

तू दुर्भाग्य से अपने नफ्स (तामसिक इच्छाओं) का अनुसरण न कर, नफ्स की मोहब्बत तुझे कुएं में डाल देगी।

فرسٌ خَبيثٌ خَفْ ذُرَی صهواتِهِ
خَفْ أن تزلّك عدوُ ذی عدواءِ

नफ्स एक दुष्ट घोड़ा है उसकी पीठ पर सवार होने से डर। तू इस बात से डर कि तुझे असमतल दौड़ने वाले की दौड़ गिरा न दे।

إنّ السُّموم لَشَرُّ ما فی العَالِمِ
ومِنَ السُّموم عَداوةُ الصلحاءِ

निस्संदेह समस्त संसार में सबसे बुरी चीज़ ज़हर है और नेक लोगों की शत्रुता भी ज़हरों में से एक ज़हर है।

آذيتَنی خبثًا فلَسْتُ بصادق
إنْ لم تَمُتْ بالخزی یا ابنَ بغاءِ

तूने दुष्टता से मुझे एक कष्ट दिया है अतः हे उद्‌दंड व्यक्ति! यदि तू रुसवाई से न मरा तो मैं सच्चा नहीं।

اللّٰه يُخزی حزبَكم ويُعزّنی
حتی يجیء الناس تحت لوائی

अल्लाह तुम्हारे समूह को रुसवा करेगा और मुझे सम्मान देगा यहां तक कि सब लोग मेरे झंडे के नीचे आ जाएंगे।

یاربَّنا افْتَحْ بیننا بكرامةٍ يامَن يری قلبی ولُبَّ لِحائی

हे हमारे रब! हमारे बीच निर्णय कर दे। हे वह हस्ती जो मेरे दिल और अंतर्मन को जानती है।

يا مَن أری أبوابه مفتوحة لِلسَّائلین فلا تـرُدّ دعائی

हे वह हस्ती जिसके द्वार को मैं मांगने वालों के लिए खुले पाता हूं! तू मेरी दुआओं को रद्‌द न कर। आमीन।

प्रचार प्रसार का हक जो हम पर अनिवार्य था आज हमने उसे पूर्ण कर दिया है और कर्तव्य विमुखता के पाप से स्वयं को बचा लिया है और अब समय आ गया है कि हम उन शास्त्रार्थों से अपना ध्यान हटा लें सिवाय उस बहस के जो प्रश्न करने वाले मर्दों और स्त्रियों के सन्देहों के निराकरण के लिए हो। और हमने स्पष्टीकरणों के बाद उलमा को संबोधित★ न करने का इरादा कर लिया है यद्यपि वे हमें गालियां ही दें जैसा कि वे इससे पूर्व भी अपने स्वभाव को प्रकट कर चुके हैं। हमने उन पर सख्ती केवल चेतावनी के लिए की है और कर्मों का आधार नियतों पर है। अत: अब हम बड़े दु:ख और खेद के साथ उनको अलविदा करते हैं और हमारी ओर से उनके साथ यह अंतिम बातचीत है।

समाप्त

★ **हाशिया** :- जो उलमा मुक़ाबला और मुबाहला के लिए बुलाए गए हैं कुछ के नाम लिखने से रह गए हैं जो निम्नलिखित हैं- काज़ी उबैदुल्लाह काज़ी मद्रास, मौलवी महमूद मद्रास, मौलवी गुलाम रसूल, मौलवी शेख अब्दुल्ला चक उम्र खारियां गुजरात, साहिबज़ादा मोहम्मद अमीन चकोड़ी, मौलवी कलीमुल्लाह मचहियाना, नजमदीन शादीवाल, फज़्ल अहमद किलादार शादीवाल, ग़ुलाम अली शाह मंगोवाल, हाफिज़ सुलेमान डंगा खारिया, मौलवी अब्दुस् समद हकीम सदर पेशावर, मौलवी रहमतुल्लाह बड़भीनी मीरपुर जम्मू, मौलवी हशमत पखरोट मीरपुर जम्मू, मौलवी नियाज़ अहमद कस्बा खारियां, ख़लीफ़ा मोहियुद्दीन बावली गुजरात, मौलवी फैज़ अहमद डोगा गुजरात, मौलवी सदरुद्दीन मिल्की गुजरात, मौलवी आगा खान सौदागर सदर पिशावर, मौलवी अब्दुल्लाह साहिब पिशावर, शैख शेर मुहम्मद अफसर नहर पिशावर, मियां मुहम्मद फ़ाज़िल राजवाल खारियाँ गुजरात, मौलवी अहमद दीन साधोके गुजरात, मौलवी करमदीन पोड़ानवाला गुजरात, अल्लाह दत्ता बलानी गुजरात, गुलाम मोहम्मद गुजरात, नूरदीन गुजरात।

हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट के ध्यान देने योग्य*

हमने अखबार "सिविल एंड मिलट्री गज़ट" में पढ़ा है कि उसने बर्तानवी हुकूमत से हमारी शिकायत की है और समझता है कि मानो हम इस मुबारक हुकूमत के शत्रु हैं और वह हमारी हुकूमत को बुरी नियत और बुरे कामों से जताना चाहता है और हुकूमत को उकसाता है कि हमारी इस स्वतंत्रता को सीमित करे जो विभिन्न क़ौमों के समूहों को उनके धार्मिक तथा सांप्रदायिक संबंधी मतभेदों के बावजूद प्राप्त हैं। यही वह विशेषता है और गुण है जिसके कारण इस हुकूमत की अन्य हुकूमतों के मुक़ाबले पर प्रशंसा की जाती है अर्थात इस हुकूमत ने हर धर्म के लोगों को कानूनी दृष्टिकोण से समानता का स्थान दे रखा है और किसी को विशेष अधिकार नहीं दिए जिससे कि गवर्नमेंट पर संदेह किया जा सके। और यह वह बात है जिसका उदाहरण हम पहले लोगों के ज़माने में नहीं देखते।

और हम कई बार लिख चुके हैं कि हम इस गवर्नमेंट की योजनाओं के सेवक हैं और इसकी पूर्ण सच्चाई तथा ईमानदारी के सेवक हैं और हमारे दिल धन्यवाद से भरे हुए हैं और हमारे सीने श्रद्धा से, क्योंकि हमने इस हुकूमत से भिन्न भिन्न प्रकार के उपकार और मेहरबानियां देखी हैं और हम ऐसे लोग नहीं कि उपकारकर्ता की अवज्ञा करें और अपने दिलों में धोखा और बेईमानी के मामले छुपा रखें और बुरी फितरत से उपद्रव की आग भड़काएं बल्कि हम अल्लाह की कृपा से सरकार के उपकारों के कारण उसका धन्यवाद करते हैं। और हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें इस गवर्नमेंट के द्वारा संसार के उपद्रव तथा फसादों से मुक्ति प्रदान करे। और पहले भी हम इसके द्वारा मुसीबतों तथा कष्टों से और भिन्न-भिन्न प्रकार के उपद्रव तथा हानियों से मुक्ति पा चुके हैं। और हम इसकी घनी छाया में शांति पूर्वक रह रहे हैं। और हम उपद्रवियों

* ज्ञात रहे कि उस समय हिंदुस्तान में अंग्रेज़ी गवर्नमेंट का राज था। प्रकाशक

की आफतों से इसके भरपाई (مندمل) करने वाले न्याय के द्वारा सुरक्षित हैं। इसने हमारे रास्ते साफ किए और रुकावटें दूर की और हमने उसके दौर में रातों में वह अमन देखा जो हमने इस सरकार से पूर्व दिन के समय भी नहीं देखा था। अत: इस उपकार का बदला सिवाए साफ दिल से धन्यवाद करने के और क्या होगा? और उसका धन्यवाद ऐसी चीज़ है जिससे हमारी जान, हमारा दिल, हमारी ज़मीर और हमारी ज़बान भरी हुई है और हम उपकार करने वालों के उपकार की नाशुक्री करने वाले नहीं हैं और इस दावे पर हमारे पास खुली खुली दलीलें और निश्चित प्रमाण मौजूद हैं और वह ये हैं कि हम केवल आज के दिन से गवर्नमेंट की प्रशंसा नहीं करते बल्कि इसी में हमारी उम्र बीत गई है और हमारी हड्डियां घुल गई हैं और इसी पर हमारे बाप-दादा का देहांत हुआ और वह गवर्नमेंट की निगाह में सम्मानित थे। और एक समय से हम इसकी हिमायत में व्यस्त हैं। हमने हुकूमत के उद्देश्यों की हिमायत में पुस्तकें सीरिया और रोम तथा अन्य दूर दराज़ देशों में भिजवाईं और यह वह बात है कि गवर्नमेंट इसका उदाहरण हमारे अतिरिक्त अन्य निष्ठावानों में नहीं पाएगी। अत: हम अखबार के झूठ की परवाह नहीं करते और न ही फसादी हाथों के लेखों से डरते हैं। हाय अफसोस! उस व्यक्ति पर जो गवर्नमेंट को होने वाले हमलों से डराता है और उसको हमारा पीछा करने पर उकसाता है। क्या वह यह नहीं सोचता कि हम उन बाप दादों की संतान हैं जिन्होंने अपना जीवन इस गवर्नमेंट की सेवा में गुज़ार दिया। क्या गवर्नमेंट उनके प्रयासों को इतनी जल्दी भुला देगी? गवर्नमेंट क्यों इन उद्दंड उपद्रवियों को ऐसे झूठ प्रकाशित करने और ऐसे अनोखे आरोप फैलाने से नहीं रोकती? क्योंकि यह वास्तविकता से अनभिज्ञ लोगों के लिए जो असल हकीकत मालूम नहीं कर सकते प्राणघातक विष है। निकट है कि वे धोखा खाए हुए लोगों के समान इन बातों सच समझें। वह हमारी आज़ादी पर मातम करता है और यह नहीं देखता कि उसकी आज़ादी सत्यनिष्ठों पर आक्रमण करती है और निष्ठावान मित्रों को उपद्रवी क़रार देती है। क्या यह अखबार वालों की ज़िम्मेदारी नहीं कि वह हर उस बात को जो उन्हें दुश्मनों तथा ईर्ष्यालु द्वेषी लोगों

की ओर से पहुंचे, उसके पीछे न चलें? क्या उनका कर्तव्य नहीं कि वे सच्चाई तथा साफ नियत से लिखा करें? क्या वह कानून की सीमाओं से बाहर हैं या वह माफ किए गए लोगों में से हैं?

हे अखबार वालो तथा षड्यंत्रकारियो! क्या तुम लोगों को भलाई का आदेश देते हो और स्वयं को भूल जाते हो, क्या यह तुम्हारे लिए उचित है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे लिए बहुत बुरा है, काश तुम जानते। क्या यह हुकूमत निष्ठावानों को उपद्रवी क़रार दे देगी? क्या यह जो तुम अपने दिलों में दोगली प्रवृत्ति वाले लोगों के समान छुपाते हो वह उस पर छुपा रहेगा? निस्संदेह यह गवर्नमेंट हमारे बाप-दादाओं का अंजाम परख चुकी है और उसे बार-बार देख चुकी है जो हमारे दिल में है। और हम उसकी निगरानी में 60 साल की आयु को पहुंच चुके हैं अगर हमने इससे पूर्व 50 सालों में कभी निष्ठा के मार्ग को छोड़ा हो और चोरों के समान ग़लत मार्ग अपनाया हो तो हुकुमत को चाहिए कि वह अनुभव कार बुद्धिमान लोगों के समान जो चाहे सो करे। क्योंकि कम को अधिक के अनुसार और छोटे को बड़े पर अनुमान किया जाता है और विवेकीजन ऐसा ही करते हैं। अन्यथा अल्लाह से डरो और लज्जा से काम लो और यदि तुम नेक हो तो बेबाकी से काम न लो और अल्लाह की क़सम हम इस झूठे आरोप से बरी हैं। हमारा इस पाप से क्या संबंध? और हमारे पिछले हालात हमारा दामन इस जैसे झूठे आरोपों, इल्ज़ामों, तोहमतों और खुराफात से रहित साबित करते हैं। और यह कैसे हो सकता है जबकि हम मरते दम तक इस गवर्नमेंट के इनामों तथा उसके उपकारों को भुला नहीं सकते और अल्लाह की किताब से हमें उपकार करने वालों का धन्यवाद करने का आदेश दिया गया है।

और ऐसी बहुत सी आयतें तथा हदीसें हैं जिनको दर्ज करने की गुंजाइश नहीं हम इससे पूर्व उनको लिख चुके हैं और इस बारे में विस्तार पूर्वक बात कर चुके हैं, इच्छा रखने वाले उसे देख लें। हमने इस गवर्नमेंट से भिन्न-भिन्न प्रकार का आराम देखा। और इस गवर्नमेंट की बदौलत हमारी जान, माल, इज़्ज़त भिन्न-भिन्न प्रकार की मुसीबतों से सुरक्षित हैं। उसकी बदौलत हमें वह नेमतें मिली हैं

जिनकी हम गणना नहीं कर सकते और न उनको परिधि में ले सकते हैं। अत: हम इस गवर्नमेंट की लंबी आयु और बका के लिए दुआ करते हैं। और कौन सा बुद्धिमान अपने उपकारी को बुरा भला कहता है और उसके उपकारों को भुला देता है और उन्हें याद नहीं रखता? हम बुरी समझ और अवसर के प्रतिकूल अपना मत व्यक्त करने से अल्लाह की शरण मांगते हैं और हमारा यह वर्णन अखबार सिविल मिलिट्री गजट को जवाब में है। जहां तक इस व्यक्ति का संबंध है जो कहता है कि काफिरों की हिमायत किस तरह जायज़ है तो हम उसके भ्रमों को कई बार रद्‌द कर चुके हैं और हम इस बात को बहुत सी दलीलों से प्रमाणित कर चुके हैं। और हम साबित कर चुके हैं कि इस सिद्धांत की आधारशिला नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रखी है और फ़रमाया जो लोगों का धन्यवाद नहीं करता वह अल्लाह का धन्यवाद भी नहीं करता। अत: यह सुदृढ़ सिद्धांत है जिसे पापी के अतिरिक्त कोई रद्‌द नहीं करता। और इसे केवल नेक व्यक्ति स्वीकार करता है चाहे मजबूरी में ही स्वीकार करे। जहां तक हमारा संबंध है तो हमारी यही आस्था है कि हम उपकार करने वाले का धन्यवाद करते हैं और हम धार्मिक मतभेद को नहीं देखते और इस सिद्धांत के विरुद्ध करना हमारे लिए कठिन है और इस पर हम मरने को प्राथमिकता देते हैं। इसी कारण हमने अपनी यह राय इस्लामी देशों में जहां तक हमारा सामर्थ्य था और संभव था प्रकाशित किया है और इसमें हमारी निष्ठा पर अकाट्य दलील है। परंतु उन्हीं के लिए जो संकीर्ण विचारधारा नहीं रखते।

सारांश यह है कि हम इन आरोपों से रहित हैं और हमारे पास वह प्रमाण हैं जिनकी गवाही रद्‌द नहीं की जा सकती और जिनके सही होने में संदेह नहीं किया जा सकता। हम अल्लाह पर ही भरोसा करते हैं और अल्लाह के अतिरिक्त कोई शक्ति तथा ताकत नहीं और वह समस्त निर्णायकों से बढ़कर निर्णय करने वाला है।

परिशिष्ट पुस्तक अंजाम-ए-आथम

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّ الَّذِیْنَ ھُمْ مُّحْسِنُوْنَ

(अन्नहल-16/129)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अरबी पुस्तक के समाप्त होने के पश्चात् एक साहिब ने मुझ से यह प्रश्न किया कि आप के दावे के समर्थन में ख़ुदा तआला की ओर ऐसे कौन से निशान प्रकट हुए हैं जिन पर विचार करने से एक सत्याभिलाषी यह समझ सके कि यह कारोबार मनुष्य की योजना नहीं अपितु उस ख़ुदा की ओर से है जो सही समय पर इस्लाम की सहायता के लिए अपने बन्दे को भेजता और उनका सच्चा होना अपने विशेष निशानों के द्वारा सिद्ध करता है।

अत: स्पष्ट हो कि यद्यपि मैंने इस प्रश्न का उत्तर कई बार इससे पूर्व भी अपनी पुस्तकों में लिखा है परन्तु अब फिर उन विभिन्न बातों को सत्याभिलाषियों के लाभ हेतु एक ही स्थान पर एकत्र करके लिख देता हूँ। शायद वह समय आ पहुँचा हो कि लोग मेरी बातों में विचार करें। तो ध्यानपूर्वक सुनो कि बुद्धिमानों और विचार करने वालों के लिए मेरे दावे के साथ इतने निशान मौजूद हैं कि यदि वे इन्साफ़ से काम लें तो उनकी सन्तुष्टि के लिए विलक्षणताओं का पर्याप्त और सन्तुष्ट करने वाला बहुत बड़ा भण्डार मौजूद है। हां यदि कोई उस व्यक्ति की तरह जिसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मेह के बारे में दुआ के स्वीकार होने का चमत्कार देखकर अर्थात् कई वर्षों से वर्षा न होने के पश्चात् मेह बरसता हुआ देख कर फिर कह दिया था कि यह कोई चमत्कार नहीं। ऐसे लोग हमारे सय्यद-व-मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हमेशा आकाशीय निशान देखते रहे फिर (भी) यह कहते रहे

فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَاۤ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ (अम्बिया : 21/6)

(अनुवाद: चाहिए कि यह हमारे पास कोई निशान (चमत्कार) लाए, जैसे कि पहले

के पैगम्बर निशान लेकर भेजे गए थे। अनुवादक)
जो व्यक्ति सच्चे दिल से ख़ुदा का निशान देखना चाहता है उसको चाहिए कि सर्वप्रथम उस निशान पर नज़र डाले कि इस विनीत का प्रकट होना ठीक उस समय पर है या नहीं जिस समय का वर्णन हमारे सरदार ख़ातमुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने पवित्र मुख से किया है अर्थात् सदी का आरंभ। फिर आप ने यह भी फ़रमाया है कि सलीब के प्रभुत्व के समय एक व्यक्ति पैदा होगा जो सलीब को तोड़ेगा। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे व्यक्ति का नाम मसीह इब्ने मरयम रखा है।

अब सोचो कि सलीब का प्रभुत्व तो चरम पर पहुँच गया और ईसाई टिड्डियों के समान दुनिया पर छा गए और पादरियों को अपने शैतानी बहकाने में वह सफलता मिली है जिसका कोई उदाहरण नहीं और सदी में से भी तेरह वर्ष गुज़र गए। तो क्या अब तक सलीब का तोड़ने वाला प्रकट न हुआ या नऊज़ुबिल्लाह भविष्यवाणी झूठी निकली, या विरोधी उलेमा की यह इच्छा है कि और सौ वर्ष तक पादरी लोग इस्लाम को पैरों के नीचे कुचलते रहें जब तक कि नई सदी आए और आकाश से उनका काल्पनिक मसीह उतरे। फिर उस सदी पर भी क्या आशा है क्या पता वह भी चूक जाए। अत: यह संवेदनशील समय तथा सदी का आरंभ मांग करता था कि सलीब का तोड़ने वाला पैदा हो और सुअरों को जिनमें ख़िन्ज़ अर्थात् फ़साद का जोश है स्पष्ट तर्कों के साथ क़त्ल करे। अत: वह प्रकट हो गया है जिसको स्वीकार करना हो करे।

फिर **दूसरा निशान** यह है कि उस गुज़रे युग में जिस को सत्रह वर्ष गुज़र गए अर्थात् उस युग में जबकि यह विनीत अज्ञात कोने में पड़ा हुआ था और कोई न जानता था कि कौन है और न कोई आता था उस समय में इस वर्तमान युग की ख़बर दी गई है जिसमें हर ओर से लोग आए और एक दुनिया में प्रसिद्धि हुई। अत: बराहीन अहमदिया में सत्रह वर्ष से इल्हाम इस बारे में छपा हुआ है।

انت منّی بمنذلۃ تو حیدی و تفریدی۔ فحان اَنْ تُعان و تعرف بین الناس۔
یاتون من کل فج عمیق۔

अर्थात् तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद और एकेश्वरवाद। तो वह समय आता है कि तू प्रसिद्ध किया जाएगा और लोग दूर-दूर से तेरे पास आएंगे।

अब देखो क्या यह निशान नहीं कि इस भविष्यवाणी के अनुसार जब ख़ुदा तआला ने लाखों इन्सानों में और हिन्दुस्तान के किनारों तक इस विनीत को प्रसिद्ध कर दिया है और ऐसा ही वे लोग जो मिलने के लिए इस समय तक आए उनकी संख्या आठ हज़ार से भी कुछ अधिक होगी। क्या एक बुद्धिमान को यह भविष्यवाणी आश्चर्य में नहीं डालती जो ऐसे युग में की गई थी जबकि उस का अर्थ अनुमान से सर्वथा दूर मालूम होता था फिर विचार करने वालों के लिए एक और भविष्यवाणी निशान है जिसका वर्णन बराहीन अहमदिया खंड तृतीय के पृष्ठ 241 में है, जिसको पन्द्रह वर्ष का समय गुज़र गया है। उसमें ख़ुदा तआला इस विनीत को सम्बोधित करके फ़रमाता है कि ईसाइयों का एक फ़ित्न: होगा और तुझे वे एक घटना में झूठा ठहराएंगे और अन्त में तेरी सच्चाई प्रकट करेगा। उस भविष्यवाणी की इबारत यह है

وَلَنْ ترضى عنك اليهود ولا النصارىٰ۔ وخرقوا له بنين و بناتٍ بغير علم۔ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد اللّٰهُ الصَّمَد لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَد۔ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمَاكِرِيْنَ۔ اَلْفِتْنَةُ هٰهُنَا فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُوْلُو الْعَزْمِ۔ قُلْ رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ۔

अर्थात् यहूदी और ईसाई तुझ पर ख़ुश नहीं होंगे जब तक तू उनके धर्म का अनुयायी न हो। अर्थात् उनका ख़ुश होना असंभव है। उन लोगों ने अर्थात् ईसाइयों ने ख़ुदा के लिए बेटे-बेटियां बना रखी हैं हालांकि ख़ुदा वह है जिसका कोई बेटा नहीं और न वह किसी का बेटा है। न उसके बराबर कोई है। और ईसाई तेरे साथ एक षडयंत्र करेंगे और ख़ुदा भी उनके साथ षडयंत्र करेगा ख़ुदा के षडयंत्र पूर्णत: नेक और बेहतर और दूसरों के षडयंत्रों पर विजयी हैं। उस समय ईसाइयों की ओर से एक फ़साद फ़ैलेगा। अत: चाहिए कि तू रसूलों और नबियों के समान सब्र करे उस समय तू यह दुआ कर कि हे मेरे रब्ब! मेरी सच्चई प्रकट कर दे।

अब हालांकि आँख खोल कर देखो कि यह भविष्यवाणी कैसी व्यापक और स्पष्ट तौर पर आथम के क़िस्से की ख़बर दे रही है। जिसमें ईसाइयों ने यह षडयंत्र किया कि सच्चई को छुपाया। भविष्यवाणी में सच की ओर रुजू की शर्त थी जिस से आथम ने लाभ उठाया क्योंकि वह अन्तिम दिन तक भविष्यवाणी से डरता रहा यहां तक कि डर के मारे पागलों के समान हो गया। इसलिए ख़ुदा तआला ने भविष्यवाणी के वादे के अनुसार उसकी मौत में विलम्ब डाल दिया। ईसाई ख़ूब जानते थे कि वह भविष्यवाणी के भय से अधमरा हो गया था। उसने क़सम न खाई और न उसने आक्रमण के आरोपों को सिद्ध किया परन्तु तब भी पादरियों ने शरारत पर कमर बांधी और अमृतसर तथा अन्य बहुत से शहरों में नितान्त धृष्टता से नाचते फिरे कि हमारी विजय हुई। और उनके अत्यन्त गन्दे और नीच लोगों ने गालियां दीं और बहुत बुरा-भला कहा। तो जैसा कि पन्द्रह वर्ष पूर्व ख़ुदा तआला फ़रमा चुका था कि ईसाई फित्नः खड़ा करेंगे ऐसा ही हुआ और यहूदी सिफ़त मौलवी तथा उनके चेले उनके साथ हो गए। तो जैसा कि ख़ुदा तआला ने उस भविष्यवाणी में संकेत किया था

قُل رَبِّ اَدۡخِلۡنِیۡ مُدۡخَلَ صِدۡقٍ۔

ऐसा ही इस विनीत का सच्चा होना सिद्ध हो गया और आथम, जैसा इल्हाम में बार-बार प्रकट किया गया था, अपनी धृष्टता के बाद अन्तिम विज्ञापन से सात महीने तक मर गया। अब देखना चाहिए कि यह कैसा महान निशान है और यह एक निशान नहीं अपितु दो निशान हैं।

1- एक यह कि ईसाइयों के फित्नः की पन्द्रह वर्ष पूर्व ख़बर दी गई थी। 2-दूसरे यह कि अन्ततः वह फ़ित्नः फैलकर उस भविष्यवाणी के अनुसार आथम मर गया और सच प्रकट हुआ। यदि इन दोनों भविष्यवाणियों को एक नज़र से देखा जाए तो नज़र के सामने ख़ुदा तआला की एक महान क़ुदरत आ जाएगी★ और इसमें एक अन्य श्रेष्ठता यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो

★**हाशिया :-** एक मुर्दा परस्त फ़तह मसीह नामक ने फ़तहगढ़ तहसील बटाला, ज़िला-

अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी भी इसके पूरा होने से पूरी हो गई। क्योंकि आपने फ़रमाया था कि ईसाइयों और अहले इस्लाम में अन्तिम युग में एक झगड़ा होगा। ईसाई कहेंगे कि हम सच पर हैं और मुसलमान कहेंगे कि सच हम में प्रकट हुआ। उस समय ईसाइयों के लिए शैतान आवाज़ देगा कि सच आले ईसा के साथ है और मुसलमानों के लिए आकाश से आवाज़ आएगी कि सच

शेष हाशिया:- गुरदासपुर से फिर अपनी पहली निर्लज्जता को दिखा कर एक गन्दा गालियों से भरा हुआ पत्र लिखा है जिसमें वह फिर अपनी निर्लज्जता से काम लेकर यह ज़िक्र भी बीच में लाता है कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। अतः हम उस भविष्यवाणी के पूरा होने के बारे में बहुत से सबूत पुस्तक अन्वारुल इस्लाम और ज़ियाउल हक़ तथा पुस्तक अंजाम-ए-आथम में दे चुके हैं और अब भी हम वर्णन कर चुके हैं कि इस भविष्यवाणी की बुनियाद न आज से अपितु पन्द्रह वर्ष पहले से डाली गई थी जिसका विस्तृत वर्णन बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में मौजूद है। तो ऐसे प्रबन्ध के साथ भविष्यवाणी को पूरा करना मनुष्य का काम नहीं है।

यसू की समस्त भविष्यवाणियों में से जो ईसाइयों का मुर्दा ख़ुदा है यदि एक भविष्यवाणी भी इस भविष्यवाणी की टक्कर की और समान श्रेणी की सिद्ध हो जाए तो हम प्रत्येक जुर्माना देने को तैयार है। उस बेचारे इन्सान की भविष्यवाणियां क्या थीं केवल यही कि भूकम्प आएंगे, दुर्मिक्ष पड़ेंगे, लड़ाइयां होंगी। अतः उन दिलों पर ख़ुदा की लानत जिन्होंने ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियां उस की ख़ुदाई पर प्रमाण ठहराईं और एक मुर्दे को अपना ख़ुदा बना लिया। क्या हमेशा भूकम्प नहीं आते क्या हमेशा दुर्मिक्ष नहीं पड़ते। क्या कहीं न कहीं लड़ाई का सिलसिला आंरभ नहीं रहता। तो इस नादान इस्राईली ने इन मामूली बातों का नाम भविष्यवाणी क्यों रखी। केवल यहूदियों के तंग करने से। और जब चमत्कार मांगा गया तो यसू साहिब फ़रमाते हैं कि हरामकार और बदनाम लोग मुझसे चमत्कार मांगते हैं उनको कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। देखो यसू को कैसी सूझी और कैसी दूरदर्शता की। अब कोई हरामकार या बदकार बने तो उससे चमत्कार मांगे। यह तो वही बात हुई जैसे कि एक दुष्ट मक्कार ने जिसमें सरासर यसू की रूह थी लोगों में यह प्रसिद्ध किया कि मैं एक ऐसा वर्द बता सकता हूं जिसके पढ़ने से पहली ही रात में ख़ुदा नज़र आ जाएगा बशर्ते कि पढ़ने वाला हराम की औलाद न हो। अब भला कौन हराम की औलाद बने और कहे कि मुझे वज़ीफा करने वाले को यही कहना पड़ता था कि हां साहिब नज़र आ गया। तो यसू की बन्दिशों और यत्नों पर क़ुर्बान हो जाएं। अपना पीछा छुड़ाने के लिए कैसा दाव खेला।

आले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ है। अत: स्मरण रहे कि यह भविष्यवाणी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आथम के क़िस्से के बारे में है क्योंकि दुनिया के शैतानों ने आथम के मुक़द्दमे में ईसाइयों का साथ दिया और यह कहा कि ईसाई विजयी हो गए। अत: दुष्टप्रकृति मौलवी और कुछ अख़बारों वाले उन्हीं शैतानों में से थे जिन्होंने हक़ और सच्चाई तथा धर्म का पास न किया और आकाश की आवाज़ जो ख़ुदा तआला का पवित्र इल्हाम

शेष हाशिया :- यही आपका तरीक़ा था कि एक बार किसी यहूदी ने आपकी बहादुरी की शक्ति आज़माने के लिए प्रश्न किया कि हे उस्ताद कैसर को टैक्स देना वैध है या नहीं। तो आप को यह प्रश्न सुनते ही अपने प्राणों की चिन्ता हो गई कि कहीं बाग़ी कहला कर पकड़ा न जाऊं। तो जैसा कि चमत्कार मांगने वालों को लतीफ़ा सुनाकर चमत्कार मांगने से रोक दिया था। इस स्थान पर भी वही कार्यवाही की और कहा कि क़ैसर का क़ैसर को दो और ख़ुदा का ख़ुदा को। हालांकि हज़रत की अपनी आस्था यह थी कि यहूदियों के लिए यहूदी बादशाह चाहिए न कि मनूसी। इसी आधार पर हथियार भी ख़रीदे। शहज़ादा भी कहलाया परन्तु तक़्दीर ने सहायता न की।

मती की इंजील से मालूम होता है कि आपकी बुद्धि बड़ी मोटी थी आप असभ्य स्त्रियों और जन सामान्य की तरह मिर्गी को बीमारी नहीं समझते थे अपितु जिन्न का आसेब समझते थे। हाँ आपको गालियां देने और बुरा भला कहने की प्राय: आदत थी। छोटी-छोटी बात में क्रोध आ जाता था। अपने को भावनाओं से रोक नहीं सकते थे। परन्तु मेरे नज़दीक आप की तरह हरकतें अफ़सोस का स्थान नहीं। क्योंकि आप तो गालियां देते थे और यहूदी हाथ से कमी पूरी कर लिया करते थे।

अब स्मरण रहे कि आपको कुछ झूठ बोलने की भी आदत थी। जिन-जिन भविष्यवाणियों का आपने अस्तित्व के बारे में तौरात में पाया जाना आपने फ़रमाया है उन किताबों में उनका नामोनिशान नहीं पाया जाता अपितु वे औरों के बारे में थी जो आपके जन्म से पूर्व पूरी हो गईं। और अत्यन्त शर्म की बात यह है कि आपने पहाड़ी शिक्षा को जो इंजील का सार कहलाती है यहूदियों की पुस्तक तालमूद से चुरा कर लिखा है। और फिर ऐसा प्रकट किया है कि जैसे यह मेरी शिक्षा है। परन्तु जब से यह चोरी पकड़ी गई ईसाई बहुत शर्मिन्दा हैं। आप ने यह हरकत शायद इसलिए की होगी कि किसी उत्तम शिक्षा का नमूना दिखा कर पैठ प्राप्त करें। परन्तु आपकी इस अनुचित हरकत से ईसाइयों का बहुत मुंह काला हुआ और फिर अफ़सोस यह है कि वह शिक्षा भी कुछ उत्तम नहीं।

था जो इस विनीत पर उतरा, इस इल्हाम ने बार-बार गवाही दी कि इस्लाम की विजय है। अन्ततः पृथ्वी के शैतानों ने पराजय उठाई और आकाश की आवाज़ की सच्चाई सिद्ध हुई जो ऐसी खुली सच्चाई है कि कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता यह कैसा अन्धापन था कि अपवित्र हृदय लोगों ने शर्त वाली भविष्यवाणी को ऐसा समझ लिया कि मानो उसके साथ कोई भी शर्त नहीं। यह कैसी शरारत थी कि आथम की मृत्यु को जो बिल्कुल इल्हाम के अनुसार धृष्टता के बाद तुरन्त

शेष हाशिया :- बुद्धि और अन्तर्आत्मा दोनों उस शिक्षा के मुंह पर तमाचे मार रहे हैं। आपका एक यहूदी उस्ताद था जिससे आप ने तैरात को पाठ के तौर पर पढ़ा था। मालूम होता है कि या तो क़ुदरत ने आपको प्रकीणता से कुछ बहुत हिस्सा नहीं दिया था और या उस उस्ताद की यह शरारत है कि उसने आपको केवल मूर्ख रखा। बहरहाल आप ज्ञान और व्यवहारिक शक्तियों में बहुत कच्चे थे। इसी कारण से आप एक बार शैतान के पीछे-पीछे चले गए। एक विद्वान पादरी साहिब कहते हैं कि आपको अपने सम्पूर्ण जीवन में तीन बार शैतानी इल्हाम भी हुआ था। अतः एक बार आप उसी इल्हाम से ख़ुदा से इन्कारी होने के लिए भी तैयार हो गए थे। आपकी इन्हीं हरकतों से आपके सगे भाई आप से बहुत नाराज़ रहते थे और उनको विश्वास था कि आपके मस्तिष्क में अवश्य कुछ विघ्न है। और वह हमेशा चाहते रहे कि किसी चिकित्सालय में आपका नियमित रूप से इलाज हो। शायद ख़ुदा तआला रोगमुक्त कर दे।

ईसाइयों ने आपके बहुत से चमत्कार लिखे हैं परन्तु सच बात यह है कि आपसे कोई चमत्कार नहीं हुआ। और उस दिन से कि आपने चमत्कार मांगने वालों को गन्दी गालियां दीं और उनको हरामकार और हराम की सन्तान ठहराया। उसी दिन से सभ्य लोगों ने आप से पृथकता की और न चाहा कि चमत्कार मांग कर हरामकार और हराम की सन्तान बनें। आपका यह कहना कि मेरे अनुयायी ज़हर खाएंगे और उन पर कुछ प्रभाव नहीं होगा। यह बिल्कुल झूठ निकला क्योंकि आजकल ज़हर के द्वारा यूरोप में बहुत आत्महत्या हो रही हैं। हज़ारो मरते हैं। एक पादरी यद्यपि कैसा ही मोटा हो तीन रत्ती इस्टर कीनिया (संखिया) खाने से दो घंटे तक आसानी से मर सकता है। फिर यह चमत्कार कहां गया। ऐसा ही आप फ़रमाते हैं कि मेरे अनुयायी पर्वत को कहेंगे कि यहां से उठ और वह उठ जाएगा। यह कितना झूठ है भला एक पादरी केवल बात से एक उल्टी जूती को सीधा करके तो दिखाए।

संभव है कि आप ने मामूली उपाय के साथ किसी रतौंधी के रोगी इत्यादि को अच्छा किया हो या किसी और ऐसी बीमारी का इलाज किया हो। परन्तु आपके दुर्भाग्यवश से उसी

प्रकटन में आई किसी ने इसको ख़ुदा का निशान नहीं ठहराया, वे गन्दे अख़बार लिखने वाले जो आथम के समर्थक थे भविष्यवाणी की वास्तविकता खुलने के बाद ऐसे अनजान बन कर चुप हो गए कि मानो मर गए। अब आंखें खोलो और उठो, जागो तथा तलाश करो कि आथम कहां है क्या ख़ुदा के आदेश ने उसको क़ब्र में न पहुंचा दिया। प्रत्येक न्यायप्रिय इस भविष्यवाणी को स्वीकार करेगा पर शायद कुछ नीच मौलवी मुंह से इक़रार न करें परन्तु दिल इक़रार कर गए हैं।

फिर एक और भविष्यवाणी ख़ुदा का निशान है जिसका वर्णन बराहीन

शेष हाशिया :- युग में एक तालाब भी मौजूद था जिससे बड़े-बड़े निशान प्रकट होते थे। विचार हो सकता है कि उस तालाब की मिट्टी आप भी इस्तेमाल करते होंगे। उसी तालाब से आपके चमत्कारों की पूरी-पूरी सच्चाई खुलती है और उसी तालाब ने फ़ैसला कर दिया है कि यदि आप से कोई चमत्कार भी प्रकट हुआ हो तो वह चमत्कार आपका नहीं अपितु उस तालाब का चमत्कार है। और आपके हाथ में छल-प्रपंच के अतिरिक्त और कुछ न था। फिर अफ़सोस कि मूर्ख ईसाई ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा बना रहे हैं।

आपका ख़ानदान भी नितान्त पवित्र और शुद्ध है, आपकी तीन दादियां और नानियां व्यभिचारिणी और वैश्याएं थीं जिनके ख़ून से आपका अस्तित्व प्रकटन में आया। परन्तु शायद यह भी ख़ुदाई के लिए एक शर्त होगी। आपका कंजरियों से मैलान और संगत भी शायद इसी कारण से हो कि खानदानी आदत है अन्यथा कोई संयमी इन्सान एक जवान वैश्या को यह अवसर नहीं दे सकता कि वह उसके सर पर अपने नापाक हाथ लगाए और व्यभिचार की कमाई का अपवित्र इत्र उसके सर पर मले और अपने बालों को उसके पैरों पर मले। समझने वाले समझ लें कि ऐसा इन्सान किस चरित्र का आदमी हो सकता है।

आप वही हज़रत हैं जिन्होंने यह भविष्यवाणी भी की थी कि अभी ये सब लोग ज़िन्दा होंगे कि मैं फिर वापस आ जाऊंगा। हालांकि न केवल वे लोग अपितु उन्नीस शताब्दियों में उन्नीस नस्लें उनके बाद भी मर चुकीं, परन्तु आप अब तक नहीं आए। स्वयं तो मृत्यु पा चुके परन्तु इस झूठी भविष्यवाणी का कलंक अब तक पादरियों के मस्तक पर शेष है। अत: ईसाइयों की यह मूर्खता है कि ऐसी भविष्यावाणियों पर तो ईमान लाएं परन्तु आथम की भविष्यवाणी के बारे में जो साफ़ और स्पष्ट तौर पर पूरी हो गई अब तक उन्हें सन्देह हो। सोचना चाहिए कि यह वह महान भविष्यवाणी है जिसकी पन्द्रह वर्ष पूर्व सूचना दी गई है और जो अपनी शर्त के अनुसार और अपने अन्तिम इल्हामों के अनुसार पूरी हो गई।

अहमदिया के पृष्ठ-241 में है और वह यह है

يا احمد فاضت الرحمة علىٰ شفتيك

हे अहमद! सरसता और सुबोधता के झरने तेरे होठों पर जारी किए गए अत: इसकी पुष्टि कई वर्ष से हो रही है। कई पुस्तकें सरस, सुबोध अरबी में लिख कर हज़ारों रुपए के ईनाम के साथ इस्लाम के उलेमा तथा ईसाइयों के

शेष हाशिया :- इससे इन्कार करना खुली-खुली नीचता है या नहीं। क्या यह इन्सान का काम है कि एक गुप्त बात की पन्द्रह वर्ष पूर्व सूचना दे और फिर शर्त के अनुसार न कि विरुद्ध, भविष्यवाणी को अंजाम तक भी पहुंचा दे।

यह मुर्दा परस्त लोग कैसे मूर्ख और दुष्ट प्रकृति हैं कि सीधी बात को भी नहीं समझते। फ़तह मसीह को याद रखना कि आथम समस्त पादरियों का मुंह काला करके क़ब्र में दाख़िल हो चुका है। अब यह कालिक का टीका ईसाइयों के मस्तक से किसी प्रकार उतर नहीं सकता। यदि वह क़सम खा लेता और फिर एक वर्ष तक न मरता तो ईसाइयों को उसका जीवन लाभप्रद होता। परन्तु उसने न क़सम खाई, न नालिश की और न अपने तीन झूठे आरोपों का सबूत दिया। अत: उसने आचार-व्यवहार से सिद्ध कर दिया कि वह अवश्य डरता रहा। फिर जब धृष्टता दिखाई तो ख़ुदा के इल्हाम के आशय के अनुसार अन्तिम विज्ञापन से सात महीने तक नर्क में पहुंच गया। और जैसा कि ख़ुदा के पवित्र इल्हाम ने ख़बर दी थी वैसा ही हुआ तो क्या ऐसी भविष्यवाणी जो ऐसी सफाई के साथ पूरी हुई जिसका समस्त नक़्शा अन्तर्यामी ख़ुदा ने पन्द्रह वर्ष पूर्व अपने पवित्र इल्हाम के द्वारा प्रकट कर दिया था वह झूठी ठहर सकती है अपितु वही लानती फ़िर्क़ा झूठा है जो ऐसे खुले-खुले निशान को झुठलाता है।

अन्तत: हम लिखते हैं कि हमें पादरियों के यसू और उसके चाल-चलन से कुछ मतलब न था। उन्होंने अकारण हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देकर हमें भड़काया★ कि उनके यसू का कुछ थोड़ा-सा हाल उन पर प्रकट करें। अत: इसी नीच नालायक फ़तह मसीह ने अपने पत्र में जो मेरे नाम भेजा है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को व्यभिचारी लिखा है और इसके अतिरिक्त और बहुत गालियां दी हैं।

★ हाशिये का हाशिया :- यदि पादरी अब भी अपनी नीति बदल दें और प्रतिज्ञा कर लें कि भविष्य में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां नहीं निकालेंगे तो हम भी वादा करेंगे कि भविष्य में नर्म शब्दों के साथ उनसे वार्तालाप होगी अन्यथा जो कुछ कहेंगे उसका उत्तर सुनेंगे।

सामने प्रस्तुत की गईं। परन्तु किसी ने सर न उठाया और कोई मुक़ाबले पर न आया। क्या यह ख़ुदा का निशान है या इन्सान का बकवास है। फिर एक और भविष्यवाणी ख़ुदा का निशान है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 238 में दर्ज है और वह यह है

الرَّحْمٰن عَلَّمَ الْقُرآن

इस आयत में अल्लाह तआला ने क़ुर्आन के ज्ञान का वादा दिया था तो उस वादे को इस प्रकार से पूरा किया कि अब किसी को क़ुर्आनी मआरिफ़ में मुक़ाबले की शक्ति नहीं। मैं सच-सच कहता हूँ कि यदि कोई मौलवी इस देश के समस्त मौलवियों में से क़ुर्आन के मआरिफ़ में मुझ से मुक़ाबला करना चाहे और किसी सूरह की एक तफ़्सीर मैं लिखूं तथा एक की अन्य विरोधी लिखे तो वह अत्यन्त अपमानित होगा और मुक़ाबला नहीं कर सकेगा। यही कारण है कि आग्रह के बावजूद मौलवियों ने इस ओर कान नहीं धरा। अत: यह एक महान निशान है परन्तु उनके लिए जो इन्साफ़ और ईमान रखते हैं।

और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान यह है कि मेरे दावे से तीस वर्ष पूर्व एक सदाचारी बन्दे ने मेरे बारे में भविष्यावाणी की और उस भविष्यवाणी में

शेष हाशिया :- अत: इसी प्रकार इस मुर्दार और अपवित्र फ़िर्क़े ने जो मुर्दा परस्त है हमें इस बात के लिए विवश कर दिया है कि हम भी उनके यसू की कुछ हालात लिखें। और मुसलमानों को स्पष्ट रहे कि ख़ुदा तआला ने यसू की पवित्र क़ुर्आन में कुछ ख़बर नहीं दी कि वह कौन था। और पादरी इस बात के क़ाइल हैं कि यसू वह व्यक्ति था जिसने ख़ुदाई का दावा किया और हज़रत मूसा का नाम डाकू और बटमार रखा और आने वाले मुकद्दस नबी के अस्तित्व से इन्कार किया और कहा कि मेरे बाद सब झूठे नबी आएंगे। तो ऐसे अपवित्र घमंडी तथा सच्चों के शत्रु को एक भला आदमी भी नहीं ठहरा सकते। कहां यह कि उसको नबी ठहराएं। मूर्ख पादरियों को चाहिए कि अभद्रता और गालियों का तरीक़ा छोड़ दें। अन्यथा न मालूम ख़ुदा का स्वाभिमान क्या-क्या उनको दिखाएगा। हम इस स्थान पर फ़तह मसीह की सिफ़ारिश करते हैं कि बुज़ुर्ग पादरी अवश्य उसको पादरियों के पद की ख़तरनाक सेवाओं से अलग कर दें। और उसको उस नौकरी से निलंबित कर देना उस पर सरासर उपकार है। अन्यथा मालूम नहीं उस गन्दी अपवित्र जीभ का अंजाम क्या होगा।

मेरा नाम तथा मेरे गांव का नाम लेकर कहा कि वह मनुष्य मसीह मौऊद होने का दावा करेगा और वह अपने दावे में सच्चा होगा तथा मौलवी लोग असभ्यता और मूर्खता से उसका इन्कार करेंगे। अत: उसने इस पूर्ण भविष्यवाणी से करीम बख़्श नामक एक भाग्यशाली मुसलमान को जो, लुधियाना के क़रीब एक गांव में रहने वाला था, सूचना दी और कहा कि वह मसीह मौऊद लुधियाना में आएगा। और नसीहत की कि मौलवियों के शोर की कुछ परवाह न करना कि मौलवी उस विरोध में झूठे होंगे। अत: जब मैं इस दावे के बाद लुधियाना गया तो करीम बख़्श मेरे पास आया और सैंकड़ो लोगों के सामने बार-बार यह गवाही दी। अत: उसकी ओर से एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है। तो यह भी ख़ुदा का एक निशान है।

और समस्त निशानों में से एक निशान रमज़ान के महीने में चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण भी है। क्योंकि दारे क़ुत्नी में साफ़ लिखा है कि महदी मौऊद के सत्यापन के लिए ख़ुदा तआला की ओर से एक निशान होगा कि रमज़ान में चन्द्र और सूर्य को ग्रहण लगेगा। अत: वह ग्रहण लग गया तथा कोई सिद्ध नहीं कर सकता कि मुझ से पूर्व कोई और भी ऐसा मुद्दई ग़ुज़रा है जिसके दावे के समय रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य का ग्रहण हुआ हो। यह एक बड़ा भारी निशान है जो अल्लाह तआला ने आकाश से प्रकट किया दारे क़ुत्नी की हदीस में कोई पेचीदगी नहीं। जिस प्रकार चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण प्रकटन में आया वह सर्वथा हदीस के शब्दों के अनुसार है। अत: मैंने इसी चन्द्र एवं सूर्यग्रहण के रमज़ान में होने के बारे में अरबी में एक पुस्तक लिखी है उसमें इस हदीस की विस्तृत व्याख्या कर दी गई है। और यह कहना कि इस हदीस में कुछ रावियों पर मुहद्दिसों ने जिरह (प्रतिप्रश्न) की है। यह कथन सर्वथा मूर्खता है। क्योंकि यह हदीस एक भविष्यवाणी पर आधारित थी जो अपने समय पर पूरी हो गई। तो जबकि हदीस ने अपनी सच्चाई को स्वयं प्रकट कर दिया तो उसके सही होने में क्या आपत्ति है। ऐसे लोग चौपाए हैं न कि आदमी, जिनके दिल में उसके स्पष्टत: प्रकट होने के पश्चात् फिर भी सन्देह रह जाता है। मान लिया कि मुहद्दिसों की छान-बीन के

ढंग में इस हदीस के सही होने में कुछ सन्देह रह गया था परन्तु दूसरे पहलू से वह सन्देह दूर हो गया। मुहद्दिसों ने इस बात का ठेका नहीं लिया कि जो हदीस उनकी दृष्टि में राबियों की जाँच-पड़ताल के नियम के अनुसार कुछ कमज़ोरी रखती हो वह कमज़ोरी किसी अन्य तरीके से दूर न हो सके। इस हदीस को तो किसी व्यक्ति ने बनावटी नहीं ठहराया और अहले सुन्नत तथा शिया दोनों में पाई जाती हैं। और अहले हदीस ख़ूब जानते हैं कि केवल मुहद्दिसों का फ़त्वा ठोस तौर पर किसी हदीस के झूठे होने का आधार नहीं ठहर सकता। अपितु यहां तक संभव है कि एक हदीस को हदीसविदों ने बनावटी ठहराया हो और उस हदीस की भविष्यवाणी अपने समय पर पूरी हो जाए। और इस प्रकार से उस हदीस का सही होना खुल जाए। हमारा वास्तविक उद्देश्य सही होने की छान-बीन से है न कि हदीसविदों के नियम से।

अत: यह अत्यन्त बेईमानी और दग़ाबाज़ी है कि जब ख़ुदा तआला किसी अन्य पहलू से किसी हदीस को प्रकट कर दे और सन्तोषजनक सबूत दे दे तब भी उन ख़राब धारणाओं को न त्यागें कि अमुक व्यक्ति ने अमुक रिवायतकर्ता के बारे में सन्देह प्रस्तुत किए थे। यह ऐसी ही बात है जैसा कि विश्वसनीय रावियों के बयान से किसी की मृत्यु सिद्ध हो और फिर वह व्यक्ति जो मुर्दा ठहराया गया है उपस्थित हो जाए और उसके उपस्थित होने पर भी उसके ज़िन्दा होने पर विश्वास न करें। और यह कहें कि रावी बहुत विश्वसनीय हैं। हम उसको ज़िन्दा नहीं मान सकते। ऐसा ही इन दुर्भाग्यशाली मौलवियों ने पुस्तकें तो पढ़ी हैं परन्तु बुद्धि अब तक क़रीब नहीं आई।

इस स्थान पर इस हिकमत का वर्णन करना हित से ख़ाली नहीं कि ख़ुदा तआला ने महदी मौऊद का निशान चन्द्र और सूर्य के ग्रहण को जो रमज़ान में हुआ क्यों ठहराया इसमें क्या रहस्य है।

अत: जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में था कि इस्लाम के उलेमा महदी को काफ़िर ठहराएंगे। और कुफ्र के फ़त्वे लिखेंगे। अत: यह भविष्यवाणी आसार (रिवायतों) और हदीसों में मौजूद है कि अवश्य है कि महदी मौऊद

अपनी स्वीकारिता के समय से पहले युग के उलेमा की ओर से अपने बारे में कुफ्र के फ़त्वे सुने और उसको काफ़िर और बेईमान कहें। और यदि संभव हो तो उसको क़त्ल करने का यत्न करें। तो चूंकि उम्मत के विद्वान तथा धर्मावलंबी पृथ्वी के सूर्य और चन्द्रमा के समान होते हैं और उन्हीं के माध्यम से दुनिया का अंधकार दूर होता है। इसलिए ख़ुदा तआला ने आकाश के पिण्ड चन्द्र एवं सूर्य के अंधकार को विद्वान तथा धर्मावलम्बियों के दिलों के अंधकार पर तर्क ठहराया है। जैसे पहले कुसूफ़-युसूफ़ पृथ्वी के चन्द्र एवं सूर्य पर हुआ कि विद्वानों तथा धर्मावलम्बियों के दिल अंधकारमय हो गए और फिर इसी ताक़ीद के लिए आकाश पर चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण हुआ। ताकि मालूम हो कि वह बला जिसने विद्वानों तथा धर्मावलम्बियों के दिलों पर उतर कर चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण की हालत में उनको कर दिया। आकाश ने इसकी गवाही दी। क्योंकि आकाश पृथ्वी के कार्यों पर गवाही देता है।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय में भी शक़्क़ुल क़मर की यही हालत थी कि जिनको पहली किताबों के ज्ञान का प्रकाश मिल था वे लोग उस प्रकाश पर स्थापित न रहे और उनकी दयानत और अमानत टुकड़े-टुकड़े हो गयी तो उस समय भी आकाश के शक़्क़ुल क़मर ने प्रकट कर दिया कि पृथ्वी में जो लोग प्रकाश के वारिस थे उन्होंने अंधकार से प्रेम किया। और इस स्थान पर यह बात अफ़सोस करने योग्य है कि बहुत समय हुआ कि आकाश का चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण जो रमज़ान में हुआ वह जाता रहा। तथा चन्द्रमा और सूर्य दोनों साफ़ और प्रकाशमान हो गए। परन्तु हमारे वे विद्वान तथा धर्मावलम्बी जो शम्सुल उलेमा और बदरुल इरफ़ा (ज्ञानियों के ज्ञानी और प्रकांड अध्यात्मी) कहलाते हैं वे आज तक अपने चन्द्र अवं सूर्य ग्रहण में गिरफ़्तार हैं और रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण होना इस बात की ओर संकेत था कि रमज़ान क़ुर्आन के उतरने और बरकतों का महीना है और महदी मौऊद भी रमज़ान के आदेश में है। क्योंकि उसका युग भी रमज़ान की तरह क़ुर्आन के आध्यात्मक ज्ञान उतरने और बरकतों के प्रकटन का युग है। तो उसके युग के उलेमा का उससे विमुख

होना, उसको काफ़िर ठहराना जैसे रमज़ान में चन्द्र और सूर्य ग्रहण होना है। यदि किसी को ऐसा स्वप्न आए कि रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण हुआ तो उसकी यही ताबीर (स्पष्टीकरण) है कि किसी बरकत वाले इन्सान के युग में समय के उलेमा उसका विरोध करेंगे तथा गाली, अपमान और काफ़िर ठहराएंगे। और वह व्यक्ति महदी मौऊद के नाम से भी इसलिए मनोनीत किया गया है ताकि इस बात की ओर संकेत किया जाए कि लोग उसको महदी अर्थात् हिदायत प्राप्त नहीं समझेंगे अपितु काफ़िर और अधर्मी कहेंगे। तो यह नाम पहले से बतौर निरुत्तर करने एवं आरोपों को दूर करने के निर्धारित किया गया जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम भर्त्सना करने वालों के खण्डन के लिए मुहम्मद रखा गया था ताकि इस बात की ओर संकेत हो कि इस प्रशंसनीय नबी की दुष्ट और पापी लोग भर्त्सना करेंगे। परन्तु वह मुहम्मद है अर्थात् अत्यन्त प्रशंसा किया गया न कि निन्दनीय।

अब यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हदीस में दो चन्द्र और सूर्य ग्रहण का वादा था एक विद्वान तथा धर्मावलम्बियों के दिलों का चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण और दूसरे चन्द्रमा और सूर्य का ग्रहण। तो पृथ्वी का चन्द्र और सूर्य ग्रहण तो विद्वान तथा धर्मावलम्बियों ने अपने हाथ से पूरा किया। क्योंकि उन्होंने ज्ञान और आध्यात्म ज्ञान का प्रकाश पाकर फिर उस मनुष्य से जान-बूझ कर मुंह फेरा जिसको स्वीकार करना चाहिए था। और अवश्य था कि ऐसा करते क्योंकि लिखा गया था कि प्रारम्भ में महदी मौऊद को काफ़िर ठहराया जाएगा। अत: उन्होंने मुझे काफ़िर ठहराकर इस लेख को पूरा किया और दूसरा हिस्सा आकाश में पूरा हुआ।

इस स्थान पर यह भी स्मरण रहे कि महदी को उसी प्रकार हदीस में आले मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ठहराया गया जिस प्रकार हदीस में ईसाइयों को आले ईसा ठहराया गया।

अब निशान मांगने वाले सोचें कि क्या यह चन्द्रमा एवं सूर्य ग्रहण निशान नहीं है। क्या चन्द्र और सूर्य ग्रहण प्रकट नहीं करता कि महदी मौऊद पैदा हो

गया है और वह वही है जिसको झुठलाया गया, जिसको काफ़िर ठहराया गया। क्योंकि निशान उसी के सत्यापन के लिए होता है जिसको स्वीकार न किया जाए। खेद कि हमारे मूर्ख विद्वान और घमण्डी धर्मावलम्बी नहीं सोचते कि आसार (रिवायतें) और हदीस में महदी मौऊद की यही निशानी थी कि पहले उसे बड़े ज़ोर-शोर से काफ़िर ठहराया जाएगा और फिर उसके सत्यापन के लिए आकाश पर रमज़ान में चन्द्र और सूर्य ग्रहण होगा। अत: बड़ी सफ़ाई से यह निशानी पूरी हो गई। क्या वे लोग संयमी और परहेज़गार कहलाते हैं। जो इतना खुला-खुला निशान प्रकट होने पर भी सच की ओर ध्यान नहीं देते। उनके दिलों में ख़ुदा तआला का भय पैदा नहीं होता। उनके दिलों पर ये कैसे ताले हैं जिन्होंने एक कण सत्यापन से काम न लिया।

और आकाशीय समस्त निशानों में से एक निशान मिर्ज़ा अहमद बेग़ होशियारपुरी की मौत है। आप लोग जानते हैं कि भविष्यवाणी में साफ़ शब्दों में लिखा गया था कि वह अपनी पुत्री के निकाह के दिन से तीन वर्ष तक मृत्यु पा जाएगा। अत: निकाह के दिन से अभी छ: महीने नहीं गुज़रे थे कि वह होशियारपुर में मृत्यु पा गया। अब सोचो कि क्या यह निशान नहीं है। क्या यह ग़ैब का ज्ञान ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी को भी प्राप्त है। परन्तु इस भविष्यवाणी का दूसरा भाग जो उसके दामाद की मृत्यु है वह इल्हामी शर्त के कारण दूसरे समय पर जा पड़ा और उसका दामाद इल्हामी शर्त से उसी प्रकार लाभान्वित हुआ जैसा कि आथम हुआ। क्योंकि अहमद बेग़ की मौत के बाद उसके वारिसों में कठोर संकट खड़ा हो गया तो अवश्य था कि वे इल्हामी शर्त से लाभ उठाते और यदि कोई भी शर्त न होती तब भी अज़ाब के वादे की अल्लाह की सुन्नत यही थी जैसा कि यूनुस के दिनों में हुआ। फिर उसका दामाद सम्पूर्ण वंश के भय के कारण और उनके तौब: और रुजू के कारण उस समय नहीं मरा। परन्तु स्मरण रखो कि ख़ुदा के कथन में (वादा) भंग करना नहीं और अंजाम वही है जो हम कई बार लिख चुके हैं। ख़ुदा का वादा कदापि टल नहीं सकता। अत: अहमद बेग़ की मौत भी ख़ुदा के निशानों में से एक निशान है।

इसी प्रकार बहुत सी ग़ैब की बाते हैं जो प्रकट हुईं। फिर पंडित दयानंद की मृत्यु की ख़बर समय से पूर्व देना। दिलीप सिंह के हिन्दुस्तान के भ्रमण के अपने इरादे में असफल रहने की ख़बर समय से पूर्व देना। मेहर अली होशियारपुरी के संकट की ख़बर समय से पूर्व देना। ये ऐसी बाते हैं कि सैंकड़ो आदमी इस पर गवाह हैं। और तीन हज़ार के लगभग वे अख़बार–ए-ग़ैब हैं जिन पर समय-समय पर संगत में रहने वाले सूचना पाते गए। जिनमें बहुत से अब तक मौजूद हैं। और मैं सच-सच कहता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति जो किसी उचित समय तक मेरी संगत में रहा है अवश्य उसने कोई निशान भी देखा है। ऐसा कोई नहीं जो एक मुद्दत तक मेरे पास रहा और फिर उसने कोई निशान न देखा हो और न कोई ग़ैब की ख़बर सुनी हो। मियां अबुर्रहीम या अब्दुल वाहिद पुत्र मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ग़ज़नवी जो इस समय मुझे काफ़िर ठहराते हैं और कट्टर विरोधी हैं। थोड़ी उन्हें क़सम देकर पूछिए कि क्या होशियारपुर में जिस को ग्यारह वर्ष गुज़र गए मैंने यह इल्हाम नहीं सुनाया था

ايتها المرأة توبى توبى فان البلاء على عقبك

अर्थात् हे औरत! (औरत से अभिप्राय: मिर्ज़ा अहमद बेग़ होशियारपुरी की पत्नी की मां है) तौब:-तौब: कर कि तेरी बेटी और बेटी की बेटी पर बला उतरने वाली है। फिर एक बला तो उतर गई कि अहमद बेग़ मृत्यु पा गया। और बेटी की बेटी की बला शेष है जिसको ख़ुदा तआला नहीं छोड़ेगा। जब तक पूरा न करे। परन्तु चूंकि इस इल्हाम में तूबी का शब्द तौब: की शर्त को व्यक्त कर रहा था। और इस शर्त को अहमद बेग़ की मृत्यु के बाद उसके वारिसों ने पूरा कर दिया। और वे बहुत डरे और अपने दामाद के लिए दुआ और रुजू में लग गए। इसलिए अहमद बेग़ के दामाद की मौत में ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार विलम्ब हो गया। क्योंकि वह भय जो अहमद बेग़ की मृत्यु ने उनके दिलों में बिठा दिया वही तौब: का कारण हुआ। यह तो स्पष्ट है कि अनुभव इन्सान के दिल पर बड़ा दृढ़ प्रभाव डालता है। और उसके दिल को भय से भर देता है। इसलिए अहमद बेग़ की मृत्यु के पश्चात् उनका हाल ऐसा ही हुआ।

इसी प्रकार शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी को हलफ़ देकर पूछना चाहिए कि क्या यह क़िस्सा सही नहीं कि यह विनीत उस शादी से पूर्व जो देहली में हुई संयोग से उसके मकान पर मौजूद था। उसने प्रश्न किया कि कोई इल्हाम मुझ को सुनाओ। मैंने एक ताज़ा इल्हाम जो उन्हीं दिनों में हुआ था और इस शादी और उसके दूसरे भाग को बताता था उसे सुनाया। और वह यह था

بِكْرٌ وَ ثَيِّبٌ

अर्थात् मुक़द्दर यूं है कि एक कुंआरी से शादी होगी और फिर इसके बाद एक विधवा से। मैं इस इल्हाम को स्मरण रखता हूँ मुझे आशा नहीं कि मुहम्मद हुसैन ने भुला दिया हो। मुझे उसका वह मकान याद है जहां कुर्सी पर बैठ कर मैंने उसको इल्हाम सुनाया था और अहमद बेग़ की घटना का अभी नामोनिशान न था और न अभी इस दूसरी शादी की कोई चर्चा थी। इसलिए यदि वह समझे तो समझ सकता है कि यह ख़ुदा का निशान था जिसका एक भाग उसने देख लिया और दूसरा भाग जो विधवा के बारे में है दूसरे समय में देख लेगा।

फिर एक और इल्हाम है जो फ़रवरी 1896 ई. में प्रकाशित हुआ था और वह यह है कि ख़ुदा तीन को चार करेगा। उस समय इन तीन लड़को का जो अब मौजूद हैं नामोनिशान न था और इस इल्हाम का अर्थ यह था कि तीन लड़के होंगे और फिर एक और होगा जो तीन को चार कर देगा। तो उसका एक बड़ा भाग पूरा हो गया। अर्थात् ख़ुदा ने मुझे तीन लड़के उस निकाह से प्रदान किए जो तीनों मौजूद हैं केवल एक प्रतीक्षा है जो तीन को चार करने वाला होगा। अब देखो कि यह कैसा महान निशान है। क्या इन्सान के अधिकार में है कि पहले मनगढ़ंत रूप से तीन या चार लड़कों की ख़बर दे और फिर वे पैदा हो जाएं।

फिर एक और निशान है जो यह है कि ये तीन लड़के जो मौजूद हैं। प्रत्येक के पैदा होने से पूर्व उसके आने की ख़बर दी गई है। अत: महमूद जो बड़ा लड़का है उसकी पैदायश के बारे में सब्ज़ (हरे) विज्ञापन में स्पष्ट भविष्यवाणी महमूद के नाम से मौजूद है जो पहले लड़के की मृत्यु के बारे में प्रकाशित किया गया था। जो पत्रिका की तरह कई पृष्ठों का इश्तिहार सब्ज़ (हरे) रंग के पृष्ठों पर है।

और बशीर जो बीच का लड़का है उसकी ख़बर एक सफ़ेद इश्तिहार में मौजूद है जो सब्ज़ इश्तिहार के तीन वर्ष बाद प्रकाशित किया गया था। और शरीफ़ जो सबसे छोटा लड़का है उसके जन्म के बारे में भविष्यवाणी ज़ियाउलहक़ और अन्वारुल इस्लाम में मौजूद है। अब देखो कि क्या यह अन्तर्यामी ख़ुदा का निशान नहीं है कि प्रत्येक ख़ुशख़बरी के समय में समय से पूर्व वह सूचना देता रहा।

फिर एक और भविष्यवाणी है जो अभी प्रकटन में आई है। अर्थात् वह जल्सा महोत्सव जो लाहौर में हुआ था उसके बारे में मुझे पहले से सूचना दी गई कि वह निबंध जो मेरी ओर से पढ़ा जाएगा वह सब निबंधों पर विजयी रहेगा। अतः मैंने समय से पूर्व इस बारे में विज्ञापन दे दिया जो हाशिए में★ लिखा

★**हाशिया :- मूल विज्ञापन की प्रतिलिपि**

सच्चाई के अभिलाषियों के लिए एक महान ख़ुशख़बरी

जल्सा धर्म महोत्सव जो टाऊन हॉल लाहौर में 26,27,28 दिसम्बर 1896 ई. को होगा उसमें इस विनीत का एक निबन्ध पवित्र क़ुर्आन की ख़ूबियों और चमत्कारों के बारे में पढ़ा जाएगा। यह वह निबन्ध है जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर और ख़ुदा के निशानों में से एक निशान और उसके विशेष समर्थन से लिखा गया है। इसमें पवित्र क़ुर्आन की वे सच्चाइयां और अध्यात्मज्ञान दर्ज हैं जिनसे सूर्य के समान प्रकाशमान हो जाएगा कि वास्तव में यह ख़ुदा की वाणी और समस्त लोकों के रब (प्रतिपालक) की किताब है। और जो व्यक्ति इस निबन्ध को आदि से अन्त तक पांचों प्रश्नों के उत्तर में सुनेगा, मैं विश्वास रखता हूं कि, उसमें एक नया ईमान पैदा होगा और उसमें एक नया प्रकाश चमक उठेगा। और ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम की एक सर्वांगपूर्ण तफ़्सीर उसके हाथ में आ जाएगी। मेरा यह भाषण इन्सानी व्यर्थ बातों से पवित्र और डींगे मारने के दाग़ से शुद्ध है। मुझे इस समय केवल लोगों की हमदर्दी ने इस विज्ञापन⁕ के लिए विवश किया है ताकि वे पवित्र क़ुर्आन की सुन्दरता

⁕**हाशिये से सम्बन्धित विज्ञापनः-** स्वामी शोगन चन्द्र साहिब ने अपने विज्ञापन में मुसलमानों और ईसाई साहिबों और आर्य साहिबों को क़सम दी थी कि उनके प्रसिद्ध उलेमा इस जल्से में अपने-अपने धर्म की ख़ूबियां अवश्य वर्णन करें। तो हम स्वामी साहिब को सूचना देते हैं कि हम इस बड़ी क़सम के सम्मान के लिए आपके आशय को पूरा करने के लिए तैयार हो गए हैं। और इन्शाअल्लाह हमारा निबन्ध आपके जल्से में पढ़ा जाएगा। इस्लाम वह धर्म है जो ख़ुदा का नाम

जाता है और इस इल्हाम के अनुसार मेरे उस निबंध की जल्सा महोत्सव में ऐसी मान्यता प्रकट हुई कि विरोधियों ने भी इक़रार किया कि वह निबन्ध सबसे प्रथम रहा है। और यह इल्हामी विज्ञापन मुहम्मद हुसैन बटालवी और अहमदुल्लाह और सनाउल्लाह मौलवियान अमृतसरी तथा ईसाइयों को भी समय से पूर्व भेजा गया था।

★**शेष हाशिया:-** और सौन्दर्य का अवलोकन करें और देखें कि हमारे विरोधियों का कितना अन्याय है कि वे अन्धकार से प्रेम करते और उस प्रकाश से नफ़रत करते हैं। मुझे सर्वज्ञ ख़ुदा ने **इल्हाम** द्वारा सूचित किया है कि यह वह निबन्ध है जो **सब पर विजयी** होगा। और इसमें सच्चाई, मुक्ति और आध्यात्म ज्ञान का वह प्रकाश है जो दूसरी क़ौमें, बशर्ते कि उपस्थित हों और उसे आदि से अन्त तक सुनें, शर्मिन्दा हो जाएंगी। और कदापि सक्षम नहीं होंगे कि अपनी किताबों से यह विशेषता दिखा सकें। चाहे वे ईसाई हों, चाहे आर्य, चाहे सनातक धर्म वाले या कोई अन्य। क्योंकि ख़ुदा तआला ने **इरादा किया है** कि उस दिन उसकी किताब का चमत्कार प्रकट हो। मैंने कश्फ़ की अवस्था में इसके सम्बन्ध में देखा कि मेरे महल पर ग़ैब से एक हाथ मारा गया और हाथ के स्पर्श से उस महल में से एक चमकदार प्रकाश निकला जो चारों ओर फैल गया और मेरे हाथों पर भी उसका प्रकाश पड़ा। तब एक व्यक्ति जो मेरे पास खड़ा था वह बुलन्द आवाज़ से बोला कि अल्लाहु अकबर ख़रिबत ख़ैबर। इस की ताबीर यह है कि उस महल से मेरा दिल अभिप्राय है जो प्रकाशों के उतरने और अन्दर समा जाने का स्थान है और वह प्रकाश क़ुर्आन के रहस्य ज्ञान हैं। तथा ख़ैबर से अभिप्राय समस्त ख़राब धर्म हैं जिनमें शिर्क (अनेकेश्वरवाद) और असत्य की मिलावट है। और इन्सान को ख़ुदा का स्थान दिया गया या ख़ुदा की विशेषताओं को अपने पूर्ण महल से नीचे गिरा दिया है। इसलिए मुझे जतलाया गया कि इस निबन्ध के ख़ूब फैलने के बाद झूठे धर्मों का झूठ खुल जाएगा और क़ुर्आन की सच्चाई दिन-प्रतिदिन पृथ्वी पर फैलती जाएगी जब तक कि अपना दायरा पूरा करें। फिर मैं इस कश्फ़ी अवस्था से इल्हाम की ओर लाया गया और मुझे यह इल्हाम हुआ

إِنَّ اللّٰهَ مَعَكَ إِنَّ اللّٰهَ يَقُوْمُ أَيْنَمَا قُمْتَ

अर्थात् ख़ुदा तेरे साथ है। ख़ुदा वहीं खड़ा होता है जहां तू खड़ा हो। यह ख़ुदा की सहायता के लिए एक रूपक है। अब मैं अधिक लिखना नहीं चाहता प्रत्येक को यही सूचना

बीच में आने से सच्चे मुसलमान को पूर्ण आज्ञापालन का निर्देश देता है। परन्तु अब हम देखेंगे कि आप के भाई आर्यों, पादरियों को उसके परमेश्वर या यसू के सम्मान का कितना आदर है और वे ऐसे महान क़ुद्दूस के नाम पर उपस्थित होने के लिए तैयार हैं कि नहीं। इसी से

अब बताएं क्या यह ख़ुदा का निशान नहीं है कि ख़ुदा ने मुझे पहले से सूचना दी कि सब पर तेरा ही निबन्ध विजयी रहेगा। फिर वह निबन्ध जिस श्रेष्ठता की दृष्टि से सुना गया और जिस सम्मान से लाहौर शहर में उसकी धूम मच गई क्या मुहम्मद हुसैन उससे बेख़बर है या सनाउल्लाह उस घटना से अपरिचित है। फिर यह कैसी बेईमानी है कि व्यापक निशानों से इन्कार करते है। क्या इतनी परोक्ष की खबरें✳ कोई स्वयं बना सकता है और क्या एक झूठे की निशानी है कि इस

★शेष हाशिया:- देता हूं कि अपनी-अपनी हानि भी करके इन रहस्य ज्ञानों को सुनने के लिए लाहौर में जल्से की तिथि पर अवश्य पधारें कि उनकी बुद्धि और ईमान को इससे वे लाभ प्राप्त होंगे कि वे कल्पना भी नहीं कर सकते होंगे।

और सलामती हो उस पर जो सन्मार्ग का अनुसरण करे।

ख़ाकसार- ग़ुलाम अहमद क़ादियानी 21 दिसम्बर 1896 ई.

✳हाशिया:- संसार में बहुत से मूर्ख इस धोखे में पड़े हुए हैं कि वे इस परोक्ष के ज्ञान को जो ख़ुदा तआला के विशेष बन्दों को उसकी ओर से होता है अपमान और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। कुछ जाहिल सज्जाद: नशीन, फ़क़ीरी और मौलवियत के शतुरमुर्ग इल्हाम के रहस्य ज्ञान को सुनते ही शीघ्र बोल उठते हैं कि यह कुछ वास्तविकता नहीं यह तो हमारे मामूली मुरीदों को भी हुआ करता है। कुछ कह देते हैं कि प्रारम्भिक अवस्थाओं का एक अपूर्ण पद है जिससे आगे गुज़र जाना चाहिए। और हमने अपनी सहायता से मुरीदों को ऊपर की ओर खींचना है। यह कुछ नहीं, तुच्छ है।

किन्तु जानना चाहिए कि यह सब इन्सानों के शैतान हैं और चाहते हैं कि किसी प्रकार ख़ुदा के प्रकाश को बुझा दें। यह तो सच है कि कभी सच्चा स्वप्न मामूली मोमिन और काफ़िर को भी आ जाता है और कोई टूटा-फूटा वाक्य इल्हाम के रंग में प्रत्येक मोमिन के दिल में इल्क़ा हो सकता है। अपितु कभी एक पापी भी चोतावनी या प्रेरणा के तौर पर पा सकता है परन्तु वह बात जिसको यह विनीत प्रस्तुत करता है अर्थात् ख़ुदा से वार्तालाप विशेष और चुने हुए बन्दों के अतिरिक्त किसी को प्रदान नहीं किया जाता। यह तो प्रकट है कि तुच्छ भागीदारी से कोई व्यक्ति उस सम्बोधन का पात्र नहीं हो सकता जो ख़ुदा तआला की कृपा से हर प्रकार से पूर्ण मनुष्य के लिए विशिष्ट है। संसार की ख़ूबियों की ओर दृष्टि करके देखो। क्या किसी दीवार पर एक ईंट लगाने से किसी व्यक्ति की कामिल भवन

प्रकार से ख़ुदा उसका समर्थन करे और ऐसे सार्वजनिक जल्सों में झूठे दज्जाल को सम्मान दे। और मुहम्मद हुसैन जैसे ईमानदार को, यदि वह ईमानदार है, अपमानित और बदनाम करे। क्या यह ख़ुदा का कार्य था या इन्सान की योजना।

इसके अतिरिक्त मैं दोबारा सत्याभिलाषियों के लिए सामान्य घोषणा करता हूँ कि यदि वे अब भी नहीं समझे तो नए सिरे से अपनी सन्तुष्टि कर लें और स्मरण रखें कि ख़ुदा तआला से मेरे साथ छः प्रकार के निशान हैं-

---

✶ **शेष हाशिया:-** निर्माताओं में गणना हो सकती है और क्या एक दवा बताने से डॉक्टर कहला सकता है या अरबी अथवा अंग्रेज़ी का एक शब्द सीखने से उस भाषा का इमाम स्वीकर किया जाता है। यूं तो...पापियों को भी ख़ुदा के पवित्र नबियों से स्वप्न देखने में भागीदारी है परन्तु क्या इस थोड़ी सी भागीदारी से समस्त पापी, नबियों के बराबर और समान पद वाले समझे जाएंगे?

ये मूर्खों की ग़लतियां हैं जो कि विचार की कमी से उनकी तामसिक वृत्तियों पर हावी हो रही हैं। हां यह सच है कि अपूर्ण सूफियों अपितु पापियों, दुष्कर्मियों और काफ़िरों के साथ भी ख़ुदा तआला की यह सुन्नत जारी है कि कभी वे सच्चे स्वप्न देखते हैं। किसी समय कोई टूटा-फूटा वाक्य बतौर इल्हाम भी सुन लेते हैं। किसी क़श्फ़ी तौर पर किसी मुर्दे को देख लेते या क़श्फ़े कुबूर (स्वप्न में मुर्दों से बात करना) के रंग में किसी रूह से मुलाक़ात कर लेते हैं। परन्तु ऐसे अपूर्ण दृश्यों से किसी ख़ूबी के वारिस नहीं कहला सकते। और ख़ुदा तआला इन दूराचारियों या अपूर्ण फ़क़ीरों को इसलिए स्वप्न या कश्फ़ या इल्हाम का स्वाद चखाता है ताकि वे विश्वास कर लें कि यह शक्ति बीज के तौर पर प्रत्येक में मौजूद है। और प्रत्येक के लिए उन्नति का मार्ग खुला है। ख़ुदा ने किसी को रोकना नहीं चाहा तो यह प्रकटन अपूर्ण फ़क़ीरों या पापियों और व्यभिचारियों को होता है यह केवल इसी उद्देश्य के लिए है ताकि उनकी हिम्मतें सुदृढ़ हों और उनका शौक़ बढ़े तथा आगे क़दम रखने के लिए तैयार हों। और इस प्रदर्शनी में बहुत से गंदे स्वप्न भी दाख़िल हो जाते हैं।

अतः उत्कृष्टता की यह निशानी नहीं। हाँ यह प्रमाणिकता इस गुण के पाए जाने की किसी हद तक निशानी है। और मैं घोषणा करके कहता हूं कि फ़क़ीरों में से जितने इस विनीत को काफ़िर ठहराने वाले या झुठलाने वाले हैं वे समस्त इस ख़ुदा के वार्तालाप की पूर्ण नेमत से वंचित हैं। और केवल डींगें मारने वाले और मिथ्यावादी हैं।

और ख़ुदा के वार्तालाप की वास्तविकता यह है कि ख़ुदा तआला अपने नबियों की

प्रथम– यदि कोई मौलवी अरबी का सुबोधता और सरसता में मेरी पुस्तक का मुक़ाबला करना चाहेगा तो वह अपमानित होगा। मैं प्रत्येक अहंकारी को अधिकार देता हूँ इसी अरबी पत्र के मुक़ाबले पर काव्य-रचना शक्ति की जांच

✷ **शेष हाशिया:-** तरह उस व्यक्ति को जो फ़नाफ़िन्नबी है अपने पूर्ण वार्तालाप का सामान प्रदान करे। इस वार्तालाप में वह बन्दा जो कलीमुल्लाह हो ख़ुदा से जैसे आमने-सामने बातें करता है। वह प्रश्न करता है ख़ुदा उसका उत्तर देता है। यद्यपि ऐसा प्रश्न और उत्तर पचास बार हो या इससे भी अधिक। ख़ुदा तआला अपने वार्तालाप के द्वारा अपने कामिल बन्दे को तीन नेमतें प्रदान करता है। **प्रथम–** उनकी अधिकतर दुआएं स्वीकार होती है और स्वीकारिता से सूचना दी जाती है। **द्वितीय–** उसे ख़ुदा तआला बहुत सी ग़ैब की ख़बरों की सूचना देता है। **तृतीय–** उस पर पवित्र क़ुर्आन के बहुत से दर्शन-शास्त्रीय ज्ञान इल्हाम द्वारा खोले जाते हैं। फिर जो व्यक्ति इस विनीत को झुठलाने वाला होकर फिर यह दावा करता है कि यह हुनर (कला) मुझ में पाया जाता है। मैं उसे ख़ुदा तआला की क़सम देता हूँ कि इन तीनों बातों में मेरे साथ मुक़ाबला करे और दोनों सदस्यों में से पवित्र क़ुर्आन के किसी स्थान की सात आयतें तफ़्सीर के लिए परस्पर सहमति से स्वीकार होकर उनकी तफ़्सीर दोनों सदस्य लिखें। अर्थात् विरोधी सदस्य अपने इल्हाम से उसके मआरिफ़ लिखे और मैं अपने इल्हाम से लिखूं। और समय से पूर्व वह कुछ ऐसे इल्हाम प्रस्तुत करे जिनमें दुआ की स्वीकारिता की ख़ुशख़बरी हो। और वह दुआ विलक्षण हो। ऐसा ही मैं भी प्रस्तुत करूं तथा कुछ परोक्ष की बातें जो भावी समय से संबधित हैं वह समय से पूर्व प्रकट करे। और ऐसा ही मैं भी प्रकट करूं। और दोनों सदस्यों के यह बयान विज्ञापनों द्वारा प्रकाशित किए जाएं। तब प्रत्येक का सत्य और असत्य खुल जाएगा परन्तु स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा कदापि नहीं कर सकेंगे। झुठलाने वालों के दिलों पर ख़ुदा की लानत है। ख़ुदा तआला उनको न क़ुर्आन का प्रकाश दिखाएगा और न मुक़ाबले पर दुआ की स्वीकारिता जो समय से पूर्व जतलाने के साथ हो। और न परोक्ष के मामलों पर सूचना देगा

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

(अलजिन्न 27,28)

अत: मैंने यह विज्ञापन दे दिया है जो व्यक्ति इसके बाद सीधे तरीक़े से मेरे साथ मुक़ाबला न करे और न झुठलाने से रुके वह ख़ुदा की लानत, फ़रिशतों की लानत, और समस्त सदात्माओं की लानत के नीचे है।

रसूल पर केवल पैग़ाम पहुँचा देना फ़र्ज़ है।

करे। यदि वह इस अरबी पत्र के मुक़ाबले पर कोई पुस्तक पद्य और गद्य की मात्रा की अनिवार्यता के साथ बना सके और एक मातृभाषी जो अरबी हो क़सम खाकर इसका सत्यापन कर सके तो मैं झूठा हूँ।

द्वितीय– और यदि यह निशान स्वीकार न हो तो मेरे विरोधी क़ुर्आन की किसी सूरत की मुक़ाबले पर तफ़्सीर बनाएं अर्थात् आमने-सामने एक स्थान पर बैठ कर बतौर फाल पवित्र क़ुर्आन खोला जाए और पहली सात आयतें जो निकलें उनकी तफ़्सीर मैं भी अरबी में लिखूं और मेरा विरोधी भी लिखे। फिर यदि मैं वास्तविकता और रहस्य ज्ञान के वर्णन करने में व्यापक तौर पर विजयी न रहूँ तो फिर भी मैं झूठा हूँ।

तृतीय- और यदि यह निशान भी स्वीकार न हो तो एक वर्ष तक कोई प्रसिद्ध मौलवी विरोधियों में से मेरे पास रहे यदि इस मुद्दत में इन्सान की शक्ति से श्रेष्ठतर मुझ से कोई निशान प्रकट न हो तो फिर भी मैं झूठा होऊंगा।

चतुर्थ- और यदि यह भी स्वीकार न हो तो एक प्रस्ताव यह है कि कुछ प्रतिष्ठित विरोधी विज्ञापन दे दें कि इस तिथि के पश्चात् एक वर्ष तक यदि कोई निशान प्रकट हो तो हम तौबा करेंगे और सत्यापित करने वाले हो जाएंगे अत: इस विज्ञापन के बाद यदि एक वर्ष तक मुझ से कोई निशान प्रकट न हुआ जो मानवीय शक्तियों से उच्चतर हो। चाहे भविष्यवाणी हो या और तो मैं इक़रार करूंगा कि मैं झूठा हूँ।

पंचम – और यदि यह भी स्वीकार न हो तो शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी और दूसरे प्रसिद्ध विरोधी मुझ से मुबाहल:★ कर लें। फिर यदि मुबाहले के

★हाशिया :- मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी ने मुबाहले की दावत पर सूचना पाकर अपने पत्र में मौलवी अब्दुलहक़ ग़जनवी का वर्णन किया है। शायद इस वर्णन से उसका मतलब है कि उस मुबाहले से अब्दुलहक़ पर कोई बला नहीं उतरी और न इस ओर कोई नेक प्रभाव हुआ। इसलिए मैं उसे और उसके साथियों को सूचना देता हूँ कि पहले तो यह बात सही नहीं है कि उस मुबाहले के बाद अब्दुल हक़ को कोई वास्तविक अपमान नहीं पहुंचा या हमें कोई वास्तविक सम्मान प्राप्त न हुआ। जैसा कि मैं आगे चल कर वर्णन

बाद मेरी बद्दुआ के प्रभाव से एक भी खाली रहा तो मैं इक़रार करूंगा कि मैं झूठा हूँ। फैसले के ये तरीक़े हैं जो मैंने प्रस्तुत किए हैं। और मैं प्रत्येक को

शेष हाशिया :- करूंगा सिवाए इसके कि वह मुबाहल: वास्तव में मेरे निवेदन पर नहीं हुआ था और न मेरा इसमें यह उद्देश्य था कि अब्दुल हक़ पर बद्दुआ करूं। और न मैंने मुबाहले के बाद कभी इस बात की ओर ध्यान दिया। इस बात को अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मैंने कभी अब्दुल हक़ पर बद्दुआ नहीं की और अपने हार्दिक जोश को उस ओर कदापि जाने नहीं दिया। परन्तु अब अयोग्य मौलवियों का ज़ुल्म सीमा से गुज़र गया। इसलिए अब मैं आकाशीय फ़ैसले के लिए स्वयं प्रत्येक काफ़िर ठहराने वाले से मुबाहले का निवेदन करता हूँ। तथा इसलिए कि बाद में सन्देह पैदा न हों मैंने यह अनिवार्य शर्त ठहरा दी है कि जो लोग मुबाहले के लिए बुलाए गए हैं। उनमें से कम से कम दस आदमी मुबाहले का निवेदन करें ताकि ख़ुदा की सहायता सफ़ाई से सिद्ध हो। और किसी तावील की गुंजाइश न रहे और ताकि कोई बाद में यह न कहे कि मुकाबले पर केवल एक आदमी था। इसलिए संयोगवश उस पर कोई संकट आ गया। कुछ दुष्ट प्रकृति वाले मौलवी जो यहूदियत का ख़मीर अपने अन्दर रखते हैं सच्चाई पर पर्दा डालने के लिए यह भी कहा करते हैं कि पहले मुबाहले में अब्दुल हक़ को विजय हुई क्योंकि आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की थी उसमें आथम नहीं मरा। किन्तु ये दिल के कोढ़ी और इस्लाम के शत्रु नहीं समझते कि कब और किस समय यह इल्हाम प्रकट किया गया था कि आथम अवश्य अवधि के अन्दर मरेगा और किस विज्ञापन या पुस्तक में हम ने लिखा था कि इस मुद्दत में बिना किसी शर्त के आथम के बारे में मौत का आदेश है। दुनिया में सब प्रणियों से अधिक गन्दा और घृणा करने के योग्या सुअर है परन्तु सुअर से अधिक गन्दे वे लोग हैं जो अपने स्वार्थ के लिए सच और ईमानदारी की गवाही को छुपाते हैं। हे मुर्दार खाने वाले मौलवियों और गन्दी रूहों तुम पर अफ़सोस कि तुमने मेरी शत्रुता के लिए इस्लाम की सच्ची गवाही को छुपाया। हे अंधकार के कीड़ों तुम सच्चाई की तीव्र किरणों को कैसे छुपा सकते हो क्या अवश्य न था कि ख़ुदा इस भविष्यवाणी में अपनी शर्त का ध्यान रखता। हे ईमान और इन्साफ़ से दूर भागने वालों सच कहो कि क्या इस भविष्यवाणी में कोई ऐसी शर्त न थी जिस पर आथम का क़दम मारना उसकी मृत्यु में विलम्ब डाल सकता था। अत: तुम झूठ मत बोलो और वह गन्दगी न खाओ जो ईसाइयों ने खाई।

आंख खोल कर देखो कि यह भविष्यवाणी अपनी समस्त चमकारों के साथ पूरी हो गई। अब इस भविष्यवाणी को एक भविष्यवाणी न समझो अपितु यह दो भविष्यवाणियां हैं

ख़ुदा तआला की क़सम देता हूँ कि अब सच्चे दिल से इन तरीक़ों में से किसी तरीक़े को स्वीकार करें। अर्थात् या तो दो माह की अवधि मैं जो मार्च 1897 ई.

शेष हाशिया :- जो अपने समय पर प्रकटन में आईं।

●**प्रथम-** वह भविष्यवाणी जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में दर्ज है जिसने आज से पन्द्रह वर्ष पहले साफ़ शब्दों में यह प्रकट किया था कि ईसाइयों का एक फ़ित्न: खड़ा होगा और यहूदी सिफ़त लोग उनके साथ मिलेंगे और वे सच्चाई को छुपाने के लिए बड़ा मक्र करेंगे और बहुत कष्ट देंगे। अन्त में सच्चाई प्रकट हो जाएगी। तो वही सच्चाई थी जिसके समर्थन में पन्द्रह वर्ष पहले यह भविष्यवाणी की गई। फिर मैं कहता हूँ कि वही सच्चाई थी जिसने आथम को पेशगोई सुनने के बाद एक मुजरिम की तरह बेबस और हताश बना दिया था। फिर मैं कहता हूँ कि वही सच्चाई थी जिसने आथम को तीन झूठे आरोपों के बनाने के लिए विवश किया। मैं पुन: कहता हूँ कि वही सच्चाई थी जिसने आथम को क़सम खाने से रोका। मैं पुन: कहता हूँ कि यह वही सच्चाई थी जिसने उसे कष्ट उठाने के बाद नालिश करने की हिम्मत से डरा दिया। मैं पुन: कहता हूँ कि वही सच्चाई थी जिससे आथम अन्तिम इल्हामों के अनुसार अन्तिम विज्ञापन से सात महीने के अन्दर समस्त पादरियों का मुंह काला करके क़ब्र के गढ़े में जा पड़ा।

आथम की भविष्यवाणी को यदि उस भविष्यवाणी के साथ जो पन्द्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में लिखी गई थी इकट्ठा करके पढ़ा जाए तो यह एक ऐसा स्पष्ट चमत्कार है जिससे बड़े-बड़े काफ़िरों के दिल नर्म हो सकते हैं और यह भविष्यवाणी सूर्य के समान चमकती हुई दिखाई देती है। परन्तु इन मौलवियों को किस से उपमा दूं। वे उस मूर्ख अंधे से समानता रखते हैं जो सूर्य के अस्तित्व से इन्कारी हो गया था और बड़े ज़ोर से उपदेश देता था कि सूर्य के अस्तित्व पर कोई भी तर्क नहीं। तब सूर्य ने उसको कहा कि हे जन्मजात अंधे! मैं कौन-सा तर्क तुझको बताऊं ताकि तू मेरे अस्तित्व का क़ाईल हो जाए। इसलिए उत्तम है कि तू ख़ुदा से दुआ करे वह तुझे आंखे दे। फिर जब तू सुजाखा हो जाएगा तो आसानी से मुझे देख लेगा।

अब क्रोध की बात है कि ख़ुदा ने जिस घटना की ख़बर पन्द्रह वर्ष पूर्व दे दी और फिर उसी प्रकार से वह घटना प्रकटन में आई। और अपनी शर्त के अनुसार पूरी हुई। और फिर दूसरे इल्हाम के अनुसार जो उसी युग में प्रकाशित हो चुका था। आथम अन्तिम विज्ञापन से सात महीने के अन्दर क़ब्र में जा पहुंचा और भविष्यवाणी के समस्त मरहले पूरे हो गए। और इस झगड़े के बारे में जो हम में और ईसाइयों में ज़ोर से ज़ाहिर हुआ आज से तेरह

की 10 तारीख़ तक सुनिश्चित करता हूँ इस अरबी पुस्तक का ऐसा सरस-सुबोध उत्तर छाप कर प्रकाशित करें। या आमने-सामने एक जगह बैठकर अरबी भाषा

शेष हाशिया :- सौ वर्ष पूर्व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी ख़बर दी। यह सब कुछ हुआ परन्तु अब तक कुछ बेईमान और अंधे मौलवी और दुष्टप्रकृति ईसाई सच्चाई के सूर्य के प्रदुर्भाव से इन्कारी हैं मौलवी सनाउल्लाह साहिब ने जो अब्दुलहक़ के मुबाहले का ज़िक्र करके फिर संक्षिप्त तौर पर यह संकेत किया है कि ख़ुदा की सहायता के लक्षण मुबाहले के पश्चात अब्दुल हक़ की ओर थे। यह एक महान सच्चाई का ख़ून किया है और इतना एक गन्दा झूठ बोला है जिस से एक मोमिन का शरीर कांप जाता है।

खेद कि ये लोग मौलवी कहलाने का तो बहुत शौक़ रखते हैं परन्तु संयम और ईमानदारी से ऐसे दूर है कि जैसे पूरब से पश्चिम। यदि इन बातों से मौलवी सनाउल्लाह का यह मतलब है कि ईसाइयों ने भविष्यवाणी की अवधि के बाद अमृतसर में बहुत शोर मचाया था और ईसाइयों का अपवित्र वर्ग वैश्या की तरह कूचों और बाज़ारों में नाचता फिरता था। और सब पादरी और उनके समान स्वभाव मौलवी और गन्दी प्रकृति के कुछ अख़बार वाले गालियां देते थे और भिन्न-भिन्न प्रकार से बद्ज़ुबानी करते थे। यह जैसे अब्दुलहक़ के मुबाहले का प्रभाव था। तो मैं मौलवी सनाउल्लाह को विश्वास दिलाता हूँ कि प्रत्येक जोश और गालियां जिनका आधार सही घटनाओं पर न हो और केवल अपने बोध भ्रम और अदूरदर्शिता पर हो। अहले हक़ (सत्यवादी) को इससे कुछ हानि नहीं पहुंच सकती और न किसी विरोधी की इससे विजय समझी जा सकती है। अपितु ऐसे लोगों को यह झूठी ख़ुशी अन्त में उनके लिए लानत से भरा हुआ अज़ाब हो जाता है। जैसा कि जिन लोगों ने हमारे सय्यद-व-मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देश से निकाला और बहुत से अनादर और धृष्टताओं के साथ व्यवहार किया या फ़िरऔन ने कई बार हज़रत मूसा को अपने दरबार से धक्के देकर बाहर कर दिया और उनका नाम काफ़िर रखा और अपने समझ में बहुत अपमान किया। ऐसा ही जब हज़रत मसीह ने यहूदियों को एलिया के नुज़ूल के बारे में उनके विचार के अनुसार उत्तर दिया तो यहूदियों ने मसीह पर ठट्ठा मारा और उनका नाम नास्तिक रखा गया। और अधिकतर लोगों ने उनको मारा और उनके मुंह पर थूका और कोड़े भी लगे और अपने विचार में बहुत अपमान किया। परन्तु वास्तव में यह सब झूठी ख़ुशियां थीं और सही घटनाओं पर उनकी बुनियाद न थी। इसलिए नहीं कह सकते कि इन अपमानों से उन पवित्र नबियों का कोई वास्तव में अपमान हो गया या उनके विरोधियों को विजय उपलब्ध हुई। उदाहरणतया देखो कि इस युग में गन्दगी खाने वाले पादरी हमारे सय्यद-व-मौला रसूलों के गर्व ख़ातमुन्नबिय्यीन पहले और बाद में आने वालों के सरदार

में मेरे मुक़ाबले में सात क़ुर्आनी आयतों की तफ़्सीर लिखें या एक वर्ष तक मेरे पास निशान देखने के लिए रहें और या विज्ञापन प्रकाशित करके अपने ही घर

शेष हाशिया :- का कैसे अनादर कर रहे हैं। हज़ारों गालियां देते हैं झूठे आरोप लगाते हैं नऊज़ुबिल्लाह डाकू-बाटमार, व्यभिचारी अपने शैतानी जीवन चरित्र से नाम रखते हैं। जैसा की अभी एक शैतान की गन्दी नस्ल फ़तह मसीह नामक, फ़तहगढ़ में नियुक्त, ने इसी प्रकार से आंजनाब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अनादर किए। परन्तु इन दुष्कर्मियों, गन्दगी खाने वालों के अनादर से जो ज़िन्दा ख़ुदा को छोड़ कर एक तुच्छ मुर्दे की पूजा में लग गए हैं, उस हिदायत के सूर्य की शान में कुछ अन्तर आ गया? नहीं, अपितु ये समस्त नाइंसाफ़ियाँ उन्हीं पर हसरतें हैं।

अत: इसी प्रकार यदि अंधे पादरियों या काने मौलवियों ने आथम के मुक़द्दमे की वास्तविकता को भली-भान्ति न समझा और गालियां दी तो इस बोध-भ्रम का वास्तविक अपमान उन्हीं को पहुंचा और इस ग़लती की स्याही उन्ही के मुंह पर लगी और सच्चाई को त्यागने की लानत उन्हीं पर बरसी। फिर सैकड़ों लोगों ने इसके बाद रो-रो कर तौब: की कि हम ग़लती पर थे। सारांश यह कि किसी झूठी ख़ुशी से किसी पर सच्चा आरोप नहीं आ सकता और न झूठे आरोप से कोई वास्तविक धब्बा किसी के सम्मान को लग सकता है। और न इससे किसी की वास्तविक विजय समझी जा सकती है। अपितु वह अंजाम की दृष्टि से उन लोगों पर लानत का दाग़ है जिन्होंने ऐसी झूठी ख़ुशी मनाई।

तो आथम के बारे में गन्दों और नीच लोगों ने जितनी ख़ुशियां मनाईं अब वही खुशियां खेद और हसरत का रंग धारण कर गईं।

अब ढूंढो आथम कहां है। क्या भविष्यवाणी के शब्दों के अनुसार वह क़ब्र में दाख़िल नहीं हुआ। क्या वह नर्क में नहीं गिराया गया।

हे अंधो! मैं कब तक तुम्हें बार-बार बताऊंगा। क्या ज़रूरी न था कि ख़ुदा अपनी शर्त के अनुसार अपने पवित्र इल्हाम को पूरा करता। आथम तो उसी समय मर गया था जबकि मेरी ओर से चार हज़ार के ईनाम के साथ निरन्तर इस बात पर हुज्जत पूरी हुई और वह सिर न उठा सका। फिर ख़ुदा ने उसको न छोड़ा जब तक रूहों के क़ब्ज़ा करने वाले के सुपुर्द न कर दिया।

भविष्यवाणी प्रत्येक पहलू से खुल गई अब भी यदि नर्क को अपनाना है तो मैं जानबूझ कर (नर्क में) गिरने वाले को पकड़ नहीं सकता। ये समस्त घटनाएं ऐसी हैं कि इन पर सूचना पाकर एक संयमी का शरीर कांप जाता है और फिर वह ख़ुदा से शर्माता है कि ऐसी खुली-खुली भविष्यवाणी से इन्कार करे। मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि यदि कोई

में मेरे निशान का एक वर्ष तक प्रतीक्षा कर लें।

षष्टमः- और यदि इन बातों में से कोई भी न करें तो मुझसे और मेरी

शेष हाशिया :- मेरे सामने ख़ुदा तआला की क़सम खाकर इस भविष्यवाणी की सच्चाई से इन्कार करे तो ख़ुदा तआला उसको बिना दण्ड दिए नहीं छोड़ेगा। पहले चाहिए कि वह उन समस्त घटनाओं पर सूचना पाए ताकि उसकी बेख़बरी उसकी समर्थक न हो। तत्पश्चात् क़सम खाए कि यह ख़ुदा तआला की ओर से नहीं और झूठी है। फिर यदि वह एक वर्ष तक इस प्रकार के वबाल से तबाह न हो जाए और उस पर कोई विलक्षण संकट न पड़े तो देखो मैं सबको गवाह करके कहता हूँ कि इस स्थिति में मैं इक़रार करूंगा कि हां मैं झूठा हूँ। यदि अब्दुल हक़ इस बात पर आग्रह करता है तो वही क़सम खाए और यदि मुहम्मद हुसैन बटालवी इस विचार पर ज़ोर दे रहा है तो वही मैदान में आए। और यदि मौलवी अहमदुल्लाह अमृतसरी या सनाउल्लाह अमृतसरी ऐसा ही समझ रहे हैं तो उन्हीं पर अनिवार्य है कि क़सम खाकर अपना संयम दिखाएं और निःस्सन्देह स्मरण रखो कि यदि इनमें से किसी ने क़सम खाई कि आथम के बारे में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और ईसाइयों की विजय हुई तो ख़ुदा उसे अपमानित करेगा, मुंह काला करेगा और लानत की मौत उसे मारेगा, क्योंकि उसने सच्चाई को छुपाना चाहा जो इस्लाम धर्म के लिए ख़ुदा के आदेश और इरादे से पृथ्वी पर प्रकट हुई।

परन्तु क्या ये लोग क़सम खा लेंगे। कदापि नहीं क्योंकि ये झूठे हैं और कुत्तों की तरह झूठ का मुर्दार खा रहे हैं।

अब यदि कोई प्रश्न करे कि यद्यपि अब्दुल हक़ के मुबाहले में इस ओर से किसी बद्दुआ का इरादा न किया गया। परन्तु जो सच्चे के सामने मुबाहले के लिए आया हो तो मुबाहले के बाद कुछ ऐसी बातों का पाया जाना चाहिए जिन पर विचार करने से उसका अपमान और असफलता पाई जाए और अपना सम्मान दिखाई दे। अतः जानना चाहिए कि वे बातें निम्नलिखित विवरण के साथ हैं जो ख़ुदा के आदेशानुसार

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ (अलक़सस आयत : 84)

हमारे सम्मान का कारण हुईं।

पहली- आथम के बारे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह अपने वास्तविक मायनों की दृष्टि से पूरी हो गई और उस दिन वह भविष्यवाणी भी पूरी हुई जो पन्द्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-241 में लिखी गई थी। आथम ख़ुदा की असल इच्छा के अनुसार मर गया और समस्त विरोधियों का मुंह काला हुआ। और उनकी समस्त झूठी ख़ुशियां खाक़ में मिल गईं। इस भविष्यवाणी की घटनाओं पर सूचना पाकर सैकड़ों दिलों का कुफ़्र टूटा और

जमाअत से सात वर्ष तक इस प्रकार से मैत्री कर लें कि काफ़िर ठहराने, झुठलाने और गालियों से मुख बन्द रखें। तथा प्रत्येक से प्रेम और शिष्टाचार पूर्वक मिलें।

शेष हाशिया :- हज़ारों पत्र उसके सत्यापन के लिए पहुंचे। और विरोधियों तथा झुठलाने वालों पर लानत पड़ी जो अब दम नहीं मार सकते।

दूसरी वह बात जो मुबाहले के बाद मेरे सम्मान का कारण हुई वह उन अरबी पुस्तकों का संग्रह है जो विरोधी मौलवियों और पादरियों को अपमानित करने के लिए लिखा गया था और उन्ही में से यह अरबी पत्र है जो अब निकला। क्या अब्दुल हक़ और क्या उसके दूसरे भाई इन पुस्तकों के मुक़ाबले पर मर गए और कुछ भी लिख न सके। और दुनिया ने यह फ़ैसला कर दिया कि अरबी जानने का सम्मान उसी व्यक्ति अर्थात् इस लेखक के लिए मान्य है जिसकों काफ़िर ठहराया गया है। और यह सब मौलवी जाहिल हैं।

अब सोचो कि सम्मान की प्रशंसाएं मुझे किस समय मिलीं क्या मुबाहले के बाद या उसके पहले। तो यह मुबाहले का प्रभाव था जो ख़ुदा ने प्रकट किया। उसी समय में ख़ुदा ने शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी का यह आरोप, कि इस व्यक्ति को अरबी में एक शब्द नहीं आता, मेरे सिर से उतारा और मुहम्मद हुसैन तथा दूसरे विरोधियों की जहालत को प्रकट किया। **فالحمد لله علىٰ ذالك**

(इस पर अल्लाह की भूरी भूरी प्रशंसा।)

तीसरी वह बात जो मुबाहले के बाद मेरे सम्मान का कारण हुई, वह मान्यता है जो मुबाहले के बाद दुनिया में खुल गई। मुबाहले से पहले शायद मेरे साथ तीन-चार सौ आदमी होंगे और अब आठ हज़ार से कुछ अधिक वे लोग हैं जो इस मार्ग में पूरी तरह प्रयासरत हैं। और जिस प्रकार अच्छी भूमि की खेती शीघ्र-शीघ्र उगती और विकसित होती है तथा बढ़ती जाती है ऐसा ही विलक्षण तौर पर इस जमाअत की उन्नति हो रही है। नेक रूहें इस ओर दौड़ती चली आती हैं और ख़ुदा ज़मीन को हमारी ओर खींचता चला आता है। मुबाहले के बाद ही एक ऐसी अद्‌भुत मान्यता फैल रही है कि उसको देख कर एक आर्द्रता पैदा होती है। एक-दो ईंट से अब एक महल तैयार हो गया है। तथा एक-दो बूंद से अब एक नहर मालूम होती है। तनिक आंखें खोलो और पंजाब तथा हिन्दुस्तान में फिरो। अब अधिकतर स्थानों पर हमारी जमाअतें पाओगे। फ़रिश्ते काम कर रहे हैं और दिलों में नूर डाल रहे हैं। तो देखो मुबाहले के बाद हमें कैसा सम्मान मिला। सच कहो क्या यह ख़ुदा का काम है या इन्सान का।

चौथी वह बात जो मुबाहले के बाद मेरे सम्मान का कारण हुई, रमज़ान में चन्द्र और सूर्य ग्रहण है। हदीस की पुस्तकों में सैकड़ों वर्षों से यह लिखा हुआ चला आता था

और ख़ुदा के कोप से डर कर मुलाक़ातों में मुसलमानों की आदत के तौर पर व्यवहार करें। प्रत्येक प्रकार की दुष्टता को त्याग दें। फिर यदि इन सात वर्षों में

शेष हाशिया :- कि महदी के सत्यापन के लिए रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण होगा। और आज तक किसी ने नहीं लिखा कि इससे पूर्व कोई ऐसा महदी होने का मुद्दई प्रकट हुआ था जिसको ख़ुदा ने यह सम्मान दिया है कि उसके लिए रमज़ान में चन्द्र एवं सूर्य ग्रहण हो गया हो। फिर ख़ुदा ने मुबाहले के बाद यह सम्मान भी मुझे दिया।

हे अंधो! अब सोचो कि मुबाहले के बाद यह सम्मान किसको मिला। अब्दुल हक़ तो मेरे अपमान के लिए दुआएं करता था। यह क्या घटना हुई कि आकाश भी मुझे सम्मान देने के लिए झुका। क्या तुम में कोई एक विचार करने वाला नहीं जो इस बात पर विचार करे। क्या तुम में एक भी दिल नहीं जो इस बात को समझे। ज़मीन ने सम्मान दिया आकाश ने सम्मान दिया और मान्यता फैल गई।

पांचवी वह बात जो मुबाहले के बाद मेरे लिए सम्मान का कारण हुई क़ुर्आन के ज्ञान में इत्माम-ए-हुज्जत है। मैंने यह ज्ञान पाकर समस्त विरोधियों को, क्या अब्दुल हक़ का गिरोह और क्या बत्तालवी का गिरोह, अत: सब को बुलन्द आवाज़ से इस बात के लिए दावत दी कि मुझे क़ुर्आन के वास्तविक अर्थ और उसका अध्यात्म ज्ञान दिया गया है। तुम लोगों में से किसी की मजाल नहीं कि मेरे मुक़ाबले पर पवित्र क़ुर्आन की वास्तविकताएं और आध्यात्म ज्ञान वर्णन कर सके। फिर इस घोषणा के बाद मेरे मुक़ाबले पर उनमें से कोई भी न आया और अपनी मूर्खता पर जो समस्त अपमानों की जड़ है उन्होंने मुहर लगा दी। अत: यह सब कुछ मुक़ाबले के बाद हुआ और उसी युग में करामातुस्सादिक़ीन पुस्तक लिखी गई। इस चमत्कार के मुक़ाबले पर कोई व्यक्ति एक अक्षर भी न लिख सका। तो क्या अब तक अब्दुलहक़ और उसकी जमाअत अपमानित नहीं हुई और क्या अब तक यह सिद्ध न हुआ कि मुबाहले के बाद यह सम्मान ख़ुदा ने मुझे दिया।

छठी बात जो मुबाहले के बाद मेरे सम्मान और अब्दुलहक़ के अपमान का कारण हुई यह है कि अब्दुलहक़ ने मुबाहले के बाद विज्ञापन दिया था कि एक बेटा उसके घर में पैदा होगा। और मैंने भी ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर यह विज्ञापन अन्वारुल इस्लाम में प्रकाशित किया था कि ख़ुदा तआला मुझे लड़का प्रदान करेगा तो ख़ुदा तआला की कृपा और दया से मेरे घर में तो लड़का पैदा हो गया जिसका नाम शरीफ़ अहमद है और लगभग पौने दो वर्ष की आयु रखता है। अब अब्दुल हक़ को अवश्य पूछना चाहिए कि उसका वह मुबाहले की बरकत का लड़का कहां गया। क्या अन्दर ही अन्दर पेट में गायब हो गया था फिर दोबारा लौट कर फिर वीर्य बन गया क्य इसके अतिरिक्त किसी और चीज़ का नाम

मेरी ओर से ख़ुदा तआला के समर्थन से इस्लाम की सेवा में स्पष्ट प्रभाव प्रकट न हों और जैसा कि मसीह के हाथ से मिथ्या धर्मों का मर जाना आवश्यक है।

शेष हाशिया :- अपमान है कि जो कुछ उसने कहा वह पूरा न हुआ और जो कुछ मैंने ख़ुदा के इल्हाम से कहा ख़ुदा ने उसको पूरा कर दिया फिर ज़ियाउलहक़ में भी इसी लड़के का ज़िक्र लिखा गया है।

सातवीं बात जो मुबाहले के बाद मेरे सम्मान और मान्यता का कारण हुई ख़ुदा के सत्यनिष्ठ बन्दों का वह निष्कपटतापूर्ण जोश है जो उन्होंने मेरी सेवा के लिए दिखाया। मुझे कभी यह शक्ति न होगी कि मैं ख़ुदा के उन उपकारों का धन्यवाद अदा कर सकूं जो रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक (भौतिक) तौर पर मुबाहले के बाद मेरे साथ हो गए। रूहानी ईनामों का नमूना मैं लिख चुका हूँ। अर्थात् यह कि ख़ुदा तआला ने मुझे वह क़ुर्आन का ज्ञान और भाषा का ज्ञान केवल चमत्कार के तौर पर प्रदान किया कि उसके मुक़ाबले पर केवल अब्दुलहक़ क्या अपितु कुल विरोधियों का अपमान हुआ प्रत्येक विशेष एक सामान्य को विश्वास हो गया कि ये लोग नाम के मौलवी हैं। जैसे ये लोग मर गए। अब्दुल हक़ के मुबाहले की नुहूसत ने उसके अन्य साथियों को भी डुबोया।

और भौतिक नेमतें जो मुबाहले के बाद मुझ पर आईं वे आर्थिक विजय हैं जो इस दरवेश के लिए ख़ुदा तआला ने खोल दीं। मुबाहले के दिन से आज तक पन्द्रह हज़ार ग़ैब की विजयों का रुपया आया जो इस सिलसिले के रब्बानी मआरिफ़ में ख़र्च हुआ। जिसको सन्देह हो वह डाकख़ाने की पुस्तकों को देख ले और अन्य सबूत हम से ले ले। और पब्लिक के रुजू का इतना मज्मा बढ़ गया कि बजाए इसके हमारे लंगर में साठ या सत्तर रुपया प्रति माह खर्च होता था अब औसत खर्च कभी पांच सौ कभी छ: सौ प्रति माह तक हो गया। और ख़ुदा ने ऐसे निष्कपट और पूर्ण प्रयास करने वाले श्रद्धालु हमारी सेवा में लगा दिए कि जो अपने माल को इस मार्ग में व्यय करना अपना सौभाग्य समझते हैं। अत: इन सब में से एक **हुब्बीफ़िल्लाह हाजी सेठ अब्दुर्रहमान अल्लाह रक्खा साहिब** ताजिर मद्रास हैं जो इस पुस्तक के लिखने के समय भी इस जगह मौजूद हैं। और मद्रास से लम्बा सफ़र करके मेरे पास पधारे हुए हैं। आदरणीय सेठ साहिब मुबाहले के प्रभाव का एक प्रथम आदर्श हैं जिन्होंने कई हज़ार रुपया हमारे सिलसिले के मार्ग में केवल ख़ुदा के लिए लगा दिया है। और निरन्तर ऐसी तन्मयता से सेवा कर रहे हैं कि जब तक इन्सान विश्वास से न भर जाए इतनी सेवा नहीं कर सकता। वह हमारे दरवेश गृह के ख़र्चों के प्रथम श्रेणी के सेवक हैं और आज तक भारी मात्रा में रक़में यकमुश्त इस मार्ग में देते रहे हैं। इसके अतिरिक्त मैं देखता हूँ कि उन्होंने एक सौ रुपया प्रति माह सहायता के तौर पर अपने ज़िम्मे अनिवार्य कर रखा

यह मृत्यु झूठे धर्मों पर मेरे द्वारा प्रकटन में न आए। अर्थात् ख़ुदा तआला मेरे हाथ से वे निशान प्रकट न करे जिनसे इस्लाम का बोलबाला हो और जिससे

शेष हाशिया :- है। मुबाहले के बाद उनके माल से जितनी सहायता मुझे पहुँच रही है मैं उसका उदाहरण नहीं देखता। यह ख़ुदा तआला की दया है कि उसने इस श्रेणी का प्रेम दिलों में डाल दिया। यह हाजी सेठ अब्दुर्रहमान साहिब वही हैं जो आथम की क़सम देने के समय इस बात के लिए तैयार थे कि यदि आथम क़सम पर रुपया मांगे तो अपने पास से दस हज़ार रुपया तक उसके पास जमा करा दें।

ऐसा ही मुबाहले के बाद हिब्बी फ़िल्लाह शेख़ रहमतुल्लाह साहिब ने धन द्वारा सहायता से बहुत सा बोझ हमारे दरवेशगृह का उठाया है। मैं विचार करता हूँ कि आदरणीय सेठ साहिब के बाद दो नम्बर पर शेख़ साहिब हैं जो प्रेम और इख़्लास (निष्ठा) से भरे हुए हैं। आदरणीय शेख़ साहिब इस मार्ग में दो हज़ार से अधिक रुपया दे चुके होंगे। और हर प्रकार से वह सेवा में उपस्थित हैं और अपनी शक्ति और विशालता से अधिक सेवा में लीन हैं।

ऐसी ही कुछ मेरे निष्कपट दोस्तों ने मुबाहले के बाद उस दरवेशगृह के अत्यधिक ख़र्चों को देखकर अपनी थोड़ी-थोड़ी तन्ख़्वाहों में से इसके लिए हिस्सा निर्धारित कर दिया है। अत: मेरे निष्कपट दोस्त मुंशी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर गुरदासपुर वेतन में से तीसरा हिस्सा अर्थात् बीस रुपए माहवार देते हैं। हमारी प्रिय जमाअत हैदराबाद की अर्थात् मौलवी सय्यद मर्दान अली साहिब और मौलवी सय्यद ज़हूर अली साहिब और मौलवी अब्दुल हमीद दस-दस रुपया वेतन में से देते हैं। और इसी प्रकार मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब भेरवी और मुंशी रोड़ा साहिब कपूरथला और उनके साथी तथा डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब चकराता और डाक्टर बूढ़े ख़ान साहिब क़सूर और सय्यद नासिर शाह साहिब सब ओवरसीयर और हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब भेरवी★ और ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब जम्मू❊ सब दिल और जान के साथ इस मार्ग में व्यस्त हैं। ऐसा ही हमारी निष्कपट प्रिय जमाअत सियालकोट यह समस्त प्रेमी अपनी सामर्थ्य से अधिक सेवा में व्यस्त हैं। इसी प्रकार मुहब्बी अन्वार हुसैन साहिब रईस शाहाबाद दिल-व-जान से सेवा में लगे हुए हैं।

ऐसा ही हमारे हार्दिक प्रेमी मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही जो इस सिलसिले

★ हकीम साहिब दिल और जान से इस मार्ग में ऐसे व्यस्त हैं कि मानो खोए हुए हैं।

❊ और ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब स्थायी सहायता के अतरिक्त अभी पांच सौ रुपया नक़द बतौर सहायता दे चुके हैं। इसी से

प्रत्येक ओर से इस्लाम में दाख़िल होना आरम्भ हो जाए। और ईसाइयत का झूठा माबूद फ़ना हो जाए। और दुनिया और रंग न पकड़ जाए तो मैं ख़ुदा तआला की

शेष हाशियाः- के समर्थन के लिए उत्तम-उत्तम पुस्तकें लिखने में तन्मय हैं। और साहिबज़ादा पीर जी सिराजुल हक़ साहिब ने तो हज़ारों मुरीदों से संबध विच्छेद करके इस जगह का दरवेशों वाला जीवन स्वीकार किया और मियां अब्दुल्लाह सहिब सिन्नौरी और मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमी और मौलवी मुबारक अली साहिब सियालकोटी और मौलवी ज़ियाउद्दीन साहिब क़ाज़ी कोटी और मुंशी जलालुद्दीन साहिब भलानी इत्यादि अहबाब अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेवा में लगे हुए हैं। मैं अपनी जमाअत के प्रेम और इख़्लास पर आश्चर्य करता हूँ कि इनमें बहुत कम जीविका वाले जैसे मियां जमालुद्दीन, ख़ैरुद्दीन और इमामुद्दीन कश्मीरी मेरे गांव से क़रीब रहने वाले हैं वे तीनों ग़रीब भाई भी जो शायद तीन आने या चार आने रोज़ाना मज़दूरी करते हैं तन्मयता से प्रतिमाह चन्दे में शामिल हैं। इनके दोस्त मियां अब्दुल अज़ीज़ पटवारी के इख़्लास से भी मुझे आश्चर्य है कि जीविका की कमी के बावजूद एक दिन सौ रुपया दे गया कि मैं चाहता हूँ कि ख़ुदा के मार्ग में ख़र्च हो जाएं। वह सौ रुपया शायद उस ग़रीब ने कई वर्षों में जमा किया होगा परन्तु ख़ुदा के लिए जोश ने ख़ुदा की प्रसन्नता का जोश दिलाया।★

अत: यह ख़ुदा की रहमत और ख़ुदा का फ़ज़्ल है जो उसने हमे उन कष्टों से बचाया जिन में हमारे विरोधी गिरफ़्तार हैं। मैं उस एक भागीदार रहित ख़ुदा की क़सम खाकर कह सकता हूँ कि यद्यपि मुबाहले से पूर्व भी वह हमेशा मेरा अभिभावक रहा। परन्तु मुबाहले के बाद कुछ ऐसी रूहानी और भौतिक बरकतें उतरीं कि पहले जीवन में मैं उनका उदाहरण नहीं देखता।

आठवीं बात जो मुबाहले के बाद मेरा सम्मान बढ़ाने के लिए प्रकटन में आई वह **सतबचन** पुस्तक की रचना है। इस पुस्तक की रचना के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे ऐसे संसाधन प्रदान किए जो तीन सौ वर्ष से किसी की कल्पना में भी नहीं आए थे। मेरी यह पुस्तक सोलह लाख सिक्ख सज्जनों के लिए एक ऐसी उत्तम दावत है जिससे मैं आशा करता हूँ कि उनके दिलों पर बहुत प्रभाव पड़ेगा। ...तो यह पुस्तक जो मुबाहले के बाद तैयार हुई।

★ हमारे हार्दिक दोस्त साहिबज़ादा इफ़्तख़ार अहमद पुत्र हाजी मुन्शी अहमद जान साहिब लुधियाना के प्रसिद्ध सूफ़ियों में से थे और सैकड़ों मुरीद रखते थे जिनको मुझ से प्रेम का बहुत संबंध था। कथित साहिबज़ादा सहिब अपने देश से जैसे हिजरत करके अपने समस्त परिवार और अपने भाई मियां मंज़ूर मुहम्मद के सहित मेरे पास हैं और प्रत्येक सेवा में उपस्थित हैं जैसे अपना जीवन इस मार्ग में समर्पित कर रहे हैं।

क़सम खाकर कहता हूँ कि मैं स्वयं को झूठा समझ लूंगा। और ख़ुदा जानता है कि मैं कदापि झूठा नहीं। यह सात वर्ष कुछ अधिक वर्ष नहीं हैं। और इस थोड़ी

शेष हाशिया :- यह वह रब्बानी उपहार है जो मुझको ही प्रदान किया गया और ख़ुदा ने इस तब्लीग़ का पुण्य मुझ को ही प्रदान किया।

नौवीं बात जो मुबाहले के बाद जो मेरे सम्मान में वृद्धि का कारण हुई यह है कि इस मुद्दत में आठ हज़ार लगभग लोगों ने मेरे हाथ में बैअत की और कुछ क़ादियान पहुंच कर और कुछ ने पत्र द्वारा तौब: का इक़रार किया। अत: मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि इतने लोगों की तौब: का माध्यम जो मुझको ठहराया गया यह उस स्वीकारिता का निशान है जो ख़ुदा की आज्ञा के बाद प्राप्त होता है। और मैं देखता हूँ कि मेरी बैअत करने वालों में दिन-प्रतिदिन योग्यता और संयम उन्नतिशील है। और मुबाहले के दिनों के बाद जैसे हमारी जमाअत में एक और संसार पैदा हो गया है। मैं बहुत से लोगों को देखता हूँ सज्दे में रोते और तहज्जुद में गिड़गिड़ाते हैं। अपवित्र हृदय के लोग इनको काफ़िर कहते हैं और वे इस्लाम का जिगर और दिल हैं। मैं देखता हूँ कि हमारे नवयुवक मित्र जैसा कि ख़्वाजा कमालुद्दीन बी.ए. बड़ी तन्मयता से धर्म के प्रसारण में प्रयास कर रहे हैं। उनके चेहरे पर सौभाग्य के निशान पाता हूँ। वह अपने दिल में धर्म के लिए सच्चा जोश रखते हैं। नमाज़ों में विनय प्रकट करते हैं। ऐसा ही हमारे नई आयु के दोस्त मिर्ज़ा याक़ूब बेग़ और मिर्ज़ा अय्यूब बेग़ जवान सदाचारी हैं। मैंने अनेकों बार उनको नमाज़ में रोते देखा है। निष्कर्ष यह सब इस मार्ग में न्योछावर हो रहे हैं। ऐसा ही हमारे निष्ठावान प्रेमी ख़ुदा बख़्श साहिब इस मार्ग में वह श्रद्धा रखते हैं कि जिसके वर्णन करने के लिए शब्द नहीं। और हमारे मुख़लिस दोस्त मुंशी ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम साहिब इंजीनियर बम्बई वह ईमानी जोश रखते हैं कि मैं गुमान नहीं कर सकता कि सम्पूर्ण बम्बई में उनका कोई उदाहरण भी है। हमारे मुख़लिस और प्रेम एवं निष्कपटता में मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब का ज़िक्र करना इस जगह आवश्यक नहीं क्योंकि वह समस्त संसार को पैरो तले रौंदकर मेरे पास उन फ़क़ीरों के रंग में आ बैठे हैं जैसा कि विशिष्ट सहाबा रज़ियल्लाह अन्हु ने तरीक़ा ग्रहण कर लिया था। अब हमारे विरोधियों को सोचना चाहिए कि इस बाग़ की उन्नति और हरियाली अब्दुल हक़ के मुबाहले के बाद कितनी हुई है। यह ख़ुदा की क़ुदरत ने किया है जिसकी आंखे हों वह देखे। हमारी अमृतसर की मुख़लिस जमाअत, हमारी सियालकोट की मुख़लिस जमाअत, हमारी कपूरथला की मुख़लिस जमाअत, हमारी हिन्दुस्तान के शहरों की मुख़लिस जमाअतें अपने अन्दर वह निष्कपटता का प्रकाश और प्रेम रखती हैं कि यदि एक प्रतिभाशाली आदमी एक मज्में में उनके मुंह देखे तो निस्सन्देह समझ लेगा कि यह ख़ुदा का एक चमत्कार है कि ऐसे इख़्लास उनके दिल में भर दिए। उनके चेहरों पर उनके प्रेम के प्रकाश चमक रहे हैं। वह

मुद्दत में इतना इन्क़िलाब हो जाना मनुष्य के अधिकार में कदापि नहीं। तो जब कि मैं सच्चे हृदय से और ख़ुदा तआला की क़सम के साथ यह इक़रार करता हूँ

शेष हाशिया :- एक पहली जमाअत है जिसको ख़ुदा श्रद्धा का नमूना दिखाने के लिए तैयार कर रहा है।

दसवीं बात जो अब्दुल हक़ के मुबाहले के बाद मेरे सम्मान का कारण हुई जल्सा धर्म महोत्सव लाहौर है। इस जल्से के बारे में मुझे अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। जिस रंग और नूरानियत की स्वीकारिता मेरे निबंध के पढ़ने में पैदा हुई और जिस प्रकार हार्दिक जोश से लोगों ने मुझे और मेरे निबन्ध को श्रेष्ठता की दृष्टि से देखा कुछ आवश्यकता नहीं कि मैं उसका विवरण लिखूं। इस बात पर बहुत सी गवाहियां सुन चुके हो कि इस निबन्ध का धार्मिक महोत्सव पर ऐसा विलक्षण प्रभाव हुआ था कि जैसे फ़रिश्ते आकाश से प्रकाश के थाल लेकर उपस्थित हो गए हैं★ प्रत्येक हृदय उसकी ओर ऐसा खींचा गया था कि

★हाशिये का हाशिया :- इस जल्से में अधिकांश लोग फूट-फूट कर रो रहे थे। यह जल्सा इस निबन्ध के पढ़ने से जैसे सूफ़िया किराम की सभा थी। समस्त ज़ुबानें सक्ते की अवस्था में थीं और आंसू जारी थे और आनन्द एवं आत्म विस्मृति से दिल नाच रहे थे। समस्त भाषण के बाद सब लोगों ने मुसलमानों को मुबारकबाद दी। शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी भी उस दिन दिल पर जब्र करके क़ाइल हो गए कि यह समस्त प्रभाव ख़ुदा तआला की ओर से था। और यह निबन्ध इस्लाम की विजय का कारण हुआ। सिविल मिलिट्री गज़ट लाहौर ने हमारे निबन्ध के बारे में निम्नलिखित वाक्य लिखे हैं और हमारे निबन्ध के अतिरिक्त अन्य किसी का वर्णन नहीं किया। उनके शब्दों का अनुवाद यह है:- इस जल्से में श्रोताओं की हार्दिक एवं विशेष रुचि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के लेक्चर के साथ थी जो इस्लाम की सहायता और सुरक्षा के सर्वोत्कृष्ट मास्टर हैं। इस लेक्चर के सुनने के लिए दूर तथा निकट से लोगों का एक भारी समूह हो रहा था और चूंकि मिर्ज़ा साहिब स्वयं नहीं आ सकते थे इसलिए यह लेक्चर उनके एक योग्य शागिर्द मुन्शी अब्दुल करीम फ़सीह सियालकोटी ने पढ़ कर सुनाया। 27 तारीख को यह लेक्चर साढ़े तीन घंटे तक होता रहा और जनसाधारण ने नितान्त प्रसन्नता और ध्यानपूर्वक इसको सुना। परन्तु अभी केवल एक प्रश्न समाप्त हुआ। मौलवी अब्दुल करीम ने वादा किया कि यदि समय मिला तो शेष भी सुना दूंगा। इसलिए एक्ज़ेकेटिव कमेटी और प्रेसीडेण्ट ने प्रस्ताव कर लिया है कि 29 तारीख का दिन बढ़ा दिया जाए। अत: हमारे निबन्ध के लिए प्रसन्नतापूर्वक एक दिन और बढ़ाया गया और श्रोतागण ने शेष निबन्ध भी उसी चाहत और शौक़ से सुना। अख़बार अब्ज़र्वर के शब्द हमारे निबन्ध के बारे में सिविल के शब्दों जैसे ही हैं।

और तुम सब को अल्लाह के नाम पर सुलह की ओर बुलाता हूँ। तो अब तुम ख़ुदा से डरो। यदि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं हूँ तो मैं तबाह हो जाऊंगा

शेष हाशिया :- जैसे एक ग़ैब का हाथ उसको शनैः शनैः आत्म विस्मृति की अवस्था की ओर ले जा रहा है। सब लोग सहसा बोल उठे थे कि यदि यह निबन्ध न होता तो आज मुहम्मद हुसैन इत्यादि के कारण इस्लाम को लज्जा उठानी पड़ती। प्रत्येक पुकारता था कि आज इस्लाम की विजय हुई। परन्तु सोचो कि क्या यह विजय एक दज्जाल के निबन्ध से हुई। मैं पुनः कहता हूँ कि क्या एक काफ़िर के वर्ण में यह मधुरता और यह बरकत तथा यह तासीर (प्रभाव) डाल दी गई। वे जो मोमिन कहलाते थे और आठ हज़ार मुसलमानों को काफ़िर कहते थे, जैसे मुहम्मद हुसैन बटालवी, ख़ुदा ने इस जल्से में उनको क्यों अपमानित किया। क्या यह वही इल्हाम नहीं कि मैं तेरा अपमानित करने वालों को अपमानित करूंगा। इस महोत्सव में ऐसे मनुष्य को क्यों सम्मान दिया गया जो मौलवियों की नज़र में एक काफ़िर मुर्तद है। क्या कोई मौलवी इसका उत्तर दे सकता है।

फिर इस सम्मान के अतिरिक्त, जो निबन्ध की ख़ूबी के कारण प्रदान हुआ, उसी दिन वह भविष्यवाणी भी पूरी हुई जो इस निबन्ध के बारे में पहले से प्रकाशित की गई थी। अर्थात् यह कि

यही निबन्ध सब निबन्धों पर विजयी होगा

और वह विज्ञापन समस्त विरोधियों की ओर जल्से से पूर्व भेजे गए थे। शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी और मौलवी अहमदुल्लाह तथा सनाउल्लाह इत्यादि की ओर रवाना हो चुके थे। तो उस दिन वह इल्हाम भी पूरा हुआ और लाहौर शहर में धूम मच गई कि न केवल निबन्ध इस शान का निकला जिससे इस्लाम की विजय हुई अपितु एक इल्हामी भविष्यवाणी भी पूरी हो गई। उसी दिन हमारी जमाअत के बहादुर सिपाही और इस्लाम के आदरणीय सदस्य हुब्बी फ़िल्लाह मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने निबन्ध के पढ़ने में वह सुबोधता एवं सरसता दिखाई कि जैसे प्रत्येक शब्द में उनको रूहुल क़ुदुस मदद दे रहा था

अतः यह सम्मान और मान्यताएं हमको मुबाहले के बाद मिलीं। अब कोई मौलवी हमें समझाए कि अब्दुल हक़ ने मुबाहले के बाद दुनिया में कौन-सा सम्मान पाया, उसकी कौन-सी स्वीकारिता लोगों में फैली, कौन से आर्थिक विजयों के दरवाज़े उस पर खुले। कौन-सी ज्ञान की श्रेष्ठता की पगड़ी उसको पहनाई गई। केवल व्यर्थ के तौर पर एक बेटा होने का दावा किया था ताकि यही मुबाहले का प्रभाव समझा जाए। परन्तु उसके दुर्भाग्य से वह दावा भी झूठा निकला और अब तक उस औरत के पेट में से एक चूहा भी पैदा न हुआ। परन्तु

अन्यथा ख़ुदा के मामूर को कोई तबाह नहीं कर सकता।

यह स्मरण रहे कि आप लोगों से मामूली बहसें बहुत हो चुकी हैं और

शेष हाशिया :- उसके मुक़ाबले पर ख़ुदा तआला ने मेरे इल्हाम को पूरा करके मुझे लड़का प्रदान किया।★

यह दस बरकतें मुबाहले की हैं जो मैंने लिखी हैं। फिर कैसे दुष्ट वह लोग हैं जो इस मुबाहले को निष्प्रभावी समझते हैं।

فعلیھم ان یتدبّروا ویفکّروا فی ھٰذہ العشرۃ الکاملۃ

अन्त में हम पुन: प्रत्येक विरोधी, काफ़िर ठहराने वाले और मुबाहले वाले पर प्रकट करते हैं कि वे मुबाहले के मैदान में आएं और निश्चित समझें कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने अब्दुल हक़ के मुबाहले के बाद हम पर ये दस प्रकार का ईनाम और सम्मान किया है और उसको अपमानित किया, तथा उसका बेटे का दावा भी झूठा निकला और उसे कोई सम्मान प्राप्त नहीं हुआ और ख़ुदा तआला ने उसके समस्त दावों को रद्द किया। इससे बढ़कर उस मुबाहले में क्या होगा। मैंने उस दिन बद्दुआ नहीं की क्योंकि वह मूर्ख और मंदबुद्धि था। और उसकी जहालत उसको दयनीय ठहराती थी। परन्तु अब मैं बद्दुआ करूंगा। इसलिए चाहिए कि मुबाहले का प्रत्येक निवेदक अपनी ओर से छपा हुआ विज्ञापन प्रसारित करे। और यह आवश्यक होगा कि मुबाहल: करने वाला केवल एक न हो अपितु कम से कम दस हों। और चूंकि मुबाहले के लिए प्रत्येक व्यक्ति को बुलाया गया है चाहे पंजाब का हो या हिन्दुस्तान का या अरब देश का अथा फ़ारस देश का। इसलिए यह दौड़-धूप विरोधियों पर वैध नहीं रखी गई

★अब्दुल हक़ ने 3 शाबान 1314 हिज्री को उस लानत की सियाही को धोने के लिए जो उसके मुंह पर जम गई है। विज्ञापन दिया। उस विज्ञापन का उत्तर इस परिशिष्ट में पूर्ण रूप से आ चुका है। केवल दो बातें उल्लेखनीय हैं। प्रथम यह कि वह अरबी में मुक़ाबला करने के लिए स्वयं को तैयार प्रकट करता है। बहुत ख़ूब। यही निशान देख ले। मैं बार-बार लिख चुका हूँ कि मैंने अपने मसीह मौऊद होने का यह निशान ठहराया है। अत: मैं पराजित से केवल यही इक़रार चाहता हूँ न यह कि वह मेरी अरबी जानने का इक़रार करे। इसलिए उसको चाहिए कि दस मौलवियों की गवाही से हलफ़ के तौर पर यह विज्ञापन प्रकाशित करे कि यदि मैं सरस-सुबोध अरबी में उस पर विजयी हो गया तो वह अविलम्ब उसी मज्लिस में मेरे मसीह मौऊद होने का इक़रार करके मुझ से बैअत कर लेगा। अब यदि निबन्ध का विज्ञापन न दे तो लानतुल्लाहे अलैहि फ़िद्दुनिया वलआख़िरत। और मुबाहले के लिए यद्यपि दस आदमी की शर्त है किन्तु यदि केवल अब्दुल जब्बार और अब्दुल वाहिद को साथ मिला ले तब भी मुझे स्वीकार है।

ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु क़ुर्आन तथा हदीस से पूर्ण सबूत को पहुंच गई। इस ओर से पुस्तकें लिख कर लाखों लोगों में फैले गईं। दूसरी ओर ने भी धोखे और झूठ से काम लिया। पवित्र पुस्तकों के नेक रूहों पर बड़े-बड़े प्रभाव पड़े। और हज़ारों नेक लोग इस जमाअत में दाख़िल हो गए और भाषण एवं लिखित बहसों के परिणाम अच्छी तरह खुल गए। अब फिर उसी बहस को छोड़ना या

शेष हाशिया :- कि वे लम्बे सफ़र करके पहुँचे अपितु (इस) कलाम के अनुसार

وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ

(अलहज्ज आयत : 79)

يُرِيْدُ اللّٰهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ

(अलबक़रह आयत : 186)

यह प्रस्ताव तय हुआ है कि प्रत्येक व्यक्ति विज्ञापनों द्वारा मुबाहलः करे। परन्तु यह शर्त आवश्यक है कि जो इल्हाम मैंने पुस्तक अंजाम-ए-आथम में पृष्ठ 51 से 62 पृष्ठ तक लिखे हैं वह समस्त विज्ञापन अपने मुबाहले के विज्ञापन में लिखें। और केवल हवाला न दें अपितु समस्त इल्हाम कथित पृष्ठों के विज्ञापन में दर्ज करें। तत्पश्चात् नीचे की इबारत की दुआ उस विज्ञापन में लिखें। और वह यह है:-

दुआ

हे सर्वज्ञ और हर बात की ख़बर रखने वाले ख़ुदा मैं जो अमुक बिन अमुक निवासी कस्बा अमुक हूँ इस व्यक्ति को जिसका नाम ग़ुलाम अहमद है, मसीह मौऊद होने के दावे में झूठा, मुफ़्तरी और काफ़िर जानता हूँ। और यह इसके समस्त इल्हाम जो मैंने अंजाम-ए-आथम के पृष्ठ 51 से पृष्ठ 62 तक विज्ञापन में लिखे हैं यह सब मेरे नज़दीक इफ़्तिरा या शैतानी भर्म हैं तेरी ओर से नहीं हैं। तो हे सामर्थ्यवान ख़ुदा! यदि तू जानता है कि मैं अपने इस आग्रह में सच्चा हूँ और उसका यह दावा तेरी ओर से नहीं और न इल्हाम तेरी ओर से है अपितु वह वास्तव में काफ़िर है। तू इस दयनीय उम्मत पर उपकार कर कि इस झूठे को एक वर्ष के अन्दर मार दे ताकि लोग इसके फ़ित्ने से अमन में आ जाएं। और यदि यह झूठे नहीं और तेरी ओर से है और यह समस्त इल्हाम तेरे ही मुंह की पवित्र बाते हैं तो मुझ पर जो मैं इसको काफ़िर और कज़्ज़ाब समझता हूँ आज के दिन से एक वर्ष के भीतर दु:ख और अपमान से भरा हुआ अज़ाब उतार। आमीन।

निर्णय पा चुकी बातों से इन्कार करना केवल शरारत और बेईमानी है। पुस्तकें मौजूद हैं। हां ठीक मुबाहले के समय फिर एक घण्टे तक तब्लीग़ कर सकता हूँ। अत: फ़ैसले के यही मार्ग हैं जो मैंने प्रस्तुत किए हैं। अब इसके बाद जो व्यक्ति बहसों का अकारण निवेदन करेगा मैं समझूंगा उसको सच्चाई की अभिलाषा नहीं अपितु सच्चाई को टालना चाहता है।

शेष हाशिया :-

यह विज्ञापन जब किसी मुबाहला करने वाले की ओर से बिना किसी परिवर्तन के आएगा तो एक व्यक्ति को कहा जाएगा कि इस विज्ञापन को मेरी जमाअत में पढ़े तब उसके समाप्त होने पर समस्त जमाअत आमीन कहेगी। और ऐसा ही समझा जाएगा जैसे आमने-सामने मुबाहला हुआ। ऐसा ही मेरी ओर से विज्ञापन आने के बाद उस निबन्ध का लेख छपेगा कि मैं वे समस्त इल्हाम, जो अंजाम-ए-आथम के पृष्ठ 51 से पृष्ठ 62 तक लिखे गए हैं, अपने उस लेख में दर्ज करूंगा। और यह दुआ उसके बाद लिखूंगा कि हे सामर्थ्यवान और सर्वज्ञ ख़ुदा! तू जानता है कि मैंने मसीह मौऊद होने का दावा अपनी ओर से बना लिया है और यह तेरे इल्हाम नहीं जो इस विज्ञापन में लिखे गए हैं। अपितु मेरा झूठ है या शैतानी भ्रम है तो आज की तिथि से एक वर्ष गुज़रने से पहले मुझे मृत्यु दे या किसी ऐसे अज़ाब में लिप्त कर जो मृत्यु से अधिक बुरा हो। परन्तु यदि तू जानता है कि मेरा दावा तेरे इल्हाम से है और यह समस्त इल्हाम हैं जो इस विज्ञापन में लिखे गए हैं तो इस विरोधी को जो अपने मुबाहले के विज्ञापन द्वारा मुझे झुठलाता और मुझे काज़िब जानता है एक वर्ष की मुद्दत में अत्यन्त दु:ख की मार में ग्रस्त कर। आमीन। और जब यह विज्ञापन इस मुबाहला करने वाले के पास पहुंचे तो चाहिए कि वह एक जमाअत में पढ़ा जाए और निबन्ध के सामाप्त होने के पश्चात् सम्पूर्ण जमाअत आमीन कहे।

यह मुबाहले का प्रस्ताव उन लोगों के लिए है जो पचास कोस से अधिक दूरी पर रहते हैं। किन्तु यदि पचास कोस के अन्दर हों जैसे शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी और सनाउल्लाह अमृतसरी, तथा अहमदुल्लाह अमृतसरी, अब्दुल हक़ ग़ज़नवी और मियां अब्दुल जब्बार ग़ज़नवी तो इसके लिए यह तरीक़ा उत्तम है कि आमने-सामने मुबाहला कर लें। आधी दूरी मैं तय करूं और आधी वह तय करें। और एक मध्य स्थान में मुबाहला हो जाए। यह हमारा अन्तिम समझाने का प्रयास पूर्ण करना है। अब भी यदि कोई मनुष्य अन्याय का त्याग नहीं करेगा तो उस पर ख़ुदा तआला की हुज्जत पूर्ण हो गयी।

सलामती हो उस पर जो सन्मार्ग का अनुसरण करे।

यह भी स्मरण रहे कि मुबाहले में असल मस्नून तरीक़ा यह है कि जो लोग ऐसे मुद्दई के साथ मुबाहला करें जो ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा रखता हो और उसे झूठा और काफ़िर ठहराएं। वह एक जमाअत मुबाहल: करने वालों की हो। केवल एक या दो आदमी न हों क्योंकि अल्लाह तआला ने पवित्र आयत

فَقُلْ تَعَالَوْا (आले इमरान : 62)

में تَعَالَوْا (तआलौ अर्थात तुम सब आओ) को शब्द बहुवचन में वर्णन किया है। तो उसने इस बहुवचन से अपने नबी के मुक़ाबले पर, झुठलाने वाली एक जमाअत को मुबाहले के लिए बुलाया है न कि एक व्यक्ति को। अपितु من حاجّك के शब्द से मुबाहिसा वाले को एक व्यक्ति ठहरा कर फिर मांग जमाअत की की है और यह फ़रमाया है कि यदि कोई मुबाहिसा से न रुके और प्रस्तुत किए हुए तर्कों से तसल्ली न पकड़े तो उसको कह दो कि एक जमाअत बनकर मुबाहले के लिए आएं। अत: इसी आधार पर हमने जमाअत की शर्त लगा दी है। जिसमें यह स्पष्ट लाभ है कि जो बात विलक्षण बतौर अज़ाब झुठलाने वालों पर उतरे वह संदिग्ध नहीं रहेगा। परन्तु केवल एक व्यक्ति में संदिग्ध रहने की संभावना है।

इस जगह इस बात का भी वर्णन करना आवश्यक है कि समस्त विरोधियों को यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि यदि इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद कोई विरोधी मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाए और उसके विज्ञापन भी छप जाएं तो प्रत्येक के मुबाहले के इच्छुक पर आवश्यक होगा कि उसी के साथ शामिल होकर मुबाहला कर ले। और यदि कोई ऐसा न करे और फिर किसी दूसरे समय में मुबाहले का निवेदन भेजे तो ऐसा निवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। और ऐसा व्यक्ति किसी प्रकार से ध्यान देने योग्य नहीं समझा जाएगा। चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति हमारे इस विज्ञापन को स्मरण रखे और उसके अनुसार कार्य करे।

अन्तत: हम इस जगह, मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब पीर नवाब बहावलपुर जो एक नेक और संयमी मर्द पंजाब के सूफ़ियों में से हैं, का पत्र नक़ल करके इस उद्देश्य से दर्ज करते हैं ताकि दूसरे सूफ़ी लोग जिन्हें दावत की गई है वह

भी कम से कम उनके नमूने पर चलें। और यदि अधिक सामर्थ्य न हो तो यद्यपि उनके विचार से कम न रहें। मैं सच-सच कहता हूँ कि जो व्यक्ति इस विनीत की इतनी भी पुष्टि करेगा जैसा कि मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब ने अपने पत्र के द्वारा, की उसका भी ख़ुदा उन लोगों में सम्मिलित करेगा जिन्होंने सच्चाई का खण्डन करना नहीं चाहा। दिल का एक कण संयम भी इन्सान को ख़ुदा तआला के प्रकोप से बचा लेता है। मैं नहीं चाहता कि एक बुत की तरह मेरी पूजा की जाए मैं तो केवल उस ख़ुदा का प्रताप प्रकट करना चाहता हूँ जिसकी ओर से मैं मामूर हूँ। जो व्यक्ति मुझे अपमान से देखता है वह उस ख़ुदा को अपमान से देखता है जिसने मुझे मामूर किया है। और जो मुझे स्वीकार करता है वह उस ख़ुदा को स्वीकार करता है जिसने मुझे भेजा है। इन्सान में इससे अधिक कोई खूबी नहीं कि संयम के मार्ग को ग्रहण करके ख़ुदा के मामूर से लड़ाई करने से बचे और उस व्यक्ति को जल्दी से न झुठलाए जो कहता है कि मैं ख़ुदा का मामूर हूँ। और केवल धर्म के नवीनीकरण के लिए सदी के सिर पर भेजा गया हूँ। एक संयमी इस बात को समझ सकता है कि इस चौदहवीं सदी के सिर पर जिसमें इस्लाम पर हज़ारों आक्रमण हुए एक ऐसे मुजद्दिद की आवश्यकता थी कि इस्लाम की वास्तविकता साबित करे। हाँ इस मुजद्दिद का नाम मसीह इब्ने मरयम इसलिए रखा गया कि वह सलीबी विचारधारा को तोड़ने के लिए आया है। और ख़ुदा इस समय चाहता है कि जैसा कि मसीह को पहले युग में यहूदियों की सलीब से मुक्ति दी थी अब ईसाइयों की सलीब से भी उसको मुक्ति दे। चूंकि ईसाइयों ने इन्सान को ख़ुदा बनाने के लिए बहुत कुछ मनगढ़ंत बातें वर्णन की हैं। इसलिए ख़ुदा के स्वाभिमान ने चाहा कि मसीह के नाम पर ही एक मनुष्य को मामूर करके उस झूठ को मिटा दे। यह ख़ुदा का काम है और इन लोगों की नज़र में अद्‌भुत।

पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट कहता है कि मसीह मृत्यु पाकर आकाश पर उठाया गया है। इसलिए उसका नुज़ूल बुरूजी (लाक्षणिक) है न कि वास्तविक, और आयत

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (अलमाइदह आयत : 118)

में व्यापक तौर पर प्रकट किया गया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु की घटना घटित हो गई। क्योंकि इस आयत का यह मतलब है कि ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु के पश्चात् बिगड़ेंगे न कि उनके जीवन में। अत: यदि मान लें कि अब तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु नहीं हुई तो मानना पड़ेगा कि ईसाई भी अब तक नहीं बिगड़े और यह स्पष्ट रूप से असत्य है। अपितु आयत तो बताती है कि ईसाई केवल मसीह के जीवन तक सच पर स्थापित रहे। इससे मालूम होता है कि हवारियों के युग में ही ख़राबी आरम्भ हो गई थी। यदि हवारियों का युग भी ऐसा होता कि उस युग में भी ईसाई सच पर स्थापित होते तो ख़ुदा तआला इस आयत में केवल मसीह के जीवन की शर्त न लगाता। अपितु हवारियों के जीवन को भी शर्त लगा देता। अत: इस स्थान से ईसाईयत के उपद्रव के युग का एक अत्यंत गूढ़ रहस्य मालूम होता है और वह यह है कि वास्तव में हवारियों के युग में ही ईसाई धर्म में शिर्क का बीजारोपण हो गया था। एक दुष्ट यहूदी पोलूस नामक, जो यूनानी भाषा से भी कुछ हिस्सा रखता था जिसका वर्णन मसनवी रूमी में भी है, हवारियों में आ मिला और प्रकट किया कि मैंने क़श्फ़ की अवस्था में ईसा अलैहिस्सलाम को देखा है। इस व्यक्ति ने ईसाई धर्म में बहुत ख़राबी डाली। अन्त में परिणाम यह हुआ कि ईसाइयों का एक फ़िर्क़ा तो एकेश्वरवाद पर स्थापित रहा और एक बुरा फ़िर्क़ा उसके बहकाने से मुर्दा परस्त हो गया। जिसकी सन्तानें हमारे देश में भी पैदा हो गई हैं। तीसरी सदी ईस्वी में बहुदेववादी गिरोह और एकेश्वरवाद गिरोह के मध्य बड़ा मुबाहसा हुआ। इस मुबाहसे का प्रवर्तक क़ैसर रूम था। बहुत से अनुसंधान और सभ्यतापूर्वक बादशाह के समक्ष मुबाहसा तय हुआ। और अंजाम यह हुआ कि एकेश्वरवादी गिरोह विजयी हुआ। उसी दिन क़ैसर रूम ने जो ईसाई था तौहीद (एकेश्वरवाद) के धर्म को ग्रहण कर लिया। और निरन्तर छठी शताब्दी तक प्रत्येक क़ैसर एकेश्वरवादी ईसाई होता रहा। अत: जैसा कि आयत का अर्थ है कि ईसाइयों में फ़साद और बिगाड़ हज़रत ईसा की मृत्यु के बाद ही आंरभ हो गया था।

और सहीह बुख़ारी में साफ़ शब्दों में लिखा गया है कि आने वाला मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा। तो यह बात सरासर संयम के विरुद्ध है कि अल्लाह और रसूल के वर्णन से उदण्ड रहें। देखो यही उलेमा कैसे शौक़ से चौदहवीं सदी के प्रतीक्षक थे और समस्त हृदय बोल उठे थे कि इसी सदी के सिर पर महदी और मसीह पैदा होगा। बहुत से नेक और वलियों के कश्फ़ इस बात पर निश्चित कर चुके थे कि महदी और मसीह मौऊद का समय चौदहवीं सदी है। अब उनके दिलों को क्या हो गया –

وَ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ

(अलबक़रह : 2/90)

परन्तु अवश्य था कि वे मुझे काफ़िर कहते और मेरा नाम दज्जाल रखते। क्योंकि सहीह हदीसों में पहले से यही फ़रमाया गया था कि इस महदी को काफ़िर ठहराया जाएगा। और उस समय के दुष्ट मौलवी उसको काफ़िर कहेंगे और ऐसा जोश दिखलाएंगे कि यदि संभव होता तो उसको क़त्ल कर डालते। परन्तु ख़ुदा की शान है कि उन हज़ारों में से यह मियाँ ग़ुलाम फ़रीद साहिब चाचड़ा वालों ने संयम का प्रकाश दिखलाया

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

(अलहदीद आयत : 22)

ख़ुदा उनको प्रतिफल प्रदान करे और अंजाम अच्छा करे। आमीन। अब जब तक ये लेख दुनिया में रहेंगे, आदरणीय मियां साहिब वर्णने ख़ैर भी उसके साथ दुनिया में किया जाएगा। यह युग गुज़र जाएगा और दूसरा युग आएगा। और ख़ुदा उस युग के लोगों को आँखे देगा और वह उन लोगों के लिए दुआएं ख़ैर करेंगे, जिन्होंने मुझे पाकर मेरा साथ दिया है। सच-सच कहता हूँ कि यह समय गुज़र जाएगा तथा प्रत्येक लापरवाह और इन्कारी एवं जुठलाने वाला हसरतें साथ ले जाएगा जिसका निवारण फिर उसके हाथ में नहीं होगा। अब मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब का पत्र वादे के अनुसार आगे लिखा जाता है और वह यह है:-

ख़ुदा के द्वार के फ़क़ीर ग़ुलाम फ़रीद सज्जादः नशीन की ओर से जनाब मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की सेवा में पत्र

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اَلْحَمْدُ للہ رَبِّ الارباب۔ وَالصّلوۃ علیٰ رسُولہ الشفیع بیوم الحساب۔و علیٰ آلہ والاصحاب السّلام علیکم و علیٰ مَنْ اجتھد واصاب۔امّابعد قَدْارسلت الیّ الکتاب۔ و بہ دعوت الیٰ المباھلۃ وطالبت بالجواب۔و انی وان کنت عدیم الفرصۃ ولکن رایت جزءہ من حسن الخطاب۔ وسوق العتاب۔اعلم یا اعزّالاحباب۔ انی مِنْ بدو حالک واقف علیٰ مقام تعظیمک لنیل الثواب۔وما جرت علی لسانی کلمۃ فی حقّک الا بالتبجیل ورعایۃ الآداب۔ ولآن اطّلع لک بِانِّی مُعترف بصلاح حالک بلا ارتیاب۔وموقن بانّک مِنْ عباد اللہ الصالحین و فی سعیک المشکور مثاب۔وقَدْ اوتیت الفضل من الملک الوھاب۔ و لک ان تسئل من اللہ تعالیٰ خیر عاقبتی وادعو لکم حسن مآب۔ و لو لا خوف الاطناب۔ لا زددت فی الخطاب۔ وَالسّلام علیٰ من سلک سبیل الصواب۔ فقط

(۲۷رجب ۱۳۱۴ھ من مقام چاچڑان)

(मोहर)

अनुवाद इसका यह है - समस्त प्रशंसाएं उस ख़ुदा के लिए हैं जो समस्त प्रतिपालकों का प्रतिपालक है। और दुरूद उस रसूल मक़्बूल पर जो हिसाब के दिन का सिफ़ारिश करने वाला है। तथा उसकी आल और सहाबा पर और तुम पर सलाम और प्रत्येक पर जो सद्‌मार्ग में कोशिश करने वाला हो। इसके बाद स्पष्ट हो कि मुझे आप की वह पुस्तक पहुंची जिसमें मुबाहले के लिए उत्तर मांगा गया है। और यद्यपि मेरे पास समय का अभाव था तथापि मैंने इस पुस्तक के एक भाग को जो अच्छे प्रकार से सम्बोधित करने और दण्ड से सचेत करने पर आधारित थी, पढ़ी है। तो हे प्रत्येक मित्र से अधिक प्रिय तुझे मालूम हो कि

मैं प्रारम्भ से तेरे लिए आदर करने के स्थान पर खड़ा हूँ ताकि मुझे पुण्य प्राप्त हो। और कभी मेरी ज़बान पर आदर, सत्कार और शिष्टाचार को दृष्टिगत रखने के अतिरिक्त तेरे बारे में कोई वाक्य जारी नहीं हुआ। और अब मैं सूचित करता हूँ कि मैं नि:स्सन्देह तेरे नेक हाल का इक़रार करता हूँ और मैं विश्वास रखता हूँ कि तू ख़ुदा के नेक बन्दों में से और तेरी कोशिश ख़ुदा के नज़दीक धन्यवाद योग्य है जिसका प्रतिफल मिलेगा। और क्षमा करने वाले बादशाह ख़ुदा का तुझ पर फ़ज़्ल (कृपा) है। मेरे लिए अच्छे अंजाम की दुआ कर। और मैं आप के लिए अच्छे अंजाम की दुआ करता हूँ। यदि मुझे (पत्र के) लम्बे होने की आशंका न होती तो मैं अधिक लिखता।

والسّلام علٰی من سلک سبیل الصواب

स्थान- चाचड़ां

एक और भविष्यवाणी का पूरा होना

चूंकि सहीह हदीस में आ चुका है कि महदी मौऊद के पास छपी हुई किताब होगी जिसमें उसके तीन सौ तेरह अस्हाब का नाम दर्ज होगा। इसलिए यह वर्णन करना आवश्यक है कि वह भविष्यवाणी आज पूरी हो गई। यह तो स्पष्ट है कि इससे पूर्व इस दयनीय उम्मत में कोई ऐसा व्यक्ति पैदा नहीं हुआ कि जो महदी होने का दावेदार होता। और उसके समय में छापाखाना भी होता और उसके पास एक किताब भी होती जिसमें तीन सौ तेरह नाम लिखे हुए होते। और स्पष्ट है कि यदि यह काम इन्सान के अधिकार में होता तो इससे पहले कई झूठे स्वयं को उसका चरितार्थ बना सकते। परन्तु मूल बात यह है कि ख़ुदा की भविष्यवाणियों में ऐसी विलक्षण शर्तें होती हैं कि कोई झूठा उन से लाभ नहीं उठा सकता और उसको वह सामान और साधन प्रदान नहीं किए जाते जो सच्चे को प्रदान किए जाते हैं।

शेख़ अली हम्ज़ा बिन अली मलिक अत्तूसी अपनी पुस्तक, जवाहिरुल

अस्त्रार, में जो 840 ई. में लिखी गई थी महदी मौऊद के बारे में निम्नलिखित इबारत लिखते है:-

در اربعین آمده است که خروج مہدی از قریہ کدعہ باشد۔ **قال النبی صلی اللہ علیہ وسلم یخرج المھدی من قریۃ یقال لھا کدعہ و یصدقہ اللہ تعالیٰ و یجمع اصحابہ من اقصی البلاد علی عدّۃ اھل بدر بثلاث مائۃ و ثلاثۃ عشر رجلا و معہ صحیفۃ مختومۃ (ای مطبوعۃ) فیھا عدد اصحابہ باسمائھم و بلادھم و خلالھم**

अर्थात् महदी उस गांव से निकलेगा जिसका नाम कदअह है (यह नाम वास्तव में क़ादियान के नाम का अरबीकरण किया हुआ है)। और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उस महदी का सत्यापन करेगा। और दूर-दूर से उसके दोस्त जमा करेगा जिनकी संख्या अहले बद्र की संख्या से बराबर होगी। अर्थात् तीन सौ तेरह होंगे। और उनके नाम, निवास स्थान और आचरण सहित छपी हुई किताब में दर्ज होंगे।

अब स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति को इससे पूर्व यह संयोग नहीं हुआ कि वह महदी मौऊद होने का दावा करे और उसके पास छपी हुई किताब हो जिसमें उसके दोस्तों के नाम हों। परन्तु मैं इससे पूर्व भी आईना कमालात इस्लाम में तीन सौ तेरह नाम दर्ज कर चुका हूँ। और अब दोबारा हुज्जत पूर्ण करने के लिए तीन सौ☆ नाम नीचे दर्ज करता हूँ ताकि प्रत्येक न्यायवान समझ ले कि यह भविष्यवाणी भी मेरे ही हक़ में पूरी हुई। और हदीस के आशय के अनुसार यह वर्णन कर देना पहले से आवश्यक है कि यह समस्त अस्हाब आचरण, सच्चाई और शुद्धता रखते हैं और श्रेणियों के अनुसार जिसको ख़ुदा तआला उत्तम जानता है कुछ एक दूसरे से प्रेम और सांसारिक मोह माया से त्याग और धर्मपरायणता में अग्रसर हो गए हैं। अल्लाह तआला सब को अपनी प्रसन्नता के मार्गों में सुदृढ़ रखे और वे ये हैं:-

☆ यह लिपिक की गलती है। आईना कमालाते इस्लाम में 327 नाम लिखे हैं। देखिए आईना कमालाते इस्लाम रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 5, पृष्ठ 616 से 630 (उर्दू संस्करण) प्रकाशक।

1. मुन्शी जलालुद्दीन साहिब पेन्शनर भूतपूर्व मीर मुन्शी रजिमेन्टन नं.-12 मौजा बलानी खारियां, ज़िला गुजरात
2. मौलवी हाफ़िज़ फ़ज़्ल दीन साहिब बलानी खारियां, ज़िला गुजरात
3. मियां मुहम्मद दीन पटवारी बलानी खारियां साहिब, ज़िला गुजरात
4. क़ाज़ी यूसुफ़ अली नोमानी परिवार साहित तशाम, हिसार
5. मिर्ज़ा अमीन बेग साहिब परिवार सहित, बहालोजी, जयपुर
6. मौलवी क़ुतुबुद्दीन साहिब, बद्दोमली, सियालकोट
7. मुन्शी रोड़ा साहिब, कपूरथला
8. मियां मुहम्मद ख़ाँ साहिब, कपूरथला
9. मुन्शी ज़फ़र अहमद साहिब, कपूरथला
10. मुन्शी अब्दुर्रहमान साहिब, कपूरथला
11. मुन्शी फ़य्याज़ अली साहिब, कपूरथला
12. मौलवी अब्दुल करीम साहिब, सियालकोट
13. सय्यद हामिद शाह साहिब, सियालकोट
14. मौलवी वज़ीरुद्दीन साहिब, कांगड़ा
15. मुन्शी गौहर अली साहिब, जालन्धर
16. मौलवी ग़ुलाम अली साहिब, डिप्टी रोहतास, जेहलम
17. मियां नबी बख़्श साहिब, रफ़ूगर, अमृतसर
18. मियां अब्दुल ख़ालिक़ साहिब, रफ़ूगर, अमृतसर
19. मियां क़ुतुबुद्दीन ख़ान साहिब, मिसगर, अमृतसर
20. मौलवी अब्दुल हमीद साहिब, हैदराबाद, दक्कन
21. मौलवी हाजी हाफ़िज़ हकीम नूरुद्दीन साहिब दोनों पत्नियों सहित, भेरा, ज़िला, शाहपुर
22. मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब, अमरोहा, ज़िला मुरादाबाद
23. मौलवी हाजी हाफिज़ हकीम फ़ज़ल दीन साहिब दोनों पत्नियों सहित, भेरा

24. साहिबज़ादा मुहम्मद सिराजुलहक़ साहिब जमाली नौमनी क़ादियानी पूर्व सरसावी परिवार सहित
25. सय्यद नासिर नवाब साहिब, देहलवी हाल, क़ादियानी
26. साहिबज़ादा इफ़्तिख़ार अहमद साहिब लुधियानवी परिवार सहित, क़ादियानी
27. साहिबज़ादा मंज़ूर मुहम्मद साहिब परिवार सहित, क़ादियानी
28. हाफ़िज़ हाजी मौलवी अहमदुल्लाह ख़ान परिवार सहित, क़ादियानी
29. सेठ अब्दुर्रहमान साहिब हाजी अल्लाह रखा परिवार सहित, मद्रास
30. मियां जमालुद्दीन, सेखवां, गुरदासपुर, परिवार सहित
31. मियां खैरूद्दीन सेखवां, गुरदासपुर, परिवार सहित
32. मियां इमामुद्दीन, सेखवां, गुरदासपुर, परिवार सहित
33. मियां अब्दुल अज़ीज़ पटवारी, गुरदासपुर,परिवार सहित
34. मुन्शी गुलाबदीन रोहतास, जेहलम
35. क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब, क़ाज़ी कोटी
36. मियां अब्दुल्लाह साहिब पटवारी, सिनौरी
37. शेख़ अब्दुर्रहीम साहिब नोमुस्लिम पूर्व लैस दफेदार, रिसाला नं.-12 छावनी, सियालकोट
38. मौलवी मुबारक अली साहिब इमाम, सियालकोट
39. मिर्ज़ा नियाज़ बेग साहिब कलानौरी
40. मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब..... कलानौरी
41. मियां अय्यूब बेग साहिब परिवार सहित, कलानौरी
42. मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब, झंग
43. सरदार नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब रईस, कोटला
44. सय्यद मुहम्मद असकरी ख़ान साहिब पूर्व एकस्ट्रा असिस्टेण्ट, इलाहाबाद
45. मिर्ज़ा मुहम्मद यूसुफ़ बेग साहिब, समाना रियासत, पटियाला
46. शेख़ शहाबुद्दीन साहिब, लुधियाना

47. शहज़ादा अब्दुल मजीद साहिब, लुधियाना
48. मुन्शी हमीदुद्दीन साहिब, लुधियाना
49. मियां करम इलाही साहिब, लुधियाना
50. क़ाज़ी ज़ैनुल आबिदीन साहिब ख़ानपुर, सरहिन्द
51. मौलवी ग़ुलाम हसन साहिब रजिस्ट्रार, पेशावर
52. मुहम्मद अन्वार हुसैन ख़ान साहिब, शाहाबाद, हरदोई
53. शेख फ़ज़ल इलाही साहिब, फैज़ुल्लाह चक
54. मियां अब्दुल अज़ीज़ साहिब, देहली
55. मौलवी मुहम्मद सईद साहिब शामी, तराबलिसी
56. मौलवी हबीब शाह साहिब, ख़ुशाब
57. हाजी अहमद साहिब, बुख़ारा
58. हाफ़िज़ नूर मुहम्मद साहिब, फ़ैज़ुल्लाह चक
59. शेख़ नूर अहमद साहिब, अमृतसर
60. मौलवी जमालुद्दीन साहिब, सैदवाला
61. मियां अब्दुल्लाह साहिब, ठठा शेरका
62. मियां इस्माईल साहिब, सरसावा
63. मियां अब्दुल अज़ीज़ साहिब नवमुस्लिम, क़ादियान
64. ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए. परिवार सहित, लाहौर
65. मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब, भेरा, ज़िला शाहपुर
66. शेर मुहम्मद ख़ान साहिब, बकहर, ज़िला शाहपुर
67. मुन्शी मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब, लाहौर हाल, मुम्बासा
68. डाक्टर मुहम्मद इस्माईल ख़ान साहिब, गोड़यानी कर्मचारी, मुम्बासा
69. मियां करीमुद्दीन साहिब टीचर क़िला सोभासिंह
70. सय्यद मुहम्मद इस्माईल देहलवी स्टूडेण्ट हाल क़ादियान
71. बाबू ताजुद्दीन साहिब एकाउन्टेण्ट, लाहौर

72. शेख़ रहमतुल्लाह साहिब ताजर, लाहौर
73. शेख नबी बख़्श साहिब, लाहौर
74. मुन्शी मेराजुद्दीन साहिब, लाहौर
75. शेख़ मसीहुल्लाह साहिब, शाहजहांपुर
76. मुन्शी चौधरी नबी बख़्श साहिब परिवार सहित, बटाला
77. मियां मुहम्मद अकबर साहिब, बटाला
78. शेख़ मौला बख़्श साहिब, डंगा-गुजरात
79. सय्यद अमीर अली शाह साहिब सारजेण्ट, सियालकोट
80. मियां मुहम्मद जान साहिब वज़ीराबाद
81. मियां शादी ख़ान साहिब, सियालकोट
82. मियां मुहम्मद नवाब ख़ान साहिब तहसीलदार, जेहलम
83. मियां अब्दुल्लाह ख़ान साहब बिरादर नवाब ख़ान साहिब, जेहलम
84. मौलवी बुरहानुद्दीन साहब बिरादर नवाब ख़ान साहिब, जेहलम
85. शेख़ ग़ुलाम नबी साहिब, रावलपिण्डी
86. बाबू मुहम्मद बख़्श साहिब हैडक्लर्क, छावनी अम्बाला
87. मुन्शी रहीम बख़्श साहिब म्यूनिस्पिल कमिशनर, लुधियाना
88. मुन्शी अब्दुलहक़ साहिब कराची वाला, लुधियाना
89. हाफिज़ फ़ज़्ल अहमद साहिब, लाहौर
90. मौलवी क़ाज़ी अमीर हुसैन साहिब, भेरा
91. मौलवी हसन अली साहिब (स्वर्गीय), भागलपुर
92. मौलवी फैज़ अहमद साहिब लुंगियांवाली, गुजरांवाला
93. सय्यद महमूद शाह साहिब (स्वर्गीय), सियालकोट
94. मौलवी ग़ुलाम इमाम साहिब अज़ीज़ुल वाइज़ीन, मनिपुर, आसाम
95. रहमान शाह साहिब नागपुर, ज़िला चांदा, वड़ौड़ा
96. मियां जान मुहम्मद साहिब (स्वर्गीय), क़ादियान

97. मुन्शी फ़तह मुहम्मद परिवार सहित, बुज़दात लय्या डेरा इस्माईल खां
98. शेख़ मुहम्मद साहिब, मक्की
99. हाजी मुन्शी अहमद जान (स्वर्गीय) लुधियाना
100. मुन्शी पीर बख़्श साहिब (स्वर्गीय), जालंधर
101. शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब नव मुस्लिम, क़ादियान
102. हाजी अस्मतुल्लाह साहिब, लुधियाना
103. मियां पीर बख़्श साहिब, लुधियाना
104. मुन्शी इब्राहीम साहिब, लुधियाना
105. मुन्शी क़मरुद्दीन साहिब, लुधियाना
106. हाजी मुहम्मद अमीर ख़ान साहिब, सहारनपुर
107. हाजी अब्दुर्रहमान साहिब (स्वर्गीय), लुधियाना
108. क़ाज़ी ख़्वाजा अली साहिब लुधियाना
109. मुन्शी ताज मुहम्मद खां साहिब लुधियाना
110. सय्यद मुहम्मद ज़ियाउलहक़, रोपड़
111. शेख़ मुहम्मद अब्दुर्रहमान साहब उर्फ़ शाबान, काबली
112. ख़लीफ़ा रजबदीन साहिब ताजिर, लाहौर
113. पीर जी ख़ुदा बख़्श साहिब (स्वर्गीय) देहरादून
114. हाफ़िज़ मौलवी मुहम्मद याक़ूब ख़ान साहिब देहरादून
115. शेख़ चिराग़ अली नम्बरदार थेह ग़ुलाम नबी
116. मुहम्मद इस्माईल ग़ुलाम किब्रिया साहिब, पुत्र मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब, अमरोही
117. अहमद हसन साहिब पुत्र मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही
118. सेठ अहमद साहिब अब्दुर्रहमान हाजी अल्लाह रखा ताजिर मद्रास
119. सेठ सालिह मुहम्मद साहिब अब्दुर्रहमान हाजी अल्लाह रखा ताजिर मद्रास
120. सेठ इब्राहीम साहिब सालेह मुहम्मद हाजी अल्लाह रखा मद्रास

121. सेठ अब्दुल हमीद साहिब हाजी अय्यूब हाजी अल्लाह रखा मद्रास
122. हाजी महदी साहिब अरबी बग़दादी नज़ील मद्रास
123. सेठ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब हाजी अल्लाह रखा, मद्रास
124. मौलवी सुल्तान महमूद साहिब, मेलापुर, मद्रास
125. हकीम मुहम्मद सईद साहिब, मेलापुर, मद्रास
126. मुन्शी क़ादिर अली साहिब, मेलापुर, मद्रास
127. मुन्शी ग़ुलाम दस्तगीर साहिब, मेलापुर, मद्रास
128. मुन्शी सिराजुद्दीन साहिब तिरमल, खेड़ी, मद्रास
129. काज़ी ग़ुलाम मुर्तज़ा साहब एकस्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर हाल पेन्शनर मुज़फ्फरगढ़
130. मौलवी अब्दुल क़ादिर खान साहिब, जमालपुर, लुधियाना
131. मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब, ख़ास, लुधियाना
132. मौलवी रहीमुल्लाह साहिब (स्वर्गीय), लाहौर
133. मौलवी ग़ुलाम हुसैन साहिब, लाहौर
134. मौलवी ग़ुलाम नबी साहिब (स्वर्गीय), ख़ुशाब, शाहपुर
135. मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब इलाक़ा रियासत, कपूरथला
136. मौलवी शहाबुद्दीन साहिब ग़ज़नवी काबुल
137. मौलवी सय्यद मुहम्मद तफ़ज़्ज़ुल हुसैन साहिब अक्सट्रा असिसटेण्ट अलीगढ़ ज़िला फ़र्रुख़ाबाद
138. मुन्शी सादिक़ हुसैन सहिब मुख़्तार, इटावा
139. शेख़ मौलवी फ़ज़ल हुसैन साहिब, अहमदाबादी, जेहलम
140. मियां अब्दुल अली मौज़ा अब्दुर्रहमान, ज़िला शाहपुर
141. मुन्शी नसीरुद्दीन साहिब, लोनी हाल, हैदराबाद
142. क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब, क़ाज़ीकोट, गुजरांवाला
143. क़ाज़ी फ़ज़्लुद्दीन साहिब, क़ाज़ीकोट, गुजरांवाला

144. क़ाज़ी सिराजुद्दीन साहिब, क़ाज़ीकोट, गुजरांवाला
145. क़ाज़ी अब्दुर्रहीम साहिब पुत्र क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन साहिब, कोटक़ाज़ी, गुजरांवाला
146. शेख़ करम इलाही साहिब, क्लर्क रेलवे, पटियाला
147. मिर्ज़ा अज़ीम बेग साहिब (स्वर्गीय), सामाना पटियाला
148. मिर्ज़ा इब्राहीम बेग साहिब (स्वर्गीय), सामाना पटियाला
149. मियां ग़ुलाम मुहम्मद स्टूडेण्ट मछराला, लाहौर
150. मौलवी मुहम्मद फ़ज़्ल साहिब, चंगा, गुजरख़ान
151. मास्टर क़ादिर बख़्श साहिब, लुधियाना
152. मुन्शी इलाह बख़्श साहिब, लुधियाना
153. हाजी मुल्ला निज़ामुद्दीन साहिब, लुधियाना
154. अता इलाही, गौसगढ़, पटियाला
155. मौलवी नूर मुहम्मद साहिब, मांगट पटियाला
156. मौलवी करीमुल्लाह साहिब, अमृतसर
157. सय्यद अब्दुलहादी साहिब, सोलन, शिमला
158. मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह ख़ान साहिब, पटियाला
159. डाक्टर अब्दुल हकीम ख़ान साहिब, पटियाला
160. डाक्टर बूढ़े ख़ान साहिब, क़सूर, ज़िला, लाहौर
161. डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब, लाहौर, हाल चकराता
162. ग़ुलाम मुहियुद्दीन ख़ान साहिब, पुत्र डाक्टर बूढ़े ख़ान साहिब
163. मौलवी सफ़दर हुसैन साहिब, हैदराबाद, दक्कन
164. खलीफ़ा नूरुद्दीन साहिब, जम्मू
165. मियां अल्लाह दिता साहिब जम्मू
166. मुन्शी अज़ीज़ुद्दीन साहिब, कांगड़ा
167. सय्यद महदी हुसैन साहिब, इलाक़ा पटियाला

168. मौलवी हकीम नूर मुहम्मद साहिब, मोकल
169. हाफ़िज़ मुहम्मद बख़्श (स्वर्गीय) कोटक़ाज़ी
170. चौधरी शर्फुद्दीन साहिब, कोटला फ़कीर, जेहलम
171. मियां रहीम बख़्श साहिब, अमृतसर
172. मौलवी मुहम्मद अफज़ल साहिब कमला, गुजरात
173. मियां इस्माईल साहिब, अमृसर
174. मौलवी ग़ुलाम जीलानी साहिब घड़ोनवां, जालन्धर
175. मुन्शी अमानत ख़ान साहिब, नादौन, कांगड़ा
176. क़ारी मुहम्मद साहिब, जेहलम
177. मियां करमदाद परिवार सहित, क़ादियान
178. हाफ़िज़ नूर अहमद, लुधियाना
179. मियां करम इलाही साहिब, लाहौर
180. मियां अब्दुस्समद साहिब, नारोवाल
181. मियां ग़ुलाम हुसैन साहिब परिवार सहित, रोहतास
182. मियां निज़ामुद्दीन साहिब, जेहलम
183. मियां मुहम्मद साहिब, जेहलम
184. मियां अली मुहम्मद साहब जेहलम
185. मियां अब्बास खां, कहोहार (खोखर), गुजरात
186. मियां क़ुतुबुद्दीन साहब, कोटला फ़कीर, जेहलम
187. मियां अल्लाह दित्ता ख़ान साहिब अड़ियाला, जेहलम
188. मुहम्मद हयात साहिब, चक जानी, जेहलम
189. मख़दूम मौलवी मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब भेरा
190. अब्दुल मुग़नी साहिब पुत्र मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब, जेहलमी
191. क़ाज़ी चिरग़ुद्दीन, कोटक़ाज़ी, गुजरांवाला
192. मियां फ़ज़्लुद्दीन साहिब, काज़ीकोट

193. मियां इलमुद्दीन साहिब, कोटला फ़क़ीर, जेहलम
194. क़ाजी मीर मुहम्मद साहिब, कोट खलियान
195. मियां अल्लाह दित्ता साहिब, नत, गुजरांवाला
196. मियां सुल्तान मुहम्मद साहिब, गुजरांवाला
197. मौलवी ख़ान मलिक साहिब, खेवाल
198. मियां इलाह बख़्श साहिब, इलाका बन्द, अमृतसर
199. मौलवी इनायतुल्लाह साहिब टीचर, मानावाला
200. मुन्शी मीरां बख़्श साहिब, गुजरांवाला
201. मौलवी अहमद जान साहिब टीचर, गुजरांवाला
202. मौलवी हाफ़िज अहमद दीन चक सिकन्दर, गुजरात
203. मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब, खेवाल, जेहलम
204. मियां मेहर दीन साहिब, लाला मूसा
205. मियां इब्राहीम साहिब, पिण्डोरी, जेहलम
206. सय्यद महमूद शाह साहिब, फ़तहपुर, गुजरात
207. मुहम्मद जू साहिब, अमृतसर
208. मुन्शी शाहदीन साहिब, दीना, जेहलम
209. मुन्शी रौशनदीन साहिब, डन्डवत, जेहलम
210. हकीम फ़ज़ल इलाही साहिब, लाहौर
211. शेख़ अब्दुल्लाह दीवानचन्द साहिब, कम्पाउन्डर,लाहौर
212. मुन्शी मुहम्मद अली साहिब, लाहौर
213. मुन्शी इमामुद्दीन साहिब, क्लर्क, लाहौर
214. मुन्शी अब्दुर्रहमान साहिब, क्लर्क, लाहौर
215. ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब, बी.ए. लाहौर, हाल जम्मू
216. मुन्शी मौला बख़्श साहिब, क्लर्क, लाहौर
217. शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब, मुरादाबादी, पटियाला

218. आलम शाह साहिब खरियां, गुजरात
219. मौलवी शेर मुहम्मद साहिब होहन, शाहपुर
220. मियां मुहम्मद इस्हाक़ साहिब, ओवरसीयर भेरा, हाल मुम्बासा
221. मिर्ज़ा अकबर बेग साहिब, कलानौर
222. मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब, सिन्नौर
223. मियां अबदुस्समद साहिब, सिन्नौर
224. मुन्शी अता मुहम्मद साहिब, सियालकोट
225. शेख़ मौला बख़्श साहिब, सियालकोट
226. सय्यद ख़सीलत अली शाह साहिब डिप्टी इन्सपेक्टर, डंगा
227. मुन्शी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इन्सपेक्टर, गुरदासपुर
228. सय्यद अहमद अली शाह साहिब, सियालकोट
229. मास्टर ग़ुलाम मुम्मद साहिब, सियालकोट
230. हकीम मुहम्मद दीन साहिब, सियालकोट
231. मियां ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब, सियालकोट
232. मियां अब्दुल अज़ीज़ साहब, सियालकोट
233. मुन्शी मुहम्मद दीन साहिब, सियालकोट
234. मुन्शी अब्दुल मजीद साहिब, ओजला, गुरदासपुर
235. मियां ख़ुदा बख़्श साहिब, बटाला, गुरदासपुर
236. मुन्शी हबीबुर्रहमान साहिब, हाजीपुर, कपूरथला
237. मुहम्मद हुसैन साहिब, लुंगिया वाली, गुजरांवाला
238. मुन्शी ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम, इन्जीनीयर, बम्बई
239. सय्यद फ़ज़्ल शाह साहिब, लाहौर
240. सय्यद नासिर शाह साहिब, सबओवरसीयर, उड़ी कश्मीर
241. मुन्शी अता मुहम्मद साहिब, चिन्योट झंग
242. शेख़ नूर अहमद साहिब, जालन्धर हाल मुम्बासा

243. मुन्शी सरफ़राज़ ख़ान साहिब, झंग
244. मौलवी सय्यद मुहम्मद रिज़वी साहिब, हैदराबाद
245. मुफ्ती फ़ज़्लुर्रहमान साहिब परिवार सहित, भेरा
246. हाफिज़ मुहम्मद सईद साहिब, भेरा हाल, लन्दन
247. मिस्त्री क़ुतुबुद्दीन साहिब, भेरा
248. मिस्त्री अब्दुल करीम साहिब, भेरा
249. मिस्त्री ग़ुलाम इलाही साहिब, भेरा
250. मियां आलम दीन साहिब, भेरा
251. मियां मुहम्मद शफ़ी साहिब, भेरा
252. मियां नज्मुद्दीन साहिब, भेरा
253. मियां ख़ादिम हुसैन साहिब, भेरा
254. बाबू ग़ुलाम रसूल साहिब, भेरा
255. शेख अब्दुर्रहमान साहिब, नव मुस्लिम, भेरा
256. मौलवी सरदार मुहम्मद साहिब, लोनमियानी
257. मौलवी दोस्त मुहम्मद साहिब, लोनमियानी
258. मौलवी हाफ़िज़ मुहम्मद साहिब, भेरा, हाल कश्मीर
259. मौलवी शेख क़ादिर बख़्श साहिब, अहमदाबाद
260. मुन्शी अल्लाह दाद साहिब, क्लर्क छावनी, शाहपुर
261. मियां हाजी वरयाम, ख़ुशाब
262. हाफ़िज़ मौलवी फ़ज़लदीन साहिब, ख़ुशाब
263. सय्यद दिलदार अली साहिब, बिल्लौर, कानपुर
264. सय्यद रमज़ान अली साहिब, बिल्लौर, कानपुर
265. सय्यद जीवन अली साहिब, पलवल, हाल इलाहाबाद
266. सय्यद फरज़न्द हुसैन साहिब, चांदपुर, हाल इलाहाबाद
267. सय्यद इहतिमाम अली साहिब, मौहरोन्डा, इलाहाबाद

268. हाजी नजफ़ अली साहिब, कटरा मुहल्ला, इलाहाबाद
269. शेख़ गुलाम साहिब कटरा मुहल्ला, इलाहाबाद
270. शेख़ ख़ुदा बख़्श साहिब कटरा मुहल्ला, इलाहाबाद
271. हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब, लाहौर
272. मियां अता मुहम्मद साहिब, सियालकोट
273. मियां मुहम्मद दीन साहिब, जम्मू
274. मियां मुहम्मद हसन साहिब, अत्तार, लुधियाना
275. सय्यद नियाज़ अली साहिब, बदायूं हाल, रामपुर
276. डाक्टर अब्दुश्शकूर साहिब, सिरसा
277. शेख़ हाफिज़ इलाह दीन साहिब बी.ए. जहावरियां (झांवरियां)
278. मियां अब्दुस्सुब्हान, लाहौर
279. मियां शहामत ख़ान, नादौन
280. मौलवी अब्दुल हकीम साहिब धारवार इलाक़ा बम्बई
281. क़ाज़ी अब्दुल्लाह साहिब कोट क़ाज़ी
282. अब्दुर्रहमान साहिब पटवारी, सिनौरी
283. बरकत अली साहिब (स्वर्गीय), थेह ग़ुलाम नबी
284. शहाबुद्दीन साहिब, थेह ग़ुलाम नबी
285. साहिब दीन साहिब तिहाल, गुजरात
286. मौलवी ग़ुलाम हसन (स्वर्गीय), दीना नगर
287. नवाब दीन साहिब टीचर, दीनानगर
288. अहमद दीन साहिब, मनारह
289. अब्दुल्लाह साहिब क़ुर्आनी, लाहौर
290. करम इलाही साहिब कम्पोज़ीटर, लाहौर
291. सय्यद मुहम्मद आफ़न्दी, तुर्की
292. उस्मान अरब साहिब, तायफ़ शरीफ़

293. अब्दुल करीम साहिब (स्वर्गीय) चमारो
294. अब्दुल वह्हाब साहिब, बग़दादी
295. मियां करीम बख़्श साहिब (स्वर्गीय), जमालपुर, ज़िला लुधियाना
296. अब्दुल अज़ीज साहिब उर्फ़ अज़ीज़ुद्दीन, नासंग
297. हाफ़िज़ ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब भेरा हाल क़ादियान
298. मुहम्मद इस्माईल साहिब नक्शानवीस कालका रेलवे
299. अहमद दीन साहिब, चक, खारियां
300. मुहम्मद अमीन किताब फ़रोश, जेहलम
301. मौलवी महमूद हसन ख़ान साहिब टीचर, पटियाला
302. मुहम्मद रहीमुद्दीन, हबीबवाला
303. शेख़ हुर्मत अली साहिब, क़रारी इलाहाबाद
304. मियां नूर मुहम्मद साहिब, ग़ौसगढ़, पटियाला
305. मिस्त्री इस्लाम अहमद साहिब भेरा
306. हुसैनी ख़ान साहिब, इलाहाबाद
307. क़ाज़ी रज़ियुद्दीन साहिब, अकबराबाद
308. सादुल्लाह ख़ान साहिब, इलाहाबाद
309. मौलवी अब्दुलहक़ साहिब पुत्र मौलवी फ़ज़ल हक़ साहिब टीचर, सामना, पटियाला
310. मौलवी हबीबुल्लाह साहिब (स्वर्गीय) सरंक्षक दफ़्तर पुलिस, जेहलम
311. रजब अली साहिब पेन्शनर निवासी झूँसी कुहना, ज़िला इलाहाबाद
312. डाक्टर सय्यद मन्सब अली साहिब पेन्शनर, इलाहाबाद
313. मियां करीमुल्लाह साहिब सारजेण्ट पुलिस, जेहलम

अब देखो ये तीन सौ तेरह (313) निष्ठावान जो इस पुस्तक में दर्ज हैं ये उसी भविष्यवाणी के पात्र हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में पाई जाती हैं। भविष्यवाणी में **कदआ** का शब्द भी है जो स्पष्ट तौर

पर क़ादियान के नाम को बता रहा है। अत: सम्पूर्ण निबन्ध इस हदीस का यह है कि वह महदी मौऊद क़ादियान में पैदा होगा और उसके पास एक किताब छपी हुई होगी जिसमें उसके तीन सौ तेरह दोस्तों के नाम दर्ज होंगे। तो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि यह बात मेरे अधिकार में तो नहीं थी कि मैं उन किताबों में जो इस युग से हज़ार वर्ष पूर्व दुनिया में प्रकाशित हो चुकी हैं अपने गांव क़ादियान का नाम लिख देता। और न मैंने छापे की मशीन निकाली है ताकि यह ख़्याल किया जाए कि मैंने इस उद्देश्य से छापाखाना को इस युग में आविष्कार किया है और न तीन सौ तेरह मुख़लिस अस्हाब का पैदा करना मेरे अधिकार में था। अपितु यह समस्त सामान स्वयं अल्लाह तआला ने पैदा किए हैं ताकि वह अपने रसूल करीम की भविष्यवाणी को पूरा करे।

परन्तु इस युग के मौलवियों की हालत पर बहुत अफ़सोस है, **वे नहीं चाहते** कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई भविष्यवाणी पूरी हो। आथम के बारे में कैसी सफ़ाई से भविष्यवाणी पूरी हुई। ख़ुदा तआला की इल्हामी शर्त के अनुसार पहले आथम पागलों की तरह भयभीत फिरा और भय की अधिकता के कारण शर्त से फ़ायदा उठाया। अन्त में धृष्टता की हालत में ख़ुदा तआला के अटल इल्हाम के अनुसार नर्क में गिरा और यही भविष्यवाणी थी जिसकी बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 241 में भी अब से सत्रह वर्ष पूर्व ख़बर दी गई थी। तो जैसा कि इस भविष्यवाणी को झुठलाने में पादरियों ने झूठ की गन्दगी खाई, अब्दुलहक़ और अब्दुल जब्बार गज़नवी इत्यादि विरोधी मौलवियों ने भी वह गन्दगी खाई और जैसा कि ईसाइयों ने इस्लाम पर प्रहार किया उन्होंने भी इस्लाम पर प्रहार किया, क्योंकि यह निशान इस्लाम के समर्थन में था। तो इन लोगों ने इस्लाम की कुछ परवाह न की और कुछ भी लज्जा तथा शर्म और संयम से काम न लिया। इसलिए तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन लोगों का नाम यहूदी रखा। यदि ये लोग आथम के बारे में कोई सच्ची आलोचना करते तो हमें कुछ अफ़सोस न था। परन्तु इन लोगों ने तो उस सच्चाई पर थूका जो सूर्य के समान चमक रही थी। अब्दुल हक़ ग़ज़नवी बार-बार

लिखता है कि पादरियों की विजय हुई। हम इसके उत्तर में इसके अतिरिक्त क्या कहें और क्या लिखें कि हे नीच यहूदी सिफ़त! पादरियों का इसमें मुंह काला हुआ और साथ ही तेरा भी। और पादरियों पर एक आकाशीय लानत पड़ी और साथ ही वह लानत तुझ को भी खा गई। यदि तू सच्चा है तो अब हमें दिखा कि आथम कहां है। हे पापी तू कब तक ज़िन्दा रहेगा क्या तेरे लिए मौत का एक दिन निर्धारित नहीं?

ऐसा ही थोड़ा इन्साफ़ करना चाहिए कि किस शक्ति और चमक से सूर्य और चन्द्र ग्रहण की भविष्यवाणी पूरी हुई तथा हमारे दावे पर आकाश ने गवाही दी परन्तु इस युग के ज़ालिम मौलवी इससे भी इन्कारी हैं। विशेष तौर पर दज्जालों का सरदार अब्दुलहक़ ग़ज़नवी और उसका समस्त गिरोह। उस पर अल्लाह की लानत की हज़ारों हज़ार जूतियां। अपने अपवित्र विज्ञापन में नितान्त आग्रह पूर्वक कहता है कि यह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हुई। हे गन्दे दज्जाल भविष्यवाणी तो पूरी हो गई परन्तु पक्षपात की धूल ने तुझे अन्धा कर दिया। भविष्यवाणी के असल शब्द जो इमाम मुहम्मद बाक़िर से दारे क़ुत्नी में रिवायत किए गए हैं ये हैं

”انّ لمهدِينا آيتين لم تكو نا منذ خلق السّماوات و الارض ينكسف
القمر لِا وّلِ لَيْلةٍ مِّنْ رَمَضَانَ وَتنكسفُ الشمسُ فِي النِّصفِ مِنْه“الخ

अर्थात् हमारे महदी के समर्थन और सत्यापन के लिए दो निशान निर्धारित हैं और जब से पृथ्वी और आकाश पैदा किए गए यह दो निशान किसी दावेदार के समय प्रकटन में नहीं आए। और वह यह हैं कि महदी के दावे के समय में चन्द्रमा का उस पहली रात में ग्रहण होगा जो उसके चन्द्र ग्रहण की तीन रातों में से पहली रात है अर्थात् तेरहवीं रात और सूर्य को उसके ग्रहण के दिनों में से उस दिन ग्रहण होगा जो मध्य का दिन है अर्थात् अट्ठाईसवीं तिथि को। और जब से दुनिया पैदा हुई है किसी दावेदार के लिए यह संयोग नहीं हुआ कि उसके दावे के समय में चन्द्र और सूर्य ग्रहण रमज़ान में इन तिथियों में हुआ

हो। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमाना **इस उद्देश्य से नहीं** था कि वह चन्द्र और सूर्य ग्रहण प्रकृति के नियम के विरुद्ध प्रकटन में आएगा और न हदीस में कोई ऐसा शब्द है अपितु केवल यह मतलब था कि उस महदी से पहले किसी सच्चे या झूठे दावेदार को यह संयोग नहीं हुआ होगा कि उसने महदी या रसूल का दावा किया हो और उसके समय में इन तिथियों में रमज़ान में चन्द्र और सूर्य ग्रहण हुआ हो। इस भविष्यवाणी के सही होने में सन्देह था तो पहले युग में से ऐसा कोई उदाहरण किसी पुस्तक के सन्दर्भ से प्रस्तुत करते जिसमें लिखा होता कि पहले ऐसा दावा हो चुका है और उसके समय में ऐसा चन्द्र और सूर्य ग्रहण भी हो चुका है, परन्तु इस ओर तो उन्होंने मुंह भी नहीं किया। और यह मूर्खतापूर्ण बहाना प्रस्तुत कर दिया है कि इस भविष्यवाणी के यह अर्थ हैं कि चन्द्रमा को रमज़ान की पहली रात में ग्रहण लगेगा और पन्द्रह तारीख को सूर्य ग्रहण होगा। लाहौल वला क़ुव्वत। इन मुर्खों ने यह अर्थ किस शब्द से समझ लिए हे मुर्खों! आंखों के अन्धों! मौलवियत को बदनाम करने वालों! तनिक सोचो कि हदीस में चन्द्र ग्रहण में क़मर का शब्द आया है तो यदि यह अभीष्ट होता कि पहली रात में चन्द्र ग्रहण होगा तो हदीस में क़मर का शब्द न आता अपितु हिलाल का शब्द आता क्योंकि कोई व्यक्ति शब्दकोष वालों तथा मातृभाषियों में से पहली रात के चन्द्रमा पर क़मर का शब्द चरितार्थ नहीं करता अपितु उसे तीन रात तक हिलाल का नाम दिया जाता है। अत: एक ईमानदार के लिए यह स्पष्ट क्रम है कि इस स्थान पर पहली रात से महीने की पहली रात अभिप्राय नहीं अपितु चन्द्र ग्रहण की पहली रात अभिप्राय है। यदि महीने की पहली रात अभिप्राय होती तो इस जगह 'हिलाल' का शब्द होना चाहिए था न कि 'क़मर' का उदाहरण के तौर पर इबारत ऐसे होनी चाहिए थी कि ينكسف الهلال لِاَوّل ليلة तो अब सोचना चाहिए कि यह लोग इस ज्ञान के साथ मौलवी कहलाते हैं। अब तक यह भी ख़बर नहीं कि पहली रात के चन्द्रमा को अरबी भाषा में क्या कहते हैं।

और यह विचार कि इस हदीस में यह वाक्य है कि لم تكو نا منذ

خلق السّمٰوٰت و الارض इससे समझा जाता है कि यह चन्द्र और सूर्य ग्रहण बतौर विलक्षण होगा न कि ऐसा चन्द्र और सूर्य ग्रहण नुजूमियों के नज़दीक ज्ञात एवं प्रसिद्ध है। यह भ्रम भी इस बात पर ठोस तर्क है कि ये लोग अरबी ज्ञान और विद्वानों वाले सोच-विचार से बिल्कुल दुर्भाग्यशाली और वंचित हैं। यहूदियों के लिए ख़ुदा ने उस गधे का उदाहरण लिखा है जिस पर पुस्तकें लदी हों। परन्तु ये ख़ाली गधे हैं। यह उस सम्मान से भी वंचित हैं कि इन पर कोई पुस्तक हो। प्रत्येक बुद्धिमान जिसको मानवीय बुद्धि में से थोड़ा भाग हो समझ सकता है कि इस जगह لم تكونا का शब्द اٰيَتَيۡنِ से संबंधित है जिसके अर्थ यह हैं कि यह दोनों निशान महदी के अतिरिक्त इससे पूर्व अन्य किसी को नहीं दिए गए। अत: इस जगह यह कहां से समझा गया कि ये चन्द्र और सूर्य ग्रहण विलक्षण होगा। भला इसमें वह कौन सा शब्द है जिससे विलक्षण समझा जाए और जबकि अभीष्ट केवल यह बात थी कि **इन तिथियों में चन्द्र और सूर्य ग्रहण रमज़ान** में होना किसी के लिए संयोग होगा तो फिर क्या आवश्यकता थी कि ख़ुदा तआला अपनी अनादि व्यवस्था के विरुद्ध चन्द्र ग्रहण पहली रात में करता, जबकि चन्द्रमा स्वयं न होने के समान होता है। ख़ुदा ने अनादि काल से चन्द्र ग्रहण के लिए 13,14,15 और सूर्य ग्रहण के लिए 27,28,29 तिथियां निर्धारित कर रखी हैं। तो भविष्यवाणी का कदापि यह मतलब नहीं कि यह व्यवस्था उस दिन टूट जाएगी। जो व्यक्ति ऐसा समझता है वह गधा है न कि इन्सान। भविष्यवाणी के शब्द साफ़ हैं जिन से स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि لم تكونا (उन दोनों के साथ पहले ऐसा कभी नहीं हुआ) के शब्द से केवल यह मतलब है कि महदी मौऊद को एक सम्मान दिया जाए और उस निशान को उसके लिए विशेष कर दिया जाए। अत: भविष्यवाणी का भी अर्थ यही है कि यह निशान किसी दूसरे दावेदार को नहीं दिया गया। चाहे सच्चा हो या झूठा केवल महदी मौऊद को दिया गया है। यदि ये ज़ालिम मौलवी इस प्रकार का चन्द्र और सूर्य ग्रहण किसी और दावेदार के युग में प्रस्तुत कर सकते हैं तो प्रस्तुत करें। उससे नि:स्सन्देह मैं झूठा हो जाऊंगा। अन्यथा **मेरी शत्रुता** के

लिए इतने महान चमत्कार से इन्कार न करें।

हे इस्लाम की शर्म मौलवियों! तनिक आँखे खोलो और देखो कि तुमने कितनी ग़लती की है। मूर्खता के जीवन से तो मृत्यु उत्तम है। साफ़ प्रकट है कि इस हदीस में चन्द्र और सूर्य ग्रहण को अद्वितीय नहीं ठहराया गया अपितु उस संबन्ध को अद्वितीय ठहराया गया है जो उसका महदी के साथ है। अर्थात् मतलब यह है कि इस प्रकार चन्द्र और सूर्य ग्रहण जो अपनी तिथियों और महीने की दृष्टि से महदी के साथ संबंध रखता है, उसका यह संबंध इससे पूर्व किसी अन्य के साथ नहीं हुआ। और कथन की व्याख्या इस प्रकार से है कि

ان لمھدینا اٰیتین لم تکونا لاحدمنذ خلق السّمٰوات و الارض

अत: इस जगह मतलब तो यह है कि ये दो निशान इस विशिष्टता के साथ महदी को दिए गए हैं। इससे पूर्व किसी को नहीं दिए गए और لم تکونا का शब्द اٰیتین की व्याख्या करता है कि वे महदी के साथ विशेष किए गए हैं। चन्द्र और सूर्य ग्रहण की कोई निराली हालत वर्णन करना स्वीकार नहीं। अपितु इस इबारत में दोनों निशानों की महदी के साथ विशिष्टता स्वीकार है न यह कि चन्द्र और सूर्य ग्रहण की कोई निराली हालत वर्णन की जाए। और यदि निराली हालत वर्णन करना स्वीकार होता तो इबारत यूं चाहिए थी कि

ینکسف القمر و الشمس علی نھج ما انکسفا منذ خلق السّمٰوات و الارض

अर्थात इस प्रकार से चन्द्र और सूर्य ग्रहण होगा कि इससे पूर्व जब से आकाश और पृथ्वी पैदा किए गए हैं ऐसा चन्द्र और सूर्य ग्रहण कभी नहीं हुआ अब मैंने ख़ूब व्याख्या करके असल मायनों को नंगा करके दिखा दिया है अब भी यदि कोई न समझेगा तो वह पागल कहलाएगा।

यद्यपि भविष्यवाणी के शब्दों से यह बात कदापि नहीं निकलती कि चन्द्र और सूर्य ग्रहण कोई निराले प्रकार का होगा। परन्तु ख़ुदा तआला ने इन मौलिवयों का मुंह काला करने के लिए इस चन्द्र और सूर्य ग्रहण में भी एक बात विलक्षण रखी है। **अत: मार्च 1894 पायनीयर और सिविल मिलिट्री ग़ज़ट ने इक़रार किया है कि यह चन्द्र और सूर्य ग्रहण जो 6 अप्रैल 1894 को होगा यह**

एक ऐसा अद्‌भुत है कि इससे पूर्व इस शक्ल और रूप पर कभी नहीं हुआ। देखो काफ़िर गवाही देते हैं कि यह चन्द्र और सूर्य ग्रहण विलक्षण है और मौलवी ऐतराज़ कर रहे हैं।

چو کافر شنا ساتر از مولویست   بریں مولویت بباید گریست

(अनुवाद :- जब काफिर मौलवी से अधिक जानकार हो तो ऐसी मौलवीयत पर रोना चाहिए। अनुवादक)

फिर एक और ऐतराज़ मूर्ख अब्दुल हक़ का यह है कि हदीसविदों ने दारे क़ुत्नी की इस हदीस के कुछ रिवायत करने वालों पर प्रति प्रश्न किए हैं। इसलिए यह हदीस सही नहीं है। परन्तु इस मूर्ख को समझना चाहिए कि हदीस ने अपनी सच्चाई को स्वयं प्रकट कर दिया है। क्योंकि उसकी भविष्यवाणी पूरी हो गई तो इस स्थिति में प्रतिप्रश्न (जिरह) से हदीस को कुछ हानि नहीं हुई। अपितु जिन्होंने जिरह की है उनकी मूर्खता प्रकट हुई। रिवायत कर्ताओं की अलोचना और उनकी जिरह एक गुमान की बात है और एक भविष्यवाणी का पूरा हो जाना और उसका सच्चा होना अवलोकन में आ जाना निश्चित बात है। और गुमान विश्वास को समाप्त नहीं कर सकता। रोयत (देखना) रिवायत पर प्राथमिक है। उदाहरणतया एक बड़े विश्वसनीय रिवायत कर्ता ने एक जगह वर्णन किया कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी मृत्यु पा गया है। फिर इतने में तुम स्वयं उस मज्लिस में उपस्थित हो गए। तो अब मैं पूछता हूँ कि उन मज्लिस वालों को जिनके पास एक विश्वसनीय रिवायत तुम्हारी मृत्यु पहुंच चुकी थी क्या करना चाहिए। क्या तुम्हारा जनाज़ा पढ़ा जाए या ज़िन्दा देखकर रिवायतों को रद्द किया जाए। हे किसी जंगल के वहशी! ख़बर देखने के बराबर नहीं हो सकती। क्या तूने

ليس الخبر كالمعاينة

कभी नहीं सुना। आसार और हदीसें जो आहाद हैं वे गुमान का फ़ायदा देती हैं। और देखना विश्वास के लिए लाभप्रद है तो क्या गुमान विश्वास को कुछ हानि पहुँचा सकता है। मान लिया कि इस हदीस में कोई रिवायतकर्ता झूठा है मुफ़्तरी है शिया है परन्तु जबकि यह भविष्यवाणी पूरी हो गई तो इस ढंग से

हदीस के सही होने पर गवाही पैदा हो गई। किसी का झूठा होना निश्चित तौर पर उसकी रिवायत को रद्द नहीं कर सकता। कभी झूठा भी सच बोल सकता है दुनिया में ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन्होंने सारी आयु झूठ न बोला हो। तो क्या निश्चित तौर पर उनकी गवाही को रद्द कर सकते हैं। तो थोड़ी शर्म करो और अपने गरेबान में मुहं डालकर देखो कि तुमने इस हदीस के दो रावियों **उम्र** और **जाबिर** जाफ़ी को झूठा ठहराया परन्तु उनका झूठ सिद्ध नहीं। किसी ने उनके झूठ का शरई सबूत प्रस्तुत नहीं किया अपितु उनकी चन्द्र और सूर्य ग्रहण की यह रिवायत सच्ची निकली परन्तु तुम्हारा गन्दा झूठ ऐसी सफ़ाई से सिद्ध हो गया कि तुम शरीअत की दृष्टि से कठोर दण्ड के योग्य ठहर गए। और वह झूठ यह है कि तुमने सच्चाई को छुपाने के लिए और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार को झूठा ठहराने की नीयत से ग्रहण की **तिथियों को बदल डाला**। सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण जिसके बारे में भविष्यवाणी है समस्त हिन्दू, मुसलमान, ईसाई जानते हैं और **अख़बारों** तथा **जंत्रियों** में दर्ज है कि वह इस प्रकार से घटित हुआ कि चन्द्र ग्रहण तेरह रमज़ान को हुआ और सूर्य ग्रहण अट्ठाईस रमज़ान को जैसा कि हमने अपनी पुस्तक, **नूरुलहक़** में उसी समय छाप दिया था परन्तु तुमने सच को छुपाने के लिए झूठ का गू खाया कि अपने उस विज्ञापन में जिसका शीर्षक सियानतुलउनास अन शर्रिल वसवासिल ख़न्नास है। चन्द्र ग्रहण की तिथि तेरह रमज़ान की बजाए चौदह रमज़ान लिख दी और सूर्य ग्रहण की तिथि अट्ठाईस रमज़ान की बजाए उन्तीस रमज़ान लिख दी। अत: हे नीच पापी अल्लाह और रसूल के शत्रु! तूने यह यहूदियों वाला अक्षरांतरण इसीलिए किया ताकि पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह महान चमत्कार छुपा रहे। जाबिर और उम्र बिन समर का झूठ तो कदापि सिद्ध नहीं हुआ अपितु सच सिद्ध हुआ। परन्तु हे नीच तेरा झूठ पकड़ा गया। जाबिर और उम्र का सच्चा होना चन्द्र और सूर्य ग्रहण से सिद्ध हो गया और रोयत (देखने) ने रिवायत की कमज़ोरी को दूर कर दिया अब जो व्यक्ति इन बुज़ुर्गों को झूठा कहे जिनके कारण से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

का चमत्कार दुनिया पर खुला वह नीच स्वयं झूठा और बेईमान है।

और फिर यह भ्रम अब्दुल हक़ ग़ज़नवी ने प्रस्तुत किया है कि चन्द्र और सूर्य ग्रहण के बारे में जो कथन हैं वे इस बात को बताते हैं कि उनके बाद महदी का प्रकटन हो। परन्तु मिर्ज़ा क़ादियानी के दावे और ख़ुरूज़ का यह चौथा वर्ष है। परन्तु स्मरण रहे कि यह भी उस नीच का झूठ और छल है। भविष्यवाणी के साफ़ शब्द यह हैं कि اِنَّ لمهدينا اٰيتين अर्थात् हमारे महदी का सत्यापन और समर्थन करने वाले दो निशान हैं। अत: यह 'लाम' जो फ़ायदा उठाने के लिए आया है साफ़ बताता है कि चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण से पहले महदी का प्रकटन आवश्यक है और चन्द्र तथा सूर्य ग्रहण उसके प्रादुर्भाव के बाद हुआ है और उसके सत्यापन के लिए प्रकट किया गया है। और निशानों को प्रकट करने के लिए ख़ुदा की सुन्नत भी यही है कि वह सच्चे मुद्दई के दावे के सत्यापन के लिए होते हैं अपितु ऐसे समय में होते हैं जबकि उस मुद्दई को ज़ोर-शोर से झुठलाया जाए। और जो निशानियां समय से पूर्व प्रकट होती हैं उनका नाम, निशान नहीं बल्कि उनका नाम **इरहास** है। शब्द 'आयत' जिसका अनुवाद 'निशान' है असल में 'ईवाअ' से बना है जिसके अर्थ हैं शरण देना। तो आयत के शब्द का उचित स्थान वह है जब एक ख़ुदा की ओर से आए मामूर को झुठलाया जाए उसको झूठा ठहराया जाए तब उस समय उस निराश्रय को ख़ुदा तआला अपनी शरण में लाने के लिए जो कुछ विलक्षण मामला प्रकट करता है उस मामले का नाम 'आयत' अर्थात् निशान है। इस अन्वेषण से सिद्ध है कि निशान के लिए आवश्यक है कि झुठलाने के बाद प्रकट हो जैसे उसके सच्चे होने पर एक निशानी लगा दी गई। परन्तु यह निशानी उस समय लाभ देगी कि जब झुठलाने के समय प्रकट हो और मुद्दई के अस्तित्व से पहले जो कुछ प्रकट हो वह बात संदिग्ध होती है। और प्रत्येक उसे अपने से संबंधित कर सकता है। अब इसका कौन फ़ैसला करे कि इसका चरितार्थ अमुक व्यक्ति है। दूसरा फ़ैसला करे कि इस का चरितार्थ अमुक व्यक्ति है दूसरा नहीं। परन्तु यदि निशान के समय में दो मुद्दई हों तो निशान

का चरितार्थ वह होगा जिसने खुले तौर पर ज़ोर से अपने दावे को अभिव्यक्त किया है और जिसको बड़ी तल्लीनता पूर्वक तथा ज़ोर-शोर से झुठलाया गया है। सच्चे की एक यह भी निशानी है कि उसे बड़े ज़ोर-शोर से झुठलाया जाता है। देखो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को झुठलाने में इन्कारियों ने एक क़यामत मचा दी थी और मुसैलिमा कज़्ज़ाब को चुपके ही स्वीकार कर लिया था। सच्चा प्रारंभ में सताया जाता और दु:ख दिया जाता है परन्तु अन्त में विजय पाता है। झूठा पहले स्वीकार किया जाता है परन्तु अन्त में अपमानित होता है। और यही अल्लाह की सुन्नत है कि जब एक व्यक्ति मुद्दई पैदा हो फिर यदि वह सच्चा है तो उसके समर्थन के लिए निशान पैदा होते हैं। यह नहीं कि अभी मुद्दई का नामोनिशान न हो और निशान पहले प्रकट किया जाए और ऐसे निशान पर कोई लाभ भी सम्पादित नहीं हो सकता क्योंकि संभव है कि निशानों को देखकर दावा करने वाले बहुत निकल आएं। यह भी सोचना चाहिए कि अब चन्द्र-सूर्य ग्रहण को तीसरा वर्ष जाता है। भला बताओ कौन सा दूसरा महदी पैदा हो गया जो तुम्हारे नज़दीक सच्चा है। इसके अतिरिक्त चन्द्र-सूर्य ग्रहण का निशान प्रकोप और भय का निशान है जो उन लोगों के लिए प्रकट होना चाहिए जो झुठलाने में लीन हों और उनकी अक़्लों पर गुमराही का ग्रहण लग गया हो। फिर जबकि अभी महदी का अस्तित्व ही नहीं तो उसका झुठलाने वाला कौन होगा जिसके डराने के लिए यह डराने वाला निशान प्रकट हुआ। क्या अक़्ल स्वीकार कर सकती है कि प्रकोप का निशान तो प्रकट हो जाए परन्तु जिसके लिए प्रकोप किया गया है अभी वह मौजूद न हो।

यह भी समझो कि प्रत्येक निशान में एक रहस्य हुआ करता है। तो हम वर्णन कर चुके हैं कि चन्द्र और सूर्य ग्रहण में यही एक रहस्य था ताकि उलेमा की अंधकारमय हालत का नक्शा, जो झुठलाने के कारण पैदा हो गई, आकाश पर प्रकट किया जाए। आकाश का चन्द्र और सूर्य ग्रहण उलेमा की ख़राबियों के लिए बतौर संकेत के था और पहले ख़बर दी गई थी कि उलेमा उस महदी मौऊद को झुठलाएंगे और कुफ्र के फ़त्वे लगाएंगे और वे लोग समस्त संसार

से निकृष्टतम होंगे। तो अवश्य था कि ऐसा ही प्रकटन में आता अत: उलेमा ने उस ज़ोर-शोर से तक्ज़ीब और तक्फ़ीर की कि हदीसों और आसार में पहले से लिखा गया था वह सब पूरा किया और इस प्रकार से उन की ईमानी रौशनी समाप्त हुई और उनके दिलों पर इन्कार के अंधकार का चन्द्र और सूर्य ग्रहण लग गया। और फिर उस चन्द्र और सूर्य ग्रहण पर गवाही प्रस्तुत करने के लिए आकाश पर चन्द्र और सूर्य ग्रहण हुआ। इसी कारण से यह दोनों चन्द्र और सूर्य ग्रहण डराने के निशान हैं और प्रत्येक चन्द्र और सूर्य ग्रहण से डराना ही अभीष्ट होता है। जैसा कि हदीसों में★ इसी ओर संकेत करने के लिए आया है कि प्रत्येक चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय नमाज़ पढ़ो। इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना) में व्यस्त हो और सदक़ा दो।

और डराने वाले निशानों के लिए आवश्यक है कि प्रथम ज़मीन पर रहने वालों से किसी प्रकार की अवज्ञा हो। तो इस चन्द्र ग्रहण से पहले जो अवज्ञा प्रकटन में आई थी वह यही थी कि उलेमा ने इस विनीत को नितान्त आग्रह से काफ़िर ठहराया और झुठलाया और उनके दिन सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के रंग में हो गए। फिर चूंकि आकाश पृथ्वी की घटनाओं के लिए प्रतिबिम्ब दिखाने वाले दर्पण के रूप में है। इसलिए ये सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण प्रतिबिम्ब के तौर पर आकाश पर हो गया। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण हमेशा आकाश पर हो गया। सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण हमेशा ज़मीनी लोगों की अंधकारमय हालत का गवाह होता है। परन्तु दोनों ग्रहण का रमज़ान में जमा होना उलेमा का काफ़िर ठहराने, झुठलाने और दिल के अंधकार की एक तस्वीर दिखाई गई। सच यही है यदि चाहो तो स्वीकार करो।

★**नोट:-** अत: बुख़ारी जो मिस्र से मुद्रित है उसके पृष्ठ-122, पंक्ति- 20 में है

عن النبی صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم ان اللہ تعالی یخوف بھما عبادہ

अनुवाद:- नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि इन दोनों के माध्यम से अल्लाह तआला ने अपने बंदों को सचेत किया है। अनुवादक

और अल्लाह तआला फ़माता है : وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا (बनी इस्राईल- 60)

अनुवाद - और हम सतर्क करने के लिए चिन्ह भेजते हैं।

इन मौलवियों ने इस बात पर कमर कस ली है कि यथासंभव ख़ुदा के निशानों को झुठलाएं। जाहिलों को जो स्वयं मुर्दे होते हैं इन लोगों ने धोखा दे देकर ख़राब कर दिया है। जिस प्रकार यह लोग अपनी मूर्खता से उस भविष्यवाणी को झुठलाने के तौर पर प्रस्तुत करते हैं जो आथम के बारे में है। इसी प्रकार वे दूसरी भविष्यवाणी को भी प्रस्तुत करते हैं जो अहमद बेग और उसके दामाद के बारे में थी। परन्तु अफ़सोस कि वे अपने अन्याय से इस बात को तनिक नहीं सोचते कि इस भविष्यवाणी का एक भाग नितान्त सफ़ाई से अवधि के अन्दर पूरा हो चुका है और दो टांगों में से एक टांग टूट चुकी है। तो अवश्य था कि जिन लोगों को ऐसा दुख और ऐसा संकट पहुँचा वे तौब: और भय से इस योग्य हो जाते कि ख़ुदा तआला उस भविष्यवाणी के दूसरे भाग में विलम्ब डाल देता। यसइयाह नबी की भविष्यवाणी जो निश्चित तौर पर बताती थी कि इस्राईल का बादशाह पन्द्रह दिन में मर जाएगा। वह भविष्यवाणी उस बादशाह के गिड़गिड़ाने के कारण ख़ुदा ने पन्द्रह वर्ष के साथ परिवर्तित कर दी। यह क़िस्सा हमारी हदीसों में ही नहीं अपितु ईसाइयों और यहूदियों की किताबों में भी अब तक मौजूद है जिससे दुनिया में किसी अहले किताब को इन्कार नहीं। यूना नबी की किताब (बाब-3, आयत 4) भी अब तक बाइबल के साथ सम्मिलित है जिस में यूनुस की अटल भविष्यवाणी का क़ौम की तौब: इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना) पर टल जाना साफ़ और व्यापक शब्दों में लिखा है। तो समझना चाहिए कि अहमद बेग की मौत ऐसा दर्दनाक मातम था जिससे घर वीरान हो गया। वह छोटे-छोटे चार बच्चे और एक विधवा छोड़ कर मर गया। और उसकी मौत के बाद जिस ग़म और संकट में वे सब पड़ गए उसका कोई अनुमान कर सकता है। क्या ऐसे संकट की मौत और फिर पूर्णत: भविष्यवाणी के अनुसार, स्वाभाविक तौर पर यह प्रभाव नहीं रखती थी कि उन लोगों को अहमद बेग की मृत्यु के पश्चात् अपने प्रिय दामाद की मृत्यु की चिन्ता सताने लगती और इस प्रकार हताश होकर सच की ओर रुजू करते? क्या इन्सान में यह विशेषता नहीं कि चश्मदीद अनुभव उस पर अधिक प्रभाव डालता है। फिर वास्तव में ऐसा ही हुआ अहमद बेग की मृत्यु ने उसके वारिसों को मिट्टी में मिला दिया और ऐसे ग़म में डाला कि मानो वे मर गए और बड़े भय में पड़

गए तथा दुआ और गिड़गिड़ाने में लग गए। तो आवश्यक था कि ख़ुदा तआला इस जगह भी बिलम्ब डालता जैसा कि आथम से संबंधित भविष्यवाणी में विलम्ब डाल दिया। हम अरबी पत्र में लिख चुके हैं कि यह भविष्यवाणी सशर्त थी और हम यह भी बार-बार वर्णन कर चुके हैं कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी बिना शर्त के भी विलम्बित हो सकती है जैसा कि यूनुस की भविष्यवाणी में हुआ।★

अत: चाहिए था कि हमारे मूर्ख विरोधी अंजाम की प्रतीक्षा करते और पहले ही से अपनी दुष्टता प्रकट न करते। भला जिस समय यह सब बातें पूरी हो जांएगी तो क्या ये मूर्ख विरोधी ज़िन्दा ही रहेंगे। और क्या उस दिन यह समस्त लड़ने वाले सच्चाई की तलवार से टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाएंगे। इन मूर्खों को भागने का कोई स्थान नहीं रहेगा। और नितान्त सफ़ाई से **नाक कट जाएगी।** और अपमान के काले दाग़ उनके अशुभ चेहरों को बन्दरों और सुअरों की तरह कर देंगे। सुनो और स्मरण रखो कि मेरी भविष्यवाणियों में कोई ऐसी बात नहीं कि जो ख़ुदा के नबियों और रसूलों की भविष्यवाणियों में उनका नमूना न हो। नि:स्सन्देह गालियां दें। किन्तु यदि मेरी भविष्यवाणियां नबियों और रसूलों की भविष्यवाणियों के नमूने पर हैं तो उनका झुठलाना उन्हीं पर लानत है। चाहिए कि अपने प्राणों पर दया करें और अपमान के साथ न मरें। क्या उन्हें यूनुस का क़िस्सा स्मरण नहीं कि क्योंकर वह अज़ाब टल गया जिसमें कोई शर्त भी न थी और इस जगह तो शर्तें मौजूद हैं। और अहमद

★इस भविष्यवाणी की पुष्टि के लिए जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी पहले से एक भविष्यवाणी की है

يتزوج ويولد له

अर्थात् वह मसीह मौऊद पत्नी करेगा और सन्तान वाला होगा। अब स्पष्ट है कि पत्नी और सन्तान की चर्चा करना सामान्यत: अभीष्ट नहीं क्योंकि सामान्य तौर पर प्रत्येक शादी करता है और सन्तान भी होती है इसमें कुछ ख़ूबी नहीं अपितु تزوج से अभिप्राय वह विशेष तज़व्वुज है जो बतौर निशान होगा और सन्तान से अभिप्राय वह विशेष सन्तान है जिसके बारे में इस विनीत की भविष्यवाणी मौजूद है। मानो इस जगह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन कठोर हृदय इन्कारियों को उनके सन्देहों का उत्तर दे रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि ये बातें अवश्य पूरी होंगी।

बेग के असल वारिस जिनकी चेतावनी के लिए यह निशान था उसके मरने के बाद भविष्यवाणी से ऐसे प्रभावित हुए थे कि इस भविष्यवाणी का नाम ले-लेकर रोते थे। और भविष्यवाणी की श्रेष्ठता देखकर उस गाँव के समस्त पुरुष-स्त्रिया कांप उठे थे। और स्त्रियां चीखें मारकर कहती थीं कि हाय वे बातें सच निकली। अत: वे लोग उस दिन तक ग़म और भय में थे जब तक उनके दामाद सुल्तान मुहम्मद की अवधि गुज़र गई। अत: इस विलम्ब का यही कारण था जो ख़ुदा की अनादि सुन्नत के अनुसार प्रकटन में आया। ख़ुदा के इल्हाम में जो तूबी-तूबी इन्नल बला अला अक़िबिक (توبي توبي ان البلاء على عقبك) है यह 1886 ई. में हुआ था इसमें तौब: की व्यापक शर्त मौजूद थी और इल्हाम : كَذّبوا باٰيٰتِنَا (उन्होंने हमारे निशानों को झुठला दिया) इस शर्त की ओर संकेत कर रहा था। तो जबकि बिना किसी शर्त के यूनुस की क़ौम का अज़ाब टल गया तो शर्त वाली भविष्यवाणी में ऐसे भय के समय में विलम्ब क्यों न होता। यह आरोप कैसी बेईमानी है जो पक्षपात के कारण किया जाता है। मैंने नबियों के हवाले दर्ज कर दिए, हदीसों और आकाशीय किताबों को आगे रख दिया परन्तु यह बेकार क़ौम अभी तक शर्म और लज्जा की ओर मुख नहीं करती।

स्मरण रखो कि इस भविष्यवाणी का दूसरा भाग पूरा न हुआ तो मैं प्रत्येक बद से बदतर ठहरूंगा। हे मूर्खों! यह इन्सान की मनगढ़ंत बातें नहीं यह किसी अपवित्र झूठ बोलने वाले का काम नहीं। नि:स्सन्देह समझो कि यह ख़ुदा का सच्चा वादा है। वही ख़ुदा जिसकी बातें नहीं टलतीं। वही प्रतापी रब्ब जिसके इरादों को कोई रोक नहीं सकता। उसकी सुन्नतों और तरीकों का तुम में ज्ञान नहीं रहा। इसलिए तुम्हें इस आज़माइश का सामना करना पड़ा।

बराहीन अहमदिया में भी इस समय से सत्रह वर्ष पूर्व उस भविष्यवाणी की ओर संकेत किया गया है जो इस समय मुझ पर खोली गई है और वह यह इल्हाम है जो बराहीन के पृष्ठ 496 में वर्णित है।

يا اٰدم اسكن انت و زوجك الجنة۔ يا مريم اسكن انت و زوجك الجنة۔ يا
احمد اسكن انت و زوجك الجنة

यहां तीन जगह ज़ौज का शब्द आया है और तीन नाम इस विनीत के रखे गए। पहला नाम आदम। यह वह प्रारंभिक नाम है जब अल्लाह तआला ने अपने हाथ से इस विनीत को आध्यात्मिक अस्तित्व प्रदान किया। उस समय पहली ज़ौज: (पत्नी) की चर्चा की। फिर दूसरी ज़ौज: (पत्नी) के समय में मरयम नाम रखा क्योंकि उस समय मुबारक सन्तान दी गई जिसको मसीह से समानता मिली। और उस समय मरयम की तरह कई आज़माइशें सामने आईं जैसा कि मरयम को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की पैदायश के समय यहूदियों की कुधारणाओं की आज़माइश आई। और तीसरी ज़ौज: जिसकी प्रतीक्षा है उसके साथ अहमद का शब्द सम्मिलित किया गया और यह शब्द अहमद इस बात की ओर संकेत है कि इस समय स्तुति और प्रशंसा होगी। यह एक रहस्यपूर्ण भविष्यवाणी है जिसका रहस्य इस समय ख़ुदा तआला ने मुझ पर खोल दिया। निष्कर्ष यह कि तीन बार ज़ौज: का शब्द तीन विभिन्न नाम के साथ जो वर्णन किया गया है वह इसी भविष्यवाणी की ओर संकेत था।

बराहीन में ऐसे बहुत से रहस्य हैं जो अब खुलते जाते हैं। उदाहरणतया बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 497 में यह भविष्यवाणी है كِتَابُ الولىّ ذُوالفقار علیّ इस भविष्यवाणी की व्याख्या वह इल्हाम ख़ूब करता है जो जल्सा महोत्सव के विज्ञापन में दर्ज किया गया है अर्थात् اللہ اکبر خربت خیبر ख़ैबर पर विजय प्राप्त करने वाले हज़रत अली रज़ियल्लाह अन्हु थे और उनका हथियार ज़ुलफ़िक़ार (तलवार) थी। अत: यह इल्हाम बताता है कि इस विनीत को ज़ुलफ़िक़ार के स्थान पर वे अध्यात्म ज्ञान दिए गए हैं जो किताबों में लिखे जाते हैं। और ख़ैबर से अभिप्राय मुसलमान रूपी मौलवियों की क़िलाबन्दी है जो वास्तव में यहूदी चरित्र रखते हैं। अब उनका क़िला ख़राब हो जाएगा। अत: जल्सा महोत्सव में इन लोगों का बहुत अपमान हुआ।★ फिर अंग्रेज़ी अख़बारों ने भी स्वतंत्रता पूर्वक उसकी गवाही

★**हाशिया:-** सिविल मिलिट्री गज़ट और आबज़र्वर ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि यही निबन्ध समस्त निबन्धों पर विजयी रहा और इन अख़बारों ने उनकी चमत्कारी शक्ति को इस सीमा तक मान लिया है कि मानो इस भाषण से समस्त उपस्थित जनों पर एक मिस्मेरेज़म का अमल कर दिया है। और समस्त तबीयतें उसकी ओर खींची गई हैं। और आबज़र्वर ने

दी। ऐसा ही बराहीन अहमदिया में अहमद बेग और उसके दामाद के सम्बन्ध में भविष्यवाणी के बारे में पृष्ठ 510 और 511 (उर्दु संस्करण) में पहले से ख़बर मौजूद है और वह यह है :-

وان لم یعصمک الناس فیعصمک اللہ من عندہ. یعصمک اللہ من عندہ و ان لم یعصمک الناس ۔ واذ یمکر بک الذی کفر۔ اوقدلی یا ھامان۔ لعلی اطلع علیٰ الٰہ موسٰی و انی لاظنہ من الکاذبین ۔تبت یدا ابی لھب و تب ما کان لہ ان یدخل فیھا الا خائفا۔وما اصابک فمن اللہ۔الفتنۃ ھٰھُنا فاصبر کما صبر اولو العزم۔الا انھا فتنۃ من اللہ لیُحبَّ حُبّا جمًّا۔ حُبًّا من اللہ العزیز الاکرم۔ عطاءً غیر مجذوذ۔شاتان تذبحان۔و کل مَنْ علیھا فان۔ ولا تھنوا ولا تحزنوا۔الم تعلم انّ اللہ علیٰ کل شیءٍ قدیر۔ انّا فتحنالک فَتحًا مُبینًا لیغفر لک اللہ ما تقدم من ذنبک وما تأخر۔اَلَیْس اللہ بکاف عبدہ۔ فبرّأہ اللہ ممّا قالوا و کان عند اللہ وجیھا۔

शेष हाशिया- यह भी लिखा है कि मुसलमानों को अनिवार्य है कि इस निबन्ध का अंग्रेज़ी में अनुवाद करके यूरोप और अमरीका में फैलाएं ताकि उन्हें वास्तविक इस्लाम की ख़बर हो। और बुद्धिजीवियों ने इस निबन्ध को न केवल उच्च श्रेणी का निबन्ध समझा अपितु उसके चमत्कार के क़ाईल हो गए। फिर आज 14 जनवरी 1897 ई. को मुहल्ला अटारी सियालकोट से अल्लाह दित्ता साहिब का एक कार्ड मुझे पहुँचा, जिसमें वह लिखते हैं कि चूंकि वह निबन्ध जो आपकी ओर लाहौर में पढ़ा गया था वह एक चमत्कार के रंग में था इसलिए मैं इस ख़ुशी की कृतज्ञता के तौर पर सौ रुपया नक़द आपकी सेवा में भेजता हूँ और मुबारकबाद देता हूँ कि इससे इस्लाम की विजय हुई। ख़ुदा तआला मियां अल्लाह दित्ता साहिब को इस ख़ुशी के बदले में बहुत सी व्यक्तिगत खुशियां भी दिखाए। जो इस्लाम की विजय से ख़ुश है ख़ुदा उससे खुश है। अब क्या इस व्यापक चमत्कार को जिससे सच्चे मुसलमानों ने यह खुशियां व्यक्त कीं कोई छुपा सकता है। इसलिए अब्दुल हक़ को सोचना चाहिए कि मुबाहले के ये प्रभाव होते हैं न कि मृत्यु प्राप्त भाई की एक विधवा और बूढ़ी औरत पर कब्ज़ा करके उसको मुबाहले की विजय का सबूत ठहरा दे और बड़े भाई की मौत याद न आए। **लानत है** ऐसी ख़ुशी पर। शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी भी सोचें कि क्या कभी उनका निबन्ध भी चमत्कार समझ कर हज़ारों लोगों ने उस पर गवाही दी है। क्या कभी चमत्कारपूर्ण मुबारकबादी में दो पैसे भी उनको ईनाम मिले हैं। इसी से।

अनुवाद – अर्थात् ख़ुदा तुझे बचाएगा यद्यपि लोग न बचाएं। मैं पुनः कहता हूँ कि ख़ुदा तुझे बचाएगा यद्यपि लोग न बचाएं। वह समय याद कर कि जब एक मनुष्य तुझ से षड़यंत्र करेगा और अपने साथी हामान को कहेगा कि फित्नः फैलाने की अग्नि भड़का। इस जगह फ़िरऔन से अभिप्राय शेख़ हुसैन बत्तालवी है और हामान से अभिप्राय नव मुस्लिम सादुल्लाह है। और फिर फ़रमाया कि वह कहेगा कि मैं उसके ख़ुदा की वास्तविकता मालूम करना चाहता हूँ और मैं इसको झूठा समझता हूँ अर्थात् ख़ुदा वाला होने का दावा सर्वथा झूठ है। ख़ुदा तआला से कोई संबंध नहीं और फिर फ़रमाया - कि यह फ़िरऔन मर गया और उसके दोनों हाथ अर्थात् यह मनुष्य अपमानित किया जाएगा।★ और हाथ जो जीविकोपार्जन का माध्यम हैं बेकार हो जाएंगे अर्थात् उस पर दरिद्रता, अनशन का संकट उतरेगा और अपने उद्देश्यों में असफल रहेगा और बदनाम हो जाएगा। और फिर फ़रमाया कि इस मनुष्य का इस्लाम और मौलवियत का दावा इस योग्य नहीं था कि काफ़िर ठहराने और झुठलाने पर साहस करता और इस संवेदनशील मुकद्दमें में चालाकी के साथ हस्तक्षेप करता। हां यह चाहिए था कि सही नीयत और दिल के भय के साथ अपने सन्देहों का निवारण कराता। फिर फ़रमाया इस मनुष्य के षड़यन्त्रों से तुझे जो कुछ हानि पहुँचेगी वह ख़ुदा तआला की ओर से है। और जब यह काफ़िर ठहराएगा तथा झुठलाएगा तो उस समय देश में एक बड़ा फ़ित्नः मचेगा, वह फ़ित्नाः इन्सान की

★**हाशियाः-** मुहम्मद हुसैन बत्तालवी के अपमान का यह भी कारण है कि उसने एक शैतानी भविष्यवाणी की थी कि मैं इस मनुष्य को अर्थात् इस विनीत को अपमानित कर दूंगा और लोगों को रुजू से बन्द कर दूंगा परन्तु इसके विपरीत प्रकटन में आया। उसकी भविष्यवाणी के समय शायद हमारी जमाअत सौ के क़रीब भी नहीं थी। अब ख़ुदा के फ़ज़्ल से आठ हज़ार के लगभग हैं। अभी निकट समय में इलाहाबाद में एक भारी जमाअत पैदा हो गई है जिनको हमारे हार्दिक मित्र मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब के इलाहबाद में ठहरने से बहुत मदद मिली है। मिर्ज़ा साहिब ने इस सिलसिले को उस ओर इतना फैलाया है कि जैसे समस्त विरोधियों की नाक काट कर आएं हैं। इस ख़ुशी के समय में उनकी वह सौ रुपए की सहायता भी सराहनीय है जो उन्होंने पचास रुपया एक दफ़ा और पचास रुपया अब क़ादियान में आकर इस सिलसिले की सहायता के लिए दिए हैं। جزاهم الله خير الجزاء

ओर से नहीं, अपितु तेरे ख़ुदा ने यही चाहा ताकि वह तुझ से नितान्त श्रेणी का प्रेम करे क्योंकि प्रतिष्ठा इब्तिला के बाद होती है। ख़ुदा का प्रेम बहुत क़द्र करने योग्य है क्योंकि वह सब पर विजयी और सर्वाधिक कृपालु है। फिर जिस से वह प्रेम करेगा उसकी समस्त आशाएं सफलता का अंजाम रखती हैं और उसका यह दान समाप्त होने वाला नहीं है। इसके बाद यूं होगा कि दो बकरियां ज़िब्ह की जाएंगी पहली बकरी से मुराद मिर्ज़ा अहमद बेग होशियारपुरी है और दूसरी बकरी से अभिप्राय उसका दामाद है। और फिर फ़रमाया कि तुम सुस्त मत हो और ग़म मत करो। क्योंकि ऐसा ही प्रकटन में आएगा। क्या तू नहीं जानता कि ख़ुदा प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है। और पुन: फ़रमाया कि हमने तुझे खुली-खुली विजय दी है अर्थात् खुली-खुली विजय देंगे ताकि तेरा ख़ुदा तेरे अगले पिछले गुनाह क्षमा कर दे अर्थात् पूर्ण सम्मान और मान्यता प्रदान करे। क्योंकि ख़ुदा तआला का समस्त गुनाह क्षमा कर देना इस मुहावरे पर प्रयोग होता है कि वह पूरी तरह से राज़ी हो जाए। और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त है वह उसको उन समस्त आरोपों से बरी करेगा जो उस पर लगाए जाते हैं। और वह बन्दा ख़ुदा के निकट महान स्थान रखता है।

इन भविष्यवाणियों में अन्य भविष्यवाणियों के अतिरिक्त जो उनके संदर्भ में वर्णन की गई हैं दो बकरियों के ज़िब्ह होने की भविष्यवाणी अहमद बेग और उसके दामाद की ओर संकेत है जो आज से सत्रह वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी हैं। ऐसा ही मुहम्मद हुसैन के काफ़िर ठहराने का फ़ित्न: जो केवल चार-पांच वर्ष पहले प्रकाशित हुआ है आज से सत्रह वर्ष पूर्व उस फ़ित्ने की बराहीन अहमदिया में सूचना दी गई है जो मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ। अब सोचना चाहिए कि क्या यह इन्सान का काम है? क्या इन्सान में यह सामर्थ्य है कि भावी घटनाओं की ख़बर वर्षों पूर्व ऐसी सफ़ाई से वर्णन कर सके? मेरे बारे में दो बड़े महान फ़ित्ने घटित हुए हैं एक पादरियों का, दूसरा मुहम्मद हुसैन इत्यादि के काफ़िर ठहराने का। तो इन दोनों फ़ित्नों की व्यापक तौर पर बराहीन अहमदिया में आज के दिन से सत्रह वर्ष पूर्व खबरें मौजूद हैं। क्या दुनिया में कोई और व्यक्ति मौजूद है जिसके लेखों में भविष्यवाणियों का यह महान सिलसिला पाया जाए? नि:स्सन्देह कोई बहुत बड़ा निर्लज्ज होगा जो इस

विलक्षण सिलसिले से इन्कार करे। इस जगह ख़ुदा का इल्हाम वर्षा के समान बरस रहा है। आकाशों के दरवाज़े खुले हैं। अब देखो कि ये दुष्ट मौलवी कब तक और कहां तक इन्कार करेंगे। मैं ख़ुदा से निश्चित ज्ञान पाकर कहता हूँ कि यदि ये समस्त मौलवी और उनके सज्जाद: नशीन तथा उनके मुल्हम इकट्ठे होकर इल्हामी मामलों में मुझ से मुक़ाबला करना चाहें तो ख़ुदा उनके मुक़ाबले पर मुझे विजयी करेगा क्योंकि मैं ख़ुदा की ओर से हूँ। तो ज़रूरी है कि पवित्र आयत

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ (अल मुजादला आयत : 22)

(अर्थात अल्लाह ने मुक़द्दर कर छोड़ है कि अवश्य मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे।) के अनुसार मेरी विजय हो।

فَمُت یا عَبۡد الشیطان الموسُوم بعبد الحق۔ فان اللّٰہ معزنی و مذلک و مکرمنی و مھینک وان اللّٰہ لا یحبّ الظالمین۔

बहुत अफ़सोस है जो मैंने सुना है कि इस्लाम को बदनाम करने वाले ग़ज़नवी गिरोह जो अमृतसर में रहते हैं लोगों को कहते हैं कि अभागा मुहम्मद सईद जो मुर्तद हो गया है और उसका बड़ा भाई जो अब दिसम्बर 1896 ई. को मालेर कोटला में मृत्यु पा गया है, ये दोनों घटनाएं अब्दुल हक़ के मुबाहले का प्रभाव हैं। अब मुसलमानो! सोचो कि यह ग़ज़नवियों का निर्दयी फ़िर्क़ा कितने शैतानी इफ़्तिराओं से काम ले रहा है। हे दुर्भाग्यशाली मुफ़तरियो! अपवित्र मुहम्मद सईद या उसके भाई से मेरी कोई निकटता नहीं उन लोगों के साथ न हमारा कोई रिश्ता है न उनसे कुछ मतलब का संबंध है। क्या अब्दुल हक़ के मुबाहले का प्रभाव एक तीसरे घर पर गिरा जिसका हम से कुछ भी संबंध नहीं। इससे मालूम होता है कि ये लोग अब्दुल हक़ के मुबाहले के बाद बहुत अपमानित हो गए हैं। जिसके कारण उनको ऐसी-ऐसी झूठी योजनाएं बनानी पड़ीं। यदि अब्दुल हक़ की बदचलनी को धोने के लिए ऐसी ही झूठी स्कीमें बनानी थीं तो देहली के दो अप्रसिद्ध लोंडों की चर्चा बेफ़ायदा थी। हमारी समझ में उत्तम यह था कि आजकल बम्बई में हज़ारों लोग ताऊन से मर रहे हैं उसे अब्दुल हक़ के मुबाहले का प्रभाव ठहरा कर इस निबन्ध का विज्ञापन प्रकाशित कर देते। "चूंकि मुंशी ज़ैनुद्दीन मुहम्मद इब्राहीम (जो हमारे प्रति नितान्त श्रेणी के निष्कपट और बैअत के सिलसिले में

दाख़िल हैं) बम्बई में रहते हैं। इसलिए उचित था कि मुबाहले का प्रभाव उसी शहर पर पड़ता न कि किसी अन्य स्थान पर पड़ता।" न मालूम यह जाहिल और वहशी फ़िर्का अब तक क्यों शर्म और लज्जा से काम नहीं लेता। अब्दुल हक़ के मुबाहले के बाद 1. हमें ख़ुदा तआला ने जितनी उन्नति दी हमारी मान्यता पृथ्वी पर फैला दी। 2. हमारी जमाअत को हज़ारों तक पहुंचा दिया। 3. हमारे ज्ञान का लाखों को काइल कर दिया। 4. इल्हाम के अनुसार मुबाहले के बाद हमें एक लड़का प्रदान किया जिसके पैदा होने से हमारे तीन लड़के हो गए अर्थात् दूसरी पत्नी से। 5. न केवल यही अपितु एक चौथे लड़के के लिए निरन्तर इल्हाम किया और हम अब्दुल हक़ को विश्वास दिलाते हैं कि वह नहीं मरेगा जब तक इस इल्हाम का पूरा होना भी सुन ले। अब उसको चाहिए कि यदि वह कुछ चीज़ है तो दुआ से इस भविष्यवाणी को टाल दे। 6. और फिर ख़ुदा ने भविष्यवाणी के अनुसार आथम को फिन्नार (नर्क में डाल कर) करके पादरियों और विरोधी मौलवियों का मुंह काला किया। 7. हज़ारों रुपयों तक आर्थिक विजयें मुझ पर कीं 8. और जल्सा महोत्सव में जो 27 दिसम्बर 1896 को हुआ था हमारे भाषण की वह स्वीकारिता प्रकट की कि अंग्रेज़ी अख़बार बोल उठे कि **हां** यह भाषण विजयी रहा। उसको चमत्कार समझ कर कुछ सहसी मुसलमानों ने रुपया भेजा। जैसा कि मियां अल्लाह दित्ता साहिब सियालकोटी ने कल 15 जनवरी 1897 ई. इसी ख़ुशी से सौ रुपया भेज दिया। 9. और उस दिन हमारी वह इल्हामी भविष्यवाणी भी पूरी हुई जो इस निबन्ध के बारे में विज्ञापन द्वारा प्रकाशित की गई थी कि यह निबन्ध सब पर विजयी होगा।

क्या इस सम्मान और समस्त इल्हामों के पूरा होने से अब तक अब्दुल हक़ का मुंह काला नहीं हुआ। क्या अब तक ग़ज़नवियों की जमाअत पर लानत नहीं पड़ी। नि:स्सन्देह ख़ुदा ने इन लोगों को अपमान की दुचरित्रता के अन्दर डुबो दिया। मुबाहले का खुला-खुला प्रभाव इसको कहते हैं और ख़ुदा की सहायता इसका नाम है और तकल्लुफ़ से झूठ बोलना विष्ठा खाना है।

हम इस निबन्ध के समापन में यह वर्णन करना भी आवश्यक समझते हैं कि जिन अपवित्र स्वभाव लोगों ने काफ़िर ठहराने पर कमर बांधी है उनके मुक़ाबले पर

ऐसे लोग भी बहुत हैं जिनको रोअया (स्वप्नावस्था) में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्शन भी हुए और उन्होंने जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से इस विनीत के बारे में पूछा और आपने फ़रमाया कि वह मनुष्य वास्तव में ख़ुदा की ओर से है। और अपने दावे में सच्चा है। अत: ऐसे लोगों की बहुत सी गवाहियां हमारे पास मौजूद हैं। जिस व्यक्ति को इस छान-बीन की रुचि है वह हमसे इसका सबूत ले सकता है।

और ग़ज़नवी अफ़ग़ानों की जमाअत जो अपवित्र विचारों और झुठलाने की बला में गिरफ़्तार हैं, उनके लिए यदि वे न्याय और ख़ुदा के भय से कुछ हिस्सा रखते हैं, उनके बुज़ुर्ग पिता मौलवी **अब्दुल्लाह साहिब** की गवाही पर्याप्त है। हमारे पास वे गवाह मौजूद हैं जो हलफ़ से वर्णन कर सकते हैं कि मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ने अपने कश्फ़ के अनुसार बताया था कि एक नूर आकाश से उतरा और **क़ादियान** की दिशा में उतरा है। और उनकी सन्तान उस नूर से वंचित रह गई। इस गवाही में हाफिज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब ज़िलेदार भी शामिल हैं जो मौलवी अब्दुल्लाह के दोस्त और उपकारी भी हैं। अपितु उनके भाई मुहम्मद याक़ूब ने एक जल्से में क़सम खाकर कहा था कि मौलवी अब्दुल्लाह ने उस नूर की चर्चा के समय इस विनीत का नाम भी लिया था कि यह नूर उनके हिस्से में आ गया और मेरी सन्तान भाग्यहीन और वंचित रही। इसलिए उचित है कि अब्दुल हक़ ग़ज़नवी और अब्दुल जब्बार जो अपनी शरारत और अपवित्रता से काफ़िर ठहराने और गालियों पर ज़ोर दे रहे हैं, अपने मृत्युप्राप्त बुज़ुर्ग के वाक्यों की जाँच-पड़ताल अवश्य कर लें। ऐसा न हो कि उनकी वसीयत की अवज्ञा करके उनके आक़ (बहिष्कृत) भी ठहर जाएं। उस बुज़ुर्ग, मौलवी अब्दुल्लाह ने अपने जीवन के समय में मेरे नाम भी दो पत्र भेजे थे। और उन पत्रों में क़ुर्आनी आयतों के इल्हाम के साथ मुझे ख़ुशख़बरी दी थी कि तुम काफ़िरों पर विजयी रहोगे। और फिर मृत्यु के बाद मुझ पर प्रकट किया था कि मैं आप के दावे का सत्यापनकर्ता हूँ। अत: मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि उन्होंने मेरे दावे को सुनकर पुष्टि की और मुझे साफ शब्दों में कहा कि "जब मैं दुनिया में था तो मैं आशा रखता था कि ऐसा मनुष्य ख़ुदा तआला की ओर से प्रकट होगा।" ये उनके शब्द हैं और لعنة

اللّٰہ علی الـکاذبین (अर्थात झूठों पर अल्लाह की लानत हो)

और उस समय के सज्जादा नशीनों में से दो बुज़ुर्ग और हैं जिन्होंने इस विनीत के पद और श्रेणी से इन्कार नहीं किया और स्वीकार किया है। एक तो मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब चाचंड़ा वाले पीर नवाब साहिब बहावलपुर हैं। जिन का अरबी पत्र मैंने छाप दिया है जिससे यह भी सिद्ध होता है कि वह अरबी विद्या में एक विद्वान हैं।

और दूसरे पीर साहिबुल इल्म हैं जो सिन्ध के प्रसिद्ध शैख़ों में से हैं जिनके मुरीद एक लाख से कुछ अधिक होंगे। और इसके बावजूद वह अरबी विद्याओं में पूर्ण महारत रखते हैं और शक्तिशाली उलेमा में से हैं। फिर उन्होंने मेरे बारे में गवाही दी है वह यह है -

“انّی رأیت رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم واستفسرته فی امرک وقلت بیّن لی یا رسول اللّٰہ اھو کاذب مُفتری او صادق۔ فقال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم “انه صادق ومن عنداللّٰہ۔” فعرفت انک علی حق مُبین۔ و بعْد ذٰلک لا نشک فی اَمْرک ولا نرتاب فی شانک ونعمل کما تأمر۔ فان امرتنا ان ازھبوا الیٰ بلاد امریکه فانا نذھب الیھا وَمَا تکون لنا خِیَرة فی امرنا وستجدنا ان شاء اللّٰہ من المطاوعین۔”

अर्थात् मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कश्फ़ की अवस्था में देखा तो मैंने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कि यह मनुष्य जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है क्या यह झूठा और मुफ़्तरी है या सच्चा है? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह सच्चा है और ख़ुदा तआला की ओर से है। फिर मैंने समझ लिया कि आप सच पर हैं। अब इसके बाद हम आपकी बातों में सन्देह नहीं करेंगे और आपकी शान में हमें कुछ सन्देह नहीं होगा और जो कुछ आप फ़रमाएंगे हम वही करेंगे। इसलिए यदि आप यह कहो कि हम अमरीका चले जाएं तो हम वहीं जाएंगे। और हमने स्वयं को आपके सुपुर्द कर दिया है और इन्शाअल्लाह हमें आज्ञाकारी पाओगे।

यह वह बाते हैं जो उनके खलीफ़ा अब्दुल लतीफ़ (स्वर्गीय) और शेख़ अब्दुल्लाह अरब ने मुझे मौखिक भी सुनाई और अब भी मेरे हार्दिक मित्र सेठ सालेह मुहम्मद हाजी अल्लाह रखा साहिब जब मद्रास से उनके पास गए तो उन्हें बदस्तूर सत्यापनकर्ता पाया

अपितु उन्होंने सार्वजनिक मज्लिसों में खड़े होकर और हाथ में डण्डा लेकर समस्त उपस्थित लोगों को बुलन्द आवाज़ से सुना दिया कि मैं उनको अपने दावे में सच पर जानता हूँ और ऐसा ही मुझे कश्फ़ की दृष्टि से मालूम हुआ है और उनके सुपुत्र ने कहा कि जब मेरे पिता श्री सत्यापन करते हैं तो मुझे इन्कार नहीं।

अब अब्दुल हक़ ग़जनवी को कुछ खाकर मर जाना चाहिए कि ख़ुदा तआला इस विनीत का लाखों लोगों में सम्मान व्यक्त कर रहा है, जिसमें उसका अपमान है। इस अपवित्र को सोचना चाहिए कि मुबाहले का यह प्रभाव होता है या यह कि भाई मरा और उसकी बूढ़ी पत्नी पर कब्ज़ा किया और फिर उसे मुबाहले का प्रभाव ठहराया।

स्मरण रहे कि केवल यही नहीं कि मियां ग़ुलाम फ़रीद साहिब चांचड़ा वाले और पीर साहिबुल इल्म (सिद्धपुरुष) सिन्ध वाले सत्यापनकर्ता हैं और साहिबज़ादा पीर सिराजुल हक़ साहिब जिनके बुज़ुर्गों के हिन्दुस्तान में हज़ारों मुरीद हैं इस विनीत की बैअत में अपने अहले बैअत साहित दाख़िल हो चुके हैं। ऐसा ही **हाजी मुंशी अहमद जान साहिब लुधियानवी** (स्वर्गीय) इस **विनीत** के प्रथम श्रेणी के निष्ठावानों में से थे और उनके समस्त साहिबज़ादे और साहिबज़ादियां तथा घर के लोग सारांश यह कि उनका समस्त कुन्बा इस विनीत की बैअत में **दाख़िल** हो चुका है।

और मैं पुनः प्रत्येक सत्याभिलाषी को स्मरण कराता हूँ कि वह सच्चे धर्म के निशान और इस्लाम की सच्चाई के आकाशीय गवाह, जिससे हमारे अंधे उलेमा बेख़बर हैं वे मुझ को दिए गए हैं। मुझे भेजा गया है ताकि मैं सिद्ध करूं कि एक इस्लाम ही है जो ज़िन्दा धर्म है और वे चमत्कार जो मुझे प्रदान किए गए हैं जिनके मुक़ाबले से इस समय ग़ैर धर्म वाले और हमारे आन्तरिक अंधे विरोधी भी असमर्थ हैं। मैं प्रत्येक विरोधी को **दिखा सकता हूँ कि**

पवित्र क़ुर्आन

अपनी शिक्षाओं और अपनी दर्शन शास्त्रीय विद्याओं और अपने सूक्ष्म अध्यात्मज्ञानों और पूर्ण बलाग़त (सरसता) की दृष्टि से चमत्कार है। मूसा के चमत्कार से बढ़कर और ईसा के चमत्कारों से सैकड़ों गुना अधिक है। मैं बार-बार कहता हूँ और बुलन्द

आवाज़ से कहता हूँ कि क़ुर्आन और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्चा प्रेम रखना और सच्चा आज्ञापालन ग्रहण करना इन्सान को चमत्कारी बना देता है★ और इसी कामिल इन्सान पर ग़ैब के ज्ञानों के दरवाज़े खोले जाते हैं और दुनिया मंे किसी धर्म वाला आध्यात्मिकता में उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। और मैं इसमें अनुभव रखता हूँ। मैं देख रहा हूँ कि इस्लाम के अतिरिक्त समस्त धर्म मुर्दे, उनके ख़ुदा मुर्दे, स्वयं वे समस्त अनुयायी मुर्दे हैं। और ख़ुदा तआला के साथ ज़िन्दा संबंध हो जाना इस्लाम को स्वीकार करने के अतिरिक्त कदापि संभव नहीं **कदापि संभव नहीं।**

हे अज्ञानियो! तुम्हें मुर्दों की उपासना में क्या मज़ा है और मुर्दार खाने में क्या स्वाद?!!! **आओ मैं तुम्हें बताऊं कि ज़िन्दा ख़ुदा कहां है** और किस **क़ौम** के साथ है। वह इस्लाम के साथ है इस्लाम इस मसय मूसा का **तूर** है जहां ख़ुदा बोल रहा है। **वह ख़ुदा जो नबियों के साथ** कलाम करता था और फिर चुप हो गया। **आज वह**

एक मुसलमान

के दिल पर इल्हाम भेज रहा है। क्या तुम में से **किसी को रुचि नहीं** कि इस बात को परखे? फिर यदि सच पाए तो स्वीकार कर ले। तुम्हारे हाथ में क्या है? क्या एक **मुर्दा क़फ़न में लपेटा हुआ?** फिर क्या है? एक **मुश्ते ख़ाक (अर्थात् मुर्दा)**। क्या यह मुर्दा ख़ुदा हो सकता है? क्या

★जो व्यक्ति यह कहता है कि इस युग में इस्लाम में कोई अहले करामत मौजूद नहीं वह अन्धा और पापी है। इस्लाम वह धर्म है कि किसी समय में अहले करामत से रिक्त नहीं रहा और अब तो हुज्जत को पूर्ण करने के लिए करामात की अत्यावश्यकता है और वह आवश्यकता ख़ुदा तआला की कृपा से मनोकामना के अनुसार पूरी हो गई है। कोई व्यक्ति नहीं जो चमत्कार दिखाने में इस्लाम के सामने ठहर सके। इसी से

यह तुम्हें उत्तर दे सकता है? तनिक आओ हां लानत है तुम पर यदि न आओ और इस सड़े-गले मुर्दे का मेरे ख़ुदा के साथ मुक़ाबला न करो।

देखो मैं तुम्हें कहता हूँ कि चालीस दिन नहीं गुज़रेंगे कि वह कुछ आकाशीय निशानों से तुम्हें लज्जित करेगा। अपवित्र हैं वे दिल जो सच्चे इरादे से नहीं आज़माते और फिर इन्कार करते हैं। और गन्दी हैं वे तबियतें जो शरारत की ओर जाती हैं न कि सत्य की अभिलाषा की ओर।

हे मेरे विरोधी मौलवियो! यदि तुम्हें सन्देह हो तो **आओ** कुछ दिन मेरी संगत में रहो। यदि ख़ुदा के निशान न देखो तो मुझे पकड़ो और जिस प्रकार चाहो झुठलाने का व्यवहार करो। मैं **समझाने के अन्तिम प्रयास** को पूर्ण कर चुका। अब जब तक तुम इस हुज्जत को न तोड़ लो तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं। ख़ुदा के निशान **वर्षा के समान** बरस रहे हैं। **क्या तुम में से कोई नहीं** जो सच्चा दिल लेकर मेरे पास आए? **क्या एक भी नहीं ?**

दुनिया में एक नज़ीर आया, पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया लेकिन ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़ोरदार आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

وَالسّلام علٰی من اتبّع الھدٰی

22, जनवरी 1897 ई०

* * *

पारिभाषिक शब्दावली

अर्श- सिंहासन। वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है।

अह्ले किताब- यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।

अज़ाब - अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड। ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।

अलैहिस्सलाम- उनपर अल्लाह की कृपा हो। नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है।

आयत- पवित्र क़ुर्आन की पंक्ति अथवा वाक्य।

इब्ने मरियम- मरियम का पुत्र (अर्थात ईसा मसीह अलैहिस्सलाम)

इस्राईल- अल्लाह का वीर या सैनिक। हज़रत याक़ूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को बनी इस्राईल (अर्थात इस्राईल की संतान) कहा जाता है।

इरहास पैग़ंबर के प्रादुर्भाव का समय निकट आने का संकेत या लक्षण।

ईमान- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना। जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना।

उम्मत- संप्रदाय। किसी नबी या रसूल के अनुयायिओं का समूह उसकी उम्मत कहलाता है।

उम्मती नबी- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना।

उक़्नूम त्रित्व, ईसाई धर्म का केंद्रीय तथा गूढ़तम धर्मसिद्धांत। त्रित्व का अर्थ है कि एक ही ईश्वर में तीन व्यक्ति हैं- पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा। अर्थात ट्रिनिटी

उलमा- इस्लामी धर्मज्ञ।

कश्फ़- जागृत अवस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना। स्वप्न और कश्फ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कश्फ़ जागते में

देखा जाता है। दिव्य-दर्शन। योगनिद्रा, तन्द्रावस्था।

काफ़िर - सच्चाई का इन्कार करने वाला। इस्लाम धर्म का अस्वीकारी।

क़िब्ला - आमने-सामने। जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। ख़ाना काबा मुसलमानों का क़िब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं।

कुफ्र- सच्चाई का इन्कार, इस्लाम का इन्कार करना।

ख़लीफ़ा- उत्तराधिकारी। अधिनायक। नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला।

ख़िलाफ़त- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख ख़लीफ़ा कहलाता है।

ज़ईफ हदीस- (अर्थात कमज़ोर) वह हदीस जिसके रावी (हदीस बताने वाले) की ईमानदारी के बारे में कि सी को आपत्ति हो या उसकी स्मरण शक्ति बहुत कमज़ोर हो।

जिब्रील- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता।

जिहाद - प्रबल उद्यम करना। स्वयं को सुधारने के लिये या धर्मप्रचार के लिये प्रयत्न करना। सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना।

तक़वा - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना। संयम, धर्मपरायणता।

ताबयीन- अनुगमन कारी। वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा।

तबअ ताबयीन -ताबयीन के अनुगामी। जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा।

तौरात - यहूदियों का धर्मग्रंथ।

दज्जाल- झूठा, धोखेबाज, अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाला एक समूह।

दुरूद व सलाम -हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने

वाली दुआ।

नबी- लोगों को सन्मार्ग पर लाने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषयों से अवगत कराया जाता है। अवतार।

नुबुव्वत- नबी बनने की क्रिया। अवतारत्व।

नूर- अध्यात्म प्रकाश, ज्योति।

नेमत - अल्लाह की देन।

पैग़म्बर - अल्लाह का संदेशवाहक, नबी, रसूल।

बनी इस्राईल- इस्राईल की संतान। यहूदी तथा ईसाई (इस्राईल शब्द भी देखें)

बैअत- बिक जाना, धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना।

मजरूह हदीस- वह जिसमें, हदीस बताने वाले (रावी) के शब्दों और कार्यों पर भरोसा नहीं किया जा सकता है और इसके बारे में जिरह की गई है।

मुश्रिक - शिर्क करने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति।

मुनाफ़िक़- कपटाचारी। वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसको अस्वीकार करने वाला हो।

मुत्तक़ी - निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति, धर्मपरायण।

मुबाहलः- एक दूसरे को शाप देना। इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की लानत हो।

मे'राज - आध्यात्मिक उत्थान। अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई।

मोमिन - अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति।

मौज़ूअ हदीस- झूठी हदीस, जिसे रावी (हदीस बताने वाले) ने झूठ बोलकर

आंहज़रत स०अ० व० की ओर सम्बद्ध कर दिया हो।

याजूज-माजूज-अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ।

रसूल- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत, पैगम्बर।

रज़ियल्लाहु अन्हु- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के लिए प्रयुक्त होता है। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ।

रूह-उल-क़ुदुस-पवित्रात्मा। ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता, जिब्राईल।

रूह-उल-अमीन-जिब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं।

वह्यी - अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश, ईशवाणी। ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वह्यी के द्वारा होता है। पवित्र क़ुर्आन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वह्यी के द्वारा ही उतरा है।

शरीयत- इस्लामी धर्मविधान।

शिर्क- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना।

सलीब - सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था।

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो। हज़रत मुहम्मद स० के नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है।

सहाबी - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई।

सूरः / सूरत- पवित्र क़ुर्आन का अध्याय। पवित्र क़ुर्आन में 114 अध्याय हैं।

हदीस - हज़रत मुहम्मद सल्ल. के कथन जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया। इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को **सहा-ए-सित्ता** कहा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं।

हिजरत - देशांतरण। हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना जाने की घटना हिजरत के नाम से प्रसिद्ध है।

हिदायत- सन्मार्ग प्राप्ति।

* * *